उसूले काफ़ी

भाग 4

शेख़ मो० याकूब कुलैनी अ.र.

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

उसूले काफ़ी

चौथी जिल्द

किताबुल ईमान वल कुफ़्र

मोअल्लिफ़
हज़रत सिक़तुल इस्लाम अल्लामा फ़ह्हामा
मौलाना शेख़ बिन मोहम्मद याकूब
कुलैनी अलैहिर्रहमा

—: हिन्दी अनुवाद :—
सैय्यद अमान अली ज़ैदी

प्रकाशक
अब्बास बुक एजेन्सी
रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास, लखनऊ।
फ़ोन नं. 2001816, 2647590

किताबनामा

नाम किताब : उसूले काफ़ी (चौथी ज़िल्द)
मोअल्लिफ़ : हज़रत सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ बिन मोहम्मद याक़ूब कुलैनी अलैहिर्रहमा
उर्दू तरजमा : मुफ़स्सिरे क़ुर्आन आली जनाब अदीबे आज़म मौलाना सैय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िबला
हिन्दी अनुवाद : सैय्यद अमान अली ज़ैदी
प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2003
प्रकाशक : अब्बास बुक एजेन्सी
मुद्रक : एस.एस. इन्टरप्राज़ेज़, दिल्ली ।
कम्पोज़िंग : ऐनी कम्प्यूटर्स, झाकड़ बाग़, मुफ्ती गंज, लखनऊ। (फ़ोन : 2249666, 2246855)
संख्या : 1000
मूल्य : रू. 60/–

मिलने का पता

अब्बास बुक एजेन्सी

रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास, लखनऊ।

फ़ोन नं. 2001816, 2647590

E-mail : abbasbookagency@yahoo.com

अर्ज़े नाशिर

कुर्आने मजीद के बाद रसूलुल्लाह सलल्लाहो व आलैहि वसल्लम और अइम्मए ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम से मन्कूल हदीसें इस्लाम के लिये सरमायए हयात और मुसलमानों के लिए सर चश्मए हिदायत है। इन हदीसों के बग़ैर इन्सान न तो तौहीद का फ़लसफ़ा समझ सकता है न कुर्आनी अहकाम से आगाह हो सकता है और न दीन से मुकम्मल तौर पर वाक़फ़ियत हासिल कर सकता है।

कुर्आन की इजमाली आयात की तफ़सीर, मुताशाबेहात की ताबीर, वाक़ेआत की तौज़ीह, अहकाम की अमली सूरत, नासिख़ व मन्सूख़ और आम व ख़ास का इल्म मासूमीन की हदीसों के सिवा और किसी ज़रिये से नहीं हो सकता।

सिर्फ़ कुर्आने मजीद हमारी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं है क्योंकि सामित (ख़ामोश) होने की बिना पर वह किसी आयत के ग़लत मफ़हूम समझने वाले को टोक नहीं सकता, उसके अमल की इस्लाह नहीं कर सकता इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम ने कुर्आन के साथ–साथ एक मासूम गिरोह को भी मोअय्यन किया है जिसका नाम अहलेबैत व इतरत है और हदीसे सक़लैन इस पर शाहिद है।

लेहाज़ा मालूम हुआ कि हर ज़माने में एक मासूम ज़ात जो मकतब, 'इल्मे लदुन्नी' की सनद याफ़्ता हो और उसने दुनिया के किसी मदरसे से तालीम न हासिल की हो। और उससे किसी ग़लती का इम्कान न हो कुर्आन के साथ–साथ रहे, ताकि वह गुमराहों को सही रास्ता दिखलाती रहे।

वक़्त का अहम तक़ाज़ा है कि मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की उन हदीसों को हिन्दी लिपि में मुन्तक़िल किया जाय जो अर्बी फ़ारसी और उर्दू किताबों का सरमाया है।

लेहाज़ा इस ख़याल के तहत हमारे इदारे ने हज़रत सिकतुल इस्लाम मौलाना शेख़ मोहम्मद याकूब कुलैनी अलैहिर्रहमा की किताब उसूले काफ़ी को जिसका उर्दू तरजमा आली जनाब अदीबे आज़म मौलाना सैय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला ने किया है, को हिन्दी में ब–तदरीज शाया करने का फ़ैसला किया और अब चौथी जिल्द की इशाअत की सआदत हासिल कर रहे हैं, इसके बाद इन्शाल्लाह पॉचवी जिल्द भी मंज़रे आम पर आ जाएगी। हमें उम्मीद है कि हिन्दी दॉ तबक़ा भी इस किताब से भरपूर इस्तेफ़ादा करेगा। यहॉ तक उसकी दुनिया व आख़ेरत के चिराग़ रौशन व मुनव्वर हो जायें।

एहक़रूल इबाद,

सैय्यद अली अब्बास तबातबाई

अब्बास बुक एजेन्सी,

दरगाह हज़रत अब्बास अ.

रूस्तम नगर, लखनऊ ।

फेहरिस्ते मज़ामीन

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक सौ अट्ठासी वॉ बाब

अल हुब्बो फ़िलल्लाह वलबुग़ज़ो फ़िलल्लाह

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जो ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए किसी से मोहब्बत करे या बुग़ज़ रखे और ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिये किसी को अता करे तो उसका ईमान कामिल है।

2. अबू अब्दिल्लाह अलै. से मरवी है के जो ईमान की रस्सी को मज़बूत पकड़े हो उसको चाहिए के मोहब्बत या अदावत, अता या मना जो कुछ हो महज़ ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए हो।

3. फ़रमाया रसूल अल्लाह स. ने मोमिन का मोमिन को ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए दोस्त रखना ईमान की सबसे बड़ी शाख़ है आगाह हो जिसने ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिये किसी से मोहब्बत या बुग़ज़ रखा या अता किया या मना किया तो वो शख़्स अस्फ़ियाए ख़ुदा में से है।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जो ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए एक दूसरे को दोस्त रखने वाले को क़यामत के रोज़ नूर के मिम्बरों पर होंगे और नूर से उनके चहने और अजसाम और मिम्बर ऐसे चमक रहे होंगे के वो इसी नूर से पहचाने जायेंगे और उनसे कहा जाएगा ये वहीं लोग हैं जो आपस में एक दूसरे से कुर्बतन इलल्लाह दोस्ती रखते थे।

5. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलै. से पूछा क्या हुब और बुग़ज़ ईमान से है फ़रमाया क्या ईमान हुब और बुग़ज़ के अलावा भी कोई चीज़ है फ़िर ये आयत तिलावत फ़रमायी "उसने ईमान को तुम्हारे लिए महबूब क़रार दिया है और तुम्हारे दिलों में इसको ज़ीनत दी है और कुफ़्र व फ़ुसूक़ व इस्यान से नफ़रत दिलायी है यही लोग राशिदीन हैं।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने अपने असहाब से फ़रमाया "ईमान की कौन सी रस्सी ज़्यादा मज़बूत है? उन्होंने कहा रसूल अल्लाह ही बेहतर जानते हैं

बअज़ ने कहा नमाज़, बअज़ ने कहा ज़कात, बअज़ ने कहा रोज़ा, बअज़ ने कहा हज, बअज़ ने कहा उमरा, बअज़ ने कहा जेहाद, रसूल अल्लाह ने फ़रमाया जो कुछ तुमने कहा ये फ़ज़ीलत है लेकिन ये सबसे ज़्यादा मज़बूत रस्सी नहीं, सबसे ज़्यादा मज़बूत रस्सी अल हुब्बो फ़िलल्लाह वल बुग़ज़ो फ़िल्लाह और औलियाए ख़ुदा को दोस्त रखना और उनके दुश्मनों से बुग़ज़ रखना है।

7. फ़रमाया अबू जाफ़र अलै. ने कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए मोहब्बत करने वाले रोज़े क़यामत ज़बरजद सब्ज़बर की ज़मीन पर अर्शे इलाही के साये में होंगे और दोनों हाथ उनके दाहिने हाथ की तरह होंगे उनके चहरे सफ़ेद होंगे और सूरज से ज़्यादा चमकदार उनकी मंज़िलत पर हर एक मलके मुक़र्रब और नबीए मुर्सल करेगा। लोग पूछेंगे ये कौन हैं कहा जायेगा ये वो लोग हैं जो रज़ाए इलाही के लिये एक दूसरे से मोहब्बत करते थे।

8. हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलै. ने फ़रमाया जब रौज़े क़यामत अव्वलीन व आख़ेरीन जमा होंगे तो एक मुनादी निदा करेगा जिसको लोग सुनेंगे वो कहेगा कहॉ हैं कुर्बतन इलल्लाह मोहब्बत करने वाले। पस कुछ लोगों की गर्दनें उठेंगी उनसे कहा जायेगा जन्नत की तरफ़ बेहिसाब चलो, मलाएका पूछेंगे कहॉ जा रहे हो वो कहेंगे हम कुर्बतन इलल्लाह मोहब्बत करने वाले हैं वो कहेंगे तुम्हारे आमाल क्या थे उन्होंने कहा हम ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिये किसी से मोहब्बत या बुग़ज़ रखा करते थे वो कहेंगे क्या अच्छा है अज्र अमल करने वालों का।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि मोमिन की तीन अलामतें हैं इल्म बिल्लाह और मोहब्बत व बुग़ज़ फ़िल्लाह।

10. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलै. ने कहा एक शख़्स तुमसे मोहब्बत तो करता है बज़ाहिर शिया होने की हैसियत से और

गुनाह को नहीं जानता जो तुम करते हो तो ख़ुदा उसको दाख़िले जन्नत करेगा और तुम से ब सबब शिया होने के अदावत रखता है और ये नहीं जानता की तुम्हारा गुनाह क्या है ख़ुदा उसको दाख़िल जहन्नुम करेगा।

12. फ़रमाया अबू जाफ़र अलै. जब तुम ये जानना चाहो कि तुम में नेकी है तो अपने दिल पर ग़ौर करो अगर वो अल्लाह के मुतीअ बन्दों से मोहब्बत करता है और अहले मअसीयत से बुग़ज़ रखता हैतो तुम समझ लो कि तुममें नेकी है और अगर अहले ताअत से बुग़ज़ रखता है और अहले मअसीयत से मोहब्बत रखता हे तो तुम समझ लो तुममें नेकी नहीं और अल्लाह तुम से दुश्मनी रखता हे आदमी जिससे मोहब्बत रखता है उसी के साथ होता है।

11. फ़रमाया मो. तक़ी अलै. ने अगर कोई शख़्स किसी से कुर्बतन इलल्लाह मोहब्बत करे तो अल्लाह उसको उस मोहब्बत का सवाब अता करेगा अगरचे उसका महबूब इल्मे इलाही में दोज़ख़ी हो और अगर किसी से कुर्बतन इल्लल्लाह बुग़ज़ रखे तो अल्लाह उसको उसका सवाब देगा अगरचे उसका दुश्मन अहले जन्नत ही से हो।

13. फ़रमाया अबू जाफ़र अलै. कभी ऐसा होता है कि हुब्बे फ़िल्लाह और हुब्बे रसूल स. के साथ हुब्बे दुनिया होती है पस जहॉ तक और जब तक हुब्बे रसूल स. का तअल्लुक़ ख़ुदा पर उसका सवाब है और जिसका तअल्लुक़ दुनिया से है उसका सिला कुछ नहीं।

14. फ़रमाया सादिक़े आले मो. अलै. ने जब दो मुसलमान मिलें तो अफ़ज़ल उनमें वो है जो मोहब्बत में ज़्यादा हो।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब दो मोमिन मिलते है तो अफ़ज़ल वो होता है जो अपने भाई से मोहब्बत में ज़्यादा हो।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब कोई दीन की मोहब्बत में किसी से बुग़ज़ या मोहब्बत नहीं रखता उसका दीन ही नहीं है।

एक सौ नवासी वॉ बाब
मज़म्मते दुनिया और ज़ोहद फ़िद्दुनिया

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने ज़ोहद फ़िद्दुनिया क़ल्बे इन्सान में हिकमत बरक़रार रखता है और उसकी ज़बान को गोया करता है और अयूबे दुनिया उसको नज़र आ जाते हैं उसकी बिमारी भी उसका इलाज भी और उसे ले जाता है सहीह सलामत दारूस्सलाम की तरफ़।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने ख़ैर सबकी सब एक घर में जिसकी कुंजी ज़ोहद फ़िद्दुनिया है फिर फ़रमाया रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया कि कोई शख़्स इमान की हलावत अपने क़ल्ब में न पायेगा जब तक गिज़ाए दुनिया से बेपरवाह न हो और हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया जब तक दुनिया से बेरग़बत न हों दिलों पर हराम है कि वो हलवाते ईमान को पायें।

3. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलै. ने दीन में सबसे ज़्यादा मद्दगार अख़लाक़ में ज़ोहद फ़िद्दुनिया है।

4. एक शख़्स ने अली इब्नुल हुसैन से पूँछा ज़ोहद के मुतअल्लिक़ फ़रमाया दस चीज़ें है उनमें एक ज़ोहद है पस ज़ोहद का आला दर्जा वराअ का अदना दर्जा है और वरआ का आला दर्जा यक़ीन का अदना दर्जा है और यक़ीन का आला दर्जा रिज़ा का अदना दर्जा है ज़ोहद की तारीफ़ किताबे ख़ुदा में ये है जो फ़ौत हो जाए उसपर अफ़सोस न करो जो मिल जाए उसपर ख़ुश न हो।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जिस दिल में शको शिर्क हो वो साक़ितुल एतबार है अम्बिया और औसिया ने दुनिया से बेरग़बती इसलिए रखी ताकि आख़रत के लिए इनके दिल

मोहब्बते दुनिया से खा़ली हो जायें।

6. अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया जो शख़्स सवाबे आखे़रत के तरफ़ रग़बत रखता है उसकी अलामत यह है कि वो दुनिया की चन्द रोज़ा लज़्ज़ात को तर्क करता है जो शख़्स दुनिया में ज़ोहद अख़्तियार करता है तो वो तक़्सीमे इलाही की रू से नुक़्सान में नहीं रहता क्योंकि दुनिया के फ़ायदे से ज़्यादा उसे आखे़रत का सवाब मिल जाता है लज़्ज़ात दुनिया के हरीस को हिरस करने से कुछ ज़्यादा नहीं मिल जाता तो वो सवाबे आख़रत से भी महरूम हो जाता है।

7. फ़रमाया हज़रत अब्दुल्लाह अलै. ने रसूल अल्लाह स. को दुनिया से कोई चीज़ उससे ज़्यादा पसन्द नहीं आयी कि वो भूखे रहें और ख़ुदा से डरते रहें।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने एक रोज़ रसूले ख़ुदा स.महजूनो मग़मून बरामद हुये उनके पास फ़रिश्ता आया और अपने साथ ख़ज़ाएने अर्ज़ की कुन्जियाँ लाया और कहने लगा ऐ मोहम्मद स. ये ख़िज़ाएने अर्ज़ की कुन्जियाँ हैं "ख़ुदा फ़रमता है कि कुफ़्ल खोलो और जितना चाहो ले लो" तुम्हारा सवाबे आखे़रत मेरे नज़दीक कम न होगा हज़रत ने फ़रमाया दुनिया घर है उसके लिये जिसके लिये दूसरा घर न हो यहाँ जमा वो करेगा जिसकी अक़्ल न हो फ़रिश्ते ने कहा क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको नबीए बरहक़ बनाया कि यही कलाम मैंने आसमाने चहारूम पर उस फ़रिश्ते से सुना था जिसने मुझे ये कुन्जियाँ दी थीं।

9. फ़रमाया हज़रज अबू अब्दिल्लाह अलै. ने रसूल अल्लाह स. गुज़रे एक ऐसे मुर्दा बकरी के बच्चे की तरफ़ से जिसके कान कटे हुये थे और वो मज़बला पर पड़ा हुआ था आपने असहाब से फ़रमाया इसकी क्या क़ीमत होगी उन्होंने कहा अगर ये ज़िन्दा होता तो एक दिरहम इसकी क़ीमत न होती और

अबतो क़ीमत का कोई सवाल ही नहीं हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम ये दुनिया ख़ुदा के नज़दीक अहले दुनिया के लिये इससे ज़्यादा ज़लील है।

10. फ़रमाया हज़रज अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब ख़ुदा किसी बन्दे के साथ नेकी का इरादा करता है तो उसे दुनिया से बेरग़बत कर देता है इल्मे दीन का आलिम बना देता है और दुनिया के ऐब उसकी नज़र में ज़ाहिर कर देता है और जिसको ये चीज़ें मिल जाती हैं तो उसको दुनिया ओ आख़ेरत दोनों की भलाई मिल गयी और ये भी फ़रमाया ज़ोहद से बेहतर किसी ने हक़ को और किसी दरवाजे से नहीं पाया और अदाए हक़ के लिये ज़िद है उस चीज़ की जो उन्होंने तलब की रावी कहता है मैंने कहा लोग ऐसा क्यों करते हैं फ़रमाया इसलिये कि दुनिया की तरफ़ उनको रग़बत है फिर फ़रमाया जो लोग बड़ा सब्र करने वाले और करीमुत्तबअ वो दुनिया की तरफ़ रग़बत नहीं करते क्योंकि दुनिया तो चन्द रोज़ा है जब तक तुम दुनिया से बे रग़बत न होगे तो लज़्ज़ते ईमान तुम्हारे लिये हराम होगी और हज़रत ने ये फ़रमाया जब मोमिन ने अपने दिल को मोहब्बते दुनिया से खाली कर लिया तो वो बुलन्द मर्तबा हुआ और मोहब्बते ख़ुदा की लज़्ज़त उसे हासिल हुई और अहले दुनिया से मख़्बूतुल हवास समझने लगे और लोग हलावते हुब्बुल्लाह को ख़ब्त जानते हुये इस ख़याल को छोड़ते नहीं और हज़रत ने फ़रमाया जब किसी दिल में सफ़ाई पैदा होती है तो दुनिया इसपर तंग हो जाती है और इसका तअल्लुक़ बहिश्त से हो जाता है जो आसमान में है।

11. हज़रत अली इब्नुल हुसैन से सवाल किया गया इन्दलल्लाह कौन सा अमल ज़्यादा अफ़ज़ल है फ़रमाया अल्लाह और रसूल की मारफ़त के बाद बुग़्ज़े दुनिया से बढ़कर कोई अमल नहीं और इसकी बहुत सी शाख़े हैं और मआसी की भी

शाखें है पस सब से पहली चीज़ खुदा की नाफ़रमानी तकब्बुर है ये मआसियते इब्लीस है उसने इन्कार किया। उसने तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया और हिरस वो मअसीयत (तर्के औला) आदमो हव्वा है अल्लाह ने उनसे कहा था कि जो चाहो खाओ मगर उस दरख़्त के नज़दीक न जाना वरना अपना नुक़सान करने वालों में से हो जाओगे पस उन्होंने उस चीज़ को ले लिया जिसकी उन्हें ज़रूरत न थी लेहाज़ा रोज़े क़यामत तक उनकी औलाद में दाख़िल हो गयी और औलादे आदम अक्सर उस चीज़ को तलब करेगी जिसकी उसे ज़रूरत न हो। फिर हसद कि जो आदम के बेटे में पाया गया उसने अपने भाई को क़त्ल कर दिया उसी की शाख़ें औरतों की मोहब्बत, दुनिया की मोहब्बत, रियासत की मोहब्बत, राहतो आरामो बुलन्दी, मर्तबा और दौलत की मोहब्बत है ये सात आदतें हैं ये सब मोहब्बते दुनिया में जमा हो गयी हैं अम्बिया और ओलमा ने इन उमूर को जानते हुए ये फ़रमाया है कि दुनिया की मोहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है दुनिया बेसिबात है उसकी उसे क़िस्में हैं खुदा तक पहुँचने वाली भी है और मलऊना भी है।

12. फ़रमाया रसूले ख़ुदा ने तलबे दुनिया में नुक़साने आख़ेरत है और तलबे आख़ेरत में नुक़साने दुनिया है और दुनिया का नुक़सान आख़ेरत के नुक़सान से बेहतर है।

13. रावी ने इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. से कहा मुझे ऐसी बात बताईये जो मेरे लिये नफ़ा बख़्श हो। फ़रमाया ऐ अबू उबैदा मौत का ज़िक्र ज़्यादा करो जो मौत का ज़िक्र करता है वो दुनिया से बेरग़बत हो जाता है।

14. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने एक फ़रिश्ता हर रोज़ निदा करता है ऐ इब्ने आदम पैदा हो मौत के लिये जमा कर फ़ना के लिये घर बना बरबादी के लिये।

15. फ़रमाया इमाम अली इब्नुल हुसैन अलै. ने दुनिया पीछे

की तरफ़ जा रही है और आख़ेरत आगे की तरफ़ आ रही है और इन दोनों के लिये बेटे हैं पस तुम आख़ेरत के बेटे बनो और अबनाए दुनिया में से न बनो और तुम तर्के दुनिया करने वाले और आख़ेरत की तरफ़ रग़बत करने वाले बन जाओ। जो लोग तर्के दुनिया करते हैं वो ज़मीन को अपना बिस्तर और ख़ाक को अपना फ़र्श बनाते हैं और पानी को लज़ीज़ मशरूबात जानते हैं और असबाबे दुनिया से पूरा पूरा क़तअ तअल्लुक़ करते हैं आगाह हो जो जन्नत का मुश्ताक़ हुआ उसने ख़्वाहिशाते दुनिया को तर्क किया और जो आतिशे जहन्नुम से डरा उसने मुहर्रेमात से रूगर्दानी की और ज़ोहद अख़्तियार किया मसाएबे दुनिया उसकी नज़र में हेच हो गये आगाह हो ख़ुदा के बन्दे ऐसे भी हैं जो गोया अहले जन्नत को जन्नत में दायमी ज़िन्दगी बसर करते देख रहे हैं और दोज़ख़ में अहले दोज़ख़ को मुअज़्ज़ब होते देख रहे हैं उनके शर से लोग महफ़ूज़ रहते है उनके क़ूलूब मख़्ज़ून और उनके नूफ़ूस पाक और उनकी हाजतें मुख़्तसर होती हैं उन्होंने दुनिया में चन्द दिन सब्र से काम लिया। उक़्बा में उन्हें राहते तवील मिल गयी वो नमाज़ के क़याम में क़दम मिलाकर खड़े होते हैं और अपने रब के साथ तज़र्रोअ व ज़ारी करते हैं क़र्ज़दारों के क़र्ज़ अदा करने की कोशिश करते हैं। दिन में वो अलीमो आलिम और नेको मुत्तक़ी नज़र आते हैं तीरों की तरह उनके बदन लाग़र होते हैं इबादात में ख़ौफ़े ख़ुदा उनपर ग़ालिब होता है लोग उन्हें देखकर गुमान करते हैं कि वो बीमार हैं हालॉकि वो बीमार नहीं होते हैं तो क्या वो फ़सादे अक़्ल रखते हैं। इस क़ौम को एक अम्रे अज़ीम ने मुग़ालते में डाला है वो ये है के उनका ये हाल ज़िक्रे जहन्नम और उसकी तकालीफ़ याद करके है यानी न उनको कोई दिमाग़ी आरज़ा है जैसे जूनून और न कोई जिस्मानी आज़ार है जैसा कि लोग उनके मुतअल्लिक़ ख़याल करते हैं।

16. जाबिर रज़ी. से मरवी है के मैं इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया ऐ जाबिर मैं मख़्ज़ून हूँ और मेरा दिल फ़िक्रमन्द है। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ किस चीज़ ने आपके दिल को मख़्ज़ून किया। फ़रमाया ऐ जाबिर जिसके दिल में अल्लाह के दीन की साफ़ और ख़ालिस मोहब्बत हो उसका दिल मासिवा की तरफ़ मश्गूल नहीं होता। ऐ जाबिर दुनिया है क्या यहीं न कि कुछ खाना खा लिया और कुछ लिबास पहन लिया और औरत से मोहब्बत कर ली। ऐ जाबिर बन्दए मोमिन तो दुनिया में बक़ा के लिये मुतमईन नहीं होता और आख़ेरत में जाने से बेख़ौफ़ होता है। ऐ जाबिर आख़ेरत दारे क़रार है और दुनिया फ़ना का घर है और ज़वाल की जगह, लेकिन अहले दुनिया ग़फ़लत में पड़े होते हैं। मोमिनीन फ़ुक़्हा व अहले फ़िक्रो इबरत हैं। उनको ज़िक्रे ख़ुदा से बाज़ नहीं रखता। वो अम्र जिसे वो अपने कानों से सुनते हैं (अरबाबे ज़लालत का बयान) और नहीं रोकती है ज़िक्रे ख़ुदा से उसे लोगों की ज़ैबो ज़ीनत जिसे वो अपनी आँखों से देखते हैं वो सवाबे आख़ेरत हासिल करने में कामयाब होते हैं जिस तरह वो अपने इल्म की बदौलत कामयाब होते हैं। ऐ जाबिर जो लोग अहले तक़्वा हैं वो बनिस्बत अहले दुनिया के बहुत कम सामाने ज़िन्दगी रखते हैं और तुम्हारी मद्द सबसे ज़्यादा करने वाले होते हैं तुम उन से अपनी ज़रूरत बयान करो तो वो तुम्हारी मद्द करेंगे और अगर तुम भूल जाओ तो वो याद दिलाएंगे वो अम्रे ख़ुदा के सबसे ज़्यादा बयान करने वाले हैं और अम्रे ख़ुदा के सबसे ज़्यादा क़ायम करने वाले हैं उन्होंने ख़ुदा की मोहब्बत की वजह से दुनिया की मोहब्बत क़तअ कर दी और अपने मालिक की इताअत की बिना पर उनको दुनिया के मआमलात से वेहशत होती है और ख़ुदा की अज़मते शान के लेहाज़ से उनकी दोस्ती उनके लिये मंज़ूरे नज़र होती है दुनिया उनके नज़दीक एक

सराए की मानिन्द है जिसमें कोई आये और चला जाये या उस माल की तरह है जिसे ख़्वाब में कोई पाये और जागने पर उसके पास कुछ न हो ये मिसाल मैंने तुमसे इसलिए बयान की है कि तुम समझ लो कि अहले इल्मो अक़्ल के नज़दीक दुनिया साए की मिस्ल है ऐ जाबिर अल्लाह ने जो आरियत तुम्हारे साथ की है उसकी हिफ़ाज़त करो उसकी दीनो हिकमत के मुतअल्लिक़ ये सवाल मत करो कि ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारा मर्तबा क्या है ये इतना ही होगा जितना तुम्हारे दिल में उसके अहकाम की इज़्ज़त होगी जो मैंने दुनिया के मुतअल्लिक़ तुमसे बयान किया अगर उसके अलावा कोई तख़य्युल तुम्हारे दिल में है तो ख़ुदा से उज़्रख़्वाही की तरफ़ लोटो, क़सम अपनी उम्र की अकसर हरीस किसी अम्र तरफ़ ऐसे हैं कि जब वो चीज़ उनको मिलती है तो उनके लिये बाएसे शक़ावत होती है और बहुत से ऐसे हैं कि जिस चीज़ से कराहत करते जब वो उनके पास आती है तो उनके लिये बाएसे सआदत बन जाती है उसी के मुतअल्लिक़ ख़ुदा ने फ़रमाया है अल्लाह मोमिनों को गुनाहों से अलग कर देता है और काफ़िरों के लिये सवाबे आख़ेरत को बरतरफ़ कर देता है यानी मुशरिकों के मोमिनों पर ग़ालिब आने मोमिनों का अज्र बढ़ जाता है और मुशरिकों के लिये आख़ेरत में कोई अर्ज बाक़ी नहीं रहता।

17. इमाम मूसा काज़िम अलै. ने फ़रमाया अबूज़र ने कहा ख़ुदा में जज़ा दे जब मैं इस दुनिया की ख़िदमत करता हूँ दो जौं की रोटियॉ के बाद जिनमें से एक सुब्हा खाता हूँ और एक शाम को और दो ऊनी पोशिशों के बाद जिनमें से एक को लंग बनाता हूँ दूसरी को चादर।

18. अबूज़र रावी हैं के अब्दुल्लाह ने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया एक तालिबे इल्म के लिये दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं कि उसका ख़ैर नफ़ा न दे और शर नुक़्सान न पहुँचाये मगर जिसपर

अल्लाह रहम करे। ऐ इल्म के तलबगार कहीं अहलो अयाल और माल तुझे अपने नफ़्स से ग़ाफ़िल न कर दे एकदिन तेरा उनसे जुदा होना लाज़िम है तू दुनिया में उनके दरमियान एक मेहमान जैसा है जो कहीं सुब्हा करे कहीं शाम, दुनिया एक मंज़िल है जिससे दूसरी मंज़िल की तरफ़ जाना है मौत और बअस के दरमियान इतना ही वक़्त है जैसे कोई सो कर जाग उठे। ऐ तलबगारे इल्म आगे बढ़ उन मक़ामात की तरफ़ जो अल्लाह के सामने हैं तुझे अपने अमल का अच्छा बदला मिलेगा जैसे तूने किया है उसका बदला वैसा ही बदला ऐ तलबगारे इल्म तुझे मिलेगा।

19. रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया मुझे दुनिया से क्या सरोकार मेरी और उसकी मिसाल एक सवारी की सी है जिसे गर्म दिन में एक दरख़्त मिल जाय और उसके नीचे क़ैलूला करे कुछ देर आराम करने के बाद उसे छोड़ दे।

20. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने हिरसे दुनिया की मिसाल रेशम जैसी है जिस क़दर अपने ऊपर ज़्यादा तनता जाता है उतनी ही उसमें लिपटता जाता है और फिर उसके लिये निकलना मुमकिन नहीं होता और उसी में मरकर रह जाता है इमाम जाफ़रे सादिक़ ने फ़रमाया कि लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत ये भी की थी के बेटा तुझसे पहले भी लोगों ने अपनी औलाद के लिये जमा किया लेकिन जो जमा किया था वो बाक़ी न रहा। तुम्हारी मिसाल उस मज़दूर की सी है जिसे किसी काम पर लगाया गया और उससे मज़दूरी का वादा किया गया हो, पस तुम अपना काम पूरा करो तब मुस्तहिके अज्र होगे और दुनिया में उस बकरी की मानिन्द न बनो जो किसी हरे भरे खेत में चरने से मोटी हो जाए और ये मोटापा उसके लिये मौत का सबब बन जाये दुनिया मिस्ल एक पुल के है जो एक नहर पर हो तुम उससे गुज़रते चले गये अब कभी उसकी तरफ़ न

लौटोगे और उसकी बरबादी को आबाद न करोगे। ये समझ लो के रोज़े कयामत जब ख़ुदा के सामने जाओगे तो तुमसे पूँछा जायेगा शबाब कैसे गुज़रा, उम्र को किन मशाग़िल में ख़त्म किया, माल किसी तरह से कमाया था और कहाँ कहाँ ख़र्च किया था उसके जवाब के लिये तैयार हो जाओ, जो चीज़ सामाने दुनिया से गयी उसका ग़म न करो। अगर वो कम है तो उसे बक़ा नहीं, ज़्यादा है तो उसकी बलाओं से अमन नहीं, डरते रहो और अपने मआमले में कोशिश करते रहो और अपने चेहरे से पर्दा हटाओ और अपने रब के एहसान के क़ाबिल बनो, दिल से तौबा बार बार करते रहो और दुनिया के कामों से उससे पहले फ़ारिग़ हो जाओ के मलकुल मौत आ दबाए और ज़िन्दगी का ख़ात्मा करके तुम्हारे इरादों के दरमियान हाएल हो जाये।

21. रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलै. से सुना कि वक़्ते मनाजात ख़ुदा ने मूसा अलै. से कहा ऐ मूसा अलै. दुनिया पर ऐसा भरोसा न करो जैसा ज़ालिम लोग करते हैं जो दुनिया को माँ बाप समझकर एतमाद करते हैं। ऐ मूसा अगर मैं अपनी तौफ़ीक़ के बग़ैर तेरा काम तुझ पर छोड़ देता तो हुब्बे दुनिया ज़रूर तुझ पर ग़ालिब आ जाती और उसकी ताज़गी तेरा दिल लुभाती, ऐ मूसा अम्रे ख़ैर में उसके अहल के लिये ज़्यादती तालिब हो और लोगों को उसकी तरफ़ बढ़ाओ, ख़ैर मिस्ल अपने मफ़हूम के ख़ैर है। दुनिया से उस चीज़ को रद करो जिससे बेपरवाई हासिल न हो और उसके पाने की तरफ़ तुम मुज़तर न हो और ललचाई हुई नज़रों से। देता है फ़िदा होने वाले को जो हर नेको बद में अपने नफ़्स पर एतमाद करने वाला हो और लोगों के माल की कसरत से दिल तंग न हो क्योंकि ज़्यादतीए माल कसरते गुनाह का बाएस होती है हुक़ूके वाजेबा अदा न करने के बाएस और उसपर भीं दिल तंग न हो जिससे बहुत से लोग राज़ी हों हाँ उससे अल्लाह राज़ी हो तो ज़रूर ग़बज़ा करो

और गबज़ा न करो उस शख़्स पर जिसकी इताअत लोग करते हों क्योंकि ग़ैरे हक़ पर इताअत होगी तो मुतीए और मताए दोनों के लिये बाएसे हलाकत होगी।

22. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलै. ने किताबे हज़रत अली अलै. में है क़े दुनिया की मिसाल सॉप की सी है छूने में नर्म और उसके पेट में समे क़ातिल, आक़िल उससे बचता है और नादान बच्चा उसकी तरफ़ माएल होता है।

23. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन ने अपने एक सहाबी को नसीहत की मैं तुझे और अपने नफ़्स को वसीयत करता हूँ उस ज़ात से डरने की जिसकी मअसीयत जाएज़ नहीं और न उसके ग़ैर से उम्मीद की जाती है और इस्तिग़ना उसके ग़ैर से नहीं मिलता, जो अल्लाह से डरा उसने इज़्ज़त पाई, क़वी हुआ और सैरो सेराब हुआ और उसकी अक़्ल को अहले दुनिया से (अल्लाह तबारक व तआला) ने ऊँचा कर दिया उसका बदन तो अहले दुनिया के साथ होता है और उसकी अक़्ल आख़ेरत देखने वाली होती है जब दुनिया में उसकी ऑखें जिन चीज़ों को देखती हैं दिल की रौशनी से वो दबा देता है पस वो बुरा समझता है हराम चीज़ों को और किनाराकश हो जाता है शुब्हात से और ख़ुदा की क़सम पाको साफ़ चीज़ों को भी इसलिए तर्क कर दिया सिवाए उस कूतेला यमूत के जिससे इबादत के लिये उसकी पुश्त पनाही रहे और इतना कपड़ा जिससे सतरे औरतैन हो जाये वो मोटा खुर्रा जिसके बग़ैर चारए कार न हो और उसको उसके मुतअल्लिक़ किसी पर एतमाद और किसी से उम्मीद नहीं होती। उसका ऐतमाद ख़ुदा पर होता है उसने रियाज़त में अपने बदन को बहुत तअब में डाला यहॉ तककि उसकी पस्लियॉ निकल आयीं और ऑखें धॅस गयीं ख़ुदा ने उसके बदले में एक दूसरी क़ुवत उसके बदन में पैदा कर दी और उसकी अक़्ल को और ज़्यादा क़वी

कर दिया और उसके ज़ख़ीराए आख़ेरत को और बढ़ा दिया उसने दुनिया को तर्क कर दिया क्यों के हुब्बे दुनिया आदमी को अंधा, गूंगा और बहरा बना देती है और लोगों की गर्दनों को छुका देती है लेहाज़ा जितनी उम्र बाकी है उसमें अपनी कमी को पूरा कर लो और परसों पर उठा न रखों तुम से पहले वो लोग हलाक हो गये जो गलत उम्मीद बॉधते रहे और सुस्ती से काम लेते रहे यहाँ तककि अचानक ख़ुदा का हुक्म आ गया और ग़फ़लत ही में पड़े रहे। लोग उनको ताबूत में रखकर उनकी क़ब्रों तक ले गये वो क़ब्रें तंगो तारीक थीं औलाद और ख़ानदान वालों ने उन्हें क़ब्रों मे दबा दिया और तमाम उम्मीदें कतअ हो गयीं, जाते हैं ऐसे कल्ब के साथ जिसमें तर्के दुनिया का इरादा ही था। ख़ुदा हमारी और तुम्हारी मदद करे अपनी इताअत और तौफ़ीक़ दे हमको और तुम को अपनी मर्ज़ी की।

24. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने दुनिया की मिसाल समन्द्र के पानी की सी है प्यासा जितना पिये प्यास बढ़ी ही रहती है यहाँ तक के वो मर जाता है।

25. फ़रमाया इमाम रज़ा अलै. ने कि हज़रत ईसा ने अपने हवारियों से कहा दुनिया से जो चीज़ गयी उसपर अफ़सोस न करो जैसे अहले दुनिया अफ़सोस नहीं करते उस चीज़ पर जो दीन के मुतअल्लिक़ उनसे फ़ौत हो गयी है।

एक सौ नव्वे वॉ बाब

ततिम्मा बाबे साबिक़

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि हदीसे कुदसी में ख़ुदा ने फ़रमाया क़सम है मुझे अपने इज्ज़तो जलाल की अपनी अज़मतो रिफ़अत की अगर केई बन्दा मेरी मर्ज़ी अपनी ख़्वाहिश पर तरजीह देता है तो मैं राहे मआश को उसके लिये मुबारक क़रार देता हूँ और आसमानों ज़मीन उसके रिज़्क़ का ज़ामिन बना देता हूँ और उसके लिये हर ताजिर की तिजारत की

तरह उसके नफ़े का सौदा करता हूँ।

2. मज़मून वही है जो ऊपर मज़कूर है।

एक सौ इक्कानवे वाँ बाब

क़नाएत

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने जो तुममें से ऊँचे दर्जे का है दौलतो सरवत में उसपर नज़र न करो, तुम्हारे लिये काफ़ी है खुदा का ये फ़रमाना जो उसने अपने नबी से कहा है लोगों का माल और औलाद तुम को तअज्जुब में न डाले और ये भी फ़रमाया अपनी ऑखें न उठाओ उन लोगों की तरफ़ जिनको हमने लुत्फ़ अन्दोज़ बनाया है और चन्द रौज़ा ज़िन्दगी में उनको दुनिया का ऐश दिया है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने हमसे कुछ मॉगा हमने उसे दिया और जिसने बेनियाज़ाना तर्के तलब किया उसे बेनियाज़ बना दिया।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जो थोड़े से रिज़्क़ पर अल्लाह से राज़ी हो खुदा उसके थोड़े से अमल से राज़ी हुआ।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने तौरेत में है कि ऐ इब्ने आदम जैसा चाहे वैसा बन जा तू जैसा करेगा वैसा ही बदला पायेगा जो क़लील रिज़्क़ पर अल्लाह से राज़ी हुआ खुदा ने उसके अमले क़लील को क़ूबूल किया और जो थोड़ी सी हलाल रोज़ी पर राज़ी हो गया उसका ख़र्च हल्का हो गया और कमाई पाक हो गयी और फ़िस्क़ो फ़ूजूर से दूर हो गया।

5. फ़रमाया इमाम रज़ा अलै. ने जो रिज़्क़े क़लील पर क़नाअत नहीं करता और ज़्यादा चाहता है तो नहीं काफ़ी होता उसको मगर अमले कसीर और जिसने क़नाअत की रिज़्क़े क़लील पर तो उसके लिये काफ़ी होगा अमले क़लील।

6. अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया ऐ इब्ने आदम अगर तू सामाने दुनिया से ये इरादा रखता है कि वो तेरे लिये

किफ़ायत करे तो थोड़ा सामान काफ़ी हो जायेगा और किफ़ायत का इरादा नहीं तो ज़्यादा से ज़्यादा सामान भी किफ़ायत न करेगा।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने असहाबे रसूल में से एक शख़्स तंगदस्ती में मुब्तिला था। उसकी बीवी ने कहा क्या अच्छा होता कि तुम रसूल अल्लाह के पास जाकर सवाल करते। वो ऑहज़रत के पास आया। हज़रत ने उसे देखते ही फ़रमाया जिसने हमसे सवाल किया हमने उसको अता कर दिया और जिसने तलब में बेनियाज़ी चाही ख़ुदा ने उसे बेनियाज़ कर दिया। उसने दिल में कहा ये हज़रत ने मेरे ही लिए कहा है पास अपनी बीबी के पास आया और हाल बयान किया। उसने कहा रसूल अल्लाह बशर हैं (ग़ैबदॉ नहीं हमारी उसरत का हाल क्या मालूम) फिर जाओ अपना हाल बयान करो वो फिर आया और हज़रत ने देखकर फिर वही फ़रमाया। यहॉ तक के तीन बार ऐसा ही हुआ। उसके बाद उस शख़्स ने एक कुल्हाड़ी आरियतन ली और पहाड़ी पर चढ़कर सूखी लकड़ियॉ काटीं और बाज़ार में लाकर एक मुद आटे की एवज़ बेचा और खाना खाया। दूसरे फिर गया और पहले से ज़्यादा लकड़ियॉ जमा करके लाया चन्द रोज़ यूँही करता रहा आख़िर उसने कुल्हाड़ी ख़रीद ली और पैसा जमा करके दो ऊँट ख़रीदे और एक गुलाम यहॉ तक कि वो मालदार हो गया और रसूल अल्लाह के पास आया और अपने सवाल के लिये आने और हज़रत से सुनने का ज़िक्र किया आपने फिर वही फ़रमाया जिसने हमसे मॉगा हमने उसको दिया और जिसने ख़ुदा से बेनियाज़ी और तर्के तलब को चाहा ख़ुदा ने उसे बेपरवा बना दिया।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जो ग़नी बनने का इरादा रखता है उसे चाहिए के जो अल्लाह के यदे क़ुदरत में है उसपर ऐतमाद करे न कि

जो बन्दों के हाथ में है।

9. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जिसने अपने रिज़्क़ पर क़नाएत की वो सबसे ज़्यादा गनी है।

10. एक शख़्स ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से बयान किया जो तलब करता हूँ पा लेता हूँ लेकिन मेरा दिल क़ानेअ नहीं होता और मेरा नफ़्स ज़्यादा पाने पर तुला रहता है लेहाज़ा मुझे कोई मुफ़ीद नसीहत कीजिए। हज़रत ने फ़रमाया अगर जो चीज़ तेरे लिये काफ़ी है तुझे बेनियाज़ बना दे तो दुनिया की अदना चीज़ बेनियाज़ बना देगी और अगर जो चीज़ तेरे लिये किफ़ायत करती है वो तुझे बेनियाज़ नहीं बना सकती तो दुनिया की कोई चीज़ तुझे बेनियाज़ नहीं बना सकती।

11. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलै. ने जो सामाने दुनिया से उतने पर राज़ी हो गया जो उसके लिये काफ़ी हो तो वो आसानी से उसके लिये काफ़ी होगा वरना उसके लिये दुनिया की कोई शै काफ़ी न होगी।

एक सौ बानवे वॉ बाब

कफ़ाफ़ (अताए रिज़्क़ बक़द्रे ज़रूरत)

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि रसूल अल्लाह ने कि हदीसे कुदसी में ख़ुदा ने फ़रमाया है कि अपने औलिया में मुझे सबसे ज़्यादा वो शख़्स पसन्द है जो तंगदस्त हो मगर ख़ूलूस से नमाज़ अदा करे ताकि सवाब से हिस्सा पाये और अपने रब की अच्छी इबादत करे उस हुक्म के मुताबिक़ जो दाख़िले गैब है और लोगों के दरमियान गुमनाम हो और उसकी रोज़ी बक़द्रे हाजत हो तो वो उसपर सब्र करे जब जल्द उसकी मौत आये तो उसकी मिरास थोड़ी सी हो और गुर्बत की वजह से उस पर रोने वाले कम हों।

2. फ़रमाया रसूल अल्लाह स. ने ख़ुशख़बरी उसके लिए जो इस्लाम लाया और उसकी मआश बक़ुदरत रही।

3. फ़रमाया रसूल अल्लाह स. ने ख़ुदावन्दा अहले बैत को रिज़्क़ दे पाक दामनी और बक़दरे ज़रूरत रोजी का और उनके दुश्मनों को माल व औलाद का।

4. हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलै. से मरवी है के रसूल अल्लाह स. का गुज़र एक ऊँटों के चरवाहे की तरफ़ से हुआ। आपने उसे भेजा कि पीने के लिए कुछ दूध लाये उसने कहा जो दूध ऊँटनी के थनों में है वो ऊँटनी के चरवाहों का सुब्हा का खाना है और जो हमारे बर्तनों में है वो शाम की गिज़ा है रसूल अल्लाह ने दुआ की ख़ुदा वन्दा इसे कसरत से माल और औलाद दे फिर आपका गुज़र बकरियों के चरवाहे की तरफ़ हुआ आपने उससे दूध माँगा उसने जितना दूध बकरी के थनों में था वो सब लिया और जितना बर्तनों में था वो रसूल अल्लाह स. के बर्तनों में उन्डेल दिया और एक बकरी हज़रत के पास भेजी और कहा हमारे पास ये है अगर और ज़्यादा की ज़रूरत हो तो लाया जाये। आपने उसके लिये दुआ। ख़ुदावन्दा इसको बक़द्रे किफ़ायत रिज़्क़ दे एक सहाबी ने कहा आप स. ने उस शख़्स के लिये जिसने आपकी ख़्वाहिश की रद की वो दुआ दी जिसे हमारे आम लोग पसन्द करते हैं और जिसने आपकी हाजत पूरी की उसके लिये वो दुआ की जिसे हम पसन्द नहीं करते हज़रत ने फ़रमाया जो कम हो और किफ़ायत करे वो बेहतर है उस ज़्यादा से जो यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल करे। ख़ुदावन्दा रिज़्क़ मोहम्मद स. व आले मोहम्मद स. को बक़द्रे ज़रूरत दे।

5. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अलै. ने कि ख़ुदा ने हदीसे क़ुदसी में फ़रमाया मेरा बन्दा मख़ज़ून होता है अगर मैं उसके रिज़्क़ में कमी कर दूँ हालाँकि वो उसको मुझ से क़रीब करने वाला होता है और वो ख़ुश होता है अगर मैं उसके रिज़्क़ में तौसीअ कर दूँ हालाँकि वो इसको मुझ से दूर करता है।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हदीसे कुदसी में फ़रमाया है के मोमिन बन्दों में मेरे नज़दीक क़ाबिले ग़बत वो है जो साहिबे नसीब हो और सलाहीयत में अच्छा हो अपने रब की इबादत में यानी दिल से अल्लाह की इबादत करे। लोगों में ऐसा गुमनाम हो कि उसकी तरफ़ कोई उँगली न उठाए। उसका रिज़्क़ बक़द्रे किफ़ायत हो वो उसपर सब्र करे और बहुत जल्द उसकी मौत आ जाये तो उसका तरका थोड़ा हो और उसपर रोने वाले कम हों।

एक सौ तिरान्नवे वाँ बाब
अम्रे ख़ैर में तअजील

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब तुम में से कोई नेकी का इरादा करता है तो उसमें ताख़ीर नहीं करनी चाहिए अकसर जो बन्दा नमाज़ पढ़ता है और रौज़ा रखता है तो ख़ुदा उससे कहता है उसके बाद जो चाहे अमल कर ख़ुदा तुझे बख़्श देगा।

तौज़ीह : इस हदीस से तो मालूम हुआ के नमाज़ और रोज़े के बाद बन्दा जो अमले क़बीह करेगा बख़्श दिया जायेगा लेकिन इस हदीस का मन्शा ये नहीं, अव्वल तो बन्दे को ये पता कैसे चल सकता है कि उसका कौन सा अमल ऐसा मक़बूल हुआ के ख़ुदा या मलाएगा ने ऐसा कहा। दूसरे नमाज़ की तारीफ़ ये है कि वो फ़ोहुश और मुन्किर से रोकती है तो आमाले क़बीह के नज़दीक ही न जायेगा लेकिन अगर कोई गुनाहे सग़ीरा सरज़द हो जाये इत्तिफ़ाक़न तो अल्लाह अपनी रहमत से उसे माफ़ कर देगा।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया जब तुम नेकी का इरादा करो तो जल्दी से कर

गुज़रो तुम्हें क्या मालूम के क्या अम्र मानेए ख़ैर हादिस हो जाये।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने के अपने दिन का इफ़्तिताह नेकी से करो और अपने हाफ़िज़ फ़रिश्तों (किरामन कातेबीन) के दफ़्तर में अव्वल रोज़ और आख़िर रोज़ नेकी दर्ज करा दो। अगर दरमियान रोज़ में कोई बदी तुमसे सरज़द होगी तो इन्शाल्लाह बख़्श दी जायेगी।

4. हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने फ़रमाया के ख़ुदा उस नेकी को पसन्द करता है जो जल्दी की जाए।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब तुम किसी अम्र में नेकी का इरादा करो तो ताख़ीर मत करो बन्दा जब गर्म दिन में रोज़ा रखता तो ख़ुदा उसे आतिशे जहन्नुम से निजात देता है जो चीज़ तुमको ख़ुदा से क़रीब कर दे उसे कम न समझो अगरचे वो छुआरे का एक रेशा ही क्यों न हो।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जो नेकी का इरादा करे चाहिए कि वो उसमें जल्दी करे ताख़ीर रवा न रखे क्योंकि बन्दा बाज़ औक़ात ऐसे काम भी कर गुज़रता है के ख़ुदा उससे कहता है के मैंने तेरे गुनाह बख़्श दिये और अब तेरे गुनाह न लिखूँगा और जो बदी का इरादा करे चाहिए वो उसे अमल में न लाये बसा औक़ात ऐसे गुनाह भी कर बैठता है कि ख़ुदा कहता है क़सम अपने इज़्ज़तो जलाल की उसके बाद तुझे न बख़्शूंगा।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब तुम नेकी का इरादा [illegible] ताख़ीर न करो। बन्दे की इताअत से इल्मे इलाही में कोई नेकी आती है तो वो कहता हे है क़सम है अपने इज़्ज़तो जलाल की मैं कभी तुझे मुब्तिलाए अज़ाब न करूँगा और जब तुम बदी का इरादा करो तो उसे इल्म में न लाओ बसा औक़ात बन्दे की कोई मअसीयत इल्में इलाही में आती है कि ख़ुदा उससे फ़रमाता है अपने इज़्ज़तो जलाल की क़सम मैं तुझे न बख़्शूँगा।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब तुम नेकी या सिलए रहम का इरादा करते हो तो दाहिने बॉऐ दो शैतान मौजूद होते हैं पस जल्दी करो ताकि वो दोनों तुम्हें नेकी से रोक न दें।

9. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने जो नेकी का इरादा रखता है उसे चाहिए के जल्दी करे क्योंकि दर सूरते ताख़ीर शैतान की नज़र उस पर रहती है।

10. मैंने सुना मोहम्मद बाक़र अलै. से कि अमले ख़ैर को दुनिया के नेक लोगों पर उसी तरह भारी बना दिया है जिस तरह वो रोज़े क़यामत मीज़ान में उनके अमल को वज़नी बनाएगा और अहले शर पर शर को दुनिया में उसी तरह हल्का बना दिया है जिस तरह वो रोज़े क़यामत मीज़ान में उनके अमल को हल्का बनाएगा।

एक सौ चौरान्नवे वॉ बाब

इन्साफ़ व अद्ल

1. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अलै. ने कि रसूल अल्लाह स. ने अपने ख़ुत्बे के आख़िर में फ़रमाया ख़ुशख़बरी हो उस शख़्स के लिये जिसके अख़्लाक़ पाकीज़ा हों जिसकी तबीयत साफ़ सुथरी हो। बातिनी कैफ़ियात में सलाहियत हो और ज़ाहिरी हालात में हुसन, अपनी ज़रूरत से ज़्यादा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और ज़रूरत से ज़्यादा बात करने से तबीयत को रोके और अपने नफ़्स को छोड़ कर दूसरों के हुक़ूक़ अदा करे।

2. फ़रमाया कौन है जो ज़ामिन हो मेरी लिये चार बातों से जन्नत में चार घरों का, ख़र्च करो राहे ख़ुदा में और इफ़्लास से न डरो और सला को दुनिया में आम करो यानी हर मुसलमान मर्द को सलाम करो और झगड़े को छोड़ दो चाहे तुम हक़ पर ही हो और अपनी ख़ुदी के साथ लोगों के दरमियान इन्साफ़ करो।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने सरदारे आमाल तीन चीज़ें हैं अपने नफ़्स के मुक़ाबिल दूसरों के दरमियान इन्साफ़ करना यहाँ तककि तू राज़ी हो जाए उस बात पर जो अपने लिए पसन्द करता है वही दूसरों के लिये पसन्द करे और माल से अपने भाई के साथ हमदर्दी करना और हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करना सिर्फ़ सुब्हानल्लाहे वल्हम्दो लिल्लाहे व लाइलाहा इल्लल्लाहो पर इक्तेफ़ा न करे बल्कि ख़ुदा ने जो हुक्म दिया है उसे बजा लाए और जिससे मना किया है उसे तर्क करे।

4. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया जो अपने नफ़्स पर दूसरों के दरमियान इन्साफ़ करता है ख़ुदा उसकी इज़्ज़त को ज़्यादा करता है।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने तीन आदमी रौज़े क़यामत ख़ुदा के लिए अक़रबुल ख़ल्क़ होंगे यहाँ तक के वो हिसाब से फ़ारिग़ हों अव्वल वो शख़्स कि जब उसे गुस्सा आये तो बावजूद कमज़ोर पर क़ुदरत रखने के उसपर ज़ुल्म न करे दूसरे वो जो आदमियों के दरमियान राबता हो तो उन दोनों में से किसी पर भी बक़द्रे जौ के ज़ुल्म न करे तीसरे वो के हक़ कहे चाहे उसमें उसका नफ़ा हो या ज़रर।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने मैं तुम्हें बताऊँ के ख़ुदा का सबसे बड़ा फ़र्ज़ उसकी मख़लूक़ पर क्या है फिर तीन चीज़ों का ज़िक्र जिनमें सबसे पहली बात ये थी के वो अपने नफ़्स के मुक़ाबिल लोगों के दरमियान इन्साफ़ करे।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने के रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया सरदारे आमाल अपने नफ़्स के मुक़ाबिल लोगों के दरमियान इन्साफ़ करता है और क़ुर्बतन इलल्लाह अपने भाई से हमदर्दी करे और हर हाल में ज़िक्रे ख़ुदा करना।

8. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलै. ने मैं तुम्हें बताता हूँ के अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ पर जो फ़र्ज़ किया है वो क्या है,

रावी ने कहा वो क्या है वो तीन बातें हैं अव्वल अपने नफ़्स के मुक़ाबिल दूसरों के दरमियान इन्साफ़, दूसरे अपने भाई से हमदर्दी तीसरे अल्लाह का ज़िक्र हम मक़ाम पर लेकिन सिर्फ़ सुब्हानल्लाहे वल्हम्दो लिल्लाहे व लाइलाहा इल्लल्लाह कह देना ही काफ़ी नहीं अगरचे ये भी ज़िक्र है बल्कि हर मौक़े पर ज़िक्रे ख़ुदा से ये मुराद है के अम्रे इलाही को अज़रूए इताअत बजा लाया जाय और जिस अम्र की नही की है उसके ख़िलाफ़ करने से मअसीयत समझकर गुरेज़ किया जाय।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कोई मोमिन तीन ख़ूसूसियतों से ज़्यादा सख़्त किसी ख़सलत में मुब्तिला नहीं किया गया पूँछा गया वो क्या हैं फ़रमाया हमदर्दी बावजूद क़ुदरतो ताक़त के और इन्साफ़ अपने नफ़्स से और अल्लाह की बहुत ज़्यादा याद लेकिन मेरी ये मुराद नहीं के सिर्फ़ सुब्हानल्लाहे वल्हम्दो लिल्लाह कहने पर इक्तेफ़ा करे ये बल्कि मुराद ये है कि जब हलाल रोज़ी मिले तो उसे याद करे और जब हराम से बचे उसे याद करे।

10. जब हज़रत रसूले ख़ुदा स. किसी जेहाद के लिये जा रहे थे एक बद्दू अरब ने आपके घोड़े की रकाब थाम कर कहा मुझे कोई ऐसी बात बताईए जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हूँ। फ़रमाया अगर इस अमल को दोस्त रखता है जिससे लोग तेरे पास आयें तो उसी जज़्बे के साथ उनके पास जा और इसको पसन्द न करे कि लोग तेरे पास आयें तो तू वैसा बर्ताउ उसके साथ न कर पस रकाब छोड़ कर मैं जाऊँ।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने अद्ल उस पानी से ज़्यादा मीठा है जो एक प्यासे को मिले और कैसा अच्छा अद्ल है जब हमेशगी के साथ हो अगरचे कम ही क्यों न हो।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जो शख़्स दूसरों के साथ इन्साफ़ करता है तो दूसरे उसके साथ इन्साफ़ करते हैं।

13. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अलै. ने ख़ुदा ने आदम को वही की मैं तेरे लिए चार बातें जमा करूँगा आदम ने कहा ऐ मेरे रब वो क्या हैं फ़रमाया एक मेरे लिये है एक तेरे लिये एक तेरे और मेरे दरमियान और लोगों के दरमियान। आदम ने कहा ख़ुदाया बयान कर ताकि मैं जॉनू फ़रमाया जो मेरे लिये है वो ये है के मेरी इबादत कर और किसी को शरीक न बना और तेरे लिए है वो ये है के मैं तेरे अमल की जज़ा दूँगा जिसकी तरफ़ तेरी अहतियाज होगी और जो चीज़ तेरे और मेरी दरमियान है वो ये है के तू दुआ कर मैं कुबूल करूँ और जो चीज़ तेरे और लोगों के दरमियान है वो ये है कि जो अपने लिए पसन्द करे वही दूसरों के लिए पसन्द कर जो अपने लिए नापसन्द करे वही औरों के लिये नापसन्द कर।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने अल्लाह से डरो और अद्ल करो अपने घर वालों के दरमियान क्योंकि तुम नापसन्द करते हो उन लोगों की हुकूमत को जो अद्ल नहीं करते।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने अद्ल शहद से ज़्यादा शीरीं है मस्के से ज़्यादा नर्म और मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार है।

16. फ़रमाया अबू जाफ़र अलै. ने के रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया तीन ख़सलतें जिसमें हों या उनमें से एक भी हो तो वो रोज़े क़यामत अर्शे इलाही के नीचे होगा जब कि कोई और साया न होगा पहले वो शख़्स जो अपनी तरफ़ से लोगों को वो दे जो दूसरों से मॉगना चाहता है दूसरे वो जो किसी को न आगे बढ़ाता है न पीछे हटाता है जब तक उसमें ख़ुदा की मर्ज़ी को न जान ले, तीसरे किसी बन्दए मुस्लिम को ऐब नहीं लगाता जबतक उस ऐब को अपने से दूर नहीं कर लेता और ये ऐब दूर नहीं हो सकता जब तक ये अपना ऐब उसपर ज़ाहिर न हो और इन्सान के लिये ये शग़्ल काफ़ी है के वो लोगों से तवज्जोह हटा कर सिर्फ़ अपने नफ़्स की तरफ तवज्जोह करे।

17. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने के रसूल अल्लाह ने फ़रमाया जो अपने माल में से फ़क़ीर की मद्द करता है और वो लोगों और अपने नफ़्स के दरमियान इन्साफ़ करता है तो वो सच्चा मोमिन है।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब दो शख़्स किसी अम्र में निज़ाअ करें तो चाहिए के हर एक उनमें से अपने साथी के मामले में इन्साफ़ करे और ये इन्साफ़ मक़बूल न होगा जब तक वो माल न दिया जाये जो बाएसे निज़ाअ हो।

19. फ़रमाया अबू जाफर अलै. ने की एक जन्नत है जिसमें न दाख़िल होंगे मगर तीन क़िस्म के लोग, एक उनसे से वो हैं जो अपने नफ़्स को हक़ पर क़ायम रहने का हुक्म दे।

20. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने अमल उस पानी से ज़्यादा मीठा है जिसको प्यासा पी ले और अद्ल चाहे कितना ही कम हो वो बड़ी वुस्अत वाला है।

एक सौ पन्चानवे वॉ बाब
लोगों से इस्तिग़ना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने मोमिन का शरफ़ क़ायमुल लैल होना और उसकी इज़्ज़त लोगों से बेपरवाही में है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने जब तुममें से कोई ये चाहे कि ख़ुदा से जो मॉगे वो उसको दे दे तो उसे चाहिए कि लोगों से बिल्कुल्लिया मायूस होकर अपनी उम्मीद का पूरा पूरा तअल्लुक़ ख़ुदा से ही रखे जब अल्लाह उसके दिल की बात मालूम करेगा तो फिर उससे बन्दा जो सवाल करेगा वो उसे पूरा करेगा।

3. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अलै. ने मैंने भरपूर नेकी को इस अम्र में देखा कि जो लोगों के पास है इन्सान उससे अपनी तमाअ को क़ताअ करे और जो कोई बन्दों से उम्मीद न रखेगा और तमाम उमूर में ख़ुदा ही से लौ लगाएगा तो ख़ुदा हर अम्र में

उसकी दुआ कुबूल करेगा।

4. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलै. को कहते सुना लोगों से अपनी हाजत को तलब करना अपनी इज़्ज़त का खोना है और हया का रूख़्सत करना है और जो कुछ लोगों के पास है उससे बेपरवा होना, मोमिन के लिये दीन में इज़्ज़त है और तमाअ वो तो ज़ाहिर ब ज़ाहिर फ़क़ीरी है।

5. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अलै. से कहा कि इस्माइल बिन दाऊद (मामून का ख़ज़ान्ची) को एक ख़त लिख दीजिए ताकि मुझे उससे कुछ मिल जाए फ़रमाया मुख़ालिफ़े मज़हब जैसे लोगों से तेरा मॉगना अच्छा नहीं समझता बेहतर ये है कि तू मेरे माल से लेकर ख़र्च कर।

6. इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने फ़रमाया मायूस होना उन चीज़ों से जो लोगों के कब्ज़े में हैं मोमिन के लिए दीन में बाएसे इज़्ज़त है क्या तूने हातिम का ये क़ौल नहीं सुना: जब मैंने लोगो से उम्मीद क़ताअ की तो इस्तिग़ना को हासिल कर लिया बशर्ते कि नफ़्स उसको पहचानता हो यानी ऊपरी दिल से न हो और लालच तो फ़क़ीरी है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन अलै. फ़रमाते थे कि चाहिए कि तेरे दिल में लोगों की तरफ़ एहतियाज और बेपरवाही इस तरह जमा हो कि तेरी एहतियाज उनकी तरफ़ कलाम की नर्मी और शगुफ़्ता रूई से हो और तेरी बेपरवाही उनसे आबरू की हिफ़ाज़त और बक़ाए इज़्ज़त के लिये हो।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया इसके बाद आपने ऊपर वाली हदीस बयान की।

एक सौ छियान्नवे वॉ बाब

सिलाए रहम

1. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अलै. से इस आयत

का मतलब, उस अल्लाह से डरो जिसके वसीले से तुम बाहम सवाल करते हो और सिलए रहम करो, अल्लाह तुम पर निगरान है, हज़रत ने फ़रमाया इरहाम से मुराद लोगों से रहम करना और उसे अज़ीम समझना है क्या तुम नहीं देखते कि खुदा ने अपने ज़िक्र के क़रीब इसका ज़िक्र किया है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने एक शख़्स रसूले ख़ुदा के पास आया और कहने लगा या रसूल अल्लाह मेरे ख़ानदान वालों ने मुझपर हमला किया, मुझे गालियाँ दीं, मैंने उनसे मेल जोल तर्क कर दिया। फ़रमाया इस सूरत में ख़ुदा तुम सबको छोड़ देगा। उसने कहा फिर मैं क्या करूँ? फ़रमाया क़तए रहम किया है उससे सिलए रहम कर, जिसने तुझे हक़ से महरूम किया है उसपर बख़शिश कर और जिसने तुझपर जुल्म किया है उसको माफ़ कर तूने ऐसा किया तो ख़ुदा की तरफ़ से तेरे लिए उनपर ग़ल्बा हासिल होगा।

3. फ़रमाया इमाम रज़ा अलै. ने कभी ऐसा होता है कि एक शख़्स सिलए रहम करता है और उसकी उम्र क़ब्ल सिलाए रहम करने के सिर्फ़ तीन साल बाक़ी रहती है ख़ुदा उसको तीस साल कर देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है।

4. फ़रमाया इमाम मो. बाक़र अलै. ने सिलए रहम आमाल को पाक करता है और माल को ज़्यादा कर देता है और बलाओं को दूर करता है और उसका हिसाब पेशे ख़ुदा आसान करता है और मौत में ताख़ीर करता है।

5. फ़रमाया इमाम मो. बाक़र अलै. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया मैं वसीयत करता हूँ अपनी उम्मत के मौजूदा लोगों को और जो उनमें ग़ाएब हैं उनको और अपने बाप की पुश्तों में हैं और जो अपनी माँओं के रहम में हैं उनको क़यामत तक के लिए वो अपने अज़ीज़ से सिलए रहम करें अगरचे वो एक साल की मसाफ़त पर हो क्योंकि वो अम्रे दीन में से है।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि सिलए रहम ख़ल्क़ को अच्छा करता है और हाथ को साहिबे करम बनाता है और नफ़्स को पाक करता है रिज़्क़ में ज़्यादती करता है और मौत में ताख़ीर करता है।

7. अबू बसीर रावी हैं कि मैं इमाम जाफ़रे सादिक़ अलै. से सुना कि आपने फ़रमाया कि यक़ीनन रहम (सिलए रहमी) अर्श के साथ मोअल्लक़ व मुत्तसिल है और (सिलए) रहम कहता है कि ऐ अल्लाह जिसने मुझसे तअल्लुक़ क़ायम किया तू उसके साथ (एहसान का) तअल्लुक़ क़ाएम कर और जिसने मुझसे क़तए तअल्लुक़ किया तू उससे तअल्लुक़ (रहम एहसान) को क़ता कर, और ये रहम, रहमे आले मोहम्मद अ. है और यही खुदा का फ़रमान है "वो लोग जिनको (तअल्लुक़ात) के क़ाएम रखने का हुक्म दिया है उन्हें क़ाएम रखते हैं" और हर साहिबे रहम का रहम है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने आज़ा में सबसे पहले क़यामत में गवाही देने वाला औरतों का रहम होगा वो कहेगा यारब जिसने सिलए रहम किया है तू आज दूर कर उस फ़ासले को जो तेरे और उसके दरमियान है और जिसने दुनिया में क़तए रहम किया है आज तू भी उससे क़ताए तअल्लुक़ कर।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने सिलए रहम करो अगरचे पानी पिलाकर ही हो और सिलए रहम की नीज़ सूरत ये है कि अपने अज़ीज़ की अज़ीयत से हाथ रोको, सिलए रहम से मौत में ताख़ीर होती है और ख़ानदान वाले मोहब्बत करते हैं।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि रोज़े क़यामत रहम मोअल्लक़ होगा अर्श के नीचे और कहेगा ख़ुदावन्दा जिसने मुझे मिलाया है तू भी उसे मिला और जिसने मुझे क़तअ किया तू भी उसे क़तअ कर।

11. फ़रमाया अबूज़र ने मैंने रूसल अल्लाह को कहते सुना

कि रोज़े क़यामत सिरात के दो किनारें होंगे एक रहम दूसरे अमानत जब सिलए रहम करने वाला और अमानत अदा करने वाला उसपर से गुज़रेगा तो जन्नत की तरफ़ रास्ता पाएगा और जब अमानत में ख़यानत करने वाला और क़ातेए रहम गुज़रेगा तो उसको उन दोनों आमाले क़बीह की वजह से कोई अमल फ़ायदा न देगा और सिरात नीची होकर उसे जहन्नम में गिरा देगी।

12. फ़रमाया अबू जाफ़र अलै. ने सिलए रहम ख़ल्क़ को अच्छा करता है और हाथ को साहिबे करम बनाता है और नफ़्स को पाक करता है और रिज़्क़ में ज़्यादती करता है और मौत में सबबे ताख़ीर होता है।

13. फ़रमाया मोहम्मद बाक़र अलै. ने सिलए रहम आमाल को पाक करता है मुसीबत दूर करता है दौलत को बढ़ाता है उम्र को ज़्यादा करता है रिज़्क़ में वुस्अत देता है और ख़ानदान वालों में मोहब्बत पैदा करता हे पस लोगों को अल्लाह से डरना चाहिए और सिलए रहम करना चाहिए।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने सिलए रहम और अच्छी हमसाएगी शहरों को आबाद करते हैं और उम्र को ज़्यादा करते हैं।

15. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने रसूल अल्लाह स. नेकियों में सबसे ज़्यादा अज़रूए सवाब सिलाए रहम है।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जो ख़ुश होना चाहे ताख़ीरे मौत पर, ज़्यादतीए रिज़्क़ पर उसको चाहिए सिलाए रहम करे।

17. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने सिलए रहम से बढ़कर कोई चीज़ उम्र को नहीं बढ़ाती अगर किसी की उम्र में सिर्फ़ तीन साल बाक़ी हों और वो सिलए रहम बजा लाए तो अल्लाह तीस साल बढ़ा देता है और उसको 33 साल कर देता है और

क़ातेए की उम्र अगर 33 साल हो तो उसके 30 साल कम करके उसकी उम्र तीन साल कर देता है।

यही हदीस इमाम रज़ा अलै. भी से मन्कूल है।

18. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलै. ने कि जब अमीरूल मोमिनीन बसरा जा रहे थे तो रबज़ा की तरफ़ से गुज़रे क़बीलए महलाब का एक शख़्स आपके पास आया और कहने लगा एक अमीरूल मोमिनीन मैंने अपनी क़ौम का क़र्ज़ा अदा किया उसके बाद मैंने अपनी क़ौम से मदद और हमदर्दी चाही तो उन्होंने सख़्त सुस्त कहना शुरू किया। पस आप उनको मेरी मदद का हुक्म दीजिए और उनको मेरी हमदर्दी पर उभारिए। फ़रमाया वो कहाँ हैं उसने कहा एक गिरोह तो यही है जिसे आप देख रहे हैं ये सुनकर आपने अपनी संवारी को तेज़ चलाया वो शुतर मुर्ग की तरह तेज़ चली, आपके असहाब अपनी तलब में पीछे चले। हज़रत आहिस्ता चलाया यहाँ तक कि वो लाग हज़रत से मिल गये आप उन लोगों के पास आए और सलाम के बाद उनसे पूँछा कि उन्होंने अपने साथी की हमदर्दी से क्यों गुरेज़ किया उन्होंने उसकी शिकायत और उसने उनकी। अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया आदमी को अपने ख़ानदान वालों से सिलए रहम करना चाहिए क्योंकि वो उसकी नेकी के ज़्यादा मुस्तहक़ हैं अगर उनके भाई पर कोई मुसीबत आ जाए तो ख़ानदान वालों को चाहिए कि उसकी मदद करें क्योंकि सिलए रहम करने वाले ऐसे ख़र्च करने वाले हैं जिनका अज्र मिलेगा और क़तए रहम करने वाले क़तए तअल्लुक़ करने वाले हैं और गुनाहगार हैं रावी कहता है इसके बाद अमीरूल मोमिनीन ने अपनी सवारी को आगे बढ़ाया और हज़रत की बात ने उनके दिल पर असर किया।

19. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया कोई शख़्स चाहे कितना ही साहिबे माल व

औलाद हो अपने क़बीले से दूरी अख़्तियार न करे और लाज़िम है कि उनसे मोहब्बत करे क्योंकि वो मोहताज है उनकी मोहब्बत उनकी बुज़र्गी और उनके दफ़िए का उनके हाथों से वो ज़्यादा सख़्त साबित होंगे उसकी हिफ़ाज़त और पुश्त पनाही के लिए और ज़्यादा मेहरबान होंगे बनिस्बत ग़ैरों के उसकी परेशॉखातरी को दूर करने में अगर उसपर कोई मुसीबत आ पड़ेगी या कोई अम्र ज़्यादा सख़्त नाज़िल होगा जो शख़्स अपने ख़ानदान से अपनी मद्‌द को रोकता है वो सिर्फ़ अपनी मद्‌द रोक कर अपने से बहुत से लोगों की मद्‌द रूकवाने का बाएस हो जाता है और अपने पास रहने वाले से नर्मी का सुलूक करता है तो उसका दोस्त उससे मोहब्बत करता है और जो किसी के साथ नेकी करता है तो जो उसने दुनिया में ख़र्च किया ख़ुदा उसका बदला देता है और आख़ेरत में दोगुना बदला देता है और किसी आदमी की सच्ची ज़बान अगर होती है तो अल्लाह तआला लोगों के दरमियान उसके माल में बेहतरी पैदा करता है जिसको वो खाता है और तर्के में छोड़ जाता है ऐसा शख़्स अपनी बुज़ुर्गी और इज़्ज़त को नहीं बढ़ा सकता जो अपने ख़ानदान से दूर रहे चाहे मालदार हो और चाहिए कि अपने भाई से दूरी अख़्तियार न करे अगरचे उससे जवॉमर्दी को न देखे ब सबब इसके इफ़्लास के और चाहिए कि ग़रीब रिश्तेदारों से माली इम्दाद देने में ग़फ़्लत न करे अगर मद्‌द रोकेगा तो आख़ेरत में उस माल से फ़ायदा न होगा अगर देगा तो नुक़्सान न होगा।

20. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलै. से कहा कि फ़लॉ ख़ानदान वाले एक दूसरे से नेकी से पेश आते हैं और सिलए रहम करते हैं। फ़रमाया उनके मालों में तरक़्क़ी होगी और हमेशा ख़ुश रहेंगे जब तक क़तए रहम न करें और जब ऐसा करेंगे तो ये तरक़्क़ी रूक जाएगी!

21. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि रसूल अल्लाह स.

ने फ़रमाया कि एक क़ौम फ़ासिक़ो फ़ाजिर होती हे और सिलए रहम नहीं करती उसके बाद वो सिलए रहम करने लगते हैं तो उनके अम्वाल में तरक़्क़ी होती है और उम्र तूलानी हो जाती है पस क्या ठिकाना है उन लोगों के सवाब का जो नेक हों और सिलाए रहम बजा लाएं।

22. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने कि अमीरूल मोमिनीन अलै. ने फ़रमाया कि सिलए रहम बजा लाओ अगरचे सलाम ही से क्यों न हो अल्लाह तआला फ़रमाता है: उस अल्लाह से डरो जिससे तुम सवाल करते हो और अपने ज़विल इरहाम से सिलए रहम करो बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है।

23. रावी कहता है कि एक रोज़ अबू अब्दिल्लाह अलै. और अब्दुल्लाह बिन हसन में सख़्त गुफ़्तगू हुई यहॉ तक कि दोनों की आवाज़ें बुलन्द हुईं लोग जमा हो गये शाम के वक़्त दोनों जुदा हो गये। सुब्हा के वक़्त मैं एक ज़रूरत से निकला मैंने देखा के हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अब्दुल्लाह बिन हसन के दरवाज़े पर खड़े हैं और लौंडी से कह रहे हैं कि अबू मोहम्मद से कहो बाहर निकलें। वो बाहर आये तो आप अ. से पूँछा आप सुब्हा ही सुब्हा कैसे आए फ़रमाया रात मैंने किताबुल्लाह में एक आयत पढ़ी जिसने मुझे बेचैन कर दिया उन्होंने पूँछा वो कौन सी आयत है फ़रमाया खुदा फ़रमाता है जो लोग मिलाते हैं उस चीज़ को जिसके मिलाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और अल्लाह से डरते हैं तेरे हिसाब से ख़ौफ करते हैं। अब्दुल्लाह बिन हसन ने कहा आपने सही फ़रमाया मैंने गोया उस आयत को किताबे खुदा में पढ़ा ही नहीं था उसके बाद दोनों ने मुआन्का किया और रोए।

24. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा मेरा चचा ज़ाद भाई है मैंने उससे सिलए रहम किया उसने मुझसे क़तए रहम किया। मैंने इरादा किया है कि जब उसने मुझसे क़तए रहम किया है तो मैं भी उससे क़तए रहम करूँगा फ़रमाया

जब तुमने उससे सिलए रहम किया और उसने क़तए रहम किया तो ख़ुदा दोनों को मिला देगा लेकिन अगर तुम दोनों क़तए रहम करोगे तो अल्लाह तुम दोनों को जुदा रखेगा।

25. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलै. ने मैं दोस्त रखता हूँ इस बात को कि अल्लाह इस बात को जान ले कि मैंने सिलए रहम के लिये अपनी गर्दन झुका दी है और सब्क़त करता हूँ इस अम्र में कि लोगों से सिलए रहम करूँ क़ब्ल इसके कि वो फ़राखिए मईशयत की बिना पर मुझसे मुस्तग़नी हो जाएं।

26. फ़रमाया इमाम रज़ा अ. ने कि सिलए रहम आले मोहम्मद अ. का मोअल्लक़ है अर्श पर वो कहता है ख़ुदावन्दा अपनी रहमत से क़रीब कर उसको जिसने मुझसे सिलए रहम किया और दूर रख उसको जिसने क़तए तअल्लुक़ किया मुझसे। ये सिलए रहम जारी है इसके बाद इरहामे मोमिनीन में ये आयत पढ़ी। उस अल्लाह से डरो जिससे तुम सवाल करते हो और सिलाए रहम बजा लाओ।

27. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया वो सिलए रहम करते हैं जिसका हुक्म अल्लाह ने दिया है फ़रमाया इससे मुराद तेरे क़राबतदार हैं।

28. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूँछा यसअलूना बेअमरिल्लाह फ़रमाया ये नाज़िल हुई आले मोहम्मद स. की इमामत की तस्दीक़ और उनकी मोहब्बत के बारे में और कभी इससे मुराद तुम्हारे क़राबतदारों से सिलए रहम मुराद होती है फिर फ़रमाया तुम उन लोगों में से न बनो जो किसी शै के मुतअल्लिक़ कहते हैं कि ये तो एक ही बात है यानी हर जगह एक ही मुराद लेते हैं।

29. फ़रमाया अली इब्निल हुसैन अ. ने रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया कि जो चाहता है कि उसकी उम्र दराज़ हो और उसका

रिज़्क़ ज़्यादा हो तो उसको चाहिए कि सिलए रहम करे रहम अपनी ज़बान से रोज़े क़यामत कहेगा ख़ुदावन्द रहमत नाज़िल कर उसपर जिसने सिलए रहम किया और रहमत दूर रख उसको जिस ने क़तअ रहम किया वो शख़्स जो अपनी नेकी की बिना पर ये समझेगा कि उसको बहिश्त मिलेगा तो उसके पास आयेगा वो रहम जो उसने क़तए किया होगा और वो उसकी वजह से जहन्नम में डाला जाएगा।

30. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूँछा कि मेरे कुछ क़राबतदार हैं जो मज़हबे इमामिया नहीं रखते उनका कोई हक़ मेरे ऊपर है फ़रमाया हॉ हक़्क़े रहम को कोई चीज़ क़तअ नहीं करती और अगर वो तुम्हारे हम मज़हब हों तो फिर उनके दो हक़ हैं एक रिश्तेदार दूसरे इस्लाम।

31. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि सिलए रहम और नेकी हिसाब को हल्का कर देते हैं और गुनाहों से बचाते हैं पस तुम सिलए रहम करो और अपने भाईयों से नेकी करो अगरचे वो सलाम या जवाबे सलाम देने से हो।

32. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने सिलए रहम आसान करता है हिसाब को रोज़े क़यामत और उम्र को ज़्यादा करता हे और बुराईयों से बचाता है और रात को सदक़ा देना ग़ज़बे ख़ुदा से महफ़ूज़ रखता है।

33. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि सिलए रहम आमाल को पाक करता है माल को बढ़ाता है और हिसाब को हल्का करता और बला को दूर करता है।

एक सौ सतान्नवे वॉ बाब

वालिदैन से नकी

1. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा इस आयत के मुतअल्लिक़ वालिदैन से एहसान करो। इस एहसान से क्या मुराद है फ़रमाया एहसान से मुराद ये है कि

उनसे अच्छी तरह मिलो और उन्हें किसी शै के मॉगने की तकलीफ न दो जिसकी उन्हें ज़रूरत हो चाहे वो मालदार ही क्यों न हो क्या ख़ुदा ने नहीं फ़रमाया तुम हरगिज़ नेकी न पाओगे जब तक अपनी महबूब चीज़ सर्फ़ न करो फिर हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा फ़रमाता है अगर उन दोनों में से कोई एक बूढ़ा हो जाए या दोनों बूढ़े हो जाऐं तो उनसे उफ़ न कहो उनको झिड़को मत और फ़रमाया कि अगर वो तुम को सरज़निश करें तब भी उफ़ न करो और अगर वो तुम्हें मारें भी तो भी उन्हें न झिड़को और उनसे बहुत अदब से बात करो और ये भी फ़रमाया अगर वो तुम को मारें तो उसने कहा ख़ुदा आप दोनों की मग़फ़िरत करे सबसे अच्छा कलाम यही है और ख़ुदा ने फ़रमाया है: आजिज़ी के साथ उनके सामने झुक जाओ। और हज़रत ने फ़रमाया उनकी तरफ़ रहम और नर्म दिली से देखो और उनकी आवाज़ पर अपनी आवाज़ ऊँची न करो और न अपना हाथ उनके हाथ से बलन्द करो और अपना क़दम उनके क़दम से आगे न बढ़ाओ।

2. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना एक शख़्स रसूल अल्लाह स. के पास आया और कहने लगा मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये इरशाद फ़रमाया अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक न कर चाहे तू आग में जलाया जाए या सख़्त सज़ा दी जाए मगर जब कि तेरा दिल ईमान की तरफ़ से मुत्मईन हो और वालिदैन की इताअत कर उनसे नेकी कर चाहे वो ज़िन्दा हों या मुर्दा अगर हुक्म दें कि अपनी बीवी को तलाक़ दे और उसके माल से दस्तकश हो तो ऐसा कर गुज़र ये अलामते ईमान है।

3. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत एक चीज़ मिस्ले शुतुर मुर्ग आएगी और वो तेज़ी से धक्का देगी पुश्ते मोमिन को और उसे जन्नत में दाख़िल करेगी। मलाएका

कहेंगे ये माँ बाप के साथ नेकी का बदला है।

4. फ़रमाया रावी ने कौन सा अमल अफ़ज़ल है फ़रमाया हज़रत ने वक़्त पर नमाज़ और वालिदैन से नेकी और जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह।

5. हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया किसी ने रसूल अल्लाह स. से पूछा कि बाप का हक़ औलाद पर क्या है फ़रमाया बाप का नाम न ले उसके आगे न चले और उसके सामने न बैठे और उसकी गाली का सबब न बने।

6. रावी कहता है कि मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. की ख़िदमत में हाज़िर था कि आपने अब्दुल वाहिदुल्अन्सारी से वालिदैन से नेकी के बारे में ये आयत बयान फ़रमायी – और वालिदैन से नेकी करो, हमने गुमान किया कि ये सूरः बनी इस्राईल की है और ख़ुदा ने ये फ़ैसला कर दिया है कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो और वालिदैन से एहसान करो जब मैंने सवाल किया तो फ़रमाया कि ये सूरः लुक़्मान में है। हमने इन्सान को वालिदैन से नेकी की वसीयत की और अगर वो ज़ोर दें और मजबूर करें इस अम्र पर कि तू मेरा शरीक क़रार दे उस चीज़ को जिसका तुझे इल्म ही नहीं है तो इस सूरत में उनकी इताअत न करें ये अम्र अज़ीम तर है इससे कि उनसे सिलए रहम किया जाए और उनका हर हाल में लिहाज़ रखा जाए दरॉ सूरत कि वो मुशरिक बनाना चाहें। फ़रमाया नहीं हुक्म है उनसे सिलए रहम का और अगर वो शिर्क पर ज़ोर दें तो नहीं है उनका हक़ मगर तअज़ीम।

तौज़ीह : ये हदीस मुश्किल तरीन अहादीस में से हे अल्लामा मजलिसी अ.र. मिरअतुल उक़ूल में तहरीर फ़रमाते हैं कि इस हदीस में लफ़्ज़ी और मअनवी दोनों तरह के इशकाल हैं। लफ़्ज़ी सूरत ये है कि वालिदैन की फ़ज़ीलत में क़ुर्आन के अन्दर बहुत सी आयतें हैं मगर उनमें से तीन इस मक़ाम पर मुनासिब हैं (1)

बनी इस्राईल व क़ज़ा रब्बेका .... व बिल वालेदैने अहसाना (2) दूसरे सूरः अन्कबूत व वसयल इन्सान.......क़ला तुतेआ होमा (3) तीसरे सूरः लक़मान – व वस्सैनल्इन्सान ल्इन्साना .... फ़िद्दुनिया मारूफ़ा इन तीनों आयतों में से पहली आयत बनी इस्राईल से तमाम कुर्आनों में पाई जाती है लेकिन इस हदीस में जो इस आयत को सूरः लुक़मान का ज़ाहिर किया गया है वो इन अल्फ़ाज़ से सुरः लुक़मान में नहीं और रावी ने इसकी तसरीह बनी इस्राईल के साथ की है फ़िर इमाम ने क्यों फ़रमाया कि ये आयत सूरः लुक़मान में नहीं है।

रहा मअनवी इशकाल तो इसकी सूरत ये है कि रावी ने बिल वालिदैने एहसाना के मुतअल्लिक़ ज़ाहिर किया कि ये आयत बनी इस्राईल में है हज़रत ने सूरः लुक़मान का ज़िक्र क्यों किया और इसकी सूरत ये मालूम होती हे कि हज़रत की मुराद ये न थी कि बिल वालेदैने अहसाना के अल्फ़ाज़ सूरः लुक़मान में हैं बल्कि आपने लफ़्ज़े एहसान पर नज़र रखते हुए फ़रमाया कि वालिदैन से एहसान की ताकीद और जगह भी कुर्आन में है रावी ने हज़रत का मफ़हूम समझने में धोखा खाया है उसने समझा कि हज़रत की मुराद ये है कि ये आयत सूरः लुक़मान में है अगरचे लफ़्ज़ों में इन अल्फ़ाज़ का ज़िक्र नहीं है और ये भी एहतेमाल है कि हज़रत ने वालिदैन के साथ एहसान करने को ताकीदन फ़रमाया तो रावी ने समझा ये कि ये मज़मून भी सूरः बनी इस्राईल में है और इस पर हज़रत ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं मेरी मुराद लुक़मान की आयत से है।

और ये भी एहतेमाल है कि सुरः लुक़मान में व वस्सैनल इन्सान बिलवालिदे के बाद लफ़्ज़े हसना क़र्आते आईम्मा में साबित हो हज़रत ने दोनों सूरतों का मज़मून चूँकि एक साथ ज़िक्र किया है लेहाज़ा रावियों ने अमदन या सहवन अख़्तिसार किया और तफ़्सील से बयान न किया तीसरे इन लोगों का

गुमान ये था कि एहसान का ज़िक्र सिर्फ़ सूरः बनी इस्राईल ही में है हज़रत ने सिर्फ़ एहसान को पेशे नज़र रख कर फ़रमाया सुरः लुक़मान में भी है।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने किस चीज़ ने तुममें से किसी को मॉ बाप से नेकी करने को मना किया ख़्वाह वो जिन्दा हों या मुर्दा और वो नेकी ये है कि उनकी तरफ़ से नमाज़ पढ़े सदक़ा दे, हज करे, रोज़ा रखे जो कोई अपने मॉ बाप के साथ ऐसी नेकी करेगा अल्लाह उसको उस नेकी और सिलए रहम के बदले में ख़ैरे कसीर अता करेगा।

8. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अ. से कहा मैं दुआ करूँ अपने वालिदैन के लिए ऐसी हालत में कि वो मज़हबे हक़ न रखते हों फ़रमाया दुआ कर और उनकी तरफ़ से सदक़ा दे और अगर वो ज़िन्दा हों तो बावजूद हक़ पर न होने के उनकी मुदारात कर रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया मैं रहमत के साथ भेजा गया हूँ न कि नाफ़रमानी की तालीम के लिए।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स ने रसूल अल्लाह स. से पूछा मैं किस की फ़रमाबरदारी करूँ फ़रमाया अपनी मॉ की उसने फिर कहा फ़रमाया अपनी मॉ की उसने फिर कहा फ़रमाया अपनी मॉ की उसने फ़िर कहा फ़रमाया अपनी मॉ की उसने फिर कहा फ़रमाया अपने बाप की।

10. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स ने रसूल अल्लाह स. से आकर कहा मैं जेहाद की तरफ़ राग़िब हूँ फ़रमाया राहे ख़ुदा में जेहाद कर अगर क़त्ल हो जाएगा तो ज़िन्दा रहेगा तो ख़ुदा की तरफ़ से रिज़्क़ पाएगा और अगर अपनी मौत मरेगा तो तेरा अज्र अल्लाह पर होगा और जेहाद से ज़िन्दा लोट आया तो तेरे सारे गुनाह यौमे विलादत से अबतक माफ़ हो जाएंगे उसने कहा या रसूल अल्लाह स. मेरे मॉ बाप बूढ़े हैं और मुझ से मोहब्बत करते हैं वो मेरा जाना नपसन्द करते हैं

फ़रमाया रूक जा अपने मॉ बाप के पास रह। क़सम उस ज़ाते पाक की जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि उनका तुझ से एक दिन या एक रात का उन्स एक साल के जेहाद से बेहतर है।

11. रावी कहता है कि मैं नसरानी था फिर मैं इस्लाम ले आया और मैंने हज किया उसी ज़माने में हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के पास आया और कहा मैं पहले नसरानी था अब मुसलमान हूँ फ़रमाया तूने इस्लाम में क्या बात देखी। फ़रमाया अल्लाह का ये क़ौल बाएसे हिदायत हुआ। ऐ रसूल स. तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या है और ईमान क्या है लेकिन हमने तो इस नबूवत को एक नूर क़रार दिया और इससे जिसको हम चाहते हैं हिदायत करते हैं। हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा ने तुझे हिदायत की फिर तीन बार फ़रमाया ख़ुदाया इसे साबित क़दम रख फ़िर फ़रमाया दरयाफ़्त कर जो चाहता है। मैंने कहा मेरे बाप और मॉ नसरानी हैं और मेरे ख़ानदान वाले भी और मेरी मॉ अन्धी है क्या मैं उसके साथ रहूँ और उनके बर्तनों में खाऊॅ पीऊॅ फ़रमाया क्या वो सुवर का गोश्त खाते हैं मैंने कहा नहीं। फ़रमाया कोई मुज़ाएक़ा नहीं तू अपनी मॉ की निगरानी (ख़िदमत) कर और ब नेकी पेश आ और अगर वो मर जाऐ तो उसको दूसरे के सिपुर्द न करना तू ख़ुद तमाम उमूर बजा लाना और किसी को ख़बर न करना कि तू मेरे पास आया था यहॉ तक कि तू मिना में इन्शाल्लाह मेरे पास पहुॅच जाए। रावी कहता है कि जब मैं हज़रत के पास मिना में आया तो मैंने देखा कि हज़रत के गिर्द लोग जमा हैं गोया हज़रत मोअल्लिमे सिबयान हैं कोई कुछ पूछता है कोई कुछ, जब मैं कूफ़े वापस आया तो मैंने अपनी मॉ से मेहरबानी का बर्ताव किया मैं उसे खाना खिलाता था और उसके कपड़ों और सर से जुएं चुनता था उसकी ख़िदमत करता था उसने मुझसे कहा जब तू मेरे दीन पर था तो तूने कभी ऐसा

न किया था जब से तूने हमारा दीन छोड़ा और इस्लाम में दाख़िल हुआ मैंने ऐसा अमल तुझसे कभी न देखा। मैंने कहा हमारे नबी की औलाद में एक शख़्स हैं उन्होंने ऐसा हुक्म दिया है उसने कहा क्या ये शख़्स नबी है मैंने कहा नहीं वो नबी के फ़रज़न्द हैं उसने कहा ये तो नबी ही हैं ऐसी नसाएह तो अम्बिया ही करते हैं मैंने कहा हमारे नबी के बाद कोई नबी आने वाला नहीं ये उनके फ़रज़न्द हैं उसने कहा बेटा तेरा दीन बेहतरीन दीन है मुझे उसके मुतअल्लिक़ बता मैंने उसे समझाया तो वो मुसलमान हो गयी। मैंने उसका अहकामे दीन की तालीम दी उसने ज़ोहर व अस्र व मग़रिब की और इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर वो बीमार पड़ी उसने मुझसे कहा जो तूने मुझे तालीम दी है उसका एआदा कर, मैंने एआदा किया उसने इक़रार किया और मर गयी। जब सुब्हा हुई तो मुसलमान जमा हुए उसको गुस्ल दिया, मैंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसे क़ब्र में उतारा।

तौज़ीह : इस हदीस से बज़ाहिर ये मालूम होता है कि इसाईयों के बर्तनों में खाना जाएज़ है लेकिर इमाम का मक़सद उन बर्तनों से है जिनमें खाने का कोई जुज़ लगा हुआ न हो साफ़ सुथरे हों उन्हें आसानी से पाक कर सकते हों। अल्बत्ता अगर सुवर का गोश्त खाया हो तो जब तक सात बार मिट्टी से ख़ूब मांझा न जाय उनमें खाना जाएज़ न होगा इसी तरह अगर शराब पीने का ज़र्फ़ हो तो उसे भी मिट्टी से मांझना ज़रूरी है मगर चूँके शराब उड़ जाती है लेहाज़ा तीन बार मिट्टी से मांझना काफ़ी होगा रहे सालन या दूध वग़ैरा के बर्तन तो उनको अगर साफ़ सुथरे हों तो पानी डाल कर ताहिर किया जा सकता है।

इस हदीस से इमाम के एक मोजिज़े का भी इज़हार हुआ और वो इस तरह कि आपने एक नो मुस्लिम से फ़रमाया कि जब तेरी माँ मर जाये तो उसकी तजहीज़ व तकफ़ीन ख़ुद करना ग़ैरो (नसरानियों) के सिपुर्द न करना। उससे मालूम हुआ हज़रत

बइल्मे इमामत जानते थे कि उसकी माँ मुसलमान होकर मरेगी।

12. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. को ख़बर दी अपने बेटे इस्माईल की, उसकी नेकी की जो उसने मेरे साथ की। हज़रत ने फ़रमाया मैं उसको पहले भी दोस्त रखता था अब और ज़्यादा दोस्त रखता हूँ। रसूल अल्लाह स. के पास हज़रत की रिज़ाई बहन आई हज़रत उसको देखकर बहुत ख़ुश हुए और अपना बालापोश (चादर) उसके लिए बिछाया और उसपर उसे बिठाया और उससे बातें कीं और उसके चेहरे को देखकर ख़ुश हुए उसके बाद वो चली गयी। उसका भाई आया हज़रत ने उसके साथ वो अमल न किया जो उसकी बहन के साथ किया था उसका सबब पूछा फ़रमाया वो अपने भाई से ज़्यादा अपने वालिदैन से नेकी करने वाली है।

13. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा कि मेरा बाप बहुत बूढ़ा हो गया है और कमज़ोर है जब क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत होती है तो हम उसे उठाते हैं फ़रमाया अगर मुमकिन हो तो ये काम ख़ुद कर, नौकरों पर न छोड़ अपने हाथ से लुक़्मा बनाकर उसके मुँह में दे कि ये अम्र रोज़े क़यामत तेरे लिए सिपर होगा।

14. एक शख़्स ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कहा मेरे माँ बाप दोनों हमारे मज़हब के मुख़ालिफ़ हैं हज़रत ने फ़रमाया उनके साथ ऐसी नेकी कर जैसे उन मुसलमानों से की जाती है जो हमको दोस्त रखते हैं।

15. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि तीन चीज़ें है जिनके तर्क की ख़ुदा ने इजाज़त नहीं दी अव्वल अदाए अमानत ख़्वाह अमानत रखने वाला नेक हो या बद, दूसरे अहद ख़्वाह नेक से हो या बद से तीसरे वालिदैन से नेकी ख़्वाह नेक हों या बद।

16. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने सुन्नत और नेकी

ये है कि एक शख़्स अपनी कुन्नियत अपने बाप के नाम से रखे यानी इब्ने फ़लाँ।

17. फ़रमाया इमाम अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स रसूल अल्लाह के पास आया और वालिदैन से नेकी के मुतअल्लिक़ पूछा फ़रमाया माँ से नेकी कर, माँ से नेकी कर, माँ से नेकी कर, बाप से नेकी कर, बाप से नेकी कर, बाप से नेकी कर, माँ का ज़िक्र बाप से पहले किया।

18. फ़रमाया इमाम अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स रसूल अल्लाह के पास आया और कहने लगा मेरी एक लड़की थी मैंने उसे पाला पोसा जब जवान हुई तो उसे लिबास और ज़ेवर से आरास्ता करके एक कुऐ पर लाया और उसमे धकेल दिया क़अर चाह में से मैंने उसकी आवाज़ सुनी, ऐ मेरे बाप मेरी मदद कर। पस उसका कफ़्फ़ारा क्या है हज़रत ने फ़रमाया तेरी माँ ज़िन्दा है उसने कहा नहीं फ़रमाया ख़ाला है उसने कहा है फ़रमाया उसके साथ नेकी कर वो बमंज़िला तेरी माँ के है जो कुछ तूने किया है यही उसका कफ़्फ़ारा है।

अबू ख़दीजा ने पूछा इमाम जाफ़रे सादिक़ से ऐसा कब उस शख़्स ने किया था फ़रमाया अहदे जाहिलियत में क़ब्ल आँहज़रत की बेअसत के। मुशरिकीने अरब अपनी लड़कियों को उस ख़ौफ़ से क़त्ल कर दिया करते थे कि अगर वो क़ैद हो गयीं तो दूसरी क़ौम में जाकर बच्चा जनेंगी।

तौज़ीह : चूँकि ये अमल उस शख़्स ने इस्लाम लाने से पहले ज़मानए जाहिलियत में किया था लेहाज़ा शरअे मोहम्मदी की रू से उसको सज़ा नहीं दी जा सकती इसलिए हज़रत ने ये कफ़्फ़ारा तजवीज़ फ़रमाया।

19. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से पूछा क्या बेटा अपने बाप की ख़िदमत का बदल दे सकता है फ़रमाया दो चीज़ों से अगर बाप गुलाम है तो आज़ाद करा दे और अगर

मक़रूज़ है तो उसके क़र्ज़ अदा करा दे।

20. फ़रमाया जाबिर रजि. ने कि एक शख़्स ने रसूल अल्लाह स. से कहा मैं मर्दे जवान और साहिबे कुव्वत हूँ जेहाद करना पसन्द करता हूँ लेकिन मेरी माँ इसको पसन्दर नहीं करती। हज़रत फ़रमाया ने वापस जा। खुदा की क़सम उसकी मोहब्बत सिर्फ़ एक रात की राहे खुदा में तेरे एक साल के जेहाद से बेहतर है।

21. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया जो शख़्स अपने माँ बाप की हयात में नेकी करने वाला हो लेकिन मरने के बाद उनका क़र्ज़ अदा न करे और उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करे तो खुदा उसको आक़ लिखता है और कभी ऐसा होता है कि एक शख़्स माँ बाप की ज़िन्दगी में आक़ होता है क्योंकि उससे उनके लिए नेकी होती है लेकिन उनके मरने पर उनका क़र्ज़ अदा करता है और उनके लिए इस्तिग़फ़ार करता है तो खुदा उसको नेकों में लिखता है।

एक सौ अट्ठान्नवे वॉ बाब
उमूरे मुस्लिमीन में सई करना उनको नसीहत करना और नफ़ा पहुँचाना

1. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद ने रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जो इस हाल में सुब्हा करे कि मुसलमानों के उमूर में इज़्हारे ग़मख़्वारी न करे तो वो मुसलमान नहीं।

2. और इन्हीं असनाद के साथ रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया कि लोगों में सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार वो है जो तमाम मुसलमानों के साथ साफ़ सीना और फ़राख़ दिल रखता है।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने ऊपर लाज़िम क़रार दे, लोगों को कुर्बतन इलल्लाह नसीहत करना कि पेशे खुदा इससे बेहतर अमल न होगा।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने उमूरे मुस्लिमीन में

ग़मख़्वारी ओर हमदर्दी नहीं करता वो मुसलमान नहीं।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने जिसने इस हाल में सुब्हा की कि वो उमूरे मुस्लिमीन से हमदर्दी नहीं करता तो वो उनमें से नहीं और जो किसी को फ़रयाद करते मुसलमानों से सुने और उसको जवाब न दे तो वो मुसलमान नहीं।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया मख़लूक़ अल्लाह का कुन्बा है पस ख़ुदा के नज़दीक महबूब वो है जो अयालुल्लाह को नफ़ा पहुँचाए और ख़ानदान वालों को ख़ुश रखे।

7. रावी कहता है मुझसे बयान किया उस शख़्स ने जिसने सुना हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कि किसी ने रसूल अल्लाह स. से पूछा कि ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कौन है जो लोगों को सबसे ज़्यादा नफ़ा पहुँचाए।

8. रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया जो मुसलमान को पानी के तूफ़ान से या आग से जलने से बचाए तो जन्नत उसपर वाजिब होती है।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने आयतः "लोगों से अच्छी बात कहो" और जो कहो वो अच्छी बात कहो यहॉ तक कि तुम जान लो कि वो कैसा है यानी फ़ायदे की बात कहो, बाद में उसका नफ़ा तुमको मालूम होगा।

10. आयतः कूलूलिन्नासे हसना के मुतअल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया ऐसी बेहतर से बेहतर बात कहो जिसे तुम चाहते हो कि तुम्हारे लिए कही जाए।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ "उसने मुझे मुबारक बनाया जहॉ कहीं भी हूँ" कि मुबारक से मुराद बहुत ज़्यादा नफ़ा पहुँचाने वाला है।



एक सौ निन्नानवे वॉ बाब

बूढ़ों की तअज़ीम

1. हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने फ़रमाया बूढ़े मुसलमान की तअज़ीम करना ऐसा है गोया ख़ुदा की तअज़ीम करना।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने बड़ों की तअज़ीम करो और उनसे सिलए रहम करो और सबसे बड़ा अफ़ज़ल सिलए रहम ये है कि तकलीफ़ उनकी दूर करो।

3. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद अ. ने जो बड़ों की इज़्ज़त नहीं करता छोटों पर रहम नहीं करता वो हममें से नहीं।

दो सौ वॉ बाब

मोमिनीन का आपस में भाईचारा

1. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद अ. ने मोमिनीन एक दूसरे के भाई हैं जैसे एक मॉ बाप से अगर उनमें से किसी एक की रग पर तकलीफ़ हो तो दूसरों को चाहिए कि उसकी वजह से बेदार रहें।

2. जाबिर जअफ़ी कहते हैं मैं एक रोज़ इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के सामने दिल गिरफ़्ता था। मैंने हज़रत से कहा मैं आप पर फ़िदा हूॅ बअज़ औक़ात बग़ैर किसी मुसीबत या हादसे के मैं ख़ुद बख़ुद ऐसा रंजीदा हो जाता हूॅ कि मेरे घर वाले और मेरे दोस्त पहचान जाते हैं। हज़रत ने फ़रमाया एक जाबिर अल्लाह ने मोमिनीन को जन्नत की मिट्टी से पैदा किया है और उसमें अपनी कुदरत से एक हवा को चलाया है चूॅकि मोमिन मोमिन का भाई बिलहाज़ एक मॉ बाप के है लेहाज़ा जब ये हवा चलती है किसी शहर में ग़म के साथ तो लोग महज़ून होते हैं उससे।

तौज़ीह : अल्लामा मजलीसी मिरअतुल उकूल में तहरीर फ़रमाते हैं कि ये हदीस सहीह है

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन मोमिन का भाई है उसका मुहाफ़िज़ और उसका रहनुमा है उससे ख़यानत नहीं करता, उसको धोखा नहीं देता उसपर जुल्म नहीं करता और वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

4. अबू बसीर कहते हैं कि फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद न कि मोमिन मोमिन का भाई है और दोनों एक बदन की मानिन्द हैं अगर एक उज़ू को तकलीफ़ होती है तो सारा बदन उसका मुताज़्ज़ी हो जाता है दो मोमिनों की रूह एक ही रूह होती है और रूहे मोमिन ख़ुदा (ख़लीफ़तुल्लाह) से उससे ज़्यादा लम्बी हुई रहती है जितनी सूरज की किरन से।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मुसलमान, मुसलमान का भाई है उसकी ऑख इसकी दलील है (रहनुमा) उससे ख़यानात नहीं करता, उसे धोखा नहीं देता उसपर जुल्म नहीं करता, उसकी तकज़ीब नहीं करता उसकी ग़ीबत नहीं करता।

6. रावी कहता है मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स आया हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम इसको दोस्त रखते हो मैंने कहा हॉ। उन्होंने मुझसे कहा भला तुम क्यों न दोस्त रखोगे ऐसे शख़्स को जो तुम्हारा भाई है दीन में तुम्हारा शरीक है दुश्मन के मुक़ाबले में तुम्हारा मद्दगार है और उसका रिज़्क़ तुम्हारे ग़ैर पर है।

7. रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से सुना मोमिन, मोमिन का भाई है बलेहाज़ अपने बाप और मॉ के क्योंकि अल्लाह ने मोमिनीन को जन्नत की मिट्टी से पैदा किया है और उसकी सूरत में नसीमे जन्नत को लहरा दिया है लेहाज़ा बाप और मॉ के वो आपस में भाई हैं।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन, मोमिन का भाई है उसकी ऑख उसका रहनुमा है उससे ख़यानत नहीं करता, उसपर जुल्म नहीं करता उसकी ग़ीबत नहीं करता और

न वायदा ख़िलाफ़ी करता है।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन दूसरे मोमिन का ख़ादिम होता है पूछा ये कैसे? फ़रमाया उससे मुराद ये है कि दूसरे को फ़ायदा पहुँचाता है।

10. रावी कहता है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया कुछ मुसलमान सफ़र कर रहे थे कि रास्ता भूल गये और प्यास का उनपर ग़ल्बा हुआ। उन्होंने एक दरख़्त के नीचे पनाह ली उनके पास एक बूढ़ा सफ़ैद लिबास पहने आया और कहने लगा मैं उन जिनों में से हूँ जिन्होंने रसूलुल्लाह से बैअत की है मैंने रसूलुल्लाह से सुना है मोमिन, मोमिन का भाई है उसकी ऑख उसका रहनुमा है पस ये कैसे मुमकिन है कि मेरे मौजूदगी में आप लोग मर जॉए।

11. रावी फ़ज़ल बिन यसार से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना है कि मुसलमान मुसलमान का भाई है वो उसपर जुल्म नहीं करता, उसकी ग़ीबत नहीं करता, उससे ख़यानत नहीं करता, उसे महरूम नहीं करता। ज़बअई कहता है कि मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा कि मैंने फ़ुज़ैल को ऐसे कहते सुना है मैंने कहा हॉ उसने कहा मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना है कि मुस्लिम मुस्लिम का भाई है, वो न जुल्म करता है न धोखा करता है न उसकी ग़ीबत करता है न उसे महरूम करता है।

दो सौ एक वॉ बाब

किसी दावेदारे इमान का हक़ वाजिब है

1. रावी कहता है मैंने सुना अबू अब्दिल्लाह अ. से कि आपसे सवाल किया गया कि वो इमान जिसपर हक़ अदा करना और उख़ूवत करना वाजिब होता है वो कैसा है किस सूरत में उसका इसबात होता है और किस सूरत में इबताल? फ़रमाया ईमान की दो सूरतें हैं एक ये कि जैसा ईमान कोई ज़ाहिर करता

है अगर उसके अमल से भी तुम पर वैसा ही साबित हो तो उसकी मोहब्बत व उख़ूवत तुम्हारे लिए ज़रूरी है जबतक कि जैसा उसने बयान किया है उसके ख़िलाफ़ तुमपर ज़ाहिर न हो। पस अगर उसके इज़हार के ख़िलाफ़ साबित हो तो नहीं, अगर वो ज़ाहिर करे कि ऐसा अमल उससे अज़रूए तक़य्या ज़ाहिर हुआ तो अगर तुम देखो कि तक़य्या इस महल पर दुरूस्त नहीं तो उसका कहना कुबूल न किया जाए क्योंकि तक़य्या का महल व मौक़ा होता है जो उस मौक़े से हट गया उसके लिए दुरूस्त नहीं जो उस क़ौमे बद की मानिन्द होगा कि जिनका ज़ाहिरी हुक्म व फ़ेल ख़िलाफ़े हक़ हो अगर कोई मोमिन ऐसे उमूर में तक़य्या करे जिससे फ़सादे दीन लाज़िम न हो तो वो जाएज़ है।

दो सौ दो वॉ बाब

मवाख़ात बलेहाज़े दीन नहीं दीन में तअर्रूफ़ होता है

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि अम्रे दीन में मवाख़ात न करो, ये तो सिर्फ़ एक दूसरे से पहले तअर्रूफ़ की सूरत है।

मतलब ये है कि मोमिनीन के दरमियान तो मवाख़त फ़िद्दीन क़ब्ले पैदाईश ही होती है दुनिया की मवाख़ात तो एक क़िस्म का तअर्रूफ़ होता है चूँकि मोमिनीन तीनत से एक ही है लेहाज़ा रूहानी मवाख़ात शुरू ही से है।

दो सौ तीन वॉ बाब

मोमिन का हक़ मोमिन पर और उसकी अदाएगी

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मोमिन का हक़ मोमिन पर ये है कि अगर भूका हो तो सैर करे बरहेना हो तो लिबास पहनाए उसकी मुसीबत दूर करे अगर मद जाए तो

उसके घर वालों की उसका जॉनशीन बनकर ख़बर ले।

2. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से कहा मुसलमान का हक़ मुसलमान पर क्या है फ़रमाया सात हक़ वाजिब हैं अगर उसमें से एक हक़ भी अदा न हो तो विलायत व इताअत से बाहर हो जाएगा और ख़ुदा की इताअत का उसमें कोई हिस्सा न रहेगा। मैंने कहा वो क्या हैं फ़रमाया मोअल्ला में अज़राहे शफ़कत डरता हूँ कि तू उन हुकूक़ को ज़ाया करे और हिफ़ाज़त न करे और जानबूझ कर अमल न करे। मैंने कहा ख़ुदा ही मुझे अमल की कुव्वत देने वाला है फ़रमाया सबसे आसान हक़ मर्दे मुस्लिम का ये है कि तू उसके लिए दोस्त रख हर उस चीज़ को जिसको अपने लिए दोस्त रखे और बुरा समझे उस चीज़ को जिसको अपने लिए बुरा समझे और दूसरा हक़ ये है कि उसके गुस्से से बचे और उसकी मर्ज़ी का ख़्वास्तगार हो और उसके अम्र की इताअत करे तीसरा अम्र ये है कि अपने नफ़्स अपने माल अपनी ज़बान अपने हाथ और अपने पैर से उसकी मदद करे चौथा हक़ ये है कि उसका मुहाफ़िज़ हो उसका रहनुमा हो उसके हालात का आईना हो पॉचवा हक़ ये है कि सैर न हो जबकि वो भूका हो और सैराब न हो जबकि वो प्यासा हो और लिबास न पहने अगर वो नंगा हो छठा हक़ ये है कि अगर तुम्हारा नौकर हो और उसके पास कोई नौकर न हो तो लाज़िम है कि अपने उस भाई के पास उस नौकर को भेज दो वो उसके कपड़े धोए और उसका खाना पकाए और उसका फ़र्श बिछाए और सातवॉ हक़ ये कि उसकी क़सम क़ुबूल करे उसकी दावत क़ुबूल करे मरीज़ होतो उसकी अयादत करे मर जाए तो उसके जनाज़े में शरीक हो अगर उसकी कोई ज़रूरत मालूम हो तो उसको पूरा करने में जल्दी करे और उसको सवाल करने पर मजबूर न करे और जल्द से जल्द पूरा करे अगर तूने ऐसा किया तो तेरी मोहब्बत उससे और उसकी मोहब्बत तुझसे

मिल जाएगी।

3. रावी कहता है कि मेरे बाज़ दोस्तों ने जो कि कूफ़े में थे लिखा कि मैं चन्द मसले हज़रत अबू अब्दिल्लाह से दरयाफ़्त करके लिखूँ और उन्होंने ये भी लिखा कि मैं दरयाफ़्त करूँ कि मुसलमान भाई का हक़ क्या है मैंने हज़रत से दरयाफ़्त किया आपने कोई जवाब न दिया जब कूफ़े जाने लगा और हज़रत से रूख़सत होने आया तो मैंने कहा मैंने आपसे मुसलमान भाई के हक़ के मुतअल्लिक़ पूछा था मगर आपने कोई जवाब न दिया। फ़रमाया मुझे ख़ौफ़ है कि तुम जानने के बाद अमल न करने से काफ़िर हो जाओगे। अच्छा सुनो ख़ुदा ने सबसे बड़ा फ़र्ज अपनी मख़लूक़ पर तीन चीज़ों को क़रार दिया है एक ये कि आदमी अपने नफ़्स के साथ इन्साफ़ करे बयीं मअनी कि अपने भाई के लिए वही बात पसन्द करे जो अपने ज़ात के लिए पसन्द करता है दूसरे अपने भाई से हमदर्दी करे माल के साथ तीसरे ज़िक्र करे अल्लाह का हर हाल में इससे मुराद ये नहीं कि वो सुब्हानल्लाहे वल्हम्दो लिल्लाहे कहता रहे बल्कि जो चीज़ें अल्लाह ने हराम कर दी हैं उनको तर्क कर दे।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा की इससे बेहतर इबादत नहीं कि मोमिन का हक़ अदा किया जाए।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मुसलमान का हक़ मुसलमान पर ये है कि सैर न हो जबकि उसका भाई भूका हो और सैराब न हो जबकि उसका भाई प्यासा हो और लिबास न पहने अगर उसका भाई नंगा हो। पस किस क़द्र अज़ीम है मुसलमान का हक़। फिर फ़रमाया अपने मुसलमान भाई के लिए दोस्त रख उस चीज़ को जिसको अपने लिए दोस्त रखे और जब तू मोहताज हो तो उससे सवाल करे और अगर वो तुझ से सवाल करे तो उसको दे उसपर एहसान करके मुलूल न कर वो तुझे मुलूल न करेगा उसका मददगार बन वो तेरा

मद्दगार बनेगा और जब वो घर से चला जाए तो उसके माल की हिफ़ाज़त कर उसकी अदम मौजूदगी में और जब आजाए तो उससे मुलाक़ात का और बइज्ज़त व इकराम पेश आ क्योंकि वो तेरा साथी है और उसका। अगर वो तुझ पर गुस्सा करे तो उससे जुदा न हो, यहाू तक कि तू उससे तलबे एहसान करे। अगर उससे अच्छा सुलूक ज़ाहिर हो तो ख़ुदा का शुक्र अदा कर, अगर वो किसी बला में मुब्तिला हो तो उसकी मद्द कर अगर वो किसी फ़रेब का शिकार हो तो उसकी मद्द कर अगर कोई अपने भाई से उफ़ कहे तो उसके दरमियान मोहब्बत क़ता हो जाएगी और अगर एक दूसरे से कहे तो तू मेरा दुश्मन है तो दोनों में से एक काफ़िर हो जाएगा अगर ये कहने वाला सच्चा है तो दूसरा काफ़िर और अगर ये झूठा है तो ये काफ़िर और अगर बरादरे मुस्लिम को तोहमत लगाएगा तो ईमान उसके दिल में इस तरह घुल कर रह जाएगा जैसे नकम पानी में और फ़रमाया मुझे ये मालूम है कि मोमिन का नूर आसमान वालों के लिए इस तरह चमकता है जैसे ज़मीन वालों के लिए आसमान के सितारे चमकते हैं और ये भी फ़रमाया कि मोमिन अल्लाह का दोस्त है अल्लाह के दीन की मद्द करता है और उसके लिए काम करता है और ख़ुदा पर इफ़्तेरा नहीं करता और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरता।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मुसलमान पर मुसलमान भाई का ये हक़ है कि जब उससे मिले तो सलाम करे और जब वो बीमार हो तो अयादत करे और जब वो घर से दूर हो तो उसके लिए तालिबे ख़ैर हो छींके तो उसके लिए अल्हम्दो लिल्लाह कहे और जब बुलाए तो उसके पास आए मर जाए तो मुशायेअते जनाज़ा करे।

7. रावी कहता है फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन का मोमिन पर हक़ ये है कि उसके सीने में उसकी

मोहब्बत हो और उसके माल में हमदर्दी करे और उसके बाल बच्चों में उसका जॉनशीन बने और उसपर कोई ज़ुल्म करे तो उसकी मदद करे और अगर वो ग़ाएब हो और मुसलमानों में माले ग़नीमत तक़्सीम हो तो उसका हिस्सा ले ले और अगर वो मर जाए तो उसकी क़ब्र की ज़ियारत करे और उसपर ज़ुल्म न करे धोका न दे ख़यानत न करे रुस्वा न करे झुटलाए नहीं, उफ़ न कहे वरना उनके दरमियान मोहब्बत न रहेगी और दोनों में से जो कोई ये कहेगा कि तू मेरा दुश्मन है तो वो कुफ़्र करेगा और अगर उसे तोहमत लगाएगा तो उसके दिल में ईमान इस तरह घुल जाएगा जैसे नमक पानी में।

8. अबान बिन तग़लब से मरवी है कि मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के साथ तवाफ़ कर रहा है कि मेरा एक साथी आया और मुझे साथ एक ज़रूरत से ले जाना चाहा उसने इशारा से मुझे बुलाया मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. को छोड़ कर जाना बुरा समझा मैं तवाफ़ में मशग़ूल था उसने फिर इशारा किया हज़रत ने देख लिया और फ़रमाया ऐ अबान क्या ये तुझे बुला रहा है मैंने कहा जी हॉ फ़रमाया ये कौन है मैंने कहा मेरा साथी है फ़रमाया क्या ये भी इसी अक़ीदे का है जिसका तू है मैंने कहा जी हॉ। फ़रमाया इसके पास जा मैंने कहा क्या तवाफ़ क़ता कर दूँ फ़रमाया हॉ, मैंने कहा अगरचे तवाफ़ वाजिब हो फ़रमाया हॉ पस मैं चला गया। बाद में जब मैं फिर हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो मैंने हक़्के मोमिन के मुतअल्लिक़ सवाल किया फ़रमाया ऐ अबान तर्क कर उसका इल्म, मैंने कहा बेहतर, इसके बाद मैं बराबर पूछता रहा। फ़रमाया ऐ अबान उसका निस्फ़ माल उसको दे दे फिर हज़रत ने मेरी तरफ़ देखा और इस हक़ को सुनकर मेरे चहरे पर तग़य्युर महसूस किया। फ़रमाया क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा ने अपने नफ़्सों पर ईसार करने वालों का ज़िक्र किया है मैंने कहा मालूम है। फ़रमाया जब तू अपना

आधा माल दे दे तो अपने को उसपर तरजीह न दे तू और वो बराबर हैं जब तू बाक़ी आधा भी उसे दे दे तब अपने को उसपर तरजीह दे।

9. ईसा बिन मंसूर से रिवायत हे कि मैं और इब्ने अबी यअफूर और अब्दुल्लाह बिन तलहा हज़रत अबू अब्दिल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर थे और हज़रत ने ख़ुद ही फ़रमाया ऐ इब्ने यअफूर! रसूलुल्लाह स. ने छः ख़स्लतें बयान की हैं जिसमें वो पाई जाएंगी वो ख़ुदा के सामने कमाले तक़र्रुब में होगा इब्ने अबी यअफूर ने कहा वो क्या हैं फ़रमाया मोमिन अपने भाई के लिए वही दोस्त रखे जो अपने अज़ीज़ तरीन ख़ानदान वालों के लिए दोस्त रखता है और बन्दए मोमिन के लिए नापसन्द करे उस अम्र को जिसे वो अपने अज़ीज़ तरीन ख़ानदान वालों के लिए नापसन्द करता है और ख़ालिस मोहब्बत का इज़हार करे। ये सुनकर इब्ने अबी यअफूर रोए और कहने लगे ये कैसे। फ़रमाया अगर तुम्हारे अन्दर ये तीन ख़सलतें होंगी तो वो अपने राज़ को ज़ाहिर करेगा और ख़ुश होगा उसकी ख़ुशी से जब कि वो ख़ुश हो और ग़मगीन होगा उसके ग़म से जबकि वो रंजीदा होगा और उसके पास कोई चीज़ उसके ख़ुश करने के लिए न होगी तो वो ख़ुदा से उसके लिएदुआ करेगा। फिर हज़रत ने फ़रमाया ये तीन तुम्हारे लिए हैं और दूसरी तीन हमारे लिए हैं पहली ये कि तुम हमारी फ़ज़ीलत को पहचानो, दूसरे ये कि तुम हमारे पीछे चलो, तीसरे ये कि इन्तिज़ार करो हमारी सलतनत का जो दुनिया के इख़्तिताम पर होगी जिसमें ये बातें पाई जाएंगी वो मुक़र्रबे बारगाहे ईज़दी होगा उसके नूर से उससे नीचे के दर्जे वाले नूर हासिल करेंगे जो लोग मक़ामे ईज़दी में होंगे जब उनके नीचे वाले देखेंगे तो उनको अपना मौजूदा ऐश अच्छा मालूम न होगा ऊपर वालों की फ़ज़ीलत के मुक़ाबिल इब्ने अबी यअफूर ने कहा जो जमाअत क़ुर्बते ईज़दी रखती होगी उसे देखा क्यों न जा

सकेगा फ़रमाया वो नूरे ख़ुदा से ढके हुए होंगे क्यों तुमने रसूलुल्लाह की वो हदीस नहीं सुनी कि अल्लाह तआला की एक मख़लूक़ है अर्श के दाहिनी जानिब जिन के चेहरे बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ैद होंगे और सूरज से ज़्यादा चमकदार एक पूछने वाला पूछेगा ये कौन हैं जवाब दिया जाएगा ये जलाले ईज़दी को मलहूज़ रखते हुए एक दूसरे से मोहब्बत करने वाले थे।

10. मोहम्मद बिन अजलान से मरवी है कि मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स आया और सलाम किया आप अ. ने फ़रमाया क्या हाल है वहाँ तुम्हारे मोमिन भाईयों का। उसने बड़ी तारीफ़ की बैअत पर क़ाएम रखने का ज़िक्र किया और उनके औसाफ़ में मुबालग़ा किया। हज़रत ने पूछा अग़निया का फ़ुक़रा के पास पुर्शिश के लिए आना कैसा है उसने कहा बहुत कम, फ़रमाया मालदारों का फ़ुक़रा से मिलना जुलना कैसा है कहा बहुत कम, फ़रमाया अग़निया का फ़ुक़रा से सिलए रहम कैसा है उसने कहा आप ऐसे अख़लाक़ का ज़िक्र फ़रमा रहे हैं जिनकी हमारे यहाँ कमी है फ़रमाया फिर तुम उनको शिया क्यों गुमान करते हो।

11. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से अर्ज़ किया कि हमारे यहाँ शिया बहुत हैं। फ़रमाया मालदार फ़क़ीरों से मेहबानी का बर्ताव करते हैं एहसान करने वाले गुनाहगारों से दरगुज़र करते हैं और उसमें बाहमी हमदर्दी है मैंने कहा नहीं फ़रमाया तो वो शिया नहीं, शिया वो है जो ऐसा हो।

12. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अपने असहाब की अज़मत करो उनका वक़ार क़ाएम रखो और एक दूसरे से बकराहत न मिले और नुक़्सान न पहुँचाए, हसद न करे अपने बुख़्ल से बचाओ और ख़ुदा के सच्चे बन्दे बनो।

13. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने आया तुम्हारे दरमियान ऐसा है कि एक बरादरे मोमिन दूसरे मोमिन की जेब में हाथ

डालकर अपनी हाजत पूरी करता है और वो उसको मना नहीं करता। रावी कहता है मैंने कहा ऐसा तो हममें कोई नहीं। फ़रमाया तो कुछ भी नहीं। मैंने कहा तो हम सब जहन्नमी हुए। फ़रमाया मेरी ये मुराद नहीं बल्कि ये है कि अभी उन शियों में इतनी अक़्ल नहीं कि आदाबे ईमान समझें।

14. रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ से हक़्क़े मोमिन के मुतअल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया बरादरे मोमिन के सत्तर हक़ हैं मैं उनमें से सिर्फ़ सात बताऊँगा। मैं तुम पर मेहरबान हूँ इस बात से डरता हूँ कि तुम तहम्मुल न कर सको। मैंने कहा हाँ अगर अल्लाह ने चाहा। फ़रमाया मत खाओ अगर बरादरे मोमिन भूका हो, मत पहनो अगर वो नंगा हो, उसके रहनुमा बनो, उसके राज़दार बनो और जो चीज़ अपने लिए पसन्द करो उसके लिए भी पसन्द करो और उसकी ज़बाने गोया बनो, अगर तुम्हारी कनीज़ हो तो उसको भेजो ताकि वो उसके लिए बिस्तर बिछाए और उसकी ज़रूरतें पूरी करने की रात दिन कोशिश करो अगर ऐसा करोगे तो अपनी मोहब्बत हमारी मोहब्बत से मोहब्बते ख़ुदा के साथ मिला दोगे।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मुसलमान, मुसलमान का भाई है चाहिए कि उसपर जुल्म न करे, उसको रूस्वा न करे उसके माल में ख़यानत न करे और मुसलमानों को सज़ावार है कि आपस में इत्तेहाद रखें और तुल्फ़ो मेहरबानी में तआव्वुन करें और अहले हाजत के साथ हमदर्दी करें और एक दूसरे पर मेहरबान रहें ताकि तुम वैसे ही बन जाओ जैसा ख़ुदा ने हुक्म दिया है "आपस में रहम करने वाले" और मोमिन के सफ़र में होने की हालत में हमदर्दी और ग़मगुसारी उसी तरह करो जैसे अहदे रसूलुल्लाह में थी।

16. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है मुसलमान का फ़र्ज़ है कि जब सफ़र का इरादा करे

तो अपने भाईयों को आगाह करे और भाईयों का फ़र्ज़ है कि जब वो आए तो उससे मिलने जाएं।

दो सौ चार वॉ बाब

तराहुम व तआतुफ़

1. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि उन्होंने अपने असहाब से फ़रमाया अल्लाह से डरो और आपस में नेक भाई बनो और कुर्बतन इलल्लाह दूसरे से मोहब्बत करो सिलए रहम करो अगर दूसरे से मुलाक़ात करो और हमारे हालात को एक दूसरे से बयान करो और हमारे ज़िक्र को दोस्त रखो।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने बाहम सिलए रहम करो, नेकी करो, एक दूसरे पर रहम करो और नेकी पसन्द बनो जैसा कि ख़ुदा ने हुक्म दिया है।

3. मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना सिलए रहम करो, नेकी करो एक दूसरे पर रहम करो और आपस में हमदर्दी का बर्ताव करो।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मुसलमान पर फ़र्ज़ है सिलए रहम करना, मेहरबानी और हमदर्दी में तआव्वुन साहिबाने हाजत से और आपस में एक दूसरे से हमदर्दी ताकि तुम ऐसे ही हो जाओ जैसा अल्लाह ने हुक्म दिया है "आपस में एक दूसरे से रहम का बर्ताव करने वाले हैं" हमदर्दी करने वाले और बहालते सफ़र उसके अयाल से ग़मख़्वारी करने वाले हैं अहदे रसूलुल्लाह में जिस तरह अन्सार का बर्ताव आपस में था वैसा ही बर्ताव रखो।

दो सौ पॉच वॉ बाब

ज़ियारते इख़्वान

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो शख़्स ख़ुश्नूदीए

ख़ुदा के लिए और वादागाहे ख़ुदा की तलाश के लिए और पेशे ख़ुदा जो अज्र है उसे पाने के लिए ज़ियारते मोमिनीन करे तो ख़ुदा सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मोअय्यन करता है जो निदा देते हैं आगाह हो ख़ुश रहो और जन्नत तुमसे ख़ुश रहे।

2. ख़सीमा से मरवी है कि मैं इमाम मोहम्मद बाक़र अ. की ख़िदमत में रूख़सत होने के लिए आया। आपने फ़रमाया ऐ ख़सीमा! हमारे दोस्तों को हमारा सलाम पहुँचा देना और अल्लाह से डरने की वसीयत करना और कहना कि मालदार फ़क़ीरों की अयादत किया करें और क़वी ज़ईफ़ों की और उनके जनाज़े में मौजूद रहा करें और अपने घरों में एक दूसरे से मिलते रहा करें। ये मिलना जुलना हमारे अम्रे इमामत के लिए ज़िन्दगी है अल्लाह उस बन्दे पर रहम करे जो हमारे अम्र को ज़िन्दा रखे। ऐ ख़सीमा हमारे दोस्तों को ये पैग़ाम पहुँचा देना कि हम उनसे दफ़ा नहीं करते किसी अज़ाब को जो अल्लाह की तरफ़ से हो मगर अमल से यानी सिर्फ़ इक़रारे इमामत काफ़ी नहीं अमले सालेह न हो और वो हमारी विलायत व मोहब्बत को परहेज़गारी के बग़ैर नहीं पा सकते। रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा हैरत में वो होगा जो अदल की तारीफ़ करे और फिर अमलन दूसरे वक़्त उसकी मुख़ालेफ़त करे।

3. रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि मुझे जिब्राईल ने बयान किया कि अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ते को ज़मीन पर उतारा वो चलता फिरता एक दर पर पहुँचा। जहाँ एक शख़्स खड़ा हुआ घर वालों से दाख़िले की इजाज़त चाहता है फ़रिश्ते ने कहा इस घर वाले से तुम्हारी क्या हाजत है उसने कहा ये मेरा मुसलमान भाई है। मैं ख़ुश्नूदी के लिए इसकी ज़ियारत को आया हूँ। फ़रिश्ते ने कहा बस यही चीज़ तुझे लाई है उसने कहा हाँ। फ़रिश्ते ने कहा मैं अल्लाह का पैग़ाम तेरे पास लाया हूँ। वो तुझे सलाम कहता है और फ़रमाता है मैंने जन्नत को

तुझपर वाजिब किया है और ये भी फ़रमाता है जो मुसलमान मुसलमान की ज़ियारत करेगा उसने गोया मेरी ज़ियारत की और उसका सवाब अब मेरे ऊपर जन्नत का देना है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने ख़ुश्नूदीए ख़ुदा के लिए अपने भाई की ज़ियारत की, ख़ुदा कहता है तूने मेरी ज़ियारत की तेरा सवाब मेरे ऊपर है और मैं तेरे लिए जन्नत से कम सवाब पर राज़ी न हूंगा।

5. रावी कहता है फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने बोदं मुसाफ़त के बाद दाख़िले शहर ख़ारिजे शहर में महज़ ख़ुश्नूदीए ख़ुदा के लिए अपने भाई की ज़ियारत की तो वो ख़ुदा के ज़ाएरों में से है और ख़ुदा के लिए सज़ावार ये है कि वो अपने ज़ाएरों का इकराम करे।

6. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने अपने भाई की ज़ियारत की उसके घर जाकर तो ख़ुदा फ़रमाता है तू मेरा मेहमान और ज़ाएर है तेरी मेहमानी मेरे ऊपर है और मैंने जन्नत को तेरे लिए वाजिब किया इसलिए कि तू अपने भाई से मोहब्बत करता है।

7. अबू उज़्ज़ा से मरवी है कि मैंने अबू अब्दिल्लाह से सुना जिसने ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए अपने बरादरे मोमिन की ज़ियारत की मर्ज़ में या सेहत में और मर्को फ़रेब न किया और बदला न चाहा तो ख़ुदा सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए मुक़र्रर करता है कि उसके पसे पुश्त कहते हैं तू ख़ुश रहे और जन्नत तुझसे ख़ुश रहे तुम अल्लाह के ज़ाएर हो और तुम ख़ुदा के मेहमान हो यहाँ तक कि वो अपने घर में वापस आए। यसीर ने कहा चाहे उसका घर कितनी ही दूर हो फ़रमाया हाँ अगरचे उसका घर एक साल की मसाफ़त पर हो। अल्लाह जवाद है और उसके मलाएका कसरत से हैं वो उसके पीछे चलते हैं जब तक वो घर में दाख़िल हों।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए अपने बरादरे मोमिन की ज़ियारत की वो रोज़े क़यामत नूर के परदों में चलता हुआ आएगा और जब सरादक़ जलाले इलाही के सामने आएगा तो अल्लाह उससे कहेगा मरहबा और मरहबा कहेगा तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल अपनी बख़्शिशे अज़ीम को उसके लिए जारी करेगा।

9. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि बन्दए मुस्लिम जब अपने भाई की ज़ियारत को सिर्फ़ ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए निकलता है और कोई ज़ाती ग़रज़ नहीं रखता तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मोअय्यन करता है कि जबतक वो अपने घर वापस हो उससे कहते रहें कि तू ख़ुश और जन्नत तुझ से ख़ुश।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो मुसलमान अपने भाई की ज़ियारत को महज़ ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए निकलता है तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल उसको निदा देता है तू ख़ुश और जन्नत तुझसे ख़ुश रहे।

11. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने कि अल्लाह तआला की एक जन्नत ऐसी है कि उसमें तीन ही क़िस्म के लोग दाख़िल होंगे एक वो जिसने अपने नफ़्स पर हक़ के साथ हुक्म किया होगा दूसरे वो जिसने ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए अपने बरादरे मामिन की ज़ियारत की हो तीसरे वो जिसने अपने मोमिन भाई को ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए अपने ऊपर तरजीह दी होगी।

12. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब बन्दाए मोमिन इरादा करता है कि अपने भाई की ज़ियारत करे तो ख़ुदा उसपर एक फ़रिश्ते को मुकर्रर क़रता है वो अपना एक बाज़ू ज़मीन पर रखता है और दूसरा आसमान पर और जब तक वो अपने घर की तरफ़ लौटे उसपर साया किये रहता है। अल्लाह तआला निदा करता है मेरे बन्दे! मेरे हक़ की अज़मत करने वाले मेरे नबी

के आसार का इत्तेबाअ करने वाले तेरी बुजुर्गी काएम रखना मेरा हक़ है तू मुझसे सवाल कर मैं तुझे दूंगा, तू मुझसे दुआ कर मैं तेरी दुआ कुबूल करूंगा तू चुप रहेगा तो मैं इब्तिदा करूंगा। जब वो अपने घर की तरफ़ लौटता है तो फ़रिश्ता साया अपने परो से करता हुआ पीछे चलता है खुदा-ए-तआला उससे कहता है कि ऐ मेरे हक़ की अज़मत करने वाले तेरा इकराम मुझपर लाज़िम है मैंने अपनी जन्नत को तुझपर वाजिब किया और अपने बन्दों के लिए तेरी शिफ़ाअत को कुबूल किया।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए किसी मोमिन की ज़ियारत करना बेहतर है दस गुलाम आज़ाद करने से जो एक मोमिन गुलाम आज़ाद करेगा तो उसका एक एक अज़ू आज़ाद करने वाले के हर अज़ू को आतिशे जहन्नम से निजात देगा यहाँ तक कि शर्मगाह तक को बचाएगा।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर तीन ऐसे मोमिन अपने भाई के पास जमा हों जो उसके हलाक करने वाले जाहिलाना फ़तवों से बेख़ौफ़ हों और उसकी फ़रेबकारी से बेख़ौफ़ हों और जो उसके पास हो उसके मिलने की उम्मीद रखते हों तो अल्लाह तआला उनकी दुआ कुबूल करता है और जो वो माँगते हैं उनको अता करता है अगर ज़्यादती चाहें तो ज़्यादा करता है और अगर माँगने से चुप रहें तो अपने तरफ़ से देता है।

15. अबू अय्यूब ने बयान किया कि मैंने अबू हमज़ा को कहते सुना मैंने इमाम मूसा काज़िम अ. से सुना है कि जिसने बरादरे मोमिन की ज़ियारत बग़ैर किसी ग़रज़ की महज़ ख़ुशनूदीए ख़ुदा के लिए की तो ख़ुदा सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को मोअय्यन करता हे कि जब वो घर से निकले और जब तक घर वापस जाए ये कहते रहें ख़ुश रहो और जन्नत तुझसे ख़ुश रहे उसके लिए जन्नत में रहने के लिए एक घर मख़्सूस किया जाता है।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अमीरुल मोमिनीन अ.

ने फ़रमाया अपने भाईयों से मुलाक़ात अगरचे थोड़ी देर के लिए हो बहुत बड़ा अज्र रखती है।

दो सौ छः वॉ बाब

मुसाफ़ेहा

1. रावी कहता है मैं इमाम मोहम्मद बाक़र अ. का हम कजावह था और हर जगह पहले सवार होता था और हज़रत बाद में जब हम ठीक हो बैठते तो हज़रत सलाम करते और इस तरह अहवाल पुर्सी करते जैसे उस शख़्स से जो अरसे से न मिला हो और फिर मुसाफ़ेहा करते जब मंज़िल पर उतरते तो मुझसे पहले उतरते और जब हम ज़मीन पर बैठ जाते तो सलाम करते और उसी तरह अहवाल पुर्सी करते जैसे मुद्दत के बाद मिलने वाले से की जाती है मैंने कहा यब्ना रसूलिल्लाह आप वो अमल कर रहे है जो हमारे शहर वाले नहीं करते एक बार तो ख़ैर ये तो बार बार है। फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि मुसाफ़ेहा का क्या फ़ायदा है। जब मोमिनीन मिलते और मुसाफ़ेहा करते हैं तो उनके गुनाह उसी तरह झड़ते हैं
जैसे मौसमे ख़िज़ॉ में दरख़्त के पत्ते। अल्लाह उन दोनों को बनज़रे रहमत देखता है जब तक वो दोनों एक दूसरे से जुदा हों।

2. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से मरवी है कि जब दो मोमिन मिलते हैं और मुसाफ़ेहा करते हैं तो ख़ुदा का दस्ते रहमत उनके हाथों के दरमियान होता है और मुसाफ़ेहा उनके दरमियान मोहब्बत को बढ़ाता है।

3. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से मंकूल है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया जब दो मोमिन मिलते हैं और मुसाफ़ेहा करते हैं तो ख़ुदा की रहमत का हाथ उनके हाथों के दरमियान होता है और मुसाफ़ेहा से उनके दरमियान बहुत ज़्यादा मोहब्बत पैदा होती है और जब अल्लाह उनकी तरफ़ मुत्वजह होता है तो

उनके गुनाह इस तरह गिर जाते हैं जैसे मौसमे ख़िज़ॉ में दरख़्त से पत्ते।

4. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया कि जब दो मोमिन मिलकर मुसाफ़ेहा करते है तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होता है और उनके गुनाह इस तरह गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते।

5. अबू उबैदा से मरवी है कि मैंने हजरत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के साथ एक् महमिल में मदीने से मक्के तक सफ़र किया हज़रत एक मंज़िल पर उतरे जब ज़रूरियात से फ़ारिग़ हुए तो मेरे पास आकर कहा अपना हाथ लाओ मैंने अपना हाथ उठाया हज़रत ने उसे इतना दबाया कि मेरी उँगलियों में दर्द होने लगा फिर फ़रमाया ऐ अबू उबैदा! जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मुसाफ़ेहा करता है तो उसके गुनाह इस तरह गिरते हैं जैसे फ़सले ख़िज़ॉ में दरख़्त के पत्ते।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ऐ मालिक तुम हमारे शिया हो क्या तुमने इस पर ग़ौर नहीं किया कि तुमने कोताही की है हमारे अम्रे इमामत में जिस तरह कोई ख़ुदा की सिफ़त बयान करने पर क़ादिर नहीं उसी तरह हमारी सिफ़त बयान करने पर भी क़ुदरत नहीं रखता है और उसी तरह मोमिन की सिफ़त बयान करने पर भी क़ादिर नहीं। मोमिन जब मोमिन से मिलता है और मुसाफ़ेहा करता है तो उनकी तरफ़ नज़रे रहमत से देखता है और उन दोनों के गुनाह इस तरह गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते जबतक वो जुदा नहीं होते पस जो ऐसा हो उसकी सिफ़त बयान करने पर किसे क़ुदरत होगी।

7. अबू हमज़ा ने कहा कि मैं हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के साथ सफ़र कर रहा था जब हम सवारी से उतरे तो हज़रत कुछ दूर चले फिर मेरे पास आए और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर ज़ोर से दबाया। मैंने कहा क्या मैं आपके साथ

महमिल में न था फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि जब मोमिन थोड़ी सी हरकत करके अपने भाई से मुसाफ़ेहा करता हे तो खुदा उन दोनों को बनज़रे रहमत से देखता है और कहता है उन दोनों के गुनाह माफ़ हुए। ऐ अबू हमज़ा उनके गुनाह इस तरह गिरते है जैसे दरख़्त से पत्ते। जब तक वो जुदा होते हों उनका कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से पूछा कि इस्तिजाबे मुसाफ़ेहा कितनी दूरी के बाद है फ़रमाया बक़द्रे एक दरख़्ते ख़ुरमा की मसाई के।

9. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मोमिनीन को चाहिए कि जब एक दूसरे से बकद्रे एक दरख़्त के अलग हों तो फिर दोनों मुसाफ़ेहा करें।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब तुम में से कोई अपने भाई से मिले तो चाहिए सलाम करे और मुसाफ़ेहा करे ख़ुदा ने उस मुसाफ़ेहे से मलाएका को मुकर्रम बनाया है पस तुम भी वो करो जो मलाएका करते हैं।

11. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब तुम एक दूसरे से मिलो तो सलाम और मुसाफ़ेहा करो और जुदा होते वक़्त इस्तग़फ़ार।

12. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया कि जब मुसलमान ग़ज़वात में रसूलुल्लाह के साथ जाते और ऐसी जगह से गुज़र होता जहाँ घने दरख़्त होते फिर सहरा में निकलते और एक दूसरे को देखते तो मुसाफ़ेहा करते।

13. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब कोई मुसाफ़ेहा करता है अपने साथी से, पस जो हाथ में हाथ डाले रहे उसका मर्तबा उससे ज़्यादा है जो मुसाफ़ेहा ख़त्म करे। इन दोनों के गुनाह इस तरह ख़त्म हो जाते हैं कि फिर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता।

14. इस्हाक़ बिन अम्मार से मरवी है कि मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. की ख़िदमत में आया। हज़रत ने मेरी तरफ़ गुस्से से देखा मैंने कहा किस अम्र ने आपको मुझसे नाराज़ किया। जिस चीज़ ने तुझको तेरे भाईयों से ना खुश किया। ऐ इस्हाक़ मुझे ख़बर मिली है कि तूने दरवाज़े पर दरबान बिठाया है ताकि वो फुक़रा–ए–शिया को तुझ तक पहुँचने से रोके मैंने कहा कि मैंने ऐसा इसलिए किया है ताकि उनकी आमद व रफ़्त से मेरी शीअत की शोहरत न हो। फ़रमाया तूने ज़लालत की मुसीबत का ख़याल न किया क्या तुझे ये मालूम नहीं कि जब दो मोमिन मिलकर मुसाफ़ेहा करते हैं तो ख़ुदा की रहमत उन दोनों पर नाज़िल होती है और सौ में से निन्ना नवे हिस्से मोहब्बत के उन दोनों को मिल जाते हैं जब वो दोनों ख़ूलूस बरत्ते हैं तो ख़ुदा की रहमत उनको घेर लेती है और जब वो बातें करते हैं तो उनके मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते आपस में कहते हैं इनसे अलग हो जाओ शायद कोई राज़ की बात हो और अल्लाह ने उनके लिए छुपाना चाहा हो। मैंने कहा क्या ख़ुदा ने ये नहीं फ़रमाया कोई लफ़्ज़ नहीं बोलते मगर ये कि उनके पास एक सख़्त निगेहबान होता है फ़रमाया इस्हाक़ उसे फ़रिश्ते न सुनें तो भी राज़ का जानने वाला तो सुनता और देखता है मुराद ये है कि रक़ीब अतीद (निगेहबान) है वही हर बात को सुनता और देखता है।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. जब मुसाफ़ेहा करते तो अपना हाथ न हटाते जब तक दूसरा शख़्स अपना हाथ न हटाता।

16. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने ख़ुदावन्दे आलम का वस्फ़ कमा हक़्क़हू बयान नहीं किया जा सकता और क्यों कर बयान किया जा सकता दरॉ हालाकि वो अपने किताब में फ़रमाता है यहूदियों ने नहीं तअज़ीम की अल्लाह की, जो हक़े तअज़ीम करने का है पस जो कुछ वस्फ़ उसका बयान किया जाएगा वो

उसससे अज़ीमतर होगा इसी तरह नबी का वस्फ़ भी बयान नहीं किया जा सकता और कैसे बयान किया जा सकता है उस बन्दे वस्फ़ जिसके लिए ख़ुदा ने सात आसमानों के परदे उठा दिए हों और ज़मीन पर जिसकी इताअत मिस्ल अपनी इताअत के क़रार दी हो और फ़रमाया हो रसूल स. जो तुम्हे दे वो ले लो जिससे मना करे उसे रूक जाओ और जिसने उसकी इताअत की उसने ख़ुदा की इताअत की जिसने उसकी नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की और अपने मामलात उनके सिपुर्द कर दिये और हमारा वस्फ़ भी बयान में नहीं आ सकता और कैसे आए ख़ुदा ने हमको रिज्स से दूर रखा है और रिज्स में शक है और मोमिन का वस्फ़ भी बयान नहीं किया जा सकता क्योंकि जब मोमिन, मोमिन से मुसाफ़ेहा करता है तो ख़ुदा नज़रे रहमत से उनको देखता है और उनके गुनाह इस तरह गिर जाते हैं जैसे दरख़्तों से पत्ते।

17. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद स. ने जब दो मोमिन मिल कर मुसाफ़ेहा करते है तो अल्लाह तआला उन दोनों की तरफ़ तवज्जोह करता है और उन दोनों के गुनाह महो हो जाते हैं जब तक वो जुदा हों।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मुसाफ़ेहा करो कि वो दिल से हसद और कीना को दूर कर देता है।

19. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि हुज़ैफ़ा ने रसूलुल्लाह स. से मुलाक़ात की तो आपने अपना हाथ हुज़ैफ़ा की तरफ़ बढ़ाया उन्होंने अपना हाथ न बढ़ाया। हज़रत ने फ़रमाया ऐ हुज़ैफ़ा मैंने मुसाफ़ेहे के लिए अपना हाथ बढ़ाया तुमने अपने हाथ को रोके रखा। हुज़ैफ़ा ने कहा या रसूलुल्लाह स. आप स. मुसाफ़ेहा करने की रग़बत तमाम दुनिया को है, लेकिन मैं जुनुब हूँ मैंने पसन्द न किया बहालते जनाबत मेरा हाथ आप स. के हाथ को मस करे हज़रत ने फ़रमाया तुम नहीं जानते जब दो

मुसलमान मिलते और मुसाफ़ेहा करते हैं तो उनके गुनाह इस तरह गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते।

20. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि ख़ुदा की कुदरत और मर्तबे का अन्दाज़ा कोई नहीं कर सकता इसी तरह नबी के मर्तबे का, इसी तरह मोमिन के मर्तबे का क्योंकि जब वो अपने भाई से मिलता है और मुसाफ़ेहा करता है तो अल्लाह बनज़रे रहमत उनकी तरफ़ देखता है और जब तक वो जुदा हों गुनाह उनसे इस तरह गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते।

21. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन से मुसाफ़ेहा करना बेहतर है बनिस्बत मलाएका से मुसाफ़ेहा करने से।

दो सौ सात वॉ बाब

मुआनेक़ा

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. और जाफ़रे सादिक़ अ. कि जब कोई मोमिन अपने भाई की ज़ियारत को निकलता हे उसका हक़ पहचान कर तो अल्लाह हर क़दम पर एक हसना लिखता हे और एक गुनाह महो करता है और एक दरजा बलन्द करता है और जब वो दक़्कुल बाब करता है तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं और जब दोनों मिलते और मुआनेक़ा करते हैं तो ख़ुदा उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होता है फिर मुबाहात करता हुआ मलाएका से कहता है देखो मेरे इन दोनों बन्दों को ये एक दूसरे से मिलते हैं और आपस में मोहब्बत करते हैं मेरी ख़ुश्नूदी के लिए मेरे लिए सज़ावार है कि आतिशे दोज़ख़ से अज़ाब न दूँ, जब वो मोमिन मुलाक़ात करके पलटता है तो मलाएका बाद उसके नफ़्स के उसके पीछे चलते हैं और उसके कलाम को दुनिया व आख़ेरत की मुसीबतों से बचाते हैं उस रात या अगली रात तक, अगर वो इन दो रातों के दरमियान मर जाता है तो उसे हिसाब से माफ़ कर दिया जाता है अगर ज़ियारत किया हुआ पहुँचाता है। हक़्क़े ज़ाएर को इतना ही

जितना ज़ियारत करना वाला उसके हक़ को पहचानता है तो उसके लिए भी ज़ाएर का सा हक़ है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिनीन जब मुआनक़ा करते है तो रहमते ख़ुदा उनको ढाँप लेती है जब वो इसको लाज़िम क़रार देता है और ख़ुश्नूदीए ख़ुदा का इरादा करते हैं और अग़राज़े दुनिया से कोई ग़रज़ नहीं होती तो उससे कहा जाता है तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गये अब अमल को फिर से शुरू करो जब वो बातचीत करने लगते हैं तो मलाएका आपस में कहते हैं कि उनके पास से हट जाओ मुमकिन है कोई राज़ की बात हो और ख़ुदा और मलाएका से छुपाना चाहता हो इस्हाक़ कहता है कि मैने कहा क्या मलाएका उनके अल्फ़ाज़ नहीं लिखते हालाँकि ख़ुदा फ़रमाता है जो बात भी कोई कहता है तो उसके पास एक सख़्त निगेहबान रहता है। हज़रत ने ये सुनकर गहरी साँस ली फिर इतना रोए कि रीशे मुबारक आँसूओं से तर हो गयी और फ़रमाया। एक इस्हाक़ अल्लाह तआला ने मलाएका को हुक्म दिया है कि मोमिनीन जब आपस में मिलें तो ब लिहाज़ उनकी जलालते शान उनसे अलग रहें और अगर मलाएका अल्फ़ाज़ न लिखें और उनका कलाम न समझें तो सिर व ख़फ़ी का जानने वाला ख़ुदा तो जानता है।

दो सौ आठ वाँ बाब

तक़बील

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने तुम्हारे लिए एक नूर है जिससे तुम दुनिया में पहचाने जाते हो जब तुम में से कोई अपने भाई से मिले तो उसकी पेशानी जो मक़ामे नूर है बोसा दे।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि न बोसा दिया जाए किसी के सर को न हाथ को सिवाए दस्ते रसूल स. या जिसको रसूलुल्लाह ने चाहा हो (यानी वसीए रसूल)

3. रावी कहता है मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के पास

आया मैंने उनका हाथ उठाया और बोसा दिया फ़रमाया सिवाए नबी या वसीए नबी और किसी के लिए दुरूस्त नहीं।

4. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा कि अपने हाथ दीजिए ताकि मैं बोसा दूँ, पस हज़रत ने हाथ बढ़ाया मैंने कहा सर भी मैंने बोसा दिया मैंने कहा और पैर भी। फ़रमाया तूने क़सम खाई क़सम खाई क़सम खाई तीन बार बाक़ी रही एक चीज़ बाक़ी रही एक चीज़ बाक़ी रही एक चीज़ पस उसे भी बोसा देना चाहिए।

5. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने अगर कोई अपने नसबी रिश्तेदार के चेहरे या हाथ पर बोसा दे तो कोई मुज़ाएक़ा नहीं और भाई के रूख़्सार पर और रिश्तेदार इमाम के दोनों आँखों के दरमियान बोसा देना चाहिए।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ज़ौजा और तिफ़्ल के दहन पर बोसा देना चाहिए।

दो सौ नौ वॉ बाब

तज़केरतुल इख़्वान

1. अली बिन हमज़ा से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना हमारे शिया आपस में एक दूसरे पर रहम करने वाले हैं जब वो ख़िल्वत में होते हैं तो अल्लाह का ज़िक्र करते हैं हमारा ज़िक्र अल्लाह का ज़िक्र है जब हमारा ज़िक्र किया जाएगा तो अल्लाह का ज़िक्र होगा और जब हमारे दुश्मन का ज़िक्र होगा तो शैतान का ज़िक्र होगा।

2. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया एक दूसरे की ज़ियारत करो तुम्हारी ज़ियारत से तुम्हारे कूलूब ज़िन्दा होंगे और हमारी अहादीस का ज़िक्र होगा और हमारी अहादीस एक को दूसरे पर मेहरबान बनाएंगी अगर तुम उनसे फ़ैज़ हासिल करोगे तो हिदायत पाओगे और निजात हासिल करोगे और अगर इनको छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे और हलाक हो जाओगे इन

अहादीस को लिए रहो मैं तुम्हारी निजात का ज़ामिन हूँ।

3. एबादा ने कहा मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा मैं गुज़रा एक दास्तान गो (अहले ज़लालत की मदह करने वाला) की तरफ़ से वो कह रहा था ये वो मजलिस है जिसमें शिरकत करने वला शक़ी नहीं होता। फ़रमाया हज़रत ने ये बात हक़ से दूर है इनकी कोल गढ़े में है यानी पैख़ाना कर रहे हैं (नजासत फैला रहे हैं) अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते हैं अलावा किरामन कातेबीन के जो घूमते रहते हैं जब वो ऐसे लोगों की तरफ़ से गुज़रते हैं जो ज़िक्रे आले मोहम्मद स. करते हैं तो कहते हैं ठहर जाओ तुमने अपनी ज़रूरत को पा लिया। पस वो बैठ जाते हैं और इल्मे दीन में उनकी मवाफ़ेक़त करते हैं और जब वो खड़े होते हैं तो उनके बीमारों की अयादत करते हैं उनके जनाज़ों में शरीक होते हैं और मुहाफ़ेज़त करते हैं और उनके मुसाफ़िरों की यह है कि वो मजलिस जिसमें बैठने वाला शक़ी नहीं होता।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने बाज़ मलाएका जो आसमान में हैं आगाह होते हैं ऐसे एक दो या तीन से जो ज़िक्र करते हैं फ़ज़ीलते आले मोहम्मद स. का। हज़रत ने फ़रमाया वो फ़रिश्ते आपस में कहते हैं कि तुम उन लोगों को नहीं देखते कि बावजूद अपनी क़िल्लत और दुश्मनों की कसरत के ये फ़ज़ीलते आले मोहम्मद स. को बयान करते हैं हज़रत ने फ़रमाया मलाएका का दूसरा गिरोह कहता है ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अता करता है और अल्लाह साहिबे फ़ज़्ले अज़ीम है।

5. रावी कहता है इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मुझसे फ़रमाया तुम ख़िल्वत करते हो और बातचीत करते हो और जो चाहते हो कहते हो मैंने कहा बेशक हम ख़िल्वत में बातचीत करते हैं और फ़ज़ाएले आले मोहम्मद स. के मुतअल्लिक़ जो चाहते हैं बयान करते हैं हज़रत ने फ़रमाया मेरा दिल चाहता है ऐसे मौक़े पर मैं भी तुम्हारे साथ होता। ख़ुदा की क़सम मैं दोस्त रखता हूँ तुम्हारी

कुव्वत को और तुम्हारी जानों को बेशक तुम दीने ख़ुदा पर और उसके मलाएका के दीन पर हो पस तुम उसकी मदद करो परहेज़गारी और कोशिश से।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब तीन इससे ज़्यादा मोमिनीन किसी जगह जमा होते हैं तो उनकी तादाद में मलाएका वहाँ आते हैं अगर मोमिनीन नेक दुआ करते हैं अगर वो शर से पनाह माँगते हैं तो वो ख़ुदा से दुआ करते हैं कि वो इस शर को उससे दूर रखे और अगर कोई हाजत तलब करते हैं तो मलाएका ख़ुदा से उसको पूरा करने की शिफ़ारिश करते हैं और जहाँ कहीं तीन मुन्किरीने इमाम जमा होते हैं तो वहाँ दस शैतान जमा होते हैं अगर वो अइम्मा की हिजो में कलाम करते हैं तो शयातीन भी वैसा ही कहने लगते हैं अगर वो हँसते हैं तो वो भी हँसते हैं और अगर औलियाए ख़ुदा को गालियाँ देते हैं तो वो भी देते हैं। पस अगर मोमिन उनके दरमियान जा फँसे तो जब वो ऐसी बातचीत करें तो खड़ा हो जाए और शैतान का शरीक व जलीस न बने क्योंकि ग़ज़बे ख़ुदा की ताब कोई चीज़ नहीं लाती और न ख़ुदा की मोहब्बत को कोई चीज़ हटाती है। फिर हज़रत ने फ़रमाया अगर वहाँ से हट जाना मुमकिन न हो तो दिल से इन बातों से नफ़रत ज़ाहिर करे और खड़े होने का कोई बहाना करे जैसे बकरी को दुहना या ऊँट को उठाना यानी कोई इस क़िस्म का बहाना करे।

7. हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया शैतान और उसकी टोली के लिए सबसे ज़्यादा तकलीफ़दह चीज़ बरादराने ईमान का फ़ी सबीलिल्लाह एक दूसरे से मिलना है। फ़रमाया जब दो मोमिन एक जा होकर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और हम अहले बैत के फ़ज़ाएल बयान करते हैं तो इब्लीस अपने चेहरे को बुरी तरह नोच डालता है और फिर दर्द की शिद्दत से उसकी रूह चीख़ती है चिल्लाती है और फ़रयाद करती है मलाएकए

आसमान और जन्नत के ख़ाज़िन फ़रिश्ते ये मालूम करके उसपर लानत करते हैं फिर कोई फ़रिश्ता बेलानत नहीं रहता और वो ज़लील व नाकाम और रान्दा बन कर रह जाता है।

दो सौ दस वॉ बाब

मोमिन को ख़ुश करना

1. अबू हमज़ा ने बयान किया कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने बन्दाए मोमिन को ख़ुश किया उसने मुझे ख़ुश किया और जिसने मुझे ख़ुश किया उसने अल्लाह को ख़ुश किया।

2. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया कि अपने मोमिन भाई को देखकर तबस्सुम करना नेकी है और उसकी आज़ुर्दगी को दूर करना नेकी है और ख़ुदा की महबूब तरीन इबादत ये है कि मोमिन को ख़ुश किया जाए।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ख़ुदा ने मूसा से इन्दल मुनाजात कहा कि मेरे कुछ बन्दे हैं जिनके लिए मैं अपनी जन्नत मुबाह करूंगा और मैं उसमें उन्हें हाकिम बनाऊंगा। मूसा ने कहा या अल्लाह वो कौन हैं जिनके लिए तू अपनी जन्नत को मुबाह क़रार देगा और उसमें उनको हाकिम बनाएगा। फ़रमाया ये वो है जो मोमिन के दिल को ख़ुश करता है फिर फ़रमाया एक मोमिन एक ज़ालिम की हुकूमत में रहता था जब उसको रूस्वा किया गया तो वो भाग कर मुशरिक हुकूमत में चला गया और मुशरिक के घर में क़याम किया। उसने उसे पनाह दी मेहरबानी की और मेहमानदारी की। ख़ुदा ने कहा वही की क़सम है अपने इज़्ज़तो जलाल की अगर मेरी जन्नत में तेरे लिए कोई मक़ाम होता तो मैं तुझे ज़रूर देता कि एक नारे जहन्नुम उसे ख़ौफ़े ग़म दिए जाना लेकिन अज़ीयत न देना और दिन के दोनों हिस्सों में उसके लिए रिज़्क़ लाया जाता था मैंने कहा क्या ये रिज़्क़ जन्नत का होता था फ़रमाया उसने जिस

हैसियत से चाहा दिया।

तौज़ीह : अल्लामा मजलिसी ने मिरअतुल उकूल में उस हदीस को ज़ईफ़ लिखा है मुशरिक पर जो वही का ज़िक्र है वो बमानी इन्तिबाह है बाद मौत।

4. हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा-ए-तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब अमल मोमिन के दिल में सुरूर का दाख़िल करना है।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि वही की अल्लाह ने दाऊद अ. को कि मेरा एक बन्दा एक नेकी को लेकर आएगा तो मैं अपनी जन्नत उसके लिए मुबाह कर दूंगा। दाऊद अ. ने फ़रमाया ऐ मेरे रब वो नेकी क्या है फ़रमाया मोमिन के दिल में ख़ुशी का दाख़िल करना। दाऊद ने फ़रमाया एक मेरे रब जो शख़्स तेरी मअरफ़त रखता है उसके लिए सज़ावार है कि तुझसे अपनी उम्मीद क़ता न करे।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई क़ल्बे मोमिन में सुरूर दाख़िल करता है वो न सिर्फ़ उसके दिल में दाख़िल करता है बल्कि हमारे दिल में बल्कि रसूलुल्लाह स. के दिल में।

7. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने कि ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब अमल क़ल्बे मोमिन में सुरूर का दाख़िल करना है और वो मर्दे मुसलमान को सेर करना उसके क़र्ज़े को चुकाना है।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि एक हदीसे तवील में कि जब मोमिन अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसकी मिस्ल या उसका हम सूरत भी उसके साथ निकलेगा जो उसके आगे आगे चलेगा जब क़यामत के हौलनाक मनाज़िर सामने आएंगे तो उसका हम सूरत उससे कहेगा ख़ौफ़ न कर रंजीदा न हो मैं तुझे ख़ुशख़बरी देता हूँ ख़ुशी और इज़्ज़त व बुज़ुर्गी जो

अल्लाह की तरफ़ से होगी जब वो मौक़फ़े हिसाब में आएगा तो खुदा उससे थोड़ा सा हिसाब लेगा और जन्नत में दाख़िले का हुक्म देगा और उसका हम सूरत आगे होगा मोमिन कहेगा अल्लाह तुझपर रहम करे कैसा अच्छा निकलने वाला है तू मेरी क़ब्र से तू तो हमेशा मुझे सुरूरो करामते ख़ुदा की ख़ुशख़बरी देता रहा है ये तो बता तू कौन है वो कहेगा मैं वो ख़ुशी हूँ जिसको तूने अपने मोमिन भाई के दिल में डाला था ख़ुदा ने उससे मुझे ख़ल्क़ किया है ताकि मैं तुझे बशारत दूँ।

9. मोहम्मद बिन जमहूर ने बयान किया कि नजाशी जो हाकिमे अहवाज़ व फ़ारस था उसके अमले के एक मातहत ने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा कि नजाशी के दफ़्तर ने मेरे ऊपर ख़िराज आएद किया है वो आपके ऊपर ईमान रखता है और आपका मुतीअ व फ़रमाबरदार है अगर मुनासिब होतो आप उसे एक ख़त लिख दें। हज़रत ने उसे लिखा बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम अपने भाई को ख़ुश कर, अल्लाह तुझे ख़ुश करेगा जब ये ख़त लेकर वहाँ गया तो उसके पास बहुत से लोग बैठे हुए थे जब वो चले गये और तन्हाई हो गयी तो वो ख़त उसको देकर कहा ये ख़त अबू अब्दिल्लाह अ. का है। उसने बोसा दिया आँखों से लगाया फिर पूछा तेरी क्या हाजत है उसने कहा मुझपर दस हज़ार दिर्हम का ख़िराज है उसने मुंशी को बुलाया हुक्म दिया कि उसकी वसूली लिख दे और हुक्म दिया कि इसका नाम रजिस्टर से ख़ारिज कर दे ताकि साले आईन्दा उससे न माँगा जाए। फिर उससे कहा मैंने तुझे ख़ुश किया। उसने कहा हाँ मैं आप पर फ़िदा हूँ फिर उसने हुक्म दिया सवारी देने का और एक कनीज़ और गुलाम का और कहा कि ये संदूक़ भी ले जा, मैंने तुझे ख़ुश किया उसने कहा बेशक नजाशी बराबर अतियात में ज़्यादती करता रहा जब दे चुका तो उसने कहा ये फ़र्श भी ले जा जिसपर मैं उस वक़्त बैठा था जब

तूने मेरे मौला का ख़त मुझे दिया था और तेरी ज़रूरतों को पूरा करने को लिखा था। वो शख़्स सब चीज़ें लेकर हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के पास आया और कुल हाल बयान किया। हज़रत बहुत ख़ुश हुए उसने कहा यब्ना रसूलिल्लाह आप ऐसे ख़ुश हैं गोया उसने जो मेरे साथ किया है वो आपके साथ किया है। फ़रमाया ख़ुदा की क़सम सिर्फ़ मैं ही ख़ुश नहीं अल्लाह और उसके रसूल ख़ुश हैं।

10. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा मोमिन का मोमिन पर क्या हक़ है फ़रमाया इतना अज़ीमतर है कि अगर मैं बयान करदूँ तो तुम इन्कार कर बैठोगे मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसके साथ उसका एक हमसूरत निकलेगा और कहेगा तुझे अल्लाह की बख़्शिश और सुरूर की बशारत हो ख़ुदा ने तुझे नेकी की बशारत दी है फिर वो बशारत देता है उसके साथ चलेगा जब वो हौलनाक मक़ाम से गुज़रेगा वो कहेगा ये तेरे लिए नहीं है और जब वो अच्छे मक़ामात से गुज़रेगा तो कहेगा ये तेरे लिए है वो उसी तरह ख़ौफ़ से अमान देता हुआ और महबूब अम्र की ख़ुशख़बरी देता जाएगा जब मौक़िफ़े हिसाब में पेशे ख़ुदा आएगा तो उसके लिए जन्नत का हुक्म होगा तो हमसूरत कहेगा तुझे जन्नत की बशारत हो मोमिन पूछेगा तू कौन है कि क़ब्र से निकलने के वक़्त से अब तक बशारत देता है और राह में मुझसे इज़हारे मोहब्बत करता चला आ रहा है वो कहेगा मैं वो सुरूर हूँ जिसे तूने दाख़िल किया था अपने भाईयों के दिल में ताकि मैं तुझे बशारत दूँ और वहशत में तेरा ग़मख़्वार हूँ।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि ख़ुदा के नज़दीक कोई अमल इससे से ज़्यादा महबूब नहीं कि मोमिन को खाना भूक में देकर उसकी तकलीफ़ दूर करके उसके दिल को ख़ुश किया जाए।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जो अपने मोमिन भाई को ख़ुश करता है तो अल्लाह उस सुरूर से एक मख़्लूक को पैदा करता है वो इन्दल मौत उससे मिलकर कहता है ऐ वलीए ख़ुदा तुझे ख़ुदा की करामत व रिज़वान की बशारत हो। क़ब्र में दाख़िल होने तक यही कहता रहता है जब क़ब्र से उठेगा तो ऐसा ही कहेगा फिर पुर्होल मक़ाम पर बशारत देगा और यही कहेगा वो मोमिन कहेगा अल्लाह तुझ पर रहम करे। तू कौन है? वो कहता है मैं वो सुरूर हूँ जो तूने फ़लॉ मोमिन के दिल में दाख़िल किया था।

13. एक शख़्स हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. के पास आया और ये आयत पढ़ी जो मोमिनीन व मोमिनात को बेवजह अज़ीयत देते हैं उन्होंने बोहतान और बड़े गुनाह को अपने ऊपर ले लिया हज़रत ने फ़रमाया जो किसी को ख़ुश करे उसका सवाब क्या है मैंने कहा दस नेकियॉ फ़रमाया बल्कि ख़ुदा की क़सम एक लाख नेकियॉ।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो क़ल्बे मोमिन में सुरूर दाख़िल करे उसने रसूलुल्लाह को ख़ुश किया और जिसने रसूल स. को ख़ुश किया उसने अल्लाह को ख़ुश किया और यही सूरत उसके लिए है जिसने किसी को रंज पहुँचाया।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने किसी बन्दए मोमिन को ख़ुश किया उसने ख़ुदा को ख़ुश किया।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा के नज़दीक एक बेहतरीन अमल से मोमिन को ख़ुश किया उसने ख़ुदा को ख़ुश किया है ख़्वाह वो भूके को सेर करके हो या तकलीफ़ दूर करके या क़र्ज़ा अदा करके।

दो सौ ग्यारह वॉ बाब
मोमिन की हाजत बर लाना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ मुफ़ज़्ज़ल जो मैं

कहता हूँ उसे सुनो और जान लो कि ये हक़ है इसे करो और ख़बर दो इसकी अपने शरीफ़ तबीअत भाईयों को जो मैंने कहा ये कौन लोग हैं। फ़रमाया जो अपने बरादराने ईमानी की हाजतों को पूरा करने की तरफ़ राग़िब हैं। फिर फ़रमाया जो शख़्स अपने बरादरे मोमिन एक हाजत बर लाता है अल्लाह रोज़े क़यामत उसकी वैसी हज़ार हाजतें पूरी करता है उनमें अव्वल जन्नत है और एक उनमें से ये है कि उसके क़राबतदारों, शनासाओं और भाईयों को दाख़िले जन्नत करता है बशर्ते ये के वो दुश्मनाने इमान न हों। मुफ़ज़्ज़ल का मअमूल था कि जब उसकी अख़्वान में से कोई उससे किसी ज़रूरत के पूरा करने का सवाल करता तो वो उससे कहता कि क्या तुम पसन्द नहीं करते कि शरीफ़ भाईयों में से हो।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह तआला ने एक मख़्लूक़ ऐसी पैदा की है जिसको हमारे शिया ने फ़ुक़रा की हाजत बरारी के लिए मुन्तख़ब किया है ताकि वो उसके सवाब में उसे जन्नत अता करे पस अगर तुम में ताक़त है तो उनमें से हो जाओ फिर हम से कहा अल्लाह हमारा रब है हम उसकी इबादत करते हैं और हम किसी को उसका शरीक क़रार नहीं देते।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन की हाजत बर लाना बेहतर है हज़ार गुलाम आज़ाद करने और हज़ार घोड़ों पर फ़ी सबी लिल्लाह ख़ैरात का सामान बार करने से।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मर्दे मोमिन की हाजत का पूरा करना अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा महबूब है बीस ऐसे हज से कि जिनमें एक लाख रूपये राहे ख़ुदा में ख़र्च किए हों।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा कि मोमिन, मोमिन के लिए रहमत है फ़रमाया हाँ मैंने पूछा ये कैसे फ़रमाया जब कोई मोमिन अपने बरादरे मोमिन के पास

अपनी हाजत लाता है पस ये अल्लाह की रहमत होती है जो उसकी ज़रूरत को उसकी तरफ़ खींच लाती है और उसके लिए सबबे ख़ैर बनती है पस अगर उसने बरादरे मोमिन की हाजत को पूरा कर दिया तो उसकी ये नेकी कुबूल की जाती है और जो हक़ कुबूल करने का और अगर बावजूद उसकी ज़रूरत पूरा करने की कुदरत रखने के रद कर देता है तो वो अपने से ख़ुदा की रहमत को रद कर देता हे जो उसकी तरफ़ खींच कर लाई थी और अल्लाह ज़ख़ीरा करता है उस रहमत का रोज़े क़यामत तक कि उसकी रहमत को रद कर दिया गया था वो क़यामत में हाकिम बने और उसको अख़्तियार हो कि वो रहमत को चाहे अपने लिए रखे चाहे अपने ग़ैर को दे दे।

ऐ इस्माईल रोज़े क़यामत वो हाकिम होगा उस रहमते अल्लाह का। तुम्हारा क्या ख़याल है कि वो किस पर सर्फ़ करेगा मैंने कहा मेरा ख़याल है कि वो अपने ऊपर सर्फ़ करेगा ऐ इस्माईल गुमान नहीं ये यक़ीन है कि वो हरगिज़ अपने से रद न करेगा अगर किसी के पास कोई बन्दए मोमिन अपनी हाजत लाए और बावजूद कुदरत वो उसे पूरा न करे तो ख़ुदा उसपर एक सॉप को मुसल्लत करता है जो उसके हाथ की उँगली में काटता रहेगा क़यामत तक, ख़्वाह मग़फ़ूर होने वाला हो या मअजूब होने वाला।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो ख़ानए काबा का तवाफ़ सात रोज़ करे तो अल्लाह उसके नामए आमाल में छः हज़ार नेकियॉ लिखता है और छः हज़ार गुनाह उसके महो करता है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब मुसलमान मुसलमान की हाजत बरारी करता है तो अल्लाह तआला उससे कहता है तेरा सवाब मेरे ऊपर है बग़ैर तुझे जन्नत दिए राज़ी न हूंगा।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो ख़ानए काबा का

एक तवाफ़ करे अल्लाह उसके नाम छः हज़ार हस्ना लिखता है और छः हज़ार गुनाह महो करता है और छः हज़ार दरजे बुलन्द करता है जब वो मुल्तज़िम (जिसे लाना कहते हैं शिकम का उससे मिलाना मुस्तहब है) के पास जाता है तो अल्लाह उसके लिए सात दरवाज़े जन्नत के दरवाज़ों में से खोलता है मैंने कहा तवाफ़ की इतनी बड़ी फ़ज़ीलत है फ़रमाया मैं तुझे उससे बड़ी फ़ज़ीलत का अमल बताऊँ मुसलमान की हाजत बर लाना अफ़ज़ल है तवाफ़ से तवाफ़ से तवाफ़ से दस बार फ़रमाया।

9. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. से सुना जो शख़्स अपने बरादरे मोमिन की हाजत बरारी के लिए ख़ुदा से तालिबे अज्र होकर चले और उसे पूरा करे तो अल्लाह उसके लिए लिखता है सवाब हज व उमरा जो मक़बूल हों सवाब ऐसे दो महीनों के रोज़ों का जो हुरमत वाले चार माह से हों और उस एतकाफ़ का सवाब हो जो ऐसे दो महीनों में मस्जिदे हराम में किया जाए और जो हाजत बरारी के लिए निकले मगर पूरा न कर सके तो उसके लिए सवाब एक हजे मक़बूल का लिखता है पस तुम इस अम्र ख़ैर की तरफ़ रग़बत करो।

10. अबू बसीर ने रिवायत की है कि फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने भाईयों से नेकी की तरफ़ रग़बत हो और उसके अहल से बन जाओ बेशक एक दरवाज़ा है जिसका नाम मअरूफ़ है उसमें दाख़िल न हो मगर वो जो ज़िन्दगानीए दुनिया में नेकी करे जो शख़्स अपने बरादरे मोमिन की हाजत बरारी के लिए निकलता है ख़ुदा उसपर दो फ़रिश्तों को मोअय्यन करता है एक को दॉये जानिब दूसरी को बॉये जानिब जो उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और दुआ करते है उसकी हाजत के पूरा होने के लिए फ़िर हज़रत ने फ़रमाया रसूल ख़ुश होते है मोमिन की हाजत बर लाने से जबकि साहिबे हाजत की वो हाजत पूरी

हो जाए।

11. इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया एक हज मेरे नज़दीक महबूब तर है उससे कि आज़ाद करूँ एक गुलाम एक गुलाम और एक गुलाम यहाँ तक कि ये तअदाद दस गुनी हो जाए यानी तीस और उसकी मिस्ल यहाँ तक कि ये तीस की तअदाद सत्तर गुनी हो जाए या दो हज़ार एक सौ तो उससे ज़्यादा मेरे लिए महबूब बात ये होगी कि मैं मुसलमानों के किसी ख़ानदान की इस तरह मदद करूँ कि उनकी भूक को रोकूँ, ये पसन्दीदा है मेरे नज़दीक एक हज से एक हज से एक हज से यहाँ तक कि ये तअदाद दस गुनी हो यानी तीस और फिर ये बढ़कर सत्तर गुनी हो यानी दो हज़ार एक सौ।

12. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने कि अल्लाह ने मूसा अ. को वही की कि मेरा एक बन्दा मुक़र्रब बनेगा मेरे एक हस्ना की वजह से मैं उसे जन्नत में हाकिम बनाऊँगा। हज़रत मूसा अ. ने पूछा ऐ मेरे परवरदिगार कौन सी नेकी है फ़रमाया उस बन्दे की नेकी जो बन्दए मोमिन की हाजत बन लाने के लिए निकलता है चाहे वो हाजत उससे पूरी हो या न हो।

13. फ़रमाया मूसा काज़िम अ. ने जिसके पास बरादरे मोमिन अपनी हाजत लेकर आए तो ये अल्लाह की उसपर रहमत है जो उसे खींचकर उसके पास लाई है। अगर उसने हाजत पूरी कर दी तो वो हमारी विलायत को पहुँच गया और उससे विलायते खुदा हासिल होगी और अगर बावजूद कुदरत रखने के उसकी हाजत पूरी न की तो खुदा आग का एक साँप मुसल्लत कर देगा जो जो क़ब्र में रोज़ क़यामत तक उसको काटता रहेगा चाहे वो क़यामत में मग़फ़ूर हो या मुअज़्ज़ब। पस अगर तालिबे हाजत मअज़ूर रखे तब भी उसे रद करने वाला ख़राब हाल में रहेगा।

14. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब किसी मोमिन के सामने उसका मोमिन भाई अपनी हाजत पेश करे और उसके

पूरा करने पर क़ादिर न हो और उसका दिल उसपर रंजीदा हो तो अल्लाह तआला उसके रंज की वजह से उसको जन्नत में दाख़िल करेगा।

दो सौ बारह वॉ बाब

मोमिन की हाजत बरारी में सई करना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने मोमिन भाई की हाजत बरारी के लिए जाना ये अज्र रखता है कि ख़ुदा दस नेकियॉ लिखता है और दस गुनाह महो करता है और दस दरजे बुलन्द करता है और मेरा गुमान है ये भी फ़रमाया कि ये अज्र बराबर है दस गुलाम आज़ाद करने के और अफ़ज़ल है मस्जिदुल हराम में एक माह एतकाफ़ करने से।

2. रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काज़िम अ. से सुना कि रूए ज़मीन पर अल्लाह के कुछ बन्दे हैं जो लोगों की हाजत बरारी में सई करते हैं वो रोज़े क़यामत बेख़ौफ़ होंगे और जो बन्दा मोमिन को ख़ुश करेगा अल्लाह रोज़े क़यामत उसका दिल ख़ुश करेगा।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम अबू जाफ़र अ. ने जो शख़्स अपने मोमिन भाई की हाजत बरारी के निकलेगा तो अल्लाह के हुक्म से पचहत्तर हज़र मलाएका उसपर साया फ़िगन होते हैं और जो क़दम उठाता है एक हस्ना उसके नाम लिखा जाता है और गुनाह महो होता है और एक दरजा बुलन्द होता हे और जब वो उसकी हाजत बर लाता है तो अल्लाह तआला उसको हज व उमरे का सवाब अता करता है।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने बरादरे मुस्लिम की हाजत रवाई के लिए मेरा जाना मेरे लिए ज़्यादा महबूब है हज़ार गुलाम आज़ाद करने से और फ़ी सबी लिल्लाह लोगों के लिए हज़ार ज़ीन कसे और लगाम वाले घोड़ों पर सवार होने से।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो मोमिन अपने बरादरे

मोमिन की हाजत बरारी के लिए निकलता है ख़ुदा हर क़दम पर उसके नाम एक नेकी लिखता है और गुनाह उसका महो करता है और एक दरजा बुलन्द करता है और उसके बाद फ़रमाया दस नेकियॉ लिखता है और दस हाजतें पूरी करता है।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो सई करे अपने बरादरे मोमिन की हाजत बरारी में अल्लाह तआला उसके लिए हज़ार नेकियॉ लिखता है और बख़्शता है उसके रिश्तेदारों, पड़ोसियों, भाईयों और जान पहचान वालों और उन लोगों को जो उसके साथ नेकी करें और नासिबी के सिवा उस नेकी को इजाज़त होगी कि वो उसको जहन्नम से निकाल ले।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई किसी बरादरे मुस्लिम की हाजत बरारी के लिए कोशिश करे और ख़ुदा उसके हाथ से वो ज़रूरत पूरी करा दे तो ख़ुदा उसके नामए आमाल में हज व उमरा और दो महीने के एतकाफ़ का जो मस्जिदुल हराम में किया गया हो और वो दो माह रोज़े रखे हों सवाब अता फ़रमाता है और अगर बवजूद कोशिश के वो हाजत बरारी न कर सके तब भी हज व उमरे का सवाब उसको मिल जाएगा।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने काफ़ी है आदमी को अपने भाई पर ये एतमाद कि वो अपनी हाजत उससे बयान करे।

9. सफ़वान जमाल कहता है कि मैं सादिक़े आले मोहम्मद स. की ख़िदमत हाज़िर था कि एक शख़्स अहले मक्का से आकर कहने लगा कि किराया शुतरॉ अदा करने की दुश्वारी पेश आ रही है हज़रत ने मुझसे फ़रमाया। उठ और अपने भाई की मदद कर, मैं उसके साथ गया और किराये की मुश्किल आसान करके फिर पलट आया। हज़रत ने फ़रमाया तुमने क्या किया। मैंने कहा मैं आपपर फ़िदा हूँ मैंने उसकी ज़रूरत को पूरा कर दिया। फ़रमाया तेरा अपने भाई की ये मदद करना मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है सात तवाफ़ों से ख़ानए काबा के, फिर फ़रमाया। एक

शख़्स इमाम हसन से कहने लगा कि एक ज़रूरत में मेरी मद्द कीजिए हज़रत ने जूता पहना और उसके साथ चले। हज़रत इमाम हुसैन अ. की तरफ़ से गुज़रे आप इस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे आपने उस शख़्स से कहा तूने अपनी हाजत इमाम हुसैन से क्यों न बयान की, उसने कहा मैंने चाहा तो था लेकिन वहॉ दरबान ने कहा कि हज़रत एतकाफ़ में हैं फ़रमाया तू कहता और हज़रत एआनत करते तो ये उनके एक माह के एतकाफ़ से बेहतर होता।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला ने फ़रमाया मख़्लूक़ मेरी अयाल है पस मेरे लिए उनमें सबसे ज़्यादा महबूब वो है जो उनपर सबसे ज़्यादा मेहरबान है और उनकी हाजत पूरी करने में सबसे ज़्यादा कोशिश करने वाला है।

11. अबू अमारह ने बयान किया कि हमाद बिन अबू हनीफ़ा ने मुझसे कहा बयान करो वो बात जो अइम्मा से सुनी है। मैंने कहा हमसे ये रिवायत की गई है कि बनी इस्राईल का एक आबिद जब अपनी इबादत के आख़री दरजे को पहुँचा तो लोगों की क़ज़ाए हाजत में सई करने और उनके मामलात की इस्लाह में मशग़ूल रहने लगा।

दो सौ तेहर वॉ बाब

मर्दे मोमिन के कर्ब को दूर करना

1. रावी ने कहा मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि जो शख़्स फ़रयाद रसी करता है अपने बरादरे मोमिन की उसके इज़तेराब व दरमान्दगी में और दूर करता हे उसकी तकलीफ़ को और मदद करता है उसकी हाजत बर लाने में, अल्लाह तआला उसके लिए बहत्तर रहमतें लिखता है उनमें एक दुनिया में देता है ताकि अम्रे मआश में सहूलियत हो और इकहत्तर ज़ख़ीरा

करता है रोजे क़यामत में ख़ौफ़ दूर करने के लिए।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि जो कोई बरादरे मोमिन कि एआनत करेगा अल्लाह उसकी 73 मुसीबतों को दूर करेगा उनमें से एक इस दुनिया में और 72 क़यामते उज़मा में जब कि लोग अपनी अपनी मुसीबतों में मुब्तला होंगे।

3. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना जो कोई बन्दए मोमिन की एक तकलीफ़ दूर करेगा अल्लाह उसके इज़्तेराब को रोज़े क़यामत दूर करेगा और अपनी क़ब्र से मुत्मईन और रहमते ख़ुदा का उम्मीदवार होकर निकलेगा और जो भूक में खाना देगा ख़ुदा उसको जन्नत में फल खिलाएगा और जो प्यास में पानी पिलाएगा अल्लाह अज़्ज़ा व जल उसको बहिश्त की शराबे ख़ालिस से सेराब करेगा।

4. हज़रत इमाम रज़ा अ. ने फ़रमाया जो कोई किसी मोमिन की तकलीफ़ दूर करेगा उसका दिल ख़ुश करेगा अल्लाह तआला रोज़े क़यामत उसका दिल ख़ुश करेगा।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. से सुना जो कोई बन्दाए मोमिन की एक तकलीफ़ दूर करेगा दरॉ हालाकि वो तन्दरूस्त हो तो अल्लाह तआला दुनिया व आख़ेरत में उसकी हाजतों को पूरा कर देगा। और फ़रमाया अल्लाह अज़्ज़ा व जल उस मोमिन का मद्दगार है जो दूसरे मोमिन की मद्द करे तुम नसीहत हासिल करो और नेकी की तरफ़ राग़िब हो।

दो सौ चौदवॉ बाब

मोमिन को खाना खिलाना

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जो किसी बन्दए मोमिन को सेर करेगा उसपर जन्नत वाजिब है और जो काफ़िर को सेर करे तो सज़ावार है ख़ुदा के लिए उसका पेट ज़क्कूम से पुर करे। चाहे खाना खिलाने वाला मोमिन हो या

काफ़िर।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अगर मैं खाना दूँ एक शख़्स को मुसलमानों में जो साहिबे ईमान हो तो मेरे लिए वो बेहतर है अहले नाजिया यानी अतराफ़ो जवानिब के उन एक लाख या ज़्यादा मुसलमानों के खाना खिलाने से जो बज़ाहिर मुसलमान हों।

3. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने जो तीन मुसलमानों को खाना खिलाए तो ख़ुदा उसको तीन जन्नतों से खाना देगा अव्वल फ़िरदौस दूसरे जन्नते अदन तीसरे तूबा से जो जन्नते अदन का दरख़्त है और जिसको हमारे रब ने अपने दस्ते क़ुदरत से बोया है।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसके घर में दो मोमिन दाख़िल हों और वो उन्हें खाना खिला कर सेर करे तो ये एक बन्दा आज़ाद करने से बेहतर है।

5. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अ. ने जो कोई भूक में एक बन्दए मोमिन को खाना दे ख़ुदा उसको जन्नत के फलों से खाना देगा और जो प्यासे मोमिन को पानी पिलाएगा अल्लाह उसको जन्नत की सर बमहर शराब से सेराब करेगा।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो मोमिन को शिकम सेर खाना खिलाए तो उसके सवाबे आख़ेरत को मख़्लूक़ में कोई नहीं जान सकता। रब्बुल आलमीन अल्लाह के सिवा न उसका इल्म मलके मुक़र्रब को है न नबीए मुरसल को फिर फ़रमाया अस्बाबे मग़फ़िरत से भूके मुसलमान को खाना खिलाना है फिर ये आयत पढ़ी या खाना खिलाना भूक के दिन रिश्तेदार यतीम को या ख़ाकसार मोहताज को।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि जो पानी पिलाने की क़ुदरत रखते हुए किसी बन्दए मोमिन को पानी पिलाए तो गोया उसने औलादे इस्माईल अ. से

दस गुलाम आज़ाद किये।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ हुसैन बिन नईम दोस्त रखता है अपने भाईयों को, मैंने कहा हॉ। फ़रमाया पस नफ़ा पहुँचा मोमिनीन फ़ुक़रा को, मैंने कहा अच्छा, फ़रमाया सज़ावार है तेरे लिए कि दोस्त रखना उसको जो अल्लाह को दोस्त रखे। ख़ुदा की क़सम तू नफ़ा न पहुँचाएगा किसी को जब उसको दोस्त न रखे क्या तू उनको अपने घर नहीं बुलाता मैंने कहा बुलाता हूँ और जब तक दो तीन या उससे कमो बेश न हों खाना नहीं खाता। हज़रत ने फ़रमाया उनकी फ़ज़ीलत तेरे ऊपर ज़्यादा है बनिस्बत उस फ़ज़ीलत के जो तुझे उनपर है। मैंने कहा ये कैसे? मैं ही उन्हें खाना दूँ उन्हें फ़र्श पर बिठाऊँ और फिर भी उनको मेरे ऊपर फ़ज़ीलत हो। फ़रमाया हॉ जब वो तेरे घर में दाख़िल होते हैं तो तेरी और तेरे अयाल की मग़फ़िरत के साथ दाख़िल होते हैं और जब तेरे घर से निकलते हैं तो तेरे और तेरी अयाल के गुनाह लेकर निकलते है।

9. रावी कहता है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के सामने हमारे अस्हाब का ज़िक्र आया मैंने कहा जब तक उनमें दो तीन या कमो बेश न हों मैं न दिन का खाना खाता हूँ न रात का, हज़रत ने फ़रमाया कि उनकी फ़ज़ीलत तुझपर ज़्यादा है बनिस्बत तेरी फ़ज़ीजत के उनपर, मैंने कहा मैं उनको खाना दूँ, माल उनपर ख़र्च करूँ मेरे घर वाले उनकी ख़िदमत करें फिर भी फ़ज़ीलत उन्हीं की हो। फ़रमाया जब वो तेरे घर में दाख़िल होते है तो अल्लाह का रिज़्क़े कसीर आता है और जब जाते हैं तो तेरी मग़फ़िरत का सामान होता है।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक मर्दे मुसलमाल को खाना देना मेरे नज़दीक एक उफ़क़ गुलाम आज़ाद करने से बेहतर है मैंने पूछा उफ़क़ से क्या मुराद है फ़रमाया दस हज़ार।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो ख़ुश्नूदीए ख़ुदा के

लिए अपने भाई को खाना खिलाता है ऐसा है जैसे लोगों के फ़ाम को खिलाया है मैंने पूछा फ़ाम से क्या मुराद है फ़रमाया एक लाख आदमी।

12. सदीरिस्सैरक़ी ने कहा कि मुझसे इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया तुझे किस चीज़ ने रोका उससे कि तू हर रोज़ एक गुलाम आज़ाद करे, मैंने कहा मैं इसका मुत्हम्मिल नहीं हो सकता यानी इतनी दौलत मेरे पास नहीं, फ़रमाया एक मुसलमान को खाना खिला दिया कर, मैंने कहा चाहे मालदार हो या ग़रीब फ़रमाया मालदार भी कभी ख़्वाहिशे तआम रखता है।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. से मरवी है कि कोई मुसलमान भाई मेरे पास खाना खाए तो वो मेरे नज़दीक एक गुलाम आज़ाद करनेसे बेहतर है।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मैं अपने मुसलमान भाईयों में से एक भाई को सेर कर दूँ तो वो मेरे नज़दीक उससे ज़्यादा महबूब है कि तुम्हारे बाज़ार में जाकर एक गुलाम ख़रीदूँ और आज़ाद करूँ।

15. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अ. ने अगर मैं तुम्हारे बाज़ार से पॉच दिर्हम का खाना ख़रीद कर के कुछ मुसलमान भाईयों को खिलाऊँ तो वो मेरे लिए एक गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है।

16. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. पूछा गया कि गुलाम आज़ाद करने के मसावी और क्या है फ़रमाया एक मर्दे मुसलमान को खाना खिलाना।

17. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने सिवाए मोमिन को खाना खिलाने के कोई चीज़ सवाब में ज़ियारते मोमिन के बराबर नहीं। अल्लाह के लिए सज़ावार है कि वो जन्नत का खाना उस शख़्स को दे जो किसी मोमिन को खाना खिलाए।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोहताज मोमिन को

खाना देना मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है उसकी ज़ियारत करने से और उसकी ज़ियारत ज़्यादा महबूब है दस गुलाम आज़ाद करने से।

19. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो मालदार मोमिन को खिलाए तो ऐसा है जैसे औलादे इस्माईल से दस आदमियों को ज़िब्हा होने से बचा लिया और एक मोमिन मोहताज को खाना खिलाना ऐसा है जैसे औलादे इस्माईल से सौ गुलामों को ज़िब्हा से बचा लिया।

20. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक मोमिन को खाना खिलाना मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है दस गुलाम आज़ाद करने और दस हज करने से, मैंने तअज्जुब से कहा दस गुलाम आज़ाद करने और दस हज करने से। फ़रमाया ऐ नसर! अगर तुम उसको खाना न दोगे तो या तो वो भूक से मर जाएगा या किसी नासिबी से जाकर सवाल करने पर तुम उसे मजबूर करोगे। उससे तो उसका मर जाना बेहतर है। ऐ नसर जिसने एक मोमिन को ज़िन्दा किया उसने गोया सब लोगों को ज़िन्दा किया। पस अगर तुमने उसको न खिलाया तो गोया उसे मार डाला और अगर खाना दिया तो उसको ज़िन्दा कर लिया।

दो सौ पन्द्राह वॉ बाब

मोमिन को लिबास पहनाना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने अपने भाई को जाड़े या गर्मी का लिबास पहनाया, ख़ुदा उसको जन्नत का लिबास पहनायेगा और नज़अ की सख़्ती को उसपर आसान कर देगा और उसकी क़ब्र को कुशादा कर देगा और जब वो क़ब्र से निकलेगा तो मलाएका उससे मिलकर जन्नत की बशारत देंगे जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया है। मलाएका उनसे मिलकर कहेंगे यही वो दिन है जिस का तुम से वादा किया गया था।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो किसी बरहना मोहताज को लिबास पहनाए और उसकी रोज़ी के मुतअल्लिक़ किसी अम्र

में मदद करे तो ख़ुदा सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को मोअय्यन करता है जो उसके लिए नफ़ख़े सूर तक उसके हर गुनाह के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहें।

3. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जो किसी मोहताज मुसलमान को बहालते बरहनगी लिबास पहनाएगा या रोज़ी के मामले में उसकी मदद करेगा तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को मोअय्यन करेगा कि वो उससे सादिर होने वाले हर गुनाह के लिए इस्तिग़फ़ार करें यहॉ तक कि सूर फूँका जाए।

4. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अ. ने जो किसी मोमिन को लिबास पहनाएगा अल्लाह उसको जन्नत का लिबास पहनाएगा और एक दूसरी हदीस में है कि वो ख़ुदा की हिफ़ाज़त में रहेगा जब तक उस मोहताज के बदन पर उस लिबास का एक तार भी रहेगा।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई बरहनगी में किसी मोमिन को लिबास पहनाएगा तो ख़ुदा उसको बहिश्ती लिबास पहनाएगा और बहालते मालदारी पहनाएगा वो अल्लाह की परदापोशी में रहेगा जब तक उस लिबास का एक टुकड़ा भी बाक़ी है।

दो सौ सोलह वॉ बाब
मोमिन पर मेहरबानी करना और उसकी इज़्ज़त करना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो अपने मोमिन भाई के चेहरे से ख़सो ख़ाशाक दूर करे तो अल्लाह उसके लिए दस नेकियॉ लिखता है और जो बन्दए मोमिन के चेहरे पर तबस्सुम लाये तो उसके लिए एक नेकी लिखता है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो अपने मोमिन भाई से मरहबा कहे अल्लाह तआला क़यामत तक उसके लिए ख़ुश

आमदीद लिखता है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसके पास कोई मोमिन भाई आए और वो उसका इकराम करे तो अल्लाह उसका इकराम करता है।

4. फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने जो कोई मेरी उम्मत में अपने भाई पर किसी चीज़ से भी मेहरबानी करेगा तो अल्लाह उसकी ख़िदमत के लिए जन्नत के ख़ादिम मुक़र्रर करेगा।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने जिसने सिर्फ़ एक कलमे से अपने भाई को नवाज़ा और उसपर मेहरबानी करके ख़ुश करे तो अल्लाह उसे अपनी मेहरबानी के साए में रखेगा जब तक वो इस काम में लगा रहेगा।

6. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि जिन बातों से अल्लाह ने मख़्सूस किया है मोमिन को, उनमें एक ये है कि वो अपने भाईयों के साथ नेकी करें अगरचे वो नेकी कम ही क्यों न हो। ख़ुदा ने अपनी किताब में फ़रमाया है वो तंगदस्ती की हालत में भी अपने नफ़्सों पर दूसरों को तरजीह देते हैं फिर ये भी फ़रमाया है जो बुख़्ल से अपने को बचाने वाले हैं वो रोज़े आख़ेरत फलाह पाने वाले हैं और जिसने ख़ुदा की मारफ़त हासिल की ख़ुदा उसको दोस्त रखता है उसका अज्र रोज़े क़यामत बेहिसाब है। फिर फ़रमाया ऐ जमील उस हदीस को लोगों से बयान करो कि उससे नेकी की तरफ़ लोगों को रग़बत होगी।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन को चाहिए कि तोहफ़ा दे अपने भाई को, रावी कहता है मैंने कहा कि तोहफ़ा किस चीज़ का फ़रमाया फ़र्श हो उसके बैठने के लिए, तकया पसे पुश्त लगाने के लिए, खाना हो, लिबास हो, सलाम किया जाए। इसके बदले में उसको मौक़ा होगा कि जन्नत की तरफ़ गर्दन उठाकर देखे और जन्नत को वही होगी कि मैंने तेरा तआम

सिवाए नबी या वसीए नबी अहले दुनिया पर हराम किया। जब क़यामत का दिन आएगा तो ख़ुदा जन्नत को वही करेगा कि तलाफ़ी कर मेरे दोस्तों की चन्द तोहफ़ों से, पस निकलेंगे उससे चन्द ग़ुलाम, कनीज़ें जिनके सरों पर ख़्वान होंगे जो मोतियों टके रूमालों से ढके होंगे जब वो लोग जहन्नम और उसके ख़ौफ़नाक मनाज़िर देखेंगे तो होशो हवास गुम हो जाएंगे और खाने से रूक जाएंगे उस वक़्त तख़्ते अर्श से एक मुनादी निदा देगा जहन्नम हराम है उसपर जो तआमे जन्नत ले तब वो लोग अपने हाथ बढ़ा कर खाएंगे।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मोमिन की मोहब्बत ये है कि उसके सत्तर बड़े गुनाह छुपाए।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ इस्हाक़ एहसान कर मेरे दोस्तों से जहाँ तक मुमकिन हो जब मोमिन, मोमिन पर एहसान करता है या उसकी मदद करता है तो इब्लीस अपना चेहरा खुरचता है और उसका क़ल्ब ज़ख़्मी होता है।

दो सौ सत्तरह वॉ बाब

ख़िदमते मोमिन

1. हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान, मुसलमानों में से किसी क़ौम की ख़िदमत करेगा अल्लाह तआला बक़द्रे उनकी तादाद के जन्नत में ख़िदमतगार अता फ़रमाएगा।

दो सौ अट्ठारह वॉ बाब

नसीहतिल मोमिन

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिनीन पर वाजिब है कि एक दूसरे को नसीहत करें।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मोमिन पर मोमिन को नसीहत करना वाजिब है ख़्वाह वो हाज़िर हो या ग़ाएब

(बज़रिये मुरासलात)

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन पर मोमिन को नसीहत करना वाजिब है।

4. फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने तुम से हर शख़्स को चाहिए कि अपने भाई को नसीहत इस तरह करे जैसे अपने नफ़्स को करता है।

5. रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अज़रूए क़द्रो मंज़िलत इन्दल्लाह रोज़े क़यामत वो शख़्स सबसे से ज़्यादा होगा जो उसकी ज़मीन उसकी मख़्लूक़ को सबसे से ज़्यादा नसीहत करने वाला होगा।

6. फ़रमाया अबू अ. ने नसीहत करना तुमपर लाज़िम है कुर्बतन इलल्लाह हरगिज़ तुम को इससे बेहतर अमल न मिलेगा।

दो सौ उन्नीस वॉ बाब
लोगों के दरमियान इस्लाह

1. फ़रमाया अबू अ. ने वो नेकी जिसको अल्लाह दोस्त रखता है लोगों के दरमियान सुलह कराना है जबकि फ़साद बरपा हो और उनको एक दूसरे से क़रीब करना है जबकि वो दूर हो चुके हों।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने दो आदमियों के दरमियान सुलह करना मेरे नज़दीक दो दीनार सदक़ा देने से बेहतर है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारे दो शियों में झगड़ा देखो तो अपने माल से फ़िदया दे कर उस क़ज़ीये को ख़त्म करा दो।

4. रावी कहता है मैं और मेरा बहनोई मीरास पर झगड़ा कर रहे थे कि मुफ़ज़्ज़ल का उस तरफ़ से गुज़र हुआ वो हमारे पास ठहर गये और कहा कि तुम लोग घर चला, चुनांचे हम लोग उनके साथ घर आए। मुफ़ज़्ज़ल ने हमारे दरमियान सुलह करा दी और चार सौ दिर्हम अपने पास से हमको दिये जब हम मुत्मईन हो गए तो उन्होंने कहा ये मेरा माल नहीं बल्कि इमाम

जाफ़रे सादिक़ अ. ने हुक्म दिया है कि जब हमारे अस्हाब में कोई झगड़ा हो तो मैं उनके दरमियान सुलह करा दूँ और हज़रत के माल से फ़िदया दूँ पस ये माल हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. का है।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस्लाह करने वाला झूठा नहीं कहलाता। दरोगे मस्लेहत आमेज़ हि अज़ रास्ती फ़ित्ना अंगेज़।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस क़ौले बारी–ए–तआला के मुतअल्लिक़ तुम अपनी क़समों में अल्लाह तआला का नाम लेकर ये कहो कि तुम नेकी न करोगे न परहेज़गारी करोगे और लोगों के दरमियान सुलह न कराओगे इमाम ने फ़रमाया जब तुम दो आदमियों के दरमियान सुलह कराने के लिए बुलाए जाओ तो क़सम खाकर ये न कहो कि मैं ये न करूंगा।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मेरी तरफ़ से फ़लॉं फ़ला अम्र के मुतअल्लिक़ ये बातें पहुँचा दो जिनका मैं हुक्म दे रहा हूँ। मैंने कहा जो कुछ आप ने फ़रमाया है वो कहूँगा और कुछ अपनी तरफ़ से कह दूँ, फ़रमाया ज़रूर सुलह कराने वाला झूठा नहीं कहा जाता क्यों कि सुलह झूठ नहीं है।

दो सौ बीस वॉं बाब

एहयाए मोमिन

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि मैंने इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा जिसने एक शख़्स को बग़ैर किसी के क़त्ल किये हुए क़त्ल किया तो ऐसा है गोया सब आदमियों को क़त्ल किया और जिसने एक को ज़िन्दा रखा उसने गोया सबको रखा। साएल ने कहा उससे कुछ और मुराद है फ़रमाया जिसने किसी को हिदायत से ज़लालत की तरफ़ पहुँचाया उसने गोया उसको क़त्ल किया।

2. रावी कहता है इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कहा क्या तफ़सीर है इस आयत की, जिसने एक नफ़्स को ज़िन्दा किया

उसने गोया कुल आदमियों को ज़िन्दा किया। फ़रमाया जिसने किसी को जलने या डूबने से बचाया। मैंने कहा ये मुराद नहीं जिसने गुमराही से हिदायत की तरफ़ पहुँचाया फ़रमाया ये तावील सबसे अच्छी है।

3. हमरान से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा कि क्या मैं आपसे सवाल करूँ। अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त करे फ़रमाया हॉ मैंने कहा पहले मेरी हालत और थी अब और है। मैं पहले किसी बस्ती में जाकर एक या दो मर्द या औरत पर तबलीग़े मज़हबे हक़्क़ाहू करता था खुदा जिसको चाहता है राहे रास्त पर लाता है लेकिन अब मैं किसी को दावते इलल हक़ नहीं देता। फ़रमाया कोई हर्ज नहीं, अगर तू लोगों को उनके रब पर छोड़ दे। अल्लाह जिसको चाहे जुल्मत से नूर की तरफ़ निकालेगा और अगर कोई हुसूल नेकी की तरफ़ से हुआ और तुझसे हिदायत चाहे तो थोड़ी सी हिदायत उसे कर (ताकि दर सूरते मुनाफ़िक़ या मक्कार दुश्मन होने के तुझे नुक़्सान न पहुँचाए) मैंने कहा इस आयत का मतलब क्या है जिसने एक नफ़्स को ज़िन्दा किया उसने गोया सबको ज़िन्दा किया। फ़रमाया इससे मुराद जलने या डूबने से बचाना फिर फ़रमाया उसकी सबसे बड़ी तावील ये है कि अगर मदद के लिए बुलाए तो उसकी मदद की जाए।

दो सौ इक्कीस वॉ बाब

अपने अहल को दावत इलल ईमान देना

1. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा मेरे घर वाले मेरी बात सुनते हैं तो बहालते तक़्क़या उनको अम्रे इमामत के मुतअल्लिक़ बताऊँ फ़रमाया ज़रूर, ख़ुदा अपनी किताब में फ़रमाता है अपने नफ़्सों को और अपने अहलो अयाल को जहन्नम की उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर है। (223/2 से)

2. इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया ऐ मालिक अल्लाह दुनिया की नेएमतें तो दोस्त दुश्मन सबको देता है लेकिन अपना दीन सिर्फ़ उसी को देता है जिसे दोस्त रखता है।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने इस दुनिया की नेएमतें तो खुदा हर नेको बद को है लेकिन ईमान अपने बरगुज़ीदा बन्दों को ही देता है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने दुनिया की नेएमतें तो ख़ुदा हर दोस्त दुश्मन को देता है लेकिन ईमान तो उसी को देता है जिसे वो दोस्त रखता है।

दो सौ बाइस वॉ बाब

तक़य्या की सूरत में मुख़ालिफ़ों को अम्रे हक़ की दावत देने से बाज़ रहना

1. रावी ने कहता है हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया कि अपने को मुख़ालिफ़ लोगो से (बसूरते तक़य्या) बचाओ। अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से नेकी का इरादा करता है तो उसके दिल में एक नूर पैदा करता है फिर उसे छोड़ देता है कि उसमें ग़ौरो फ़िक्र करके तलाश करे फिर फ़रमाया जब तुम मुख़ालिफ़ों से गुफ़्तगू करो तो कहा हम उस तरफ़ जा रहे हैं जिधर अल्लाह गया है और हमने हिदायत के लिए इसका इन्तिख़ाब किया है जिसका इन्तिख़ाब अल्लाह ने किया है अल्लाह ने मोहम्मद को इन्तिख़ाब किया है हमने उनके बाद आले मोहम्मद को।

2. रावी कहता है मुझसे हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया कि ऐ साबित तुम्हारा मुख़ालिफ़ लोगों से क्या तअल्लुक़ तुम उनसे अलग रहो अम्रे इमामत की तरफ़ लोगों को दावत न दो ख़ुदा की क़सम तमाम अहले आसमानो जमीन ऐसे बन्दे को गुमराह करना चाहें जिसको अल्लाह हिदायत करना चाहता है तो वो ऐसा न कर सकेंगे। तुम लोगों से अलग ही हो और अपने

मुख़ालिफ़ों को ये न समझो कि ये मेरा भाई है मेरा इब्ने अम है मेरा पड़ोसीहै बेशक खुदा किसी के साथ नेकी करना चाहता है तो उसकी रूह को पाक कर देता है पस जब वो अम्रे नेक को सुनता हे तो उसे पहचानता है और बुरी बात से इन्कार करता है अल्लाह तआला उसके दिल में ऐसा कलमा डालता है जिससे उसकी ख़ातिर जमा होती है यानी अइम्माए ज़लालत की पैरवी से रूक जाता है।

3. फ़ुज़ैल से मरवी है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा हम लोगों को अम्रे इमामत की तरफ़ दावत दें? फ़रमाया ऐ फ़ुज़ैल जब अल्लाह किसी बन्दे के लिए नेकी चाहता है तो फ़रिश्ते को हुक्म देता है कि उसकी गर्दन को अम्रे इमामत का इक़रार कराए ख़्वाह वो बख़ुशी इक़रार करे या ब कराहत।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने दीन को रज़ाए इलाही के लिए अख़्तियार करो न कि लोगों की रज़ा के लिए जो रज़ाए इलाही के लिए होगा वो तो अल्लाह के लिए होगा और जो लोगों के लिए होगा वो आसमान तक न जाएगा और दीन के मामले में लोगों से झगड़ा न करो क्योंकि उससे बहुत सी क़ल्बी बीमारियाँ पैदा होती है। ख़ुदा ने अपने नबी से फ़रमाया है जिसे तुम दोस्त रखते हो उसे हिदायत (ईसाले इलल मतलूब) नहीं कर सकते (सिर्फ़ रास्ता दिखा सकते हो) और ख़ुदा जिसे चाहता है मतलूब तक पहुँचा देता है फिर सुरः यूनुस में फ़रमाया है क्या तुमने जो कुछ लिया है वो रसूल स. और अली अ. से लिया है न कि ग़ैर से, और मैंने अपने बाप से सुना है ख़ुदा जिसके लिए अम्रे दीन में दाख़िले के लिए लिख देता है वो उसकी तरफ़ उससे ज़्यादा तेज़ जाता है जितना ताएर अपने घोंसले की तरफ़।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा नेएक क़ौम को हक़ के लिए पैदा किया है पस जब वो अम्रे हक़ के किसी दरवाज़े की तरफ़ से गुज़रते हैं तो उनके दिल उसको क़ुबूल कर लेते हैं

अगरचे वो इल्लत न जानते हों और एक क़ौम उनके अलावा पैदा की है जब वो किसी अम्रे बातिल की तरफ़ से गुज़रते हैं तो उनके दिल उनको कुबूल कर लेते हैं अगरचे उसकी इल्लत न जानते हों

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब ख़ुदा किसी बन्दे से नेकी का अमल चाहता है तो उसके क़ल्ब में एक नुक़्तए नूरानी पैदा कर देता है जिससे उसके कान और दिल रौशन हो जाते हैं यहाँ तक कि वो तुम्हारे पास जवारे इमामत है उसके हासिल करने में वो सबसे ज़्यादा हरीस हो जाता है ख़ुदा जब किसी के लिए बुराई का इरादा करता है तो उसके दिल में एक सियाह नुक़्ता पैदा कर देता है जिससे उसके कान और दिल तारीक हो जाते हैं फिर ये आयत पढ़ी: जब ख़ुदा इरादा करता है कि किसी को हिदायत करे तो उसके सीने को इस्लाम के लिए कुशादा कर देता है और जिसको गुमराही में छोड़ना चाहता है उसके सीने को ऐसा तंग बना देता है गोया इस्लाम उसके लिए आसमान पर चढ़ने के बराबर दुश्वार हो जाता है।

तौज़ीह : इस हदीस और आयत से बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इन्सान ईमान व कुफ़्र करने पर मजबूर है ख़ुदा जिसको चाहता है मोमिन बनाता है और जिसे चाहता है काफ़िर, लेकिन ऐसा नहीं उसकी सूरत ये है कि हर शख़्स अपनी ज़िन्दगी में जो अमल करने वाला होता है वो सब अमल पहले इल्मे इलाही में होता है पस जिसका अमल नेका उसके इल्म में होता है और कुबूले हक़ की सलाहियत उसमें पाता है उसपर अपनी तौफ़ीक़ात नाज़िल करता है जिसको ऐसा नहीं पाता उसको गुमराही में छोड़ देता है और तौफ़ीक़ देना अल्लाह का फ़ज़ल है किसी का हक़ नहीं क्योंकि तौफ़ीक़ व तफ़ज़्ज़ुल किसी काम का अज्र नहीं होता और इल्मे इलाही किसी काम पर किसी को मजबूर नहीं करता।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब अल्लाह किसी से नेकी चाहता है तो उसके दिल में एक सफ़ैद नुक़्ता पैदा कर देता है और उसके दिल के सुनने के सुराख़ खोल देता है और उसपर एक फ़रिश्ता मोअय्यन करता है ताकि बुराई से उसे रोक दे और जब किसी बन्दे से बुराई को रोकना नहीं चाहता तो उसके क़ल्ब में एक सियाह नुक्ता पैदा कर देता हे और उसके क़ल्ब के मसामात को बन्द कर देता है और एक शैतान को उसपर मुसल्लत कर देता है कि वो उसे गुमराह करता रहे।

तौज़ीह : जब कोई शख़्स बावजूद नेक व बद जानने के और अहक़ामे इलाही से बाख़बर होने के अपनी बदकिरदारी से बाज़ नहीं आता तो अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और रहमत उससे दूर हो जाती है और उसको उसके हाल पर छोड़ देता है और उसकी सूरत में शैतान उसपर मुसल्लत हो जाता है।

दो सौ तेइस वॉ बाब

ख़ुदा अपना दीन उसे अता करता है जिसे दोस्त रखता है

1. रावी कहता है मुझसे हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया ऐ अबू सख़र अल्लाह दुनिया की नेएमत दोस्त और दुश्मन दोनों को देता है लेकिन हमारे अम्रे इमामत व अमारत को उन्हीं को अता करता है जो उसके बरगुज़ीदा बन्दे हैं, तुम वल्लाह मेरे और मेरे आबा इब्राहीम व इस्माईल के दीन पर हो मैंने आबा से मुराद हज़रत अली इब्नुल हुसैन और मोहम्मद बिन अली को नहीं लिया हालॉकि वो भी उन्हीं के दीन पर है।

तौज़ीह : हज़रत का मतलब ये है कि दीने इस्लाम जिसमें नफ़ी शरीके बारी तआला है मुश्तरक है तमाम अंबिया में आदम से लेकर ख़ातम तक अदयाने अंबिया में उसके मुतअल्लिक़ कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, इख़्तिलाफ़ है तो फ़ुरूए दीन में। इसमें शिया इमामिया का मसलक जुदागाना है और उसको अख़्तियार करने

की तौफ़ीक़ अल्लाह अपने बरगुज़ीदा बन्दों को देता है।

2. इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया एक मालिक अल्लाह दुनिया की नेएमतें तो दोस्त दुश्मन सबको देता हे लेकिन अपना दीन सिफ उसी को देता है जिसे दोस्त रखता है।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने इस दुनिया की नेअमतें तो ख़ुदा हर नेको बद को है लेकिन ईमान अपने बरगुज़िदा बन्दों को ही देता है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने दुनिया की नेअमतें तो ख़ुदा हर दोस्त दुश्मन को देता है लेकिन ईमान तो उसी को देता है जिसे वो दोस्त रखता है।

दो सौ चौबीस वॉ बाब

सलामतीए दीन

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब कि सवाल किया गया हज़रत से इस आयत के बारे में, अल्लाह ने बचा लिया आले फ़िर्औन को फ़िर्औनियों के मक्र से कि उन्होंने हमल किया और उसपर और क़त्ल कर दिया। लेकिन तुम जानते हो कि ख़ुदा ने कैसे उसकी हिफ़ाज़त की ख़ुदा ने उसे दीन से गुमराह होने से बचा लिया।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अमीरूल मोमिनीन अ. ने अपने अस्हाब को वसीयत की थी कि आगाह हो कि कुआन हिदायत है दिन और रात में और नूर है ज़लालत की तारीकी में जब कि तंगदस्ती और फ़ाक़ा हो। जब तुमपर कोई बला आए तो उसे माल के ज़रिये अपने नफ़्सों से दूर करो न कि दीन खोकर, आगाह हो कि हलाक हुआ और तबाही है उसके लिए जिसका दीन तबाह हुआ, आगाह हो जन्नत के बाद तंगदस्ती नहीं और दोज़ख़ के बाद मालदारी नहीं दोज़ख़ का क़ैदी आज़ाद नहीं होता और उसको तकलीफ़ से रिहाई नहीं मिलती।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने दीन की सलामती और बदन की सेहत माल से बेहतर है और माले दुनिया की ज़ीनत है बशर्ते कि उससे नेकी हासिल की जाए।

फ़ुज़ैल ने भी इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से यही हदीस नक़्ल की है।

4. एक शख़्स इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. के असहाब में से हर साल आया करता था एक मुद्दत तक वो हज के लिए न आया। एक बार जब उसका शनासा आया आप अ. ने उससे हाल पूछा उसने दिल शिकस्ता के साथ कलाम किया कि उसकी माली हालत कमज़ोर है फ़रमाया उसके दीन का क्या हाल है उसने कहा जो आपको महबूब है वही है ख़ुदा की क़सम वो ग़नी है।

दो सौ पच्चीस वॉ बाब

तक़य्या

1. आया उन लोगों को दोहरा अज्र दिया जाएगा सब्र करने की बिना पर हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया सब्र से मुराद तक़य्ये पर सब्र और एक आयत के मुतअल्लिक़ दफ़ा करते हैं बुराई को नेकी से, फ़रमाया हस्ना से मुराद तक़य्या और सीया (बदी) से मुराद इफ़शाए राज़ करना।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने तक़य्ये में नौ हिस्सा दीन है जो वक़्ते ज़रूरत तक़य्या न करे उसका दीन नहीं और तक़य्या हर शै में है। सिवाये नबीज़ (जौ की शराब) और मोज़ों पर मसा है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने तक़य्या अल्लाह का दीन है मैंने कहा क्या अल्लाह का दीन है फ़रमाया ख़ुदा की क़सम अल्लाह का दीन है यूसुफ़ ने कहा था क़ाफ़िले वालों तुम चोर हो हालॉकि ख़ुदा की क़सम वो चोर न थे और इब्राहीम ने कहा था मैं बीमार हूँ हालॉकि ख़ुदा की क़सम वो बीमार न थे।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मैंने अपने वालिद से

सुना की रूए ज़मीन पर मेरे नज़दीक तक़य्ये से ज़्यादा महबूब चीज़ नहीं, जो तक़य्या करेगा ख़ुदा उसको बुलन्द मर्तबा देगा ऐ हबीब जो तक़य्या न करेगा ख़ुदा उसको बुलन्द मर्तबा देगा ऐ हबीब जो तक़य्या न करेगा अल्लाह उसको पस्त कर देगा। ऐ हबीब इस ज़माने में मुख़ालेफ़ीन सुकूनो फ़राग़त में हैं जब ज़हूरे हज़रते हुज्जत अ. होगा तो उस वक़्त तक़य्या तर्क होगा।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने दीन को मुख़ालिफ़ों से बचाओ और तक़य्ये के ज़रिये उसे छुपाओ जिसके लिए तक़य्या नहीं उसके लिए ईमान नहीं। तुम मुख़ालिफ़ों के दरमियान ऐसे हो जैसे परिन्दों में शहद की मक्खी अगर वो जान लें कि शहद की मक्खियों के पेट में क्या चीज़ है तो वो अल्बत्ता उसको खा जाएं और अगर तुम्हारे मुख़ालिफ़ीन जान लें कि तुम्हारे अन्दर हम अहले बैत की मोहब्बत है तो तुमको अपनी ज़बानों से खा जाएं यानी तुम्हारी मज़म्मत करें और पोशिदा ऐलानिया तुमको गालियाँ दें ख़ुदा उन लोगों पर रहम करे जो हमारी विलायत का दम भरते हैं।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़, नेकी और बदी बराबर नहीं कि नेकी से मुराद तक़य्या है और बुराई से मुराद ज़बान वजूब तक़य्ये में अपने अक़ाएद का ज़ाहिर करना है और इस आयत के मुतअल्लिक़ बुराई का दफ़िया अच्छे तरीक़े से करो फ़रमाया वो अच्छा तरीक़ा तक़य्या है इस तरह कि जिससे तुमको अदावत है उससे अपने को ख़ालिस दोस्त ज़ाहिर करो।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ उमरो अगर मैं तुझसे एक बात बयान करूँ या एक फ़तवा दूँ फिर दोबारा मुझसे वही सवाल करो और मैं पहले के ख़िलाफ़ जवाब दूँ तो तुम किसपर अमल करोगे मैंने कहा नई बात पर और दूसरी को छोड़ दूँगा। फ़रमाया तुमने ठीक कहा। अल्लाह चाहता है कि

उसकी इबादत पोशिदा तौर पर की जाए। ख़ुदा की क़सम अगर तुमने ऐसा किया तो मेरे और तुम्हारे दोनों के लिए बेहतर होगा और अल्लाह ने अम्रे दीन में तुम्हारे और हमारे लिए तक़य्या चाहा है।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने नहीं पहुँचा किसी का तक़य्या अस्हाबे कहफ़ के तक़य्ये को कि वो क़ौम की ईदों में हाज़िर होते थे और अज़रूए तक़य्या ज़िनाफ़ीर बाँधते थे पस अल्लाह ने उनको दोबारा अज्र अता फ़रमाया।

9. रावी कहता है मैं रास्ते में हज़रत अबू अब्दिल्लाह से मिला मैंने हज़रत की तरफ़ से मुँह फेर लिया और आगे बढ़ गया। उसके बाद आपकी ख़िदमत में आया और कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ मैं आपसे मिला था और मैंने कराहीयतन से मस्लेहतन मुँह फेर लिया था ताकि आपको कोई अज़ीयत न पहुँचे। हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम करे लेकिन एक शख़्स फलाँ मक़ाम पर मुझे मिला और जबकि मुख़ालिफ़ों का मजमा था उसने कहा अलेकस्सलाम या अबा अब्दिल्लाह, उसने अच्छा न किया।

तौज़ीह : उसने इस्लाम पर अलैका को मुक़द्दम किया और बजाए मेरे नाम के कुन्नीयत का ज़िक्र किया और इन दोनों बातों से मख़्सूस तअज़ीम का इज़हार किया मुख़लिफ़ों की मौजूदगी में उसे ऐसा न करना चाहिए था बल्कि तक़य्ये से काम लेना चाहिए था।

10. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा गया कि लोग ये बयान करते हैं कि अली अ. ने मिम्बरे कूफ़ा पर कहा। लोगों! अन्क़रीब तुमसे कहा जाएगा कि मुझे गालियाँ दो। तुम मुझे गाली दे देना और मुझसे बराअत ज़ाहिर करने को कहें तो न करना। हज़रत ने फ़रमाया लोगों ने हज़रत अली पर कैसा झूठ बोला है फिर फ़रमाया हज़रत ने तो ये फ़रमाया था कि तुमसे

मुझे गाली देने को कहा जाए तो तुम मुझे गाली दे देना और अगर मुझसे बराअत को कहा जाए तो मैं दीने मोहम्मद पर हूँ ये नहीं फ़रमाया कि तुम मुझ से इज़हारे बराअत न करना। (साएल दीने मोहम्मद पर होने से समझा कि बराअत न करनी चाहिए लिहाज़ा उसने ये कहा) पूछा क्या बराएत के मुक़ाबले में क़त्ल होने को तरजीह दी जाए। हज़रत ने फ़रमाया ये तकलीफ़ उसपर नहीं और न उसके लिए जाएज़ है बल्कि उसको वही करना चाहिए जो अम्मार बिन यासिर ने किया जबकि अहले मक्का ने उन्हें मजबूर किया (कलमए कुफ़्र कहने पर) हालाँकि उनका दिल ईमान की तरफ़ से मुत्मईन था ख़ुदा ने ये आयत नाज़िल की मगर वो मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुत्मईन हो इस मौक़े पर अम्मार से फ़रमाया अगर वो लोग फिर ऐसा करने को कहें तो कह देना। ख़ुदा ने तुम्हारा उज़्र कुबूल कर लिया है और तुम्हें हुक्म दिया है कि अगर दोबारा कलमए कुफ़्र कहने पर मजबूर करें तो कह देना।

11. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना तुम ऐसे अमल से बचो जिसपर लोग हमें ऐब लगाएं। बुरा बेटा अपने अमले बद से अपने बाप को ऐब लगाता है। तुम ऐसे बनो कि जो आपके लिए बाएसे ज़ीनत हो न कि बाएसे शर्म हो। क़बीले वालों से अगरचे वो मज़हबन मुख़ालिफ़ हों उनके मरीज़ों की अयादत करो उनके जनाज़ों में मौजूद हो और किसी अम्रे नेक में उनको सबक़त न करने दो क्योंकि तुम उसके लिए उनसे ज़्यादा बेहतर हो। ख़ुदा की क़सम सबसे ज़्यादा महबूब इबादत वो है जो पोशिदा यानी बसूरते तक़य्या।

12. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने तक़य्या मेरा दीन है और मेरे आबाओ अजदाद का दीन है जिसके लिए तक़य्या नहीं उसके लिए दीन नहीं।

13. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने तक़य्या हर ज़रूरत

में है (फ़तवा कज़ा आमाले जवारहे वग़ैरह) और साहब ज़्यादा जानने वाला है उस ज़रूरत का।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मेरे पदरे बुज़ुर्गवार फ़रमाते थे मेरी ऑख को तक़य्ये से ज़्यादा ठंडक पहुँचाने वाली कोई चीज़ नहीं, बेशक तक़य्या मोमिन के लिए सिपर है।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने किस चीज़ ने मीसम अ. र. को तक़य्ये से मना किया था ख़ुदा की क़सम वो इस आयत को जानते थे मगर वो मजबूर किया गया हो मगर उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुत्मईन हो। अम्मार और उनके असहाब के बारे में नाज़िल हुई है।

16. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने तक़य्या ख़ुदा और रसूल स. ने इसलिए रखा है ताकि मोमिन का ख़ून न बहे अगर ख़ून बहने से रोकना तक़य्ये से मुमकिन है तो फिर तक़य्या जाएज़ नहीं।

17. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब ज़हूरे हज़रते हुज्जत का वक़्त करीब हो तो तक़य्या और ज़्यादा सख़्ती से होना चाहिए।

18. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने तक़य्या हर उस शै में है जिसके मामले में इन्सान मुज़तर हो अल्लाह ने ये उसके लिए हलाल किया है।

19. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अ. ने तक़य्या सिपर है अल्लाह और उसकी मख़लूक़ के दरमियान।

20. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने मुख़ालिफ़ीन से बज़ाहिर मेल मिल्लत रखो जबकि हुकूमत बाजीचए अतफ़ाल हो।

21. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से कहा कि कूफ़े के दो शिया बनी उमय्या के हाथों गिरफ्तार हुए उनसे कहा गया तुम अमीरूल मोमिनीन पर तबर्रा करो, उनमें से एक ने

किया दूसरे ने इन्कार कर दिया जिसने तबर्रा किया उसे छोड़ दिया दूसरे को क़त्ल कर दिया गया। हज़रत ने फ़रमाया जिसने तबर्रा किया वो इल्मे दीन का आलिम था और जिसने तबर्रा न किया उसने जन्नत की तरफ़ जाने में जल्दी की।

22. लग़ज़िशों के अन्जान से डरो।

23. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से सुना तक़य्या मोमिन की सिपर है और तक़य्या मोमिन के लिए हिर्ज़ है जिसके लिए तक़य्या नहीं उसके लिए ईमान नहीं जो हमारी हदीस को सुने और उसकी इशाअत न करे तो उसके लिए दुनिया में ज़िल्लत हो और अल्लाह उसके दिल से नूर निकाल लेगा।

दो सौ छब्बीस वॉ बाब
राज़ को छुपाना

1. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. ने वल्लाह मैं दोस्त रखता हूँ कि अपने शियों से इन दो ख़स्लतों के दूर करने में अपनी कलाई का गोश्त फ़िदया दे दूँ एक तुन्द मिज़ाजी दूसरे बात का कम छुपाना।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ सुलेमान तुम इस दीन पर हो कि जिस ने छुपाया ख़ुदा ने उसे इज़्ज़त दी और जिसने ज़ाहिर किया अल्लाह ने उसे ज़लील किया।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने लोगों को दो ख़स्लतों का हुक्म दिया गया है लोगों ने इन दोनों को ज़ाए कर दिया और कुछ न पाया एक इनमें से सब्र है दूसरे राज़ का छुपाना।

4. रावी कहता है कि हम चन्द आदमी इमाम मोहम्मद बाक़र अ. की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया हम कूफ़े जा रहे हैं नसीहत फ़रमाइए। हज़रत ने फ़रमाया जो इल्मे दीन में क़वी हैं उनको चाहिए कि जो इल्म में कमज़ोर हैं उनको तक़वीयत पहुँचाएं और मालदार फ़क़ीरों की अयादत करें और हमारे राज़

लोगों पर ज़ाहिर न करें जब हमारी हदीस सुनो और उसपर एक या दो गवाह कुर्आन से पा लो तो उसे बयान करो ताकि मुख़ालिफ़ ख़ामोश रहें। वरना उसे रोके रहो और हमारे पास भेजो ताकि हम वो शवाहिद मुहय्या कर दें और आगाह हो उस अम्र के मुन्तज़िर के लिए एक क़ाएमुल्लैल रोज़दार का अज्र है जो हमारे क़ाएम को पाले और उसके साथ ख़ुरूज करे और हमारे दुश्मनों को क़त्ल करे तो उसका अज्र एक शहीद का है और जो हमारे क़ाएम के साथ रह कर क़त्ल हो जाए तो उसका अज्र बराबर पच्चीस शहीदों के।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने सुना कि हमारे अम्रे इमामत को अख़्तियार करने के ये मानी नहीं कि उसकी तस्दीक़ की जाए और फकत कुबूल किया जाए बल्कि चाहिए ये कि ना अहलों (मुख़ालिफ़ों) से हमारे मामले को पोशीदा रखा जाए। हमारी अहादीस उनसे बयान न की जाएं। हमारे दोस्तों से हमारा सलाम कहो कि रहम करे अल्लाह उस बन्दे पर जो बहालते तक़य्या हमारे मुख़ालिफ़ों से अपनी दोस्ती ज़ाहिर करे तुम उनसे वो बातें बयान करो, जिसके शवाहिद कुर्आन से जानते हों और जो नहीं जानते वो उनसे पोशहदा रखे। खुदा की क़सम उस नासिबी से जो हमसे शदीद अदावत रखता है हमें ज़्यादा नुक़सान उसकी दोस्ती से पहुँचता है जो हमारे राज़ हमारे दुश्मनों से बयान करता है जब तुम्हें ऐसा आदमी मालूम हो जो इशाअते अम्रे इमामत करता है तो उसके पास जाओ और उसे रोको, अगर वो मान जाए तो बेहतर है, वरना ऐसे शख़्स को उसके पास लाओ जिसकी बात उसके लिए वज़नी हो और वो उसकी बात कान लगा कर सुने। बाज़ लोग तुम से तलबे हातज करते हैं तुम उनकी जरूरत पूरी करते रहो तो वो तुम पर मेहरबान होते हैं पस मेरी इस ज़रूरत के लिए तुम उनपर उसी तरह मेहरबनी करते हो पस तदबीर से वो मान जाएं तो बेहतर है वरना तुम

उसके कलाम को अपने पैरों से कुचल दो यानी किसी से ये न कहो वो ऐसा ऐसा कहता है उसमें मेरे और तुम्हारे दोनों के लिए आसानी है कसम खुदा की अगर तुमने मेरे कहने परअमल किया तो मैं इक़रार करता हूँ कि तुम मेरे असहाब हो। ये अबू हनीफ़ा और उसके असहाब हैं और हसने बसरी है और उसके असहाब हैं वो किस तरह उसके ग़लत फ़तवों पर अमल करते हैं और मैं बावजूदे कुरैशी और औलादे रसूल स. से हूँ और किताबे खुदा का इल्म रखता हूँ जिसमें हर शै का बयानहै इब्तेदाए ख़िल्क़त से लेकर और आसमानो ज़मीन और अम्रे अव्वलीन व आख़रीन का जो हो चुका है और होने वाला हे वो सब मेरी नज़र के सामने है फिर भी मेरे कहने पर अमल नहीं करते।

6. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अ. ने कि हमारा मामला हमेशा पोशीदगी के साथ रहा है लेकिन अहले मक्रो फ़रेब ने शीयत को लिया तो गली कूचों में और गॉव गॉव एलान कर दिया वल्द किसन से मुराद बाज़ ने औलादे मुख़्तार अ.र. ली है जिन्होंने शीयत का बबॉगे दाहेल ऐलान किया।

7. मैंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से सुना कि मेरे असहाब में सबसे ज़्यादा महबूब मेरे नज़दीक वो है जो ज़्यादा परहेज़गार है ज़्यादा फ़कीह है और हमारी अहादीस का (मुख़ालिफ़ों से) सबसे ज़्यादा छुपाने वाला है (ताकि वो हमारे दरपए आज़ार न हों) मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा बदहाल और सबसे ज़्यादा दुश्मन वो है जो हमारी हदीस सुने और हमारी तरफ़ निस्बत दे। फिर उसको कुबूल न करे और सुर्श रू हो और इन्कार करे और उसके पास हो वो भी इन्कार करे हालॉकि वो नहीं जानता कि ये हदीस हमारी ही हो और उसकी सनद हमसे हो ऐसा शख़्स हमारी विलायत से खारिज है।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ मोअल्ला हमारे अम्र को छुपाओ और जाहिर न करो, जो हमारे अम्र को छुपाएगा और

ज़ाहिर न करेगा तो अल्लाह उसको दुनिया में इज़्ज़त देगा और आख़ेरत में उसकी दोनों ऑखों के दरमियान एक नूर होगा जो उसे जन्नत की तरफ़ ले जाएगा और ऐ मोअल्ला जो हमारे अम्र को ज़ाहिर करेगा छुपाएगा नहीं तो ख़ुदा उसे दुनिया में ज़लील करेगा और आख़ेरत उसकी ऑखों के बीच से नूर को खींच लेगा और तारीकी उसे खींचकर दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएगी ऐ मोअल्ला तक़य्या मेरा और मेरे आबए का दीन है जिसके लिए तक़य्या नहीं उसके लिए दीन नहीं, ऐ मोअल्ला पोशीदा इबादत को उसी तरह दोस्त रखता है जैसे ज़ाहिर इबादत को। ऐ मोअल्ला हमारे अम्र का ज़ाहिर करने वाला ऐसा है जैसे हमारे हक़ का इन्कार करने वाला।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने क्या मैंने जो ख़बर तुझसे बयान की थी तो इसलिए कि तू किसी से कह देना। मैंने कहा सुलेमान बिन ख़ालिद के सिवा किसी से नहीं कहा। फ़रमाया ठीक किया तूने शाएर का ये क़ौल तो सुना हो :

मेरा और तेरा भेद दो से तीसरे तक न जाए।
आगाह रहो जो भेद दो से गुज़रा वो सात तक पहुँचा।।

10. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अ. से एक हादसे के मुतअल्लिक़ सवाल किया। हज़रत ने जवाब से इन्कार किया और ख़ामोश हो गये। फिर फ़रमाया अगर जो तुम चाहते है हम तुम्हें बता दें तो ये एक मुसीबत बन जाएगा तुम्हारे लिए और साहिबे ईमान के लिए भी, इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया अल्लाह ने वही की जिब्राईल को और जिब्राईल ने रसूले ख़ुदा (तिबयानन ले कुल्ले शैईन) यानी क़यामत तक होने वाक़ेयात से आगाह किया और हज़रत ने बतौर राज़ बताया हज़रत अली अ. को और अली. ने जब जिसको चाहा बताया (यानी ये सिलसिला अईम्मए अहले बैत तक जारी रहा) और तुम इसे ज़ाहिर करते हो

(ज़हूरे क़ाएमे आले मोहम्मद स. को) तुममें कौन है कि जो बाज़ रहे इस बात को बयान करने से, जो उसने सुना है और फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि आले दाऊद की हुकूमतों में एक बात ये भी थी कि मुसलमान के लिए लाज़िम है कि वो अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे और ख़ुद्दारी करे और अपने अहले ज़माना को पहचाने। पस अल्लाह से डरो और हमारी हदीस शाया न करो। ख़ुदा अपने औलिया से हर बला ख़ुद दफ़ा करेगा और अपने औलिया के दुश्मनों से ख़ुद बदला लेगा। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने बरामक्का से (दुश्मनाने आले रसूल स. थे) क्या किया और इमाम मूसा काज़िम के दुश्मन (इस्माईल बिन जाफ़र से) कैसा बदला लिया और औलादे अशअस (जो शिया थी) से जो इमामते मूसा काज़िम की मोतअक़िद थी अल्लाह ने ख़तरए अज़ीम को उनसे कैसे दफ़अ दिया। तुमने उन फ़िर्औनों (बनी अब्बास) के हुक्काम को ईराक़ में देख ख़ुदा नेउनको मोहलत दे रखी है तुम अल्लाह से डरो, दुनिया की ज़िन्दगी तुमको धोखा और न उसकी ज़िन्दगी जिसको अल्लाह ने मोहलत दे रखी है (ये न समझना कि हुकूमत हमेशा ज़ालिमों के हाथ में रहेगी) ये हुकूमत एक दिन तुम तक पहुँच जाएगी।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि ख़ुशख़बरी हो उस गुमनाम बन्दे के लिऐ जिसे अल्लाह पहचानता हे और लोग उसे नहीं पहचानते (ख़ामोशी से कारे दीन अन्जाम देता है) ये लोग हिदायत के चिराग़ और इल्मे दीन के सरचश्मे हैं ख़ुदा इनके ज़रिए फ़ित्नों की तारीकी को दूर करता है न वो राज़ को ज़ाहिर करने वाले सुख़नचीं हैं और न जाहिलाने ख़ुदनुमा।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अमीरूल मोमिन अ. ने फ़रमाया ख़ुशख़बरी हो उस ग़ैर मशहूर गुमनाम बन्दे के लिए जो इसकी परवाह नहीं करता कि लोगों को पहचाने, लोग उसे नहीं पहचानते। अल्लाह उसको पहचनवाता है (अपनी मर्ज़ी के

साथ) ऐसे लोग हिदायत के चिराग़ हैं उनसे फ़ित्ने की तारीकी में रौशनी फैल जाती है और रहमते इलाही के दरवाज़े खुल जाते हैं न तो वो राज़ फ़ाश करने वाले चुग़लख़ोर हैं और न जाहिलाने ख़ुदनुमा और हज़रत ने फ़रमाया अच्छी बात कहो तुम उसकी वजह से पहचाने जाओगे और अमले ख़ैर करो और इसके अहल में से बनो और जल्दबाज़ चुग़लख़ोर न बनो, तुममें से नेक लोग वो हैं जब उनको देखा जाए तो अल्लाह याद आता है और तुममें बदतरीन लोग चुग़लियाँ खाने वाले दोस्तों में तफ़र्क़ा डालने वाले और तलाश करने वाले ऐबों में से ऐब।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपनी ज़बानों को तक़य्ये की सूरत में रोको और अपने घरों में चुपचाप बैठो, यानी अपने मुख़ालिफ़ों पर ख़ुरूज न करो ताकि तुम दवामी मुसीबत से महफ़ूज़ रहो ख़ुरूजे आले मोहम्मद तक और ज़ैदीया फ़िर्क़े के लोग जो जेहाद बिस्सैफ़ के मोतक़िद हैं तुम्हारे लिए मुसीबत लाने वाले बन जाएंगे ये मुसीबत ज़ैदियों ही के लिए छोड़ दो।

14. इमाम मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया अगर तेरे एक हाथ में कोई शै हो तो दूसरे हाथ को ख़बर न हो (ये दलीले वुजूबे) कमाले तक़य्या है, हज़रत के पास एक ऐसा शख़्स बैठा था जिसके राज़ फ़ाश करने के मुतअल्लिक़ लोग गुफ़्तगू कर रहे थे हज़रत ने उससे फ़रमाया अपनी ज़बान को रोक इज़्ज़त हासिल होगी और अपने पर उन लोगों को क़ुदरत न दे जो तेरी गर्दन में रस्सी बाँधें और तू ज़लील हो।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारा मामला पोशीदा है बअहदे इलाही जो ज़हूरे क़ाएमे आले मोहम्मद स. तक ज़ाहिर न होगा। पस जिसने हमारी परदादरी की ख़ुदा उसको ज़लील करेगा।

16. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना जो साँस निकलता है हमारे मुतअल्लिक़ फ़िक्र करने में ज़हूरे

क़ाएमे आले मोहम्मद स. के मुतअल्लिक़ और ग़मनाक होता है हमारी मज़लूमियत पर तो उसका ये अमल बमंज़िलए तसबीह है और हमारे मामले में रंजीदा होना इबादत है और हमारे राज़ को छुपाना जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह है। मुझसे फ़रमाया ऐ मोहम्मद बिन सईद उसको सोने के पानी से लिखो मैंने इससे बेहतर कोई चीज़ न लिखी।

दो सौ सत्ताईस वॉं बाब

मोमिन और उसकी अलामात व सिफ़ात

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जब अमीरूल मोमिनीन अ. ख़ुत्बा सुना रहे थे कि एक शख़्स जो आबिद व ज़ाहिद व मुज्तहिद था खड़ा होकर कहने लगा ऐ अमीरूल मोमिनीन! आप मोमिन का वस्फ़ इस तरह बयान करें गोया हम उसको देख रहे हैं फ़रमाया ऐ हमाम! मोमिन ज़ीरक व दाना होता है, चेहरा बश्शाश, दिल हुज़्न आगीं, सीना कुशादा अज़रूए नफ़्स ज़लील हर फ़ानी शै को हक़ीर समझने वाला।

हरीस है हर क़िस्म की नेकी पर न कीनावर है न हासिद है न झगड़ालू है न गलयारा न ऐबजू न ग़ीबत गो, सरबुलन्दी को बुरा जानता है और रिया को मअयूब जानता है उसका ग़म तूलानी होता है (सकराते मौत और अज़ाबे क़ब्र के मुतअल्लिक़) और इरादे का पुख़्ता होता है ख़ामोश ज़्यादा रहता है साहिबे वक़ार होता है गुस्से में आपे से बाहर नहीं होता, ज़िक्रे इलाही करने वाला होता है सब्रो शुक्र करने वाला होता है फ़िक्रे आख़ेरत में मग़मूम रहता है अपने फ़क्रो फ़ाक़े में ख़ुश रहता है उसकी तबीअत में ख़ुशूनत नहीं होती नर्म तबीअत, वफ़ाए अहद पर क़ाएम रहने वाला होता है लोगों को अज़ीयत बहुत कम देता है तोहमत तराशी नहीं करता, किसी की हतक नहीं करता, अगर हॅसता है तो गला नहीं फाड़ता। अगर गुस्सा होता है तो ख़फ़ीफ़ुल मोहर्रेकात नहीं बनता उसका हॅसना मुस्कुराना होता है

और उसका सवाल इल्म हासिल करना होता है और किसी की तरफ़ उसका रूजू करना कुछ समझने के लिए होता है। उसका इल्म ज़्यादा होता है और हिल्म अज़ीमुश्शान, रहम ज़्यादा करता है बुख़्ल से दूर रहता है, काम में जल्दी नहीं करता न किसी बात से दिल तंग होता है और न इतराता है न अपने हुक्म पर जुल्म करता है और न अपने इल्म में नफ़्स पर जुल्म करता है वो (यानी अपने इल्म की वजह से किसी पर जुल्म नहीं करता) और मसायब की बरदाश्त उसका नफ़्स पत्थर से ज़्यादा सख़्त होता है और उमूरे मआश में उसकी सई शहद की तरह मीठी होती है (यानी किसी के लिए बाएसे तकलीफ़ नहीं बनता) और ऐसा हरीस नहीं बनता कि दूसरो के हक़ पर हाथ मारे और न बेक़रारी ज़ाहिर करने वाला होता है न सख़्त मिज़ाज और न शेख़ीबाज़ और न तकलीफ़ पसन्द और न मामलाते दुनिया में ज़्यादा ग़ौर करने वाला, अगर किसी से नेज़ाअ करता है तो बहुसनो ख़ूबी बुजुर्ग तबीअत होता है और गुस्सा आए तो अदल से काम लेता है उससे कुछ माँगा जाए तो नर्मी का बर्ताव करता है थोड़े से काम नहीं लेता हतक नहीं करता, जब्र नहीं करता सच्ची मोहब्बत रखता है। वादे का पक्का और एहद का पूरा होता है लोगों पर मेहरबान उन तक पहुँचने वाला, बुर्दबार, गुमनामी में सब्र करने वाला, फ़िजूल बात कम करने वाला, अपने अल्लाह से राज़ी रहने वाला, अपनी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करने वाला और अपने से कम पर सख़्ती न करने वाला, ग़ैर मुतअल्लिक़ चीज़ों पर ग़ोरो फ़िक्र नहीं करता, दीन का नासिर होता है, मोमिनों से दफ़ए ज़रर करने वाला, मदह उसके कानों को अच्छी नहीं लगती और तमअ उसके दिल को ज़ख़्मी नहीं करती और लह व लअब उसको हिकमत से बाज़ नहीं रखती, जाहिल के इल्म से वाक़िफ़ नहीं होता। दीने हक़ की ताईद में सबसे ज़्यादा बोलने वाला, दीन के लिए सबसे ज़्यादा काम करने वाला

आलिमो दाना होता है फ़ोहुश गोई नहीं करता, तुन्द ख़ू नहीं होता, दोस्तों पर बग़ैर बार हुए उनसे तअल्लुक़ रखने वाला, ख़र्च करने वाला इसराफ़ से बचकर, न किसी से हिला व फ़रेब करता है, न गद्दारी और पैरवी नहीं करता ऐसी किसी चीज़ की जिससे किसी का ऐब ज़ाहिर हो, और न किसी बशर पर जुल्म करता है, लोगों पर मेहरबान होता है और ज़मीन पर लोगों के लिए सई करता है कमज़ोरों का मद्दगार है मुसीबत ज़दों का फ़रयादरस है वो किसी की परदादरी नहीं करता और न किसी का भेद खोलता है उसको मसायब का सामना ज़्यादा होता है मगर वो हर्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाता, अगर नेकी देखता है तो उसका ज़िक्र करता है और अगर बदी देखता है तो उसको छुपाता है, लोगों के ऐब छुपाता है और निगाह रखता है ग़ाएबाना, लोगों के उज़्रे ख़ता को कुबूल करता है और ग़ल्ती को माफ़ कर देता है जब अच्छी बात पर इत्तिला पाता है तो उसे छोड़ता नहीं और बुराई की इस्लाह किये बग़ैर नहीं रहता, वो अमानतदार है परहेज़गार है बातिन साफ़ है तबा पाक है लोग उससे राज़ी हैं वो ख़ताकारों के उज़्र को कुबूल करता है और अहसन उन्वान का ज़िक्र करता है लोगों के साथ अच्छा गुमान रखता है और पोशिदा बातों के मालूम करने के शौक़ पर अपने नफ़्स पर इल्ज़ाम लगाता है।

और अपनी दीनदारी और इल्म की बिना पर किसी को कुबर्तन इलल्लाह दोस्त रखता है और क़तए तअल्लुक़ करता है बराए ख़ुदा उससे जो बदकारी का इरादा रखे हुए हो, ख़ुशी उसे बेअक़्ल नहीं बनाती और न राहत रसानी उसे तुन्द मिज़ाजी पर माएल करती है आलिम को आख़ेरत की याद दिलाने वाला है और जाहिल को तालीम देने वाला है, उससे किसी मुसीबत के नाज़िल करने की उम्मीद नहीं की जाती और न किसी हादसे का ख़ौफ़ किया जाता है। राहे ख़ुदा में अपनी

हर कोशिश को वो अपनी सई से ज़्यादा ख़ालिस जानता है और समझता है कि हर नफ़्स उससे ज़्यादा सलाहियत रखता है वो अपने ऐब का जानने वाला है और अपने ग़मे आख़ेरत में मशगूल रहता है वो ख़ुदा के सिवा किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता वो इस दुनिया में मुसाफ़िराना ज़िन्दगी बसर करता है वो तन्हाई पसन्द है निजाते आख़ेरत के लिए महज़ून रहता है। वो ख़ुश्नूदीए ख़ुदा के लिए किसी को दोस्त रखता है और रज़ाए इलाही के लिए जेहाद करता है अपने नफ़्स के लिए इन्तेक़ाम नहीं लेता बल्कि उस इन्तेक़ाम को ख़ुदा पर छोड़ता है और दोस्ती नहीं करता उससे जो दुश्मने ख़ुदा हो। अहले फ़क्र की सोहबत में बैठता है और रास्तगो लोगों से मिलता जुलता है, मद्दगार है अहले हक़ का, क़राबतदारों का मुईन है, यतीमों का बाप है, बेवाओं का मद्दगार है और मुसीबतज़दों पर मेहरबान है हर मुसीबत में लोगों को उससे मदद की उम्मीद की जाती है और हर सख़्ती में वो मरजए उम्मीद रहता है, कुशादा रू है, ख़ुश रहने वाला है वो तुर्श रू नहीं, ऐब जू नहीं, अम्रे दीन में मुस्तहकम, गुस्से का पीने वाला, तबस्सुम करने वाला, दक़ीकुन्नज़र, एहतियात से काम करने वाला, बुख़्ल पसन्द नहीं, अगर उसका हक़ देने में अगर लोग बुख़्ल करें तो सब्र करता है बुरी बातों को जानकर उनके बजा लाने से हया करता है। क़नाअत की वजह से ग़नी है उसकी हया उसकी ख़्वाहिश पर ग़ालिब आती और उसकी मोहब्बत हसद के जज़्बे को पैदा नहीं होने देती।

उसकी बख़्शिश उसके कीना पर ग़ालिब आती है सिवाए सही बात के नहीं बोलता और उसका लिबास मियाना रवी है उसकी चाल तवाज़ोअ है वो अपनी इताअत में अपने रब के सामने इज़हारे इज्ज़ो नियाज़ करने वाला है और हर हालत में उससे राज़ी रहता है उसकी नीयत ख़ालिस होती है उसके अमल में खोट नहीं होती और न फ़रेब होता है उसकी निगाह

इबरत आगीं है उसके दिल का सुकून फ़िक्रे आख़ेरत में है। वो नसीहत करने वाला है, ख़र्च करने वाला है बिरादरी का क़ाएम करने वाला है ज़ाहिरो बातिन हर हालत में नसीहत करने वाला है बरादरे मोमिन से तर्के तअल्लुक़ नहीं करता और न उसकी ग़ीबत करता है और न उससे मक्र करता है और जो चीज़ हाथ से जाती है उसपर अफ़सोस नहीं करता और जो मुसीबत आती है उसपर रंजीदा नहीं होता और उस चीज़ की उम्मीद नहीं करता जिसकी उम्मीद करना जाएज़ नहीं। सख़्ती के औक़ात में सुस्त नहीं होता और ऐश पर इतराता नहीं, हिल्म के लिए तैयार रहता है और अक़्ल साथ सब्र को, तुम उसको देखोगे कि वो कस्ल से दूर होगा, हमेशा ख़ुश रहने वाला होगा, उम्मीद उससे क़रीब होगी, लग़ज़िश उससे कम होगी अपनी मौत का उम्मीदवार होगा उसके दिल में ख़ुशूउ होगा, अपने रब का ज़िक्र करने वाला होगा, उसके नफ़्स में क़नाअत होगी, जिहालत को रोकने वाला होगा उसका अम्रे आख़ेरत आसान होगा, अपने गुनाहों के तसवुर से रंजीदा रहता है उसकी ख़्वाहिश मुर्दा होगी गुस्से का पीने वाला होगा उसके अख़लाक़ पाक होंगे उसका हमसाया उससे पुर अमन होगा।

उसका तकब्बुर कमज़ोर होता है और ख़ुदा ने उसके लिए जो मुक़द्दर कर दिया है उसपर क़ानेअ होता है, उसका सब्र पुख़्ता होता है, उसका अम्रे दीन मुस्तहकम होता है उसका ज़िक्र ज़्यादा होता है वो लोगों से इल्म हासिल करने के लिए मिलता है, समझने के लिए सवाल करता है और तिजारत करता है ताकि फ़ायदा पाये (ज़ख़ीरे के लिए नहीं) और अम्रे हक़ को इसलिए नहीं सुनता कि फ़ख़्र करे और नहीं कलाम करता इसलिए कि दूसरे लोगों पर अपनी बुज़ुर्गी ज़ाहिर करे वो ख़ुद रंज उठाता है और लोग उससे राहत में रहते हैं अपने आख़ेरत की बेहतरीह के लिए अपने नफ़्स को तअब में डालता है और

दूसरों को आराम पहुँचाता है अगर उससे बग़ावत की जाए तो सब्र करता है ताकि अल्लाह उससे आख़ेरत में या इस दुनिया में बदला ले और उसका दूर रहना किसी से महज़ दीन की मुख़ालेफ़त में होता है और फ़साद से बचने के लिए और उसकी नज़दीकी नर्मी और रहमत के लिए होती है उसका लोगों से दूर रहना इज़्हारे तकब्बुर व अज़मत के लिए नहीं होता और न उसका मेल जोल मक्रो फ़रेब के लिए होता है बल्कि वो पैरवी करता है उन असहाबे ख़बर की जो उससे पहले थे लेहाज़ा वो पेशवा होता है अपने बाद वाले नेकूकारों का।

ये सुनकर हमाम ने चीख़ मारी और मुर्दा होकर गिर पड़ा। अमीरूल मो'मिनीन ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम इसके मुतअल्लिक़ इसी बात का मुझे ख़ौफ़ था और फ़रमाया कि मोअस्सिर मोएज़ा का अहल लोगों पर असर होता है। किसी कहने वाले ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन आप अ. ने ये क्या किया। फ़रमाया हर शख़्स की मौत का वक़्त है जो न घटता है न बढ़ता है और हर एक के लिए करने का एक सबब होता है। ठहर जा गुस्ताख़ाना बात न कर। बेशक शैतान ने तेरे अन्दर फूँक मार दी है जो तेरी ज़बान पर ये अल्फ़ाज़ आए।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन में आठ ख़सलतें होनी चाहिएं जब लोग मुज़तरिब हों तो वो साहिबे वक़ार हो, मुसीबतों में सब्र करने वाला हो, नेएमतों में शुक्र करने वाला हो, जो रिज़्क़ अल्लाह ने दिया है उसपर क़ानेअ हो, दुनश्म पर भी जुल्म न करे अपना बार दुश्मनों पर न डाले, बदन उसका तअब में हो और लोग उससे राहत में हों इल्म मोमिन का दोस्त है और हिल्म उसका वज़ीर है और सब्र उसके शुक्र का अमीर और मेहरबानी उसका भाई और नर्मी उसका बाप।

3. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अ. ने मोमिन ख़ामोश रहता है कि लोगों के एतराज़ात से बचा रहे और बोलता है ताकि लोग

उससे फ़ायदा पाएं, जो राज़ दोस्तों के हैं उन्हें बयान नहीं करता और दूर रहने वालों से अपनी गवाही नहीं और रिया से कोई अमले ख़ैर नहीं करता और न शर्म से उसे छोड़ता है अगर लोग तारीफ़ करते हैं तो अपने में गुरूर पैदा होने से डरता है और जो ऐब उसके लोग नहीं जानते उसके लिए अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता है और नहीं मग़रूर होता उन लोगों की तारीफ़ से जो उसके हाल से नावाक़िफ़ हैं और ख़ौफ करता है शुमार किये जाने से अपने आमाल के।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने दीन के मामले में मोमिन को कुव्वत होती है और एहतियात से काम लेता है नर्मी में उसका ईमान यक़ीन के साथ है और हरीस होता है तहसीले इल्मे दीन में, ख़ुश होता है हिदायत से और नेकी पर क़ाएम रहता है और हिल्म का दाना है और होशियार है नर्मी करने में, अम्रे हक़ में सख़ी और मालदारी में, मयाना रू है। फ़ाक़े में अपनी शान बाक़ी रखता है और बावजूद कुदरत के इन्तेक़ाम माफ़ करता है और नसीहत हासिल करके ताअते ख़ुदा में रहता है और ख़्वाहिशात से बाज रहता है और ज़ोहद की तरफ़ रग़बत रखता है और जेहाद का हरीस है और बावजूदे मसरूफ़ियत नमाज़ अदा करता है और सख़्ती में सब्र करता है और इज़्तेराब के आलम में साहिबे वक़ार होता है मुसीबतों में सब्र करता है ऐश में शुक्र करता है।

न ग़ीबत करता है न तकब्बुर और क़ताए रहम करता है और सुस्त है न तुर्श रू है और न सख़्त दिल और न इधर उधर निगाहें डालता है और उसका शिकम उसे रुस्वा नहीं करता (बेतलब खाने पर) और न शर्मगाह उसपर ग़ालिब आती है (ज़िना नहीं करता) और लोगों पर हसद नहीं करता। नादान उसे ऐब लगाते हैं वो किसी को ऐब नहीं लगाता, वो फ़िज़ूल ख़र्ची नहीं करता, मज़लूम की मदद करता है। मिस्कीन पर रहम करता है उसका नफ़्स तकलीफ़ में रहता है मगर लोग उससे

राहत में रहते हैं, वो इज़्ज़ते दुनिया की तरफ़ रागिब नहीं होता और न उसकी ज़िल्लत से घबराता है लोगों की उसकी फ़िक्र है कि वो कारहाए दुनिया की तरफ़ मुत्वज्जे हैं और उसको ये फ़िक्र है कि वो कारहाए दुनिया में मशगूल क्यों हैं उसके हुक्म में कोताही न पाओगे और उसकी राय में सुस्ती न देखोगे उसका दीन जाए न होगा यानी राहे हक़ से हटेगा नहीं जो उसका मशवरा करेगा हिदायत और जो उसकी मदद करेगा सआदत हासिल करेगा और एहतेराज़ करता है फ़ोहुश दुश्नाम से।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जनाबे अमीरूल मोमिनीन अ. कुरैश के जलसे की तरफ़ से गुज़रे जो साफ़ सुथरे सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे बहुत ज़्यादा हँस रहे थे और जो उनकी तरफ़ से गुज़रता था उँगलियों से उसकी तरफ़ इशारा करते थे फिर हज़रत औस व ख़ज़रज के जलसे से गुज़रे वहॉं ऐसे लोगों को देखा जिनके बदन कमज़ोर थे और गर्दनें पतली और रंग पीले थे निहायत इज्ज़ो इन्किसार से बोलते थे हज़रत को ये देखकर बड़ा तअज्जुब हुआ और हज़रत रसूले ख़ुदा स. से दोनों गिरोहों का हाल बयान करके पूछा। ये सब मोमिनीन हैं या रसूलुल्लाह मोमिन की सिफ़त बयान कीजिए। हज़रत ने सर झुका लिया फिर सर उठाकर फ़रमाया मोमिन की बीस ख़सलतें है अगर उनमें से एक भी न हो तो उसका ईमान कामिल नहीं। ऐ अली! मोमिनीन के अख़लाक़ में से ये है कि नमाज़ में हाज़िर हों और जल्दी करें ज़कात अदा करने में, मिस्कीनों को खाना देने वाले हैं, यतीमों के सर पर हाथ फेरने वाले हैं सतरपोशी के लिए उनको इज़ार पहनाने वाले हैं जब बोलते हैं तो सच, जब वादा करते है तो उसके ख़िलाफ़ नहीं करते, अगर अमीन बनाए जाएं तो ख़यानत नहीं करते, जब कलाम करते हैं तो उनमें सदाक़त होती है। रात में तारिकुद्दुनिया की तरह रियाज़त करने वाले, दिन में शेर जैसे यानी बुराईयों पर

ग़ालिब, दिन को रोज़ा रखते हैं, रात को इबादते ख़ुदा करते हैं अपने हमसाये को सताते नहीं, न हमसाये को उनसे अज़ीयत पहुँचती है ना दानिस्ता, वो ज़मीन पर हलके से चलते हैं उनके क़दम उठते हैं बेवाओं की इमदाद के लिए और जनाज़ों की मुशायेअत के लिए अल्लाह हमको और तुमको मुत्तक़ियों में क़रार दे।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो नेकी से ख़ुश हुआ और बदी को बुरा जाने वो मोमिन है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारे शिया परीदा रंग बारीक अन्दाम और ख़ुदरानी न करने वाले हैं जब रात उनको घेर लेती है तो वो उसका इस्तक़बाल हुज़्न से करते हैं।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारे शिया साहिबे हिदायत साहिबे तक़्वा, साहिबे ख़ैरो ईमान और साहिबे फ़तहो जफ़र होते हैं।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने बचो पस्त फ़ितरत इन्सानसे जो अपने को शिया कहता है। शिया–ए–अली वो है जिसका शिकम व शर्मगाह हराम से महफ़ूज़ हो और उसका जेहादे नफ़्स सख़्त हो, वो जो अमल करे ख़ुश्नूदीए ख़ुदा के लिए करे और उसका सवाब पाने की उम्मीद करे और उसके अज़ाब से डरो, जब तुम ऐसे लोगों को देखो तो समझ लो यही शिया जाफ़र अ. हैं

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने शिया अली ख़ाली शिकम होते हैं और मेहरबानी, इल्म व हिल्म व ज़ोहद व रियाज़ते नफ़्स से पहचाने जाते हैं तुम उनकी मदद करो अपनी परहेज़गारी और सई व कोशिश से।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन वो है कि जब वो ग़ज़बनाक हो तो उसका गुस्सा उसको हक़ से ख़ारिज न कर दे और जब राज़ी हो तो ये रज़ामन्दी उसे बातिल में दाख़िल न कर

दे और जब माल लेने पर कुदरत रखता हो तो अपने हिस्से से ज़्यादा न ले।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि ऐ सुलेमान क्या तू जानता है कि मुसलमान कौन है मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा आप बेहतर जानते हैं फ़रमाया मुसलमान वो है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान सालिम रहें। क्या तू जानता है कि मोमिन कौन है मैंने कहा आप ही बेहतर जानते हैं फ़रमाया मोमिन वो है जो मुसलमान के जानो माल का अमीन हो और मुसलमान पर हराम है कि मुसलमान पर जुल्म करे या उसे ज़लील करे या झिड़क कर उसे अपने पास से हटाए।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन वो है कि जब किसी से राज़ी हो तो अम्रे गुनाह या बातिल की तरफ़ न ले जाए और जब गुस्सा हो तो क़ौले हक़ से रूगरदानी न करे और जब क़ादिर हो तो उसकी ये कुदरत जुल्म की तरफ़ न ले जाए और वो अपने हक़ से ज़्यादा न ले ले।

14. अबू बख़्तरी ने इमाम से (नाम नहीं बताया) रिवायत की है कि मोमिन फ़रमाबरदार और नर्म तबीअत होता है जैसे ऊँट के जब उसकी नाक में नकेल डाली जाती है तो मुतीअ हो जाता है और किसी पत्थर पर बिठाया जाता है तो बैठ जाता है।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन की तीन अलामतें हैं अव्वल मारफ़ते बारी तआला दूसरे ये जानना कि खुदा किसे दोस्त रखता है (इमामे बर हक़) और किसी दुश्मन (इमामे मुज़िल)

16. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने मोमिन की मिसाल उस दरख़्त की है जिसके पत्ते न जाड़ों में गिरते हैं न गर्मी में, लोगों ने पूछा वो कौन सा दरख़्त है फ़रमाया ख़जूर।

17. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मोमिन हलीम होता है जाहिलों का सा अमल नहीं करता और उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाए तो हिल्म से काम लेता है और किसी पर जुल्म नहीं

करता और उसपर कोई जुल्म करता है तो माफ़ कर देता है वो बुख़्ल नहीं करता, अगर उससे बुख़्ल का बर्ताव किया जाए तो सब्र करता है।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन वो है जिसका पेशा पाक हो उसकी आदतें अच्छी हों उसकी तबीअत सेहतमन्द हो, अपने माल का ज़रूरत से ज़्यादा हिस्सा राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और ज़्यादा कलाम करने से ज़बान को रोके और लोग उसके शर से महफ़ूज़ रहें और अपने नफ़्स और लोगों के दरमियान इन्साफ़ करे।

19. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया क्या मैं बताऊँ मोमिन कौन होता है वो है जिसको मोमिनीन अपने नफ़्सों और मालों का अमीन बनाएं क्या मैं बताऊँ मुसलमान कौन होता है वो है जिसके हाथ और ज़बान से मुसलमान सालिम रहें और मुहाजिर वो है जो बुराईयों को छोड़े, महर्रेमात को तर्क करे, मोमिन पर हराम है कि वो किसी मोमिन पर जुल्म करे या उसे ज़लील करे या उसकी ग़ीबत करे या यकायक अपने सामने से उसे हटाए।

20. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. अली के शिया ओलमा हैं और वो ओलमा है जिनके कसरते रियाज़त से होंठ ख़ुश्क हैं वो पहचाने जाते हैं अपनी रियाज़त कशी से जिसका असर उनके चेहरों से ज़ाहिर होता है।

21. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अमीरूल मोमिनीन अ. ने लोगों के साथ इराक़ में नमाज़ पढ़ी जब वहॉ से लौटे तो लोगों को वअज़ किया और ख़ौफ़े ख़ुदा से ख़ुद भी रोए और दूसरों को भी रूलाया। फिर फ़रमाया मैंने अपने हबीब हज़रत रसूले ख़ुदा स. के ज़माने में ऐसे लोगों को देखा है जो सुब्हा से शाम तक इस हाल में रहते थे, परेशान हाल, गर्द आलूद चेहरे, गुरसना शिकम, उनकी पेशानियों पर ज़ानू की तरह घट्टे, रातों

को सजदा और क़याम में गुज़ारने वाले और अपने क़दमों और पेशानियों से इबादत करके राहत पाते थे अपनेरब से मुनाजात करते थे कि नारे जहन्नम से उनकी गर्दनों को आज़ाद करे। मैंने उनको देखा कि इस हालत में भी वो ख़ुदा से ख़ाएफ़ व तरसाँ थे।

22. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अ. ने अमीरूल मोमिनीन अ. ने नमाज़े सुब्हा पढ़ी और सूरज के एक नेज़ा बलन्द होने तक वहीं बैठे रहे फिर अपना रूख़ लोगों की तरफ़ से फ़रमाया वल्लाह मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो सजदे और क़याम में रातें गुज़ारते थे और उनके सजदे क़ऊद से ज़्यादा होते थे और दोजख़ की आग की भड़क का शोर गोया उनके कानों में आता था और अल्लाह का ज़िक्र उनके सामने हो तो इस तरह हिलते जैसे तुन्द हवा में दरख़्त, वो इस तरह ख़ाएफ़ाना ज़िन्दगी बसर करते थे जैसे ग़ाफ़िल लोग बसर करते है। इमाम ज़ेनुल आबेदीन अ. फ़रमाते हैं इसके बाद तादमे मर्ग किसी ने हज़रत को हँसते न देखा।

23. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर मेरे असहाब को जानना चाहो तो ऐसे शख़्स को देखो जिसकी परहेज़गारी सख़्त हो और अपने ख़ुदा से डरता हो और उसके सवाब की उम्मीद रखता हो जब ऐसे लोग मिल जाएं तो समझ लो यही मेरे असहाब हैं।

24. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अ. ने हमारे शिया एक दूसरे पर ख़र्च करते हैं हमारी विलायत के लिए और बाहम मोहब्बत करते हमारी मोहब्बत के लिए एक दूसरे से मिलते हैं हमारे अम्र को ज़िन्दा रखते के लिए ये लोग हैं कि जब गुस्सा आए तो ज़ुल्म नहीं करते अगर राज़ी हों तो फ़िज़ूल ख़र्ची नहीं करते बरकत हैं अपने पड़ोसियों के लिए और सलामती हैं अपनी मिलने वालों के लिए।

25. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने ख़ुदा को पहचाना और उसकी तअज़ीम की उस ज़बान को कलाम से और अपने बतन को तआम से रोका और पाक बनाया अपने नफ़्स को रोज़े और क़यामे शब से। लोगों ने कहा हमारे माँ बाप फ़िदा हों या रसूलुल्लाह स. क्या ये लोग औलियाए ख़ुदा ख़ामोश रहते हैं और उनका सुकूत अल्लाह का ज़िक्र होता है और वो नज़र करते हैं और उनका नज़र करना इबरत होता है वो कलाम करते हैं उनका कलाम हिकमत होता है और चलते हैं और उनका चलना लोगों के दरमियान बरकत होता है अगर वो मौत न होती जो उनके लिए लिखी गयी हैं तो अज़ाब और शौक़े सवाब से उनकी रूहें उनके अजसाम में क़रार न पातीं।

26. इमाम हसन अ. ने अपने ख़ुत्बे में बयान फ़रमाया लोगों में मैं तुमको अपने ऐसे भाई की ख़बर देता हूँ जो मेरी नज़र में सबसे ज़्यादा साहिबे अज़मत है और वो, वो है जिसकी नज़र में दुनिया हक़ीर हो और वो ग़ल्बए शिकम से आज़ाद हो। पस वो उस चीज़ की ख़्वाहिश नहीं करता जिसे नहीं पाता और जब पाता है तो उसमें ज़्यादती नहीं चाहता और ग़ल्बए फ़ुर्ज (ज़िना नहीं करता) से भी अलग रहता है ये ग़ल्बा उसको ख़फ़ीफ़ुलअक़्ल और ज़ईफ़ुराय नहीं बनाता और वो जिहालत के ग़ल्बे से आज़ाद रहता है वो अपना हाथ नहीं बढ़ाता मगर एतमादे नफ़ा की तरफ़ और वो नाजायज़ अम्र की ख़्वाहिश नहीं करता और बेजा बात पर गुस्सा नहीं होता और न तर्के तअल्लुक़ करता है।

उसकी उम्र का ज़्यादा ज़माना सुकूत में गुज़रता है और जब गुफ़्तगू करता है तो क़ाएलीन पर ग़ालिब आता है वो किसी झगड़े में शामिल नहीं होता और न किसी दावए बातिल में शरीक होता है और न ही पेश करता है अपनी हुज्जत को मगर दलीले क़ातेअ से यहाँ तक हक़ बजानिब फ़ैसला करता है और अपने बरादरे मोमिन से ग़ाफ़िल नहीं होता और लोगों से अलहेदा होकर

अपने नफ़्स के लिए कोई शै ख़ास नहीं करता। वो ज़ईफ़ व कमज़ोर नज़र आता है लेकिन जब अम्रे नेक में कोशिश का वक़्त आता है तो जल्द शिकार करने वाला शेर नज़र आता है वो किसी को मलामत नहीं करता ऐसे हाल में जबकि दूसरे के लिए उज़र हो। वो जो कहता है उसे करता भी है और कहता है वो जिसे ज़बान से नहीं कहता और जब पेश आते हैं ऐसे दो अम्र कि वो नहीं जानता कि इनमें अफ़ज़ल कौन है तो ये देखता है कि इनमें से कौन सा अम्र ख़्वाहिशे दिल से ज़्यादा क़रीब है पस उसी को तर्क करता है और वो अपने दुख दर्द की शिकायत नहीं करता। मगर सिर्फ़ उसके सामने जिससे ये उम्मीद होती है कि वो उसको दूर कर देगा और नहीं मशवरा करता ऐसे शख़्स से जिससे नसीहत की उम्मीद होती है कत्ए तअल्लुक़ नहीं करता। और ग़ज़बनाक नहीं होता और शिकायत नहीं करता और ख़्वाहिश का इज़हार नहीं करता और इन्तेक़ाम नहीं लेता और ग़ाफ़िल नहीं होता अपने दुश्मन से पस तुमको चाहिए कि ऐसे अख़लाक़े करीमा को अख़्तियार करो अगर कुल के अख़्तियार करने की ताक़त न हो तो थोड़े से सही नेकी का कम करना ज़्यादा के छोड़ने से बेहतर है और नहीं है मदद और कुव्वत मगर अल्लाह के साथ।

27. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारा शिया वो है कि उसकी आवाज़ तजावुज़ न करे उस शख़्स से जो उसको सुन रहा है और उसकी अदावत तजावुज़ न करे उसके नफ़्स से और तारीफ़ न करे उसकी जो दुश्मनों के सामने हमारी तारीफ़ बिलएलान करता है (इस सूरत में) हमारे मुख़ालिफ़ हमारे लिए बाएसे ईज़ा होंगे और किसी जलसे में अइम्मए ज़लालत को बुरा न कहे (ये सब तक़य्ये की सूरतें हैं) और हमारे मामले में दुश्मनों से झगड़ा न करे अगर मोमिन से मिले तो उसका इकराम करे और अगर जाहिल से मिले तो उसकी सोहबत तर्क करे। मैंने

कहा हम कैसा बर्ताव करें जो बज़ाहिर शिया है (और अज़राहे तमअ मुख़ालिफ़ों के दर पर जाकर सवाल करते है) फ़रमाया उनमें तमीज़ करने की अलामतें हैं उनके हालात में तब्दीलियाँ होती हैं और उनके लिए इम्तिहान है सालों की आमदो रफ़्त उनको फ़ना कर देगी और ताऊन उनको क़त्ल कर देगा और बाहमी इख़्तिलाफ़ात उनमें तफ़रक़ा डाल देगा। हमारा शिया वो हैं जो कुत्तों की तरह भौंकता नहीं और कव्वे की तरह लालची नहीं होते और चाहे भूक से मर जाएं मगर दुश्मन से सवाल नहीं करते। मैंने कहा मैं आप्र पर कुर्बान ऐसे ख़ालिस शियों को हम कहाँ पाएंगे फ़रमाया वो अतराफ़े ज़मीन में पाए जाते हैं उनकी ज़िन्दगी इत्मीनान से गुज़रती है (क्योंकि वो हरज़ह कारी में मुब्तिला नहीं) वो तलाशे इल्म में शहर ब शहर मुन्तक़िल होते रहते हैं अगर वो मौजूद हों तो मर्दे ग़रीब होने की वजह से पहचाने नहीं जाते और ग़ाएब हों तो तलाश नहीं किए जाते क्यों कि लोग उनसे वाक़िफ़ नहीं होते वो मौत से घबराते नहीं वो एक दूसरे की कुबूर की ज़ियारत करते हैं और कोई साहिबे हाजत उनके पास आता है तो उसके साथ रहम का बर्ताव करते हैं उनके कुलूब में इख़्तिलाफ़ नहीं होता। अगरचे वो शहरों में आबाद हों फिर फ़रमाया रसूलुल्लाह ने फ़रमाया मैं शहरे इल्म हूँ और अली दरवाज़ा हैं झूठा है वो जो गुमान करता है कि वो शहर में दाख़िल हुआ बग़ैर दरवाज़े के और झूठा है वो जो मेरी मोहब्बत का दावेदार है और अली से बुग्ज़ रखता है।

28. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई लोगों पर हाकिम हो चाहिए कि उनपर जुल्म न करे और जब बात करे तो झूठ न बोले और वायदा करे तो उसे पूरा करे ऐसे शख़्स की ग़ीबत करना हराम है और उससे मुरव्वत करना लाज़िम है, ऐसे शख़्स की अदावत का इज़हार होता है और उसकी उख़ूवत वाजिब होती है।

29. फ़रमाया अब्दुल्लाह बिन हसन ने कि रिवायत कि मेरी वालिदा फ़ातिमा बिन्तुल हुसैन बिन अली अ. ने रसूलुल्लाह स. से फ़रमाया तीन ख़सलते जिसमें होंगी उसका ईमान कामिल होगा अव्वल जब वो किसी से राज़ी हो तो रज़मन्दी उसे बातिल अम्र की तरफ़ न ले जाए और जब ग़ज़बनाक हो तो गुस्सा उसको उस अम्रे हक़ से न हटा दे तीसरे जब कुदरत रखता हो तो अपने लिए वो न ले जो उसका हक़ नहीं।

30. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया अहले दीन के लिए कुछ अलामतें हैं जिनसे वो पहचाने जाते हैं बात में सच्चाई, अमानत का अदा करना, वादा वफ़ा करना, सिलए रहम करना, कमज़ोरों पर रहम करना, औरतों के पास कम रहना, और एक हदीस में औरतों की इताअत न करना, लोगों पर एहसान करना, हुसने ख़ुल्क़ से पेश आना, अख़लाक़ी वुस्अत दिखाना, इल्म की पैरवी करना और वो तरीक़ा अख़्तियार करना जिससे ख़ुदा से नज़दीकी हो, उनके साए तूबा और अच्छी बाज़गश्त है तूबा एक दरख़्त है जन्नत में जिसकी जड़ मोहम्मद मुस्तुफ़ा के घर में है और हर मोमिन के घर में एक शाख़ है जिसके दिल में किसी शै की ख़्वाहिश होगी वो उसके पास ख़ुद आएगी अगर एक सवार सौ बरस तक चलेगा तो उससे बाहर न आ सकेगा और अगर कव्वा उसके निचले हिस्से से उड़ेगा तो उसके ऊपर के हिस्से तक न पहुँच सकेगा यहाँ तक कि वो थक कर मर जाएगा।

आगाह हो ये वो है जिसकी तरफ़ तुम रग़बत करो, मोमिन अपने काम में मसरूफ़ रहता है और लोग उससे राहत में रहते जब रात की तारीकी छाती है तो वो अपने चेहरे को फ़र्श बनाता है व ज़मीन पर रूख़सारा रखता है और अपने पाक हिस्सए बदन से (सातों आज़ए सजदा) सजदा करता है और अपने परवरदिगार से दुआ करता है कि नारे जहन्नम से उसे

बचा ले। ये है ईमान पस तुम ऐसे ही हो जाओ।

31. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. से बेहतरीन लोगों के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया फ़रमाया जब वो नेकी करते हैं तो ख़ुश होते हैं और जब गुनाह करते हैं तो इस्तिग़फ़ार करते हैं और जब कोई उनको कुछ देता है तो शुक्रिया अदा करते हैं और जब किसी मुसीबत में मुब्तिला होते हैं तो सब्र करते हैं जब किसी पर गुस्सा आता है तो अपनी बख़्शिश से उसका गुनाह छुपाते हैं।

32. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया तुममें से बेहतर उलुन्नोहा नही कौन हैं लोगों ने पूछा रसूलुल्लाह स. उलुन्नोहा नही कौन हैं फ़रमाया साहिबाने अख़लाके हसना और पुख़्ता उक़ूल वाले और सिलए रहम करने वाले और मॉओं और बापों से नेकी करने वाले और फ़ुक़रा की ख़ैर ख़बर लेने वाले और हमसायों और यतीमों की मदद करने वाले वो खाना खाते हैं और दुनिया में इस्लाम फैलाते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं जबकि लोग ग़ाफ़िल पड़े सोते हैं।

33. किसी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा कौन सी ख़सलत आदमी की ज़्यादा अच्छी है फ़रमाया वो वक़ार जो बग़ैर हया के हो वो सख़ावत जो बदले की तलब के बग़ैर हो और वो मशग़ला जो मताए दुनिया से मुतअल्लिक़ न हो।

34. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अली इब्नुल हुसैन अ. फ़रमाया करते थे कि मुसलमान के कमाले दीन पहचानना यूँ है कि वो ग़ैर मुतअल्लिक़ा उमूर में कलाम तर्क करे और लोगों से बहुत कम झगड़ा करे हिल्मो सब्रो हुसने ख़ल्क़ से काम ले।

35. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें बताऊँ तुममें मुझसे ज़्यादा मुशाबेह कौन है लोगों ने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह स., फ़रमाया अज़रूए ख़ल्क़ अच्छा हो और पनाह देने के लिए सबसे ज़्यादा नर्म हो और अपने

क़राबतदारों के साथ सबसे ज़्यादा नेकी करने वाला हो और अपने भाईयों में सबसे ज़्यादा नेकी करने वाला हो दीनी मामले में और अम्रे हक़ में तकालीफ़ पर सबसे ज़्यादा सब्र करने वाला और गुस्सा सबसे ज़्यादा पीने वाला और कुसूर का सबसे ज़्यादा बख़शने वाला और अपने नफ़्स के मुतअल्लिक़ सबसे ज़्यादा इन्साफ़ करने वाला ख़्वाह हालत रज़ा हो या ग़ज़ब।

36. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. ने मोमिन के अख़लाक़ से है बक़द्रे अपनी तंगदस्ती के राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और बलेहाज़ वुस्अते माल, दौलत मन्दी में ख़र्च करना और लोगों के दरमियान इन्साफ़ करना और इस्लाम में इब्तिदा करना।

37. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने मोमिन पहाड़ से ज़्यादा सख़्त होता है पहाड़ अपने अजज़ा के टूटने फूटने से कम हो जाता है लेकिन मोमिन के दीन से कोई शै कम नहीं होती।

38. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन लोगों की मदद अच्छी तरह करता है उसका ख़र्च हलका होता है मआश के हुसूल में उसकी तदबीर अच्छी होती है और वो एक सुराख़ से दो मर्तबा नहीं डसा जाता यानी पहले तर्जुबे से फ़ायदा उठाता है।

39. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अ. से सुना मोमिन बग़ैर तीन ख़सलतों के न होगा। एक सुन्नते रब है एक सुन्नते नबवी है और सुन्नते वली है रब की सुन्नत ये है कि उसके भेद को छुपाया जाए अल्लाह तआला फ़रमाता है वो आलिमुल ग़ैब है उसके भेद से कोई वाक़िफ़ नहीं सिवाए उसके जिसको वो रसूलों में से इस काम के लिए चुन ले और सुन्नते नबी ये है कि लोगों से ख़ुशख़ुल्क़ी से पेश आए जैसा ख़ुदा फ़रमाता है अफ़ो से काम लो और नेकी का हुक्म दो और सुन्नते वली यह है कि मुसीबत और सख़्ती में सब्र करो।



दो सौ अट्ठाईस वॉ बाब

किल्लते उदए मोमिन

1. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद अ. ने मोमिना कमयाब है बनिस्बत मोमिन के और मोमिन कमयाब है याकूते सुर्ख़ से। पस तुममें कौन है जिसने याकूते सुर्ख़ देखा।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने तमाम लोग जो चौपाए हैं (तीन बार फ़रमाया) मगर मोमिनीन जो बहुत कम हैं और मोमिन कम पाया जाता है (तीन बार फ़रमाया)

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ऐ अबू बसीर! ख़ुदा की क़सम अगर मैं तुममें तीन शिया पा लेता जो अज़राहे तक़य्या हमारी बात को बसीग़ा-ए-राज़ रखते तो मेरे लिए अपनी बात को उनसे छुपाना नाजायज़ न होता।

4. सदीर सेरनी कहते हैं मैं सादिके आले मोहम्मद की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की ख़ुदा की क़सम अब आपके घर में बैठे रहना दुरूस्त नहीं हज़रत ने फ़रमाया ये क्यों मैंने कहा क्या आपके दोस्तों शियों और अन्सार की कसरत की वजह से, वल्लाह अगर अमीरूल मोमिनीन के पास इतने शिया, अन्सार और दोस्त होतों तो तैम व अदी वाले उनसे ख़िलाफ़त ले न सकते फ़रमाया ऐ सदीर! भला तुम कितने हो। मैंने कहा एक लाख, फ़रमाया एक लाख, मैंने कहा जी हॉ दो लाख, फ़रमाया बल्कि निस्फ़ दुनिया, ये सुनकर हज़रत ख़ामोश हो गये और फ़रमाया क्या ये तेरे लिए आसान है कि तू हमारे साथ चश्माए यबअ तक चले मैंने कहा ज़रूर आप अ. ने हुक्म दिया कि गधे और ख़च्चर पर ज़ीन कसें, मैंने जल्दी ये ख़िदमत अन्जान दी और गधे पर सवार हुआ। फ़रमाया ऐ सदीर! हमार पर मुझे सवार होने दो। मैंने कहा ख़च्चर ज़्यादा शानदार हे और शरीफ़ तबीअत है फ़रमाया गधा रफ़्तार में मेरी मुवाफ़ेक़त करता है ये सुनकर मैं उतर आया और खचचर पर सवार हुआ और हज़रत

हमार पर सवार हुए हम दोनों चल जब वक़्ते नमाज़ आया तो फ़रमाया उतरो नमाज़ अदा करें उसके बाद फ़रमाया ये ज़मीन शौर है यहाँ नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं हम फिर चले यहाँ तक कि सरसब्ज़ व सुर्ख़ के ख़ित्ते पर पहुँचे एक लड़के को बकरियाँ चराते देखा। फ़रमाया एक सदीर! अगर मेरे शिया बक़द्रे इन बकरियों के होते तो मैं ख़ुरूज करताहम वहाँ उतरे और नमाज़ पढ़ी उसके बाद मैंने बकरियों को शुमार किया तो उनकी तअदाद सत्तरह थी।

5. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने एक समाआ लोग अपने फ़र्शों पर आराम से रहे और मुझे ख़ौफ़ो हिरास में डाला वल्लाह एक वक़्त दुनिया में ऐसा था कि अल्लाह की इबादत गुज़ार सिर्फ़ एक ही था और अगर दूसरा होता तो इसके साथ उसका भी ज़िक्र होता जैसा कि फ़रमाता है बेशक इब्राहीम ऐसी उम्मत थे जो अल्लाह की तरफ़ की रूजूअ करने वाले थे और निरे घरे बन्दे थे वो मुशरिकों में से न थे पस जिस तरह अल्लाह ने चाहा ये ज़माना गुज़रा फिर अल्लाह ने मानूस किया उनको इस्माईल व इस्हाक़ से और वो तीन हो गये वल्लाह मोमिन दुनिया में कम हैं और अहले कुफ़्र ज़्यादा, तुम जानते हो ऐसा क्यों हे मैंने कहा नहीं फ़रमाया ये काफ़िर मोमिनों से मानूस हुए और जो इनके सीनों में था ले लिया और आराम से हो गये।

6. मैंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से कहा हमारी जमाअत किस क़दर क़लील है कि अगर दस्तरख़्वान पर एक बकरी खाने बैठें तो तमाम न कर सकें। फ़रमाया मैं तुमको इससे ज़्यादा अजीब बात बताऊँ आँहज़रत स. के बाद मुहाजिरीन व अन्सार ईमान से फिर गये और फिर तीन उँगलियों से इशारा किया। हमरान कहता है मैंने कहा अम्मार का क्या हाल रहा फ़रमाया अल्लाह उनपर रहम करे उनकी कुन्नीयत अबुल यक़ज़ान है उन्होंने अमीरूल मोमिनीन की बैअत की और जंगे सिफ़्फ़ीन में

शहीद हुए मैंने अपने दिल में कहा शहादत से अफ़ज़ल कोई शै नहीं। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम्हारा ये ख़याल है कि वो मिस्ल तीन के थे बहुत दूर है ये बात बहुत दूर है ये बात यानी वो अफ़ज़ल थे।

7. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने हर वो शख़्स जो हमारी विलायत का मुद्दई है मोमिन नहीं बल्कि वो मोमिनीन से मानूस है।

दो सौ उन्तीस वॉ बाब
राज़ी होना बख़्शिश पर ईमान है और हर शै पर सब्र उसके बाद

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ऐ अबुल वाहिद अगर इन्सान साहिबे राए है तो लोगों का कहना अगरचे वो मजनून कहें कोई नुक़्सान नहीं देता और ऐसे ही नुक़्सान नहीं देता लोगों का कहना अगर वो पहाड़ पर मरते दम तक इबादते ख़ुदा करे।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर रूए ज़मीन पर एक के सिवा कोई दूसरा मोमिन रहे ही नहीं तो वो भी तमाम ख़ल्क़ से बेपरवाह कर देगा और मैं उसके ईमान से उन्स रखूंगा और मुझे किसी और की एहतियाज न रहेगी।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने नहीं परवाह करता वो शख़्स जिसे अल्लाह तआला की मारफ़त हासिल हो कि वो चाहे मरते दम तक पहाड़ की चोटी पर रहे और घास खाकर बसर करे।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन के लिए सज़ावार नहीं कि वो बज़ोर मोमिन से अज़रूए हिक़ारत दूरी अख़्तियार करे क्यों कि हो सकता है कि वो पस्त दरजे वाला मोमिन दीन में उससे ज़्यादा अज़ीज़ हो।

5. फुज़ैल बिन यसार से मरवी है कि मैं इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जबकि वो हज़रत बीमार थे और निहायत नहीफ़ व नातवॉ हो गये थे हज़रत ने फ़रमाया ऐ फुज़ैल मैं अक्सर ये बात कहा करता हूँ कि क्या शै नुक़्सान दे सकती है उस शख़्स को जिसे ख़ुदा ने हमारी अम्रे इमामत की मारफ़त कराई है अगरचे वो तन्हा पहाड़ की चोटी पर मरते दम तक रहे एक फुजैल लोगों ने अम्रे हक़ को इधर उधर कर लिया और हम और हमारे शिया हिदायत पाए हुए हैं ऐ फुज़ैल अगर मोमिन वो सब पाए जो मशरिक़ व मग़रिब में है तो हस्बे मसलेहते इलाही उसके लिए बेहतर होगा और ख़ुदा का शुक्र अदा करेगा और अगर उसके आज़ा क़तअ हो जाएं तो मसलेहते इलाही इसी में होगी और वो सब्र करेगा तो उसके लिए इसमें बेहतरी होगी एक फुज़ैल अगर ख़ुदा के नज़दीक दुनिया की वक़्अत परे मगस के बराबर होती तो ख़ुदा का दुश्मन इससे एक प्याला पानी भी नहीं पी सकता ऐ फ़ज़ील जिसका एक इरादा (अम्रे हक़ पाने का) हो तो अल्लाह उसके इरादे को पूरा करता है और अगर इरादा हर चीज़ से मोहब्बत का हो तो अल्लाह परवा नहीं करता इस बात की कि वो किसी वादी में हलाक हो।

6. हमने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना कि फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल ने फ़रमाया (हदीसे कुदसी में) मैंने तरद्दुद नहीं किया जिसका मैं ख़लिक़ हूँ सिवाए अपने मोमिन बन्दे की मौत के, मैं उससे मिलना चाहता हूँ यानी अमल का सवाब देना और मौत को पसन्द करता है ना मैं उसे हटा देता हूँ जब वा`मुझे पुकारता है तो मैं उसे जवाब देता हूँ और जब सवाल करता है तो अता करता हूँ अगर दुनिया में मेरे मोमिन बन्दों में से सिर्फ़ एक मोमिन रह जाए तो मैं बे परवाह होंगा अपनी मख़लूक़ से और उसके ईमान की बिना पर उससे उन्स रखूंगा और वो किसी की तरह मोहताज न होगा।

दो सौ तीस वॉ बाब

मोमिन का मोमिन के साथ आराम पाना

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन, मोमिन से इस तरह तस्कीन पाता है जैसे प्यास ठंडे पानी से।

दो सौ इक्तीस वॉ बाब

इसका बयान कि मोमिन की वजह से अल्लाह क्या दफ़अ करता है

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अल्लाह तआला सिर्फ़ एक मोमिन की बरकत से उसके शहर या क़रिये से वबा दूर करता है।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जिस क़रिये में सात मोमिन हों वो बस्ती अज़ाब से महफ़ूज़ रहती है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि हज़रत से पूछा गया और अज़ाब के मुतअल्लिक़ जो किसी क़ौम पर नाज़िल हुआ और उसमें मोमिनीन भी आ जाते हैं फ़रमाया हॉ लेकिन वो बाद में उससे ख़लासी पा लेते हैं।

दो सौ बत्तीस वॉ बाब

मोमिन की क़िस्में

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन दो क़िस्म के होते हैं एक वो जो अहदे ख़ुदा में सादिक़ है और उसकी शर्तों को पूरा करता है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता हे वो ऐसे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह से जो अहद किया था उसको पूरा किया। यही वो लोग हैं जिनको न दुनिया का ख़ौफ़ हैं न आख़ेरत का और यही वो लोग हैं जो दूसरों की शफ़ाअत करेंगे और उनको शफ़ाअत की ज़रूरत न होगी और दूसरे जो नये दरख़्त की मानिन्द है कभी झुकता है कभी खड़ा होता है ये वो है जिसके लिए दुनिया के ख़ौफ़ भी हैं जैसे ताऊन वग़ैरा और आख़ेरत का ख़ौफ़ भी है

उसकी शफ़ाअत की जाएगी मगर वो शफ़ाअत न कर सकेगा।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन दो तरह के हैं एक वो जो अल्लाह से अहद की सारी शर्तें पूरी करे और नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहीन के साथ होगा और ये उसके अच्छे रफ़ीक होंगे ये शिफ़ाअत करेगा उसकी शफ़ाअत न की जाएगी उसके लिए न अहवाले दुनिया है न आख़ेरत, दूसरा मोमिन वो है जिसके क़दम को लग़्ज़िश है वो इस नये पौदे की तरह है जिसको हवा का झोंका झुकाता है और उठाता है उसके लिए दुनया के ख़ौफ़ भी हैं और आख़ेरत के भी उसकी शफ़ाअत की जाएगी और वो नेकी पर होगा।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने बसरा में एक शख़्स अमीरूल मोमिनीन से कहने लगा मुझे इख़्वान (भाईयों) के मुतअल्लिक़ बताईए फ़रमाया भाई दो क़िस्म के है एक साहिबे एतमाद और दसूरे शगुफ़्ता रू, तलीकुल्लिसान, जो भाई सिक़ा हैं ये लोग हाथ और बाजू कुन्बा और माल हैं और जब तुमको कोई सिक़ा भाई मिल जाए तो उसके लिए अपना माल और अपन बदन को उसकी ख़िदमत में लगाओ और जो उसका दोस्त है तुम भी उसके दोस्त हो और जो दुश्मन है उसके दुश्मन रहो और उसके भेद छुपाओ उसके ऐब को मख़फ़ी रखो और अच्छाई ज़ाहिर करो। ऐ सवाल करने वाले ऐसे लोग सुर्ख़ गंधक (जिससे अकसीर बनती है) ज्यादा नायाब हैं लेकिन चर्ब ज़बान, हँसोड़ लोग, उनसे मिलने में तुमको लज़्ज़त महसूस होगी उनसे भी क़तए तअल्लुक़ न करो और जो उनके दिल में है उसके अलावा और कुछ तलब न करो और जिस तरह ख़न्दा पेशानी और शीरीं गुफ़्तार के साथ वो तुमसे मिलते हैं तुम भी उनसे मिलो।



दो सौ तैंतीस वॉ बाब

मोमिन से ख़ुदा का अहद मसाएब पर सब्र करने में

1. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद अ. ने अल्लाह ने बन्दाए मोमिन से सब्र का अहद लिया है उसपर कि अहले बातिल उसके कलाम की तस्दीक़ न करेंगे और उसके दुश्मन से इन्तेक़ाम न लेंगे और जो मोमिन है वो बेचारा दुश्मन के प्रोपेगंडे से रूस्वा होकर मरेगा क्योंकि दीनवी मुआमेलात के मुतअल्लिक़ बन्दाए मोमिन की ज़बान बन्द रहती है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा ने अहद लिया है मोमिन से चार बलाओं पर सब्र करने का एक ये कि मोमिन उससे हसद करे दूसरे मुनाफ़िक़ बज़ाहिर उसकी पैरवी करे और बातिन उसकी ऐब जोई करे तीसरे शैतान उसको भगाने में लगा रहे चोथे काफ़िर उससे जंग करे ये चार दुश्मन पीछे लगे हों तो फिर मोमिन उसके बाद कहॉ मिलेगा।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने ख़लासी नहीं मोमिन को तीन बातों में एक एक या तीनों मुसीबतें उसके लिए जमा हो जाएं या बाज़ जमा हों पहले ये कि जो शख़्स उसके साथ घर में रहता हो वो उसपर दरवाज़ा बन्द करे और उसको सताए, दूसरे पड़ोसी सताए, तीसरे जब वो ज़रूरियात पूरी करने को निकले तो राह में लोग सताएं अगर मोमिन पहाड़ की चोटी पर भी जाकर बैठेगा तो अल्लाह तआला उसके इम्तिहान के लिए वहॉ भी एक शैतान को भेजेगा जो उसे सताएगा और अल्लाह मोमिन के ईमान से उन्स रखता है और उसकी वहशत दूर करने के लिए दूसरे की ज़रूरत बाक़ी नहीं रखता।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन चार बातों से ख़ाली नहीं या कम अज़ कम एक तो हो ही गी। मोमिन से हसद

करे ये सबसे बड़ी मुसीबत है या मुनाफ़िक़ बज़ाहिर उसकी पैरवी करे या दुश्मन उससे लड़े या शैतान उसे बहकाए।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह तआला अपने वली को दुनिया में (मर्तबा ज़्यादा करने के लिए) अपने दुश्मन का हदफ़ बनाता है।

6. रावी कहता है मैं अबू अब्दिल्लाह अ. के पास था कि एक शख़्स ने अपनी ज़रूरत को बयान किया फ़रमाया सब्र कर अल्लाह रोज़ी में वुस्अत देगा। फिर ख़ामोश रहने के बाद उससे फ़रमाया कूफ़े के क़ैदख़ाने का क्या हाल है उसने कहा बहुत तंग बदबूदार है और उसमें क़ैदी बहुत परेशान हाल हैं फ़रमाया पस तू भी दुनिया के क़ैदख़ाने में चाहता है कि आराम की सूरत हो क्या तुझे नहीं मालूम कि दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है पस क़ैदख़ाने में आराम कहाँ।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन के लिए बहुत से नेअमतें है जिनके लोग मुन्किर हैं और एक रिवायत में है कि मोमिन की नेकियाँ ख़ुदा की तरफ़ से बुलन्द होती हैं और लोगों में नहीं फैलतीं अल्बत्ता काफ़िर जो लोगों को देता है उसका शुक्रिया अदा किया जाता है।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कोई मोमिन ऐसा नहीं जिसे चार चीज़ों का सामना न हो। शैतान बहका कर गुमराह करना चाहता है काफ़िर फ़रेब देता है और मोमिन हसद करता है और सबसे ज़्यादा ये चीज़ उसके लिए सख़्त है और मुनाफ़िक़ उसकी लग़ज़िशों की पैरवी करता है।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब कोई मोमिन मर जाता है तो रबीया और मुज़र जैसे बड़े क़बाएल (शयातीन) वहाँ जमा हो जाते हैं और उनको बातों में लगा लेते हैं (ताकि वो शिरकते जनाज़ा से महरूम रहें)

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने न ऐसा था न है न होगा कि मोमिन का कोई सताने वाला न हो। अगर समन्द्र के जज़ाएर में से किसी जज़ीरे में भी मोमिन होगा तो अल्लाह उसके पास किसी ऐसे को पहुँचा देगा जो उसको सताए।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कोई ज़माना भी हो माज़ी, हाल या मुस्तक़बिल ज़रूर मोमिन के लिए कोई ऐसा शख़्स मौजूद होगा जो उसे सताएगा।

13. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने क़यामत तक एक ज़माना ऐसा होगा कि मोमिन के लिए उसका पड़ोसी सताने वाला होगा।

दो सौ चौंतीस वाँ बाब

शिद्दते इब्तिलाए मोमिन

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान अम्बिया का है उसके बाद जो उनसे क़रीब हों यानी औसियाए अम्बिया का है उसके बाद वो मोमिनीन जो अफ़ज़ल हों यानी जिसका मर्तबा ईमान में ज़्यादा होगा उसी क़द्र उसकी इब्तिला सख़्त होगी।

2. रावी कहता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. के सामने बला का और जिस चीज़ से मोमिन को मख़सूस किया गया उसका ज़िक्र किया

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जितनी मुसीबतें ज़्यादा होंगी उतनी ही अज्र ज़्यादा होगा ख़ुदा जिन लोगों को दोस्त रखता है उनको मुसीबत में ज़रूर मुब्तिला करता है।

4. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने लोगों में सबसे ज़्यादा मुसीबत अम्बिया पर आती है फिर औसिया पर दरजा बदरजा मोमिन पर।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा के कुछ ख़ास बन्दे रूए ज़मीन पर हैं जब आसमान से कोई तोहफ़ा ज़मीन पर

नाज़िल होता है तो उसको मोमिनीन से हटा कर दूसरों की तरफ़ लौटा दिया जाता है और जब बला नाज़िल होती है तो उसका रूख़ मोमिनीन की तरफ़ कर दिया जाता है (ये इसलिए होता है कि मोमिनीन के मरातिब में इज़ाफ़ा हो और उनके मरातिब बढ़ाने का सबब पैदा हो)

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि उनके पास सदीर बैठे थे जब अल्लाह किसी को दोस्त दखता है तो उसे किसी मुसीबत में ग़मनाक बना देता है ऐ सदीर हम और तुम उसी हालत में सुब्हा शाम करते हैं।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को दोस्त रखता है तो उसे बला में मुब्तिला करके ग़मज़दा बना देता है और मुसीबत की वजह से अपनी तरफ़ बुलाता है जब वो मोमिन दुआ करता है तो ख़ुदा फ़रमाता हे मेरे बन्दे मैं मौजूद हूँ जो तूने माँगा है मैं जल्दी उसके देने पर क़ादिर हूँ लेकिन मैंने तेरे लिए ज़ख़ीरा किया और जो ज़ख़ीरा किया है वो तेरे लिए बेहतर है।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया रसूलुल्लाह ने सबसे बड़ी मुसीबत का बदला भी बड़ा ही होता है जब अल्लाह किसी बन्दे को दोस्त रखता हैं तो सख़्त बला में मुब्तिला करता है पस जो उसपर राज़ी हा`गया तो ख़ुदा भी उससे राज़ी होता है और जो नाख़ुश हुआ ख़ुदा भी उससे से नाराज़ रहता है।

9. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने दुनिया में मोमिन बक़द्रे अपने दीन के मुब्तिला किया जाता है और एक रिवायत में है हसबे दीन।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन मिस्ले तराज़ू के पल्ले के है जितना ईमान ज़्यादा होता है उतनी ही मुसीबत ज़्यादा होती है।

11. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने मोमिन पर चालीस

दिन नहीं गुज़रते कि उसको कोई ऐसा अम्र आरिज़ होता है जो उसको महजून बना देता है और उसकी याद में रहता है।

12. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कहा कि मुग़ीरा कहता है कि मोमिन जुज़ाम व बर्स बग़ैरा में मुब्तिला नहीं होता। फ़रमाया वो ग़ाफ़िर है साहिबे यासीन (हबीबुल नजार) के हाल से जो मोमिन था (सूरः यासीन में उसका ज़िक्र है)

फिर इमाम ने अपनी उँगलियाँ मोड़कर बतलाया कि इस तरह उसकी आधी उँगलियाँ रह गई थीं फिर फ़रमाया गोया मैं देख रहा हूँ उसकी आधी उँगलियों के जो जुज़ाम से गिर गयी थीं वो अहले अन्ताकिया के पास आए उनको अज़ाबे इलाही से डराया दूसरे रोज़ फिर सुब्हा को उन्हें समझाने गये तो उन्होंने उन्हें क़त्ल कर दिया। फिर फ़रमाया मोमिन हर बला में मुब्तिला होता है और हर तरह की मौत मरता है मगर ये कि तर्के तक़य्या से वो अपने आपको हलाक नहीं करता।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मोमिन अल्लाह की तरफ़ से मरातिब में फ़ज़ीलत रखता है ये तीन मर्तबा फ़रमया ख़ुदा उसको बला में मुब्तिला करता है उसकी जान जब एक एक अज़ो से निकलती है तो वो उसपर अल्लाह की हम्द करता है।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जन्नत में एक मंज़िलत है जिसे इन्सान नहीं पाता जब तक उसका जिस्म मुब्तिलाए मुसीबत न हो।

15. अबी यअफ़ूर ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से अपने उस दर्दो ग़म की शिकायत की जो मुस्तक़िल तौर पर रहते हैं फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह! अगर मोमिन ये जान ले कि मसायब में उसके लिए क्या क्या अज्र हैं तो ज़रूर उसकी तमन्ना करे कि कैंचियों से उसका बदन काट डाला जाए।

16. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना

कि अहले हक़ हमेशा सख़्ती में रहते हैं ये सख़्ती कम मुद्दत रहती है लेकिन आफ़ियत उनकी तवील होती है।

17. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अल्लाह तआला मोमिन से बला का मुआहेदा इसी तरह करता है जैसे कोई शख़्स अपने अहल से बहालते ग़ीबत हदया भेजने का मुआहेदा करता है अल्लाह मोमिन को दुनिया में इसी तरह बचाना चाहता हे जैसे तबीब अपने मरीज़ को परहेज़ की हिदायत करता है।

18. मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि अल्लाह तआला बन्दए मोमिन को दीनवी तकलीफ़ से अमान देता नहीं बल्कि उसको बचाता है दुनिया में कोर बातनी और आख़ेरत की सख़्ती से।

19. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अली इब्नुल हुसैन अ. फ़रमाते थे कि मैं किसी के लिए पसन्द नहीं करता कि वो दुनया में आफ़ियत से रहे और मसायब से कोई शै उस तक न पहुँचे।

20. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हज़रत रसूले ख़ुदा स. की एक शख़्स ने दावत की। जब हज़रत उसके घर पहुँचे तो देखा कि एक मुर्ग़ी ने दीवार पर अंडा दिया है वो अन्डा दीवार की एक मेख़ पर था न तो वहाँ से गिरा न टूटा हज़रत को ये देखकर तअज्जुब हुआ उसने कहा क्या आपको इस अन्डे पर तअज्जुब हुआ है क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको स. नबीए बरहक़ बनाया है मुझे आज तक कोई तकलीफ़ नहीं पहुँची है ये सुनकर आप वहाँ से उठ खड़े हुए और उसके खाने में से कुछ न खाया और फ़रमाया जिसपर कोई मुसीबत नहीं आती अल्लाह को उससे कोई सरोकार नहीं यानी वो कोई मोमिन नहीं।

21. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जिसके माल और बदन में कोई नुक़सान नहीं पहुँचता अल्लाह

का उससे कोई सरोकार नहीं।

22. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह मुब्तिला करता है हर मोमिन को हर बला में मुब्तिला करता है हर तरह की मुसीबत में लेकिन सलबे अक़्ल में मुब्तिला नहीं करता क्या तुम नहीं जानते अय्यूब अ. के माल और औलाद व अहल और हर शै पर इब्लीस को मुसल्लत किया लेकिन अक़्ल पर मुसल्लत न किया और ये इसलिए कि तौहीदे इलाही पर क़ाएम रहें और लोगों को उसका दर्स देते रहें।

23. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इन्दल्लाह बन्दे की एक मंज़िलत है जिसको वो नहीं पाता मगर वो दो ख़सलतों में एक से या तो माली नुक़्सान से या जिस्मानी तकलीफ़ से।

24. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा ने हदीसे क़ुदसी में फ़रमाया कि मेरे बन्दए मोमिन का दिल इससे अन्दोहगीं न होता तो मैं काफ़िर के सर पर लोहे का असाबा बाँधता जिससे उसके सर में कभी दर्द न होता (यानी काफ़िर की ये राहत आख़ेरत में उसके लिए बाएसे अज़ाब होती मगर चूँकि बन्दए मोमिन उसके उस हाल को देखकर मग़मूम होता लेहाज़ा मैं ऐसा नहीं करता)

25. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि मोमिन की मिसाल नए पौदे की है जिसे हवाएं कभी इधर और कभी उधर झुकाती है और इस तरह मोमिन को मुज़तरिब बनाते हैं। दर्द और अमराज़ और मुनाफ़िक़ की मिसाल लोहे की छड़ी की सी है कि कोई शै उसे हरकत नहीं देती यानी हिदायत उसको मुनाफ़ेक़त से बाज़ नहीं रखती ताइं मौत उसको पूरी तरह तोड़ कर रख दे।

26. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने एक रोज़ अपने असहाब से फ़रमाया हर वो माल मलऊन है जिसकी ज़कात न दी जाए अगरचे हर चालीस दिन बाद एक ही बार हो। लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह ज़काते माल को तो हम

समझ गये लेकिन ज़काते जिस्म क्या चीज़ है फ़रमाया किसी आफ़त में मुब्तिला होना। यह सुनकर लोगों के चेहरे मुतग़य्यर हो गये जब ऑहज़रत ने उनके रंग उड़े हुए देखे तो फ़रमाया तुम समझे कि इसके कहने से मेरी क्या मुराद है उन्होंने कहा नहीं। फ़रमाया इससे मुराद वो मुसीबत है जो उसे अच्छी तरह झिंझोड़ दे या ऐसी बला जो उसे औंधा कर दे या कोई लग़ज़िश परेशान कर दे या कोई बीमारी लाहिक़ हो या हवादिसे रोज़गार का कोई झटका पहुँचे या इसी तरह कोई तकलीफ़ हो यहाँ तक कि आपने ऑख फड़कने तक का ज़िक्र किया।

तौज़ीह : मक़सद ये है कि इब्तिला से इन्सान की ज़हनी सलाहियतों का इम्तिहान होता है। सब्र की आज़माईश होती है उसके कुलूब में रिक़्क़त और नर्मी पैदा होती है उसके मरातिब में इज़ाफ़ा होता है इसी लिए अल्लाह तआला थोड़े थोड़े वक़्फ़े से उसका इम्तिहान लेता रहता है यानी कम अज़ कम चालीस दिन में एक बार।

27. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा गया कि मोमिन जुज़ाम व बर्स में मुब्तिला होता है फ़रमाया इब्तिला तो है ही मोमिन के लिए।

28. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मोमिन साहिबे इज़्ज़त है इन्दल्लाह यहाँ तक कि अगर मोमिन उससे जन्नत व माफ़ीह का सवाल करे तो वो उसको दे देगा बग़ैर इसके कि कोई चीज़ उसके झगड़ों से इसी तरह बचाता है जैसे तबीब मरीज़ को बदपरहेज़ी से।

29. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने किताबे अमीरूल मोमिनीन में लिखा है सबसे ज़्यादा बलाऐं अम्बिया पर नाज़िल होती हैं फिर औसिया पर और फिर मोमिनीने अफ़ज़ल पर, उनके बाद उनसे कम दरजे वालों पर मोमिन का इब्तिला बलेहाज़ उसके आमाले हसना के होता है पस जिसका दीन सही है और अमल अच्छा है

तो उसकी इब्तिला सख़्त होती है और ये इसलिए कि अल्लाह तआला ने मोमिन के लिए दुनिया में सवाब नहीं रखा और न काफ़िरों के लिए अज़ाब है जिसका दीन सही नहीं और अमल कमज़ोर है उसके लिए इब्तिला भी कम है और इब्तिला तो मोमिन की तरफ़ इस तरह लपकती है जैसे बारिश का पानी तेज़ी से ज़मीन की तरफ़ बहता है (चूँकि ये इब्तिला मक़ामे मोहब्बत में होती है लेहाज़ा मोमिन उससे ख़ुश होता है)

30. युनुस बिन अम्मार रावी है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कहा मेरे चेहरे पर जो बर्स के दाग़ हैं लोग गुमान करते हैं कि अल्लाह तआला अपने अहदे मोमिन को जिससे (अपनी गरज़ वाबस्ता हो) ऐसे अमराज़ में मुब्तिला नहीं करता फ़रमाया मोमिने आले फ़िर्औन हबीबे नज्जार की उँगलियाँ जुज़ाम में गिर गई थी वो ऐसी ही बातें करता था दोनों हाथ उठाकर कहता था लोगों ईसा के भेजे हुए रसूलों की पैरवी करो फिर फ़रमाया जब दो तिहाई रात गुज़र जाए तो उसके इब्तिदाई हिस्से में वज़ू करो और उस नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ जो पढ़ा करते हो जब पहली दो रकअतों के सजदए आख़िर में जाओ तो कहो ऐ अली ओ अज़ीम और रहमानो रहीम ज़ात, ऐ दुआओं के सुनने वाले और नेकियों के अता करने वाले रहमत नाज़िल कर मोहम्मद स. व आले मोहम्मद स. पर और मुझे दुनिया और आख़ेरत की बेहतरी अता कर तू ही इसका अहल है और मेरी इस तकलीफ़ को दूर कर और इस तकलीफ़ का नाम ले और कहो मुझे इसने परेशान व रंजीदा कर दिया है और वक़्ते दुआ इल्हाहो व ज़ारी कर रावी कहता है मैंने ये अमल किया जब कूफ़े पहुँचा तो मेरी सब तकलीफ़ दूर हो चुकी थी।



दो सौ पैंतीस वाँ बाब

फुक़राईल मुस्लिमीन

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जन्नत के बागों में फुक़राए मुस्लिमीन ओमरा से चालीस साल पहले जन्नत के बागों ऐश करते होंगे मैं इसको एक मिसाल के ज़रिए समझाता हूँ दो कश्तियाँ दसवाँ हिस्सा टेक्स वसूल करने वाले की तरफ़ से गुज़री उसने देखा एक तो बिल्कुल ख़ाली है हुकम दिया उसे छोड़ दो और दूसरी जो भरी हुई थी उसे रोक लिया। दीनी अग़निया को चूँकि ज़्यादा हिसाब देना होगा लेहाज़ा जन्नत में उनका दाख़िला देर से होगा।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मसायब अतियाए ख़ुदा है। और फ़क़ीरी इन्दल्लाह ख़ज़ाना की हुई है जिसका एक दिन अज्रे अज़ीम मिलेगा।

3. फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने ऐ अली फ़क्र को अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के पास अमानत रखा है जो उसे छुपाता रहा अल्लाह उसको क़ाएमुल्लैल व साएम का अज्र अता फ़रमाएगा जिसने उसपर जो हाजत बर लाने वाला है अपनी ज़रूरत ज़ाहिर कर दी और उसने पूरी न की तो उसने उस मोहताज को क़त्ल कर दिया मगर तलवार या नेज़ा से नहीं बल्कि उस चीज़ से जिसने उसके क़ल्ब को तोड़ दिया।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिस क़द्र किसी बन्दे का ईमान ज़्यादा होता है उसी क़द्र उसकी रोज़ी तंग होती है।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर तलबे रिज़्क़ में मोमिनीन ख़ुदा से अलहा व ज़ारी न करें तो वो उनको और ज़्यादा तंगदस्ती की तरफ़ ले जाए (ताकि उनके मरातिबे आख़ेरत में ज़्यादती हो)

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने नहीं दिया गया बन्दे को माल मगर उसे ऐबनाक करने के लिए और नहीं कम किया गया

मगर उसे ऐब से बचाने के लिए।

7. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने दौलत व हुकूमते बातिल में हमारे ख़ालिस शियों के लिए सिर्फ़ कुते लायमूत है चाहे वो मशरिक़ में हो या मग़रिब में उनका रिज़्क़ वही कूते लायमूत होगा।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ऐ अली! हाजत ख़ुदा की अमानत है उसकी मख़लूक़ के पास, जिसने उसे छुपाया, ख़ुदा उसे नमाज़ गुज़ारों का सवाब अता करेगा और जिसने ऐसे शख़्स पर अपनी हाजत को ज़ाहिर कर दिया जिससे बर आने की उम्मीद हो और उसने वह हाजत पूरी न की तो उसने गोया उसको क़त्ल कर किया। तलवार व सिनानो तबर से नहीं बल्कि उस हर्बे से जिसने उसका दिल टुकड़े कर दिया।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा–ए–तआला फ़ुक़राईल मोमिनीन से रोज़े क़यामत बतौर उज़्र ख़्वाही के फ़रमाएगा क़सम है अपने इज़्ज़तो जलाल की मैंने तुम्हें दुनिया में इसलिए मोहताज नहीं किया कि तुम मेरे नज़दीक ज़लील थे अब तुम देखोगे कि आज मैं तुम्हारे साथ क्या करता हूँ जिसने तुम्हें दारे दुनिया में ख़ाना दिया था उसका हाथ पकड़ो और जन्नत में दाख़िल करो एक शख़्स उनमें से कहेगा पालने वाले दुनिया वालों ने रग़बत की दुनिया की तरफ़ लेहाज़ा उन्होंने निकाह किया औरतों से और नर्म लिबास पहना अच्छे खाने खाए अच्छे घरों में रहे पस जो तूने उन्हें दिया हमें भी दे ख़ुदा फ़रमाएगा तुममें से हर एक को मैं वो देता हूँ जो अहले दुनिया को दिया था जब से दुनिया क़ाएम हुई और ख़त्म हुई सत्तर गुना ज़्यादा।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने औलादे आदम में मोमिन फ़ुक़रा है और काफ़िर ग़नी यहाँ तक कि इब्राहीम का ज़माना आ गया उन्होंने कहा परवरदिगारा हमको काफ़िरों के मुक़ाबिल

आज़माईश में न डाल, पस अल्लाह ने उनको भी मालदार बनाया और हाजतमन्द और उनको भी मालदार और हाजतमन्द।

11. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने एक मालदार तुज़ो एहतेशाम का लिबास पहने रसूलुल्लाह के पास आया और आपके पहलू में बैठ गया। फिर एक ग़रीब मेले कुचेले कपड़े पहने आया ओर अमीर के बराबर बैठ गया। अमीर ने अपना दामन समेट लिया। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया क्या तुझे ये डर हुआ कि उसकी फ़क़ीरी तुझे आ लपेटेगी उसने कहा नहीं। फ़रमाया क्या तुझे ये डर हुआ कि तेरी अमीरी इसे मिल जाएगी कहा नहीं। फ़रमाया क्या अन्देशा हुआ कि तेरी कपड़े मेले हो जाएंगे उसने कहा नहीं। फ़रमाया फिर तूने ऐसा क्यों किया उसने कहा शैतान मेरा साथी है जो मुझ पर अच्छी चीज़ को बुरा ज़ाहिर करता है और बुरी को अच्छी अब मैंने अपनी निस्फ़ दौलत इसको दी हज़रत ने उस फ़क़ीर से फ़रमाया तुझे कुबूल है उसने कहा नहीं। उस अमीन ने पूछा क्यों उसने कहा ताकि ये माल मुझे भी ऐसा मग़रूर न बना दे जैसा तुझे बना दिया है।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा ने मूसा से वक़्ते मुनाजात कहा ऐ मूसा फ़क़ीरी तुम्हारी तरफ़ आए तो कहो मरहबा यही तरीक़ा सालेहीन का और जब मालदारी आए तो कहो ये गुनाह है जो जल्द अज़ाब लाने वाला है।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया बशारत हो मसाकीन के लिए जो सब्र से काम लेते हैं और यही वो लोग हैं जो मलकूतुस्समावात व अर्ज़ को देखते हैं

14. रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ऐ गिरोहे मसाकीन अपने नफ़्सों को पाक बनाओ और मर्ज़ीए इलाही के ख़्वास्तगार बनो अल्लाह तुम्हारे फ़क़्र पर उसका सवाब अता फ़रमाएगा और अगर तुमने ऐसा किया तो तुमको सवाब न मिलेगा।

15. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया जब

क़यामत का दिन होगा और ख़ुदा एक मुनादी को हुक्म दे आवाज़ दे कहाँ हैं? फ़ुक़रा ये सुनकर बहुत से लोगों की गर्दनें उठेंगी ख़ुदा कहेगा ऐ मेरे बन्दों वो जवाब देंगे ऐ हमारे परवरदिगार! हम हाज़िर हैं। ख़ुदा फ़रमाएगा मैंने तुमको फ़क़ीर नहीं बनाया था कि मैं तुम्हें ज़लील समझता था बल्कि मैंने तुम्हारा इन्तिख़ाब आज के दिन के लिए किया था अब पहचानों लोगों के चेहरों को पस जिसने तुमसे नेकी की उसने मुझसे नेकी की अब उसका बदला दो इस तरह कि उन्हें जन्नत में ले जाओ।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर ये शिया ख़ुदा से रिज़्क़ तलब करने के बारे में इल्हा व ज़ारी न करते तो अल्बत्ता हम उनको मौजूदा हालत से ऐसे हालत की तरफ़ बदल देते जो इससे ज़्यादा तंग होती।

17. रावी कहता है हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने मुझसे फ़रमाया क्या तुम बाज़ार नहीं जाया करते क्या तुम वहाँ न देखोगे कि तरह तरह के फल और तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ चीज़ें बिक रही हैं मैंने कहा ऐसा ही है फ़रमाया जो चीज़ें तुम देखो और ख़रीद न सको तो इससे महरूमी एक नेकी होगी।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे से जो दुनिया में मोहताज रहा हो इस तरह माज़ेरत ख़्वाही करता है जैसे भाई अपने भाई से माज़ेरत करता है फ़रमाता है क़सम है अपने इज़्ज़तो जलाल की मैंने तेरी अदमे क़ुदरत की वजह से तुझे दुनिया में मोहताज नहीं बनाया था पस अब तो परदा उठा और देख मैंने दुनिया की मोहताजी के बदले तुझे क्या एवज़ दिया है पस वो परदा उठा कर कहेगा जो मुझे वहाँ नुक़्सान पहुँचा था उससे ये बदला ज़्यादा है।

19. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब क़यामत का दिन होगा तो लोगों की गर्दनें उठेंगी वो दरवाज़ए जन्नत पर आएंगे और उसपर दस्तक देंगे उनसे पूछा जाएगा तुम कौन हो

वो कहेंगे हम फुक़रा हैं उनसे कहा जाएगा हिसाब के लिए चलो वो कहेंगे हमें कुछ दिया ही न गया था कि हिसाब दें ख़ुदा कहेगा ये सच्चे हैं इन्हें जन्नत में दाख़िल करो।

20. मैंने मूसा काज़िम अ. से सुना कि ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल फ़रमाता है मैंने किसी को ग़नी इसलिए नहीं बनाया कि उसका कोई एहसान मुझपर था ओर किसी को इसलिए फ़क़ीर बनाया कि उसे ज़लील करना चाहता था मैंने फुक़रा की वजह से अग़निया की आज़माईश की अगर फुक़रा न होते तो अग़निया जन्नत के मुस्तहक़ न होते।

21. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारे मालदार शिया हमारे माल के अमीन हैं अपने साहिबे एहतियाज लोगों के लिए पस ऐसे लोगों की एक मालदारों तुम हिफ़ाज़त करो अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।

22. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़क़ीरी मोमिन के लिए इससे ज़्यादा ज़ीनत देने वाली है जितनी लजाम से घोड़ो के जबड़े की होती हे यानी जिस तरह लजाम घोड़े को इधर उधर ग़लत हरकत से रोकता है उसी तरह फ़क़ीरी फ़क़ीर को बुरी ख़्वाहिशात से रोकती है।

23. रावी कहता है मैंने अली इब्नुल हुसैन अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया। अगर ऐसा न होता कि सब लोग एक ही से हो जाएंगे (जुख़रूफ़) फ़रमाया इससे मुराद है उम्मते मोहम्मदी जो रसूल स. के बाद एक दीन पर होते हुए इमामे बरहक़ का इन्कार करने से सब काफ़िर हो गये अगर ख़ुदा चाहता तो अपने मुन्किरों और काफ़िरों के घर को (इत्मामे हुज्जत के लिए) चॉंदी का बना देता लेकिन उम्मते मोहम्मदी के लिए अगर ऐसा करता तो ईमान वाले रंजीदा होते और उनको ये गुमान होता कि ये काफ़िरों से रज़ामन्दी की अलामत है ओर ये कि काफ़िर दौलत मन्दी के गुरूर में न मोमिनों को लड़की देते

न लेते और मीरास उनमें क़ाएम रहती।

दो सौ छत्तीस वॉ बाब

ततिम्मा

1. अबू अब्दिल्लाह अ. के पास एक शख़्स आया और कहने लगा अल्लाह आपकी हिफ़ाज़त करे मैं वो शख़्स हूँ जिसने अपनी मोहब्बत को हर तरह क़तअ करके आपकी तरफ़ तवज्जोह की है मुझे एक सख़्त ज़रूरत पेश आयी। मैंने अपने ख़ानदान और क़ौम के सामने पेश करके मदद चाही मगर वो लोग मुझसे दूर ही रहे। फ़रमाया जो कुछ ख़ुदा ने तुझे दिया है वो उससे बेहतर है जो तुझसे ले लिया गया मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ मेरे लिए ख़ुदा से दुआ फ़रमाइए कि मुझे मख़लूक़ से बेनियाज़ कर दे। फ़रमाया ख़ुदा ने रिज़्क़ तक़सीम किया है इस तरह कि जिसके हाथ से जिसको चाहा दिलाया है बल्कि ये दुआ कर कि ख़ुदा वक़्ते ज़रूरत कमीनों से पाला न डाले।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़क़ीरी सख़्त मौत है मैंने कहा क्या उससे आपकी मुराद दीनार व दिर्हम का न होना है फ़रमाया नहीं बल्कि वो मोहताजी है दीने हक़ से।

दो सौ सैंतीस वॉ बाब

क़ल्बे इन्सानी के दो कान हैं जिनमें फूँकता है फ़रिश्ता और शैतान

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने हर दिल के दो कान होते हैं एक में हिदायत करने वाला फ़रिश्ता बात कहता है और दूसरे में फ़ित्नापरदाज़ शैतान ये हुक्म देता है और वो मना करता है शैतान गुनाहों का हुक्म देता है और फ़रिश्ता उसको रोकता है और फ़रमाया है सुरः काफ़ में दाहिनी तरफ़ और बायीं तरफ़ एक शैतान बैठा हे जो कुछ वो कहता है एक सख़्त निगेहबान (ख़ुदा) उसके पास होता है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने दिन के दो कान होते हैं जब बन्दा गुनाह का इरादा करता है तो रूहे ईमान कहती है मत कर और शैतान कहता है और मामला जब ज़िना का होता है तो रूहे ईमान उससे अलग हो जाती है।

दो सौ अड़तीस वॉ बाब

वो रूह जिससे मोमिन की ताईद की जाती है

1. रावी कहता है मैं इमाम मूसा काज़िम अ. की ख़िदमत में आया। हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तआला मदद करता है अपनी एक रूह से जो मोमिन के पास उस वक़्त आती है जबकि वो नेकी करता है या हद से तजावुज़ करता है तो ग़ाएब हो जाती है एहसान करते वक़्त वो उसके पास ख़ुशी से झूमती है ओर गुनाह के वक़्त ज़मीन तह में चली जाती है पस अल्लाह के बन्दों अपने नफ़्स की इसलाह के लिए आमादा हो ताकि तुम्हारा यक़ीन ज़्यादा हो और नफ़ा हासिल करो उस जन्नत का जो नफ़ीस और क़ीमती है ख़ुदा रहम करे उस बन्दे पर जो नेकी का इरादा करे और उससे बाज़ रहे फिर फ़रमाया हम अहले बैत ताईद हासिल करते हैं रूह से अल्लाह की इताअत का क़सद करके और उसपर अमल करके।

दो सौ उन्तालीस वॉ बाब

जुनूब

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया गुनाह से ज़्यादा कोई चीज़ क़ल्बे इन्सानी को फ़ासिद नहीं करती और जब कोई दिल गुनाह करता है और बाज़ नहीं आता तो गुनाह उसपर ग़ालिब आ जाता है और उसे पलट कर रख देता है (फिर गुनाहे कबीरा करने लगता है)

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ (सुरः बक़र) (उन्होंने हक़ को छोड़ा) कितना सब्र दिखाया दोज़ख़

में जाने के लिए लोगों ने इसका मतलब पूछा तो फ़रमाया किस क़द्र सब्र किया इस फ़ेल पर जिसके मुतअल्लिक़ वो नहीं जानते कि ये उनको दोजख़ की तरफ़ ले जाएगा।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब कोई रगे बदन फड़कती है या सख़्ती पेश आती है या दर्दे सर होता है या बीमारी लाहिक़ होती है तो वो किसी गुनाह का कफ़्फ़ारा होता है ख़ुदा फ़रमाता है जो मुसीबत तुमपर नाज़िल होती है वो तुम्हारे ही करतूतों से आती है और अल्लाह तुम्हारे ज़्यादा गुनाह माफ़ कर देता है फिर हज़रत ने फ़रमाया जितने गुनाह ख़ुदा माफ़ करता है वो उससे कहीं ज़्यादा होते हैं जिनके मुतअल्लिक़ वो मुवाख़ेज़ा करता है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने बन्दे पर जो भी मुसीबत आती है उसके गुनाह के बाएस आती है और अल्लाह तआला बहुत से गुनाह माफ़ कर देता है।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया हँसी में अगले दाँत ज़ाहिर न करने चाहियें उस शख़्स को जो बुरे आमाल करता है और बुरे आमाल के मुवाख़ेज़े से कोई ख़ौफ़ नहीं रह सकता।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह से पनाह माँगो उसकी सख़्तगीरी से रात और दिन। रावी ने पूछा सख़्तगीरी से क्या मुराद है फ़रमाया अल्लाह की मआसी पर गिरफ़्त।

7. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने गुनाह यूँ तो सभी बुरे हैं लेकिन सबसे बुरा गुनाह वो है जिससे बदन का गोश्त आगे बढ़े और ख़ून बने इन्सान पर या तो ख़ुदा रहम करेगा या अज़ाब नाज़िल करेगा और जन्नत में तो पाको पाकीज़ा ही दाख़िल होगा (न कि लुक़्मए हराम से अपना पेट भरने वाला)

8. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया बन्दा जब गुनाह करता है तो उसका रिज़्क़ कम हो जाता है।

9. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने मलऊन है, मलऊन है वो शख़्स जो दीनारो दिर्हम की पूजा करे यानी ज़काते मफ़रूज़ा अदा करे और मलऊन है, मलऊन है वो शख़्स जो कोर बातिन हो यानी राहे हक़ छोड़ दे (बावजूद अलामात ज़ाहिर होने के) और मलऊन है वो जो चौपाए से जिमाअ करे।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने छोटे से छोटे गुनाह से भी परहेज़ करो क्योंकि उसका तालिब कहता है कि कि गुनाह करता हूँ और फिर ख़ुदा से तौबा कर लेता हूँ और ख़ुदा फ़रमाता है जो कुछ उन्होंने किया है और जो आसार उन्होंने छोड़े हैं और हर शै को हमने इमामे मुबीन में एहसा कर दिया है और ख़ुदा ने ये भी फ़रमाया है कि अगर किसी का अमल एक राई के दाने के बराबर भी होगा चाहे वो किसी पत्थर की चटान पर हो या आसमानों और ज़मीन में ख़ुदा ज़रूर उसे बर आमद कर लेगा बेशक ख़ुदा बड़ा मेहरबान और ख़बरदार है।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुनाह बन्दे को रिज़्क़ से महरूम कर देता है।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स गुनाह करता है तो रिज़्क़ उससे रोक लिया जाता है फिर ये आयत तिलावत फ़रमाई : जब उन्होंने क़सम खाई कि सुब्हा सवेरे ही वो अपने बाग़ में ख़ुरमे चुनेंगे (ताकि मुस्तहक़ मोहताजों को ख़बर न हो) और उन्होंने इस्तस्ना किया क्या तुम्हारे रब के एक गिरोह ने जब कि वो लोग सो रहे थे (उस बाग़ को जला कर ख़ाक कर दिया)

13. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब बन्दा गुनाह करता है तो उसके दिल में एक काला नुक़्ता पैदा होता है अगर उसने तौबा कर ली तो मिट जाता है अगर ज़्यादती हुई तो बढ़ जाता है ता ईं सारे दिल पर फैल जाता है उसके बाद वो कभी फ़लाह नहीं पाता।

14. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने एक बन्दा अल्लाह से हाजत का सवाल करता है तो ख़ुदा के लिए सज़ावार है कि जल्द या बदेर उसकी हाजत पर लाए लेकिन जब बन्दा गुनाह करता है तो ख़ुदा फ़रिश्ते से कहता है कि उसकी हाजत पूरी न करो और इसे महरूम रख इसने मुझे नाराज़ किया और महरूमी का मुस्तहक़ हुआ।

15. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कोई साल बलेहाज़ बारिश दूसरे साल से कम नहीं होती लेकिन ख़ुदा जहॉ चाहता है बरसाता है जब कोई क़ौम गुनाहों में मुब्तिला होती है तो ख़ुदा उससे उस बारिश को हटा लेता है जो उस साल उसके लिए मुक़र्रर होती है और उस बारिश को दूसरी तरफ़ भेज देता है बशर्ते वो अहले मआसी न हों वरना वो उसे जंगलों दरयाओं और पहाड़ों की तरफ़ मुन्तक़िल कर देता है और ख़ुदा जअल कीड़े को अज़ाब देता है बारिश रोक कर उस सरज़मीन पर जहॉ उसका सुराख़ होता है इस कुसूर पर कि वो अपना सुराख़ वहॉ से क्यों नहीं हटाता? जहॉ अहले मआसी रहते हैं ख़ुदा ने उसके लिए वो राह कुशादा कर दी है जो अहले मआसी की राह से जुदा है। हज़रत ने फ़रमाया ऐ बा बसीरत लोगों इस वाक़्ये से इबरत हासिल करो।

तौज़ीह : मतलब ये है कि ख़ुदा जब अहले मआसी के क़रीब कीड़ों तक का रहना पसन्द नहीं करता तो नेक इन्सानों का कहॉ तक पसन्द करेगा उनको चाहिए कि फ़ौरन उनकी हमसाएगी से अलाहिदा हो जाएं ताकि ख़ुशकसाली के अज़ाब में मुब्तिला न हो।

16. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो शख़्स गुनाह करता है तो वो तौफ़ीक़े इलाही सल्ब होने की बेना पर नमाज़े शब से महरूम हो जाता है और अमले बद इन्सान के दिल में उससे ज़्यादा तेज़ असर करता है जितना एक चाक़ू आसानी से

गोश्त के अन्दर दाख़िल हो जाता है।

17. फ़रमाया हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो शख़्स गुनाह करने का इरादा करे उसे चाहिए कि अमल में न लाए बसाऔक़ात बन्दा किसी अमले बद को ख़फ़ीफ़ समझ कर बजा लाता है ख़ुदा उसे देखकर फ़रमाता है अपने इज़्ज़तो जलाल की क़सम खाकर कहता तुझे इसके बाद हरगिज़ न बख़्शूंगा।

18. हज़रत मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया जिस घर में गुनाह हो तो ख़ुदा उसको पेश करता है सूरज पर कि वो पाक करे उसको बातिनी तहारत से यानी उसे वीरान कर दे और उसको गज़ीन्दा जानवारों से भर दे।

19. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया है कि एक बन्दा मिंजुमला दीगर गुनाहों के सिर्फ़ एक गुनाह की बदोलत दख़ूले जन्नत से सौ बरस तक रोक लिया जाएगा वो अपनी अज़वाज की तरफ़ जो नेअमते जन्नत से बहरायाब होंगी ब हसरत तकता रहेगा।

20. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने कि हम मोमिन के दिल में एक सफ़ैद नुक़्ता होता है जब वो गुनाह करता है तो उसमें एक सियाह नुक़्ता पैदा होता है अगर तौबा कर लेता है तो ये सयाही बर तरफ़ हो जाती है और अगर गुनाह पर बाक़ी रहती हे तो ये सियाही बढ़ती रहती है यहाँ तक कि इस नुक़्तए सफ़ैद को ढाँप लेती है और जब ये सूरत होती है तो वो शख़्स नेकी की तरफ़ रूजूअ ही नहीं करता जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है बल्कि जो कुछ उन्होंने किया उसकी वजह से उनके दिन चोक आलूदा हो गये हैं।

21. हज़रत इमाम रज़ा अ. से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया हँसने में अपने दाँत ज़ाहिर न करो जबकि तुम बुरे अमल कर चुके हो और आराम से मत रहो अगर तुम गुनाह कर चुके हो।

22. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि मेरे पदरे बुज़ुर्गवार फ़रमाते थे कि खुदा ने ये फैसला कर दिया है कि ख़ुदा अपने अब्द को जो नेअमत देता है वो सल्ब करने के लिए नहीं हॉ बन्दे से जब कोई गुनाह सरज़द होता है तो उसके अज़ाब का वो मुस्तहक़ होता है।

23. एक शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया (सूरः सबा) सबा वालों ने कहा हमारे रब हमारे क़रियों वालों के दरमियान दूरी डाल दे और उन्होंने एक दूसरे पर जुल्म किया। ख़ुदा ने फ़रमाया ये क़ौम है जिस के गॉव मिल जुले थे वो एक दूसरे को देखते थे और उनकी बस्तियों में नहरें जारी थीं ओर मालो मताअ (चौपाए वग़ैरह भी) ख़ूब था उन्होंने ख़ुदा की नेएमतों का इन्कार किया और ख़ुदा ने उनकी नेएमतों में तग़य्युर पैदा कर दिया और किसी क़ौम की हालत उस वक़्त नहीं बदलता जब तक वो ख़ुद अपनी हालत न बदले। ख़ुदा ने उनपर अज़ाब के लिए सेले अर्म को भेजा जिसने उनके गॉव मुत्फ़र्रिक़ कर दिए और उनके घरों को तबाहो बर्बाद कर दिया और उनके बाग़ों को कम कर दिया और उनके बाग़ों को थोड़ और झाऊ के दरख़्तों में बदल दिया है और कुछ बेरी के दरख़्त भी उगा दिए जब मालिके बाग़ सुबहा को आया और अपने बाग़ का ये हाल देख तो कहने लगा ये हमारे कुफ़्र की सज़ा है और सज़ा तो कुफ़राने नेअमत ही की हो सकती है।

24. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना ख़ुदा ने जिस किसी को नेअमत दी है उसे उस वक़्त तक सल्ब नहीं करता जब तक उसने कोई ऐसा गुनाह न किया हो जो उस सल्ब का मुस्तहक़ हो।

25. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह तआला ने अपने अम्बिया में से एक नबी को भेजा उस क़ौम की तरफ़ और वही की कि अपनी क़ौम से कह दो कोई बस्ती और कोई मजमा

आदमियों का ऐसा नहीं जिनको मेरी इताअत के बेना पर ख़ुशहाली नसीब हुई हो और उसके बाद वो उस चीज़ से जो मुझे महबूब है पलट कर उस चीज़ की तरफ़ आ गये हों जो मुझे पसन्द नहीं तो फिर मैंने भी उनकी वो हालत जो उन्हें पसन्द थी उस हालत से बदल दी जिसे वो पसन्द नहीं करते थे और कोई बस्ती और ख़ानदान ऐसा नहीं जिसे मेरी मअसीयत में नुक़्सान पहुँचा हो। लेकिन जब वो इस अमल से हट कर उस अमल की तरफ़ आगये जो मुझे महबूब है तो मैंने भी उनकी बुरी हालत अच्छी हालत से बदल दी और उस नबी से कहा तुम इनसे कह दो कि मेरा रहम मेरे गुस्से पर सबक़त करता है मेरी रहमत से मायूस न हो किसी गुनाह का बख़्श देना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं और मेरे गुस्से के सज़ावार बनकर मुझे अपना दुश्मन न बनाओ और मेरे औलिया की तौहीन न करो मेरा गुस्सा ऐसा है कि मेरी मख़लूक़ उसके मुक़ाबले की ताब नहीं ला सकती।

26. फ़रमाया हज़रत इमाम रज़ा अ. ने कि ख़ुदा ने अपने नबीयों में से किसी एक नबी को वही की कि जब मेरी इताअत की जाती है तो मैं राज़ी होता हूँ और जब राज़ी होता हूँ बरकत नाज़िल करता हूँ और मेरी बरकत नाज़िल करने की कोई इन्तिहा नहीं और जब मुझे गुस्सा आता है तो मैं अपने बन्दे पर लानत करता हूँ और मेरा लान करना उसको जहन्नम के सातवें तब्क़े में पहुँचाता है।

27. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स. ने तुमसे किसी को बादशाह का ख़ौफ़ ज़्यादा होता है ब सबब गुनाह के पस जहाँ तक मुमकिन हो अपने को गुनाहों से बचाओ और अगर सादिर हो तो उसको बार बार न करो।

28. जनाबे अमीर अ. ने फ़रमाया दिलों के लिए कोई दर्द गुनाह से ज़्यादा नहीं और ख़ौफ़ मौत से बढ़कर नहीं जो गुनाह हो चुका हे उसके मुतअल्लिक़ ही फ़िक्र काफ़ी है और मौत से

ज़्यादा नसीहत करने वाली कोई चीज़ नहीं।

29. फरमाया इमाम रज़ा अ. ने बन्दे ऐसा गुनाह करते हैं जैसे पहले नहीं किया (यानी बिदअत दर दीन) तो अल्लाह उनपर ऐसी बला नाज़िल करता है जिसे वो पहले से नहीं जानते (यानी किसी ज़ालिम को उनपर मुसल्लत करता है)

30. फ़रमाया जाफ़रे सादिक़ अ. ने हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है जो कोई मेरी मारफ़त रखते हुए भी गुनाह करता है तो मैं उसपर एक ऐसे शख़्स को मुसल्लत करता हूँ जो मेरी मारफ़त नहीं रखता।

31. फ़रमाया हज़रत इमाम रज़ा अ. ने अगर ख़ुदा फ़रमाता है (हदीसे कुदसी में) कि हर दिन और रात को एक मुनादी निदा करता है ऐ अल्लाह के बन्दों गुनाह से बाज़ रहो अगर न होते चरने वाले और दूध पीते बच्चे मख़्नी बुढ़े तो अल्बत्ता तुम पर ऐसा अज़ाब नाज़िल करता जो तुम्हें पीस कर रख देता।

दो सौ चालीस वॉ बाब

गुनाहाने कबीरा

1. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचोगे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो अल्लाह तुम्हारे पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देगा और तुमको जन्नत के बेहतरीन मक़ाम में जगह देगा इमाम ने फ़रमाया है गुनाहाने कबीरा से मुराद वो गुनाह हैं जिनके बजा लाने पर नारे जहन्नम को वाजिब किया है।

2. इमाम रज़ा अ. से कुछ लोगों ने लिख कर पूछा कि गुनाहा ने कबीरा कितने हैं और क्या क्या हैं आपने जवाब में लिखा कि जिन गुनाहों पर अल्लाह ने जहन्नम में डालने का वादा किया है और उनसे बचने पर पिछले गुनाहों को माफ़ करने का वादा किया है बशर्ते कि वो मोमिन हो और जहन्नम में जानेका सबब सात अम्र ख़ास तौर से हैं बेख़ता को क़त्ल करना, वालिदैन

की नाफ़रमानी करना, सूद खाना और हिजरत के बाद फिर बादिया नशीं बन जाना (कि बमंज़िलए इरतेदाद है) और ज़ने अफ़ीफ़ा पर तोहमत लगाना और माले यतीम खाना और लश्कर से भाग जाना।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुनाहाने कबीरा सात हैं अमदन किसी मोमिन को क़त्ल करना, ज़ने इफ़्फ़तदार पर तोहमते ज़िना लगाना, लश्कर से भागना, हिजरत के बाद अपने मक़ाम पर वापस जाना, जुल्म से माले यतीम खाना, हुर्मत साबित हो जाने के बाद सूद खाना और हर वो गुनाह जिसपर दरोग़ वाजिब हो।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने गुनाहाने कबीरा में वालिदैन की नाफ़रमानी, रहमते ख़ुदा से मायूसी, ख़ुदा के अज़ाब से बेख़ौफ़ होना और एक रिवायत में है शिर्क बिल्लाह सबसे बड़ा गुनाह है।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक अ. ने जिसने ज़िना किया वो ईमान से ख़ारिज हुआ और जिसने शराब पी वो ईमान से ख़ारिज हुआ और जिसने क़सदन किसी दिन माहे सयाम में रोज़ा न रखा वो भी ईमान से ख़ारिज हुआ।

6. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाहह अ. से पूछा ज़िना नहीं करता कोई ज़ानी दरॉ हालाकि वो मोमिन हो फ़रमाया नहीं अगर वो औरत के बतन पर सवार होगा तो ईमान सल्ब हो जाएगा अगर हट जाएगा तो ईमान लौट आएगा अगर फिर ऐसा करेगा तो सल्ब हो जाएगा मैं कहा अगर वो लौटने का इरादा करे तो फ़रमाया अकसर ऐसा होता है कि वो एआदा नहीं करता।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ "जो लोग बड़े गुनाहों, बदकारियों और बेहयाई की बातों से बचते हैं" इसमें फ़वाहिश से मुराद ज़िना और सरक़ा है और मुलिम से मुराद वो शख़्स जिसको गुनाह पर मलामत की जाए और फिर वो

तौबा करे मैंने कहा क्या गुमराही और कुफ़्र के दरमियान भी कोई दरजा है फ़रमाया ईमान की बहुत सी रस्सियाँ हैं जिनसे तमस्सुक करके वो मोमिन रहता है।

8. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से पूछा कबाएर के मुतअल्लिक़ किताबे अली अ. में वो सात हैं कुफ़्र बिल्लाह, किसी को क़त्ल करना, वालिदैन की ना फ़रमानी, बाद सुबूते हुर्मत सूद खाना, जुल्म से माले यतीम खाना, लश्कर से फ़रार, बादे हिजरत बादया नशीनी, मैंने कहा अकबर मआसी यहीं हैं फ़रमाया हाँ। मैंने पूछा बग़ैर हक़ माले यतीम से एक दिर्हम खाना ज़्यादा बड़ा गुनाह है या नमाज़ का तर्क, फ़रमाया तर्के नमाज़, मैंने कहा फिर आपने उसे गुनाहाने कबीरा में क्यों नहीं ज़िक्र फ़रमाया। फ़रमाया मैंने सबसे पहले किस गुनाह का ज़िक्र किया था मैंने कहा कुफ़्र का। पस बेसबब नमाज़ का तर्क करना कुफ़्र है।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया बन्दे के ऊपर चालीस फ़रिश्ते बतौर सिपर होते हैं जब तक कि वो चालीस गुनाहे कबीरा न करे। जब वो चालीस गुनाह करता है तो ये सिपरें उससे हट जाती हैं उस वक़्त ख़ुदा उन फ़रिश्तों को वही करता है कि मेरे बन्दे को अपने परों से छुपाए रहो पस मलाएका उसको ढॉप लेत हैं फिर फ़रमाया जब वो किसी बुराई को तर्क ही नहीं करता और अपने बुरे फ़ेल की मदह करने लगता है तो मलाएका कहते हैं ऐ परवरदिगार उस तेरे बन्दे ने कोई गुनाह नहीं छोड़ा और हमको इसकी बदआमाली से हया आती है ख़ुदा तब उनको वही करता है कि अपने बाज़ू उसपर से हटा लो, जब वो ऐसा करते हैं तो उस बन्दे में हम अहले बैत का बुग्ज़ पैदा हो जाता है और मलाएका कहते हैं परवरदिगार तेरा बन्दा इस हालत में है कि उसका कोई गुनाह पोशीदा न रहा। ख़ुदा वही करता है कि अगर इस बन्दे से मेरी कोई हाजत होती तो मैं तुम्हें हुक्म न देता

कि अपने बाजूओं को उससे हटा लो।

10. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुनाहाने कबीरा हैं ये, रहमते ख़ुदा से ना उम्मीद होना, राहते इलाहिया से मायूस होना, अज़ाब से बेख़ौफ़ होना, बेगुनाह को क़त्ल करना वालिदैन की नाफ़रमानी, जुल्म से माले यतीम खाना, सूद खाना उसकी हुर्मत ज़ाहिर होने के बाद भी, हिजरत के बाद फिर बादियानशीं बन जाना, ज़ने इफ़्फ़त मआब पर तोहमते ज़िना लगाना, लश्कर से भाग जाना, हज़रत से किसी ने सवाल किया कबाएर का इर्तिकाब करने वाला अगर इसी हालत में मर जाए तो क्या वो ईमान से ख़ारिज हो जाएगा और उसपर वही अज़ाब होगा और अगर उसका मोतरिफ़ होगा कि उसने गुनाहे कबीरा किया है और फ़ेले हराम का मुतर्किब हुआ है और वो उसके लिए हलाल न था तो उसका अज़ाब पहले वाले से कम होगा मगर वो ईमान से ख़ारिज हो जाएगा इस्लाम से ख़ारिज न होगा।

11. मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से सवाल किया रसूलुल्लाह स. के इस क़ौल के मुताबिक़, जब कोई ज़िना करता है तो रूहे ईमान उससे जुदा हो जाती है फ़रमाया क़ौले बारी के मुतअल्लिक़ है और उसने उनकी मदद की अपनी रूह से यही रूह उससे जुदा हो जाती है।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. जब तक मर्द औरत के शिकम पर रहेगा रूहे ईमान उससे दूर रहेगी हॉ जब वो बग़ैर ज़िना के अलग हो जाए तो रूहे ईमान ऊद कर आएगी। मैंने कहा अगर वो क़सदे ज़िना रखता हो तब भी रूहे ईमान जुदा हो जाएगी। फ़रमाया नहीं क्या तू नहीं जानता कि सरक़ा का इरादा रखने वाले का हाथ क़तअ नहीं किया जाता।

13. रावी कहता है मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. की ख़िदमत में हाज़िर था कि मोहम्मद बिन अबद ने सवाल किया ज़िना करने वाला क्या मोमिन रहता है फ़रमाया नहीं जब वो औरत के शिकम

पर रहेगा ईमान से दूर रहेगा हाँ अगर बाज़ रहेगा (तौबा के बाद) उसका ईमान लौट आएगा उसने पूछा अगर वो ज़िना की तरफ़ लौटने का इरादा करे। फ़रमाया अकसर ऐसा होता है कि लौटने का इरादा करता है मगर नहीं लौटता (मतलब ये है कि सिर्फ़ इरादे पर इमान सल्ब नहीं होगा)

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कबाएर सात हैं अमदन किसी बेगुनाह मोमिन का क़त्ल करना, शिर्क बिल्लाह, अफ़ीफ़ा पर तोहमते ज़िना लगाना, सूद खाना, लश्कर से फ़रार होना, हिजरत के बाद दारे कुफ़्र में वापस जाना, वालदैन की नाफ़रमानी, अज़रूए जुल्म माले यतीम ख़ाना और फ़रमाया तअर्रूब और शिर्क एक ही चीज़ है।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ये भी गुनाहाने कबीरा से है कि बाप बेटे से कुछ तलब करे और वो उसे न दे और अपने आपको बुरा कहे और ये भी कि जब वो बेटा बाप की ख़्वाहिश पूरी करे तो बाप उसे मारे और उसकी ताक़त से ज़्यादा माँगे।

16. असबग़ बिन नबाता से मरवी है कि एक शख़्स अमीरूल मोमिनीन अ. के पास आया और कहने लगा बाज़ लोगों का गुमान ये है कि एक बन्दा ज़िना नहीं करता और वो मोमिन है चोरी नहीं करता और वो मोमिन है शराब नहीं पीता और वो मोमिन है सूद नहीं खाता और वो मोमिन है नाहक़ किसी को क़त्ल नहीं करता और वो मोमिन है, मुझसे ये बयान किया गया और मेरे सीने पर तंगी वाक़ेअ हुई जब मैंने ये गुमान किया कि ये शख़्स मेरी तरह नमाज़ भी पढ़ता है और मेरी तरह दीने हक़ की दावत भी देता है और मेरे और उसके दरमियन मुनाकेहत और मीरास भी दुरूस्त है लेकिन यही शख़्स थोड़ा सा गुनाह करने पर ईमान से ख़ारिज हो जाता है। हज़रत ने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह स. से सुना है और इसपर दलील ये आयत है दहिनी तरफ़ वाले और बाईं तरफ़ वाले सबक़त करने वाले (रोज़

क़यामत होंगे) वो साबक़ीन जिनका ज़िक्र है अम्बिया मुर्सलीन और गै़र मुर्सलीन हैं अल्लाह ने उनमें पॉच रूहें पैदा की हैं रूहे कुद्स, रूहे ईमान, रूहे कुव्वत, रूहे शहवत और रूहे बदन, रूहे कुद्स के अम्बिया मुर्सलीन व गै़र मुर्सलीन मबऊस हुए और उसकी वजह से उनको इल्मे अशया हासिल हुई और रूहे ईमान से उन्होंने अल्लाह की इबादत की और किसी को उसका शरीक न क़रार दिया और रूहे कुव्वत से उन्होंने जेहाद किया अपने दुश्मनों से और अपनी मआश हासिल की और रूहे शेहवत से लज़्ज़ते तआम हासिल की और बतरीक़े हलाल औरतों से निकाह किया और रूहे बदन से चल फिरे पस इन्दलल्लाह मग़फ़ूर हैं और उनकी फ़रोगुज़ाश्तों से दरगुज़र की गयी है। खुदा फ़रमाया हमने उनमें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी और जिससे अल्लाह ने कलाम किया और बाज़ के दरजात बलन्द किए और ईसा इब्ने मरयम को मोजिज़ात दिए और रूहुलकुद्स से उनकी ताईद की और एक गिरोह के लिए कहा हमने उसकी ताईद अपनी रूह से की, खुदा फ़रमाता है कि उसने उनको मुकर्रम किया और दूसरों पर उनको फ़ज़ीलत दी ये वो गिराह है जो इन्दलल्लाह मग़फ़ूर हैं और उनकी फ़रोगुज़ाश्तों से दरगुज़र की जाती है इसके बाद खुदा ने दाहिनी तरफ़ वालों का ज़िक्र किया है बलेहाज़ अपनी ज़ातों के सच्चे मोमिन होंगे उनमें खुदा ने चार रूहें क़रार दी हैं रूहे ईमान, रूहे कुव्वत, रूहे शहवत और रूहे बदन, अबदे खुदा इन चारों की तकमील में रहता है जब तक हालात न बदलें इस शख़्स ने कहा हालात बदलने की क्या सूरत होती है फ़रमाया पहली सूरत के मुतअल्लिक़ खुदा फ़रमाता है बाज़ अपनी उम्र के पस्त तर हिस्से तक पहुँचते हैं ताकि वो जानने के बाद सब कुछ भूल जाएं इस उम्र तमाम रूहों को नुक़सान पहुँच जाता है लेकिन वाबजूद इस कमी के कि वो दीने खुदा से ख़ारिज नहीं होता क्योंकि ये कमज़ोरी खुदा की तरफ़ दी

हुई होती है जो ज़वाले उम्र की तरफ़ उसको ले जाती है ज़्यादा बूढ़ा होकर न तो नमाज़ का वक़्त जानता है और न रात दिन में सुन्नत नमाज़ों का, न जमाअत में लोगों के साथ खड़ा हो सकता है ये नुक़सान रूहे ईमान है लेकिन इससे उसको नुक़सान नहीं पहुँचता और बाज़ की उनमें रूहे कुव्वत कमज़ोर पड़ जाती है जिससे वो दुश्मन से जेहाद नहीं कर सकता और कस्बे मआश से क़ासिर रहता है बाज़ की रूहे शहवत कमज़ोर पड़ जाती है जिससे वो हसीन से हसीन औरत की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता न खड़े होने पर क़ुदरत है सिर्फ़ रूहे बदन उसमें काम करती है जिससे वो चलता फिरता है यहाँ कि मौत का फ़रिश्ता उस तक पहुँच जाता है ये हालात इन्सान के लिए बेहतर होते हैं क्योंकि कमज़ोरियाँ अल्लाह की तरफ़ से दी हुई होती हैं लेकिन ऐसे हालात भी पेश आते हैं कि इन्सान के बदन में कुव्वत भी होती है और आलमे शबाब भी लेकिन ऐसी हालत में भी वो गुनाह का इरादा करता है जब कर गुज़रता है तो उसके ईमान में नुक़सान पैदा हो जाता है और वो उससे ख़ारिज हो जाता है और जब तक तौबा नहीं करता, ईमान उसकी तरफ़ नहीं लौटता. जब वो तौबा करता है तो अल्लाह उसकी तौबा कुबूल करता है अगर वो औद करता है तो अल्लाह तआला उसे नारे जहन्नम में दाख़िल करता है रहे बायीं तरफ़ वाले लोग तो वो यहूद व नसारा हैं जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है वो लोग जिनको हमने किताबे ख़ुदा दी वो रसूल को उसी तरह पहचानते हैं जैसे अपनी औलाद को यानी मोहम्मद रसूलुल्लाह स. को और उनकी विलायत का ज़िक्र तौरेत व इंजील में है वो उसे पढ़कर हज़रत की मारफ़त उसी तरह हासिल किए हुए हैं जैसे अपने घरों में अपनी औलाद की फिर उनमें से एक गिरोह ने हक़ बात को छुपा लिया हालाँकि वो जानते थे कि रब की तरफ़ से आँहज़रत को रसूल बनाकर भेजा गया है "पस तुम इन्कार करने वाले न

बनो" जब उन्होंने मारफ़त के बाद भी इन्कार कर दिया तो ख़ुदा ने उनको अपने अज़ाब में मुब्तिला कर दिया और रूहे ईमान को उनसे सल्ब कर लिया और उनके अबदान में तीन रूहें रखीं रूहे कुव्वत, रूहे शहवत और रूहे बदन और उनकी निस्बत दी चौपायों से और फ़रमाया वो चौपायों की तरह हैं क्योंकि चौपाए रूहे कुव्वत से बोझ उठाते हैं और रूहे शहवत से चरते हैं और रूहे बदन से चलते फिरते हैं जब साएल ने अमीरूल मोमिनीन अ. से ये जवाब सुना तो कहने लगा ऐ अमीरूल मोमिनीन अ. आपने बइज़ने ख़ुदा मेरे मुर्दा क़ल्ब को ज़िन्दा कर दिया।

17. दाऊद ने कहा मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना क़ौले रसूल के मुतअल्लिक़ कि जब कोई मर्द ज़िना करता है तो उससे रूहे ईमान सल्ब हो जाती है हज़रत ने फ़रमाया ये क़ौल ऑहज़रत का इस आयत की मिस्ल है ख़ुरमे जमा करने के वक़्त ख़राब ख़ुरमे जो तुम्हें मुस्तहिक़ों को देने हैं अपने ख़ुरमों में शामिल करने का क़स्द न करो और इससे ज़्यादा वाज़ेह आयत ये है "ख़ुदा ने अपनी रूह से उनकी मदद की" पस यही रूह है जो उससे जुदा हो जाती है।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा शिर्क का गुनाह नहीं बख़्शता और उसके सिवा जो गुनाह होगा उसे चाहेगा बख़्श देगा रावी कहता है मैंने पूछा क्या इस इस्तसना में कबाएर दाख़िल हैं यानी कबाएर को बख़्श देगा फ़रमाया हॉ।

19. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से पूछा क्या गुनाहाने कबीरा में से कोई गुनाह भी ख़ुदा जिसे चाहेगा बख़्श देगा फ़रमाया हॉ

20. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ जिसे हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गयी इससे मुराद है इमाम की मारफ़त और गुनाहाने कबीरा से इज्तिनाब, जिसके करने पर अल्लाह ने दोज़ख़ को वाजिब किया है।

21. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम रज़ा अ. से सवाज

किया क्या गुनाहाने कबीरा इमान से ख़ारिज कर देते हैं फ़रमाया हॉ और कबाएर के अलावा रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ज़िना नहीं करता कोई ज़िना करने वाला दरॉहालाकि कि वो मोमिन हो चोरी नहीं करता चोर दरॉहालाकि कि वो मोमिन हो ।

22. क़ैस बिन नासिर और उमरू बिन ज़र और मेरा ख़याल है कि अबू हनीफ़ा भी इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के पास आए इब्ने क़ैस ने कहा हम नहीं ख़ारिज होते दीन देने वाली जमाअत से और अहले ईमान के गिरोह से दरसूरते गुनाह करने के।

इमाम अ. ने फ़रमाया ए इब्ने क़ैस! रसूलुल्लाह स. तो ये फ़रमाते हैं कि जो कोई मोमिन है वो न ज़िना करता है और न चोरी करता है पस तू और तेरे साथी जो राह चाहो अख़्तियार करो।

23. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से ऐसे शख़्स के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया जो किसी गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब हुआ हो और उसी हालत में मर गया हो आया वो इस्लाम से ख़ारिज होगा या नहीं और उसपर वही अज़ाब होगा जो मुशरिक के लिए है या कुछ मुद्दत के बाद मुन्क़तअ हो जाएगा फ़रमाया अगर वो मुर्तकिबे गुनाह इस ख़याल के साथ हुआ है कि वो फ़ेले हलाल कर रहा है तो इस्लाम से ख़ारिज हो जाएगा और उसके लिए सख़्त अज़ाब होगा और अगर उसका इक़रार कर लेगा कि उसने गुनाह किया है और इस हालत में मर जाएगा तो ईमान से ख़ारिज हो जाएगा मगर इस्लाम से ख़ारिज न होगा और उसपर अज़ाब पहले शख़्स से कम होगा।

24. हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी अ. ने फ़रमाया कि मैंने अपने पदरे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम रज़ा अ. से सुना कि मैंने अपने बाप मूसा काज़िम अ. से सुना कि उमर बिन अब्दुल मलिक एक रोज़ इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. के पास आया, सलाम किया

और बैठा और ये आयत पढ़ी अल्लज़ीना .... वल फ़वाहेशा और चुप हो गया उसने कहा मैं चाहता हूँ कि आप किताबे ख़ुदा से कबाएर बयान फ़रमाएं। फ़रमाया सुन ऐ उमरू! सबसे बड़ा गुनाह शिर्क बिल्लाह है ख़ुदा ने फ़रमाया है जिसने ख़ुदा का शरीक क़रार दिया जन्नत उसपर हराम है उसके बाद रहमते ख़ुदा से मायूसी है जैसा कि फ़रमाया है काफ़िरों के सिवा कोई रहमते ख़ुदा से मायूस नहीं होता मगर काफ़िर लोग। इसके बाद अज़ाबे ख़ुदा से मायूसी है फ़रमाता है अज़ाबे ख़ुदा से बेख़ौफ़ नहीं होता मगर ख़सारा पाने वाले लोग और इन कबाएर में वालिदैन की नाफ़रमानी है क्योंकि ख़ुदा ने नाफ़रमान को जब्बार व शक़ी फ़रमाया है और नाहक़ किसी को क़त्ल करना क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है उसकी जज़ा जहन्नम है जिसमें वो हमेशा रहेगा और ज़ने अफ़ीफ़ा पर तौहमते ज़िना लगाना ख़ुदा फ़रमाता है ऐसे लोगों पर दुनिया व आख़ेरत में लानत है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है और माले यतीन खाना ख़ुदा फ़रमाता है ऐसे लोग अपने पेटों में आग भरते हैं अन्क़रीब जहन्नुम की आग तापेंगे और जेहाद से फ़रार ख़ुदा फ़रमाता है जो कोई इस वक़्त पुश्त फेरेगा सिवाए कारे जंग के लिए जैसे ज़िरह वग़ैरह की दुरूस्ती या किसी गिरोह में शामिल होने के लिए तो वो ग़ज़बे ख़ुदा में आ गया उसका ठिकाना जहन्नम में है और बुरी जगह है और सूद खाना ख़ुदा फ़रमाता है जो लोग सूद खाते हैं वो इस तरह खड़े होंगे जैसे किसी शैतान ने छू कर लड़खड़ा दिया हो और जादू है ख़ुदा फ़रमाता है कि उन्होंने जान लिया कि उन्होंने ऐसा सौदा किया जिससे कि आख़ेरत में उनका कोई हिस्सा नहीं और ज़िना ख़ुदा फ़रमाता है इस गुनाह के करने वाले के लिए रोज़े क़यामत दो गुना अज़ाब है और वो इसमें हमेशा ज़िल्लत के साथ रहेगा और नुक़सान रसाँ झूठी क़सम खाना ख़ुदा फ़रमाता है वो अल्लाह से वायदा ख़िलाफ़ी करके और झूठी क़समें खाकर

थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करते हैं उनका आख़ेरत में कोई हिस्सा नहीं और ख़यानत सरक़ा माले ग़नीमत में क़ब्ले तक़्सीम ख़ुदा फ़रमाता है वही उसके साथ क़यामत में लाया जाएगा और मफ़रूज़ा ज़कात न देना ख़ुदा फ़रमाता है कि उनकी पेशानियाँ और पहलू और पुश्तें इस माल से दाग़ी जाएंगी और झूठी गवाही देना और सच्ची गवाही छुपाना।

ख़ुदा फ़रमाता है जो इसे छुपाएगा तो उसका दिल गुनाहगार क़रार पाएगा और शराब पीना ख़ुदा ने इससे इस तरह मना किया है जिस तरह बुत परस्ती से बाहर तक नमाज़ से क़सदन या हर उस शै के तर्क से जिसे अल्लाह ने फ़र्ज़ किया है और रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जिसने अमादन नमाज़ को तर्क किया अल्लाह और रसूल की ज़िम्मेदारी से अलग हो गया और वायदा का तोड़ना क़तए रहम करना। ख़ुदा फ़रमाता है ऐसे लोगों के लिए लानत है और बुरा ठिकाना है।

ये सुनकर उमरू बिन उबैदा वहाँ से चीख़ों के साथ रोता हुआ निकला और कहता जाता था हलाक हुआ वो जिसने अपनी राय से हुक्म लगाया और आपसे फ़ज़ल व इल्म में झगड़ा हो गया।

तौज़ीह : अल्लामा मिरअतुल उक़ूल में तहरीर फ़रमाते हैं कि कबाएर का लफ़्ज़ सिर्फ़ एक दूसरे की निस्बत के लिहाज़ से है वरना हर वो फ़ेल जिससे ख़ुदा और रसूल ने रोका है उसका बजा लाना गुनाहे कबीरा है बलेहाज़ सज़ा किसी गुनाह को सग़ीरा या कबीरा कह दिया जाता है वरना हक़ीक़त में सब कबीरा हैं ।

दो सौ इक्तालीस वॉ बाब
गुनाहों को हक़ीर समझना

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुनाहों को हक़ीर समझने से बचो क्यों कि वो बख़्शा न जाएगा। मैंने कहा हक़ीर

समझने से क्या मुराद है फ़रमाया एक शख़्स गुनाह करे और कहे बेहतर हुआ। मेरे लिए कि इसके अलावा दूसरा न हुआ।

2. फ़रमाया हज़रत मूसा काज़िम अ. ने अपनी नेकियों को ज़्यादा न समझो और अपने गुनाहों को कम न जानो थोड़े थोड़े गुनाह मिल कर बहुत हो जाते हैं और अल्लाह से डरो पोशीदा गुनाह करने में यानी लोगों के ख़ौफ़ से छुपकर गुनाह करते हो अल्लाह से नहीं डरते इस सूरत में इन्साफ़ खो बैठोगे।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह का गुज़र एक ऐसी सरज़मीन पर से हुआ जो दरख़्तों से ख़ाली थी आपने अपने असहाब से फ़रमाया लकड़ियाँ जमा करो। उन्होंने कहा हुज़ूर स. यहाँ दरख़्त नहीं हैं फ़रमाया जिसको जितनी लकड़िया मिलें ले आए वो लाए और एक जगह ढेर लगा दिया और फ़रमाया और फ़रमाया इसी तरह गुनाह रफ़्ता रफ़्ता जमा होते हैं फिर फ़रमाया छोटे छोटे गुनाह को भी हक़ीर न समझो क्योंकि हर गुनाह का बाज़पुर्स करने वाला है और वो लिखता है हर वो अमल जो जिसने किया है और हर वो निशान जो जिसने छोड़ा है और हमने हर शै का एहसा इमामे मुबीम में कर दिया है।

दो सौ बयालीस वाँ बाब

गुनाहों पर इसरार

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर छोटे छोटे गुनाह को इन्सान बार बार किए जाए तो छोटा नहीं रहता और ख़ुदा से तौबा करे तो बड़े से बड़ा गुनाह माफ़ हो जाता है।

2. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने इस क़ौले ख़ुदा के मुतअल्लिक़ उन्होंने जो किया था उसपर इसरार न किया दराँहालाकि वो जानते हैं फ़रमाया इसरारके मानी ये हैं कि इन्सान गुनाह करे और ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार न करे और तौबा का ज़िक्र भी ज़बान पर न लाए इसी का नाम इसरार है।

3. अबू बसीर से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह

अ. से सुना ख़ुदा अपनी इताअत में कोई शै उस शख़्स से कुबूल नहीं करता जो गुनाहों में किसी गुनाह पर तौबा न करे और उसकी तकरार करता रहे।

दो सौ तैंतालीस वॉ बाब

कुफ़्र के उसूल और अरकान

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने उसूले कुफ़्र तीन हैं हिर्स, तकब्बुर करना और हसद करना, हिर्स ही तो थी जिसने शजरे ममनूआ से आदम को खाने पर आमादा कर दिया। हालॉकि ख़ुदा ने उससे रोका था तकब्बुर ही तो था जिसने इब्लीस को सजदए आदम से रोका था और हसद ही तो था जिसने क़ाबील फ़रज़न्दे आदम को अपने भाई हाबील के क़त्ल पर आमादा किया।

तौज़ीह : उसूले कुफ़्र से मुराद ये है कि बाज़ औक़ात वो सबबे कुफ़्र बन जाता है कुफ़्र के बहुत से मानी हैं एक ये कि ख़ुदा की रूबूबियत से इन्कार किया जाए या उसकी सिफ़ात में दूसरों को शरीक किया जाए और बाज़ औक़ात नाफ़रमानीए ख़ुदा और रसूल स. को भी कुफ़्र कहा जाता है कभी उसका इतलाक़ कुफ़राने नेअमते इलाही पर भी होता है इसकी एक क़मतर सूरत तर्के औला है पस यही हिर्स बाज़ औक़ात औला की दायी बन जाती है और जब बढ़ जाती है तो इन्सान गुनाहाने सग़ीरा व कबीरा का मुतर्किब होने लगता है यहॉ तक कि वुजूदे ख़ुदा से इन्कार कर जाता है या किसी को उसका शरीक बना देता है पस आदम में हिर्स वो हल्की सी सूरत थी जो तर्के औला का बाएस हुई फिर उनकी औलाद में उसका ज़ोर बढ़ता गया यहॉ तक कि वो मुशरिक और मुलहिद हो गये इसलिए ये कहना सही है कि वो अस्ल कुफ़्र है।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अरकाने कुफ़्र चार हैं मताए दुनिया की तरफ़ रग़बत

और ज़वाले मताए दुनिया का ख़ौफ़ और इमामे बरहक़ से नाराज़ होना और अइम्मए ज़लालत की मोहब्बत में उनपर गुस्सा होना।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ख़ुदा की सबसे पहले नाफ़रमानी करने वाली छः चीज़े हैं दुनिया की मोहब्बत, रियासत की मोहब्बत, खाने की मोहब्बत, सोने की मोहब्बत, राहत की मोहब्बत, और औरत की मोहब्बत।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि बनी ख़शअम में से एक शख़्स रसूलुल्लाह स. के पास आया और कहने लगा कि ख़ुदा के नज़दीक कौन सा अमल सबसे ज़्यादा बुरा है फ़रमाया शिर्क बिल्लाह। उसने कहा उसके बाद फ़रमाया क़तए रहम उसने पूछा फिर फ़रमाया अम्रे मुन्कर का हुक्म देना और नेक से मना करना।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा कि एक शख़्स शिया तो है लेकिन जब कहता है झूठ और वायदा करता है तो पूरा नहीं करता और अमीन बनाया जाता है तो ख़यानत करता है उसका दरजा क्या है? फ़रमाया ये कुफ़्र की अदना मंज़िलत है ऐसा शख़्स काफ़िर नहीं है।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया शक़ावत की निशानियाँ हैं ऑख का ख़ुश्क होना यानी न रोना, दिल का सख़्त होना, तलबे दुनिया की इन्तिहाई हिर्स और गुनाह पर इसरार।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह ने ख़ुत्बे में फ़रमाया क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुममें बदतरीन इन्सान कौन है लोगों ने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह स. जो शख़्स अपनी अता को रोके, अपने गुलाम को मारे और तन्हा खाए, लोगों ने समझा कि ख़ुदा ने इससे बदतरीन इन्सान पैदा ही नहीं किया है फिर फ़रमाया क्या मैं इससे भी बदतर आदमी को बताऊँ लोगों ने कहा ज़रूर फ़रमाया वो फ़ोहोश गुफ़्तार और लअन करने

वाला कि जब मोमिन का उसके सामने ज़िक्र किया जाए तो उनपर लअन करे और जब उसका ज़िक्र लोगों के सामने हो तो उसपर लअन करें।

8. फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने तीन बातें जिसमें होंगी वो मुनाफ़िक़ है चाहे रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े और अपने को मुसलमान समझे। अव्वल जो अमानत में ख़यानत करे, दूसरे वायदा ख़िलाफ़ी करे, तीसरे जब बोले झूठ, अल्लाह ने अपनी किताब में फ़रमाया है अल्लाह ख़ाएन को दोस्त नहीं रखता और फ़रमाया है अगर उसका काज़ेबीन से है तो अल्लाह की लानत और फ़रमाता है ऐ रसूल स. किताब में ज़िक्र व इस्माईल काजो अपने वादे का सच्चा और रसूल नबी था।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया मैं तुम्हें बताऊँ कि मुझसे अज़रूए शबाहत सबसे ज़्यादा दूर कौन है लोगों ने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह स. फ़रमाया गलयारा, बेहया, बदज़बान, बख़ील, इतराकर चलने वाला, (या हीला बाज़ ये लफ़्ज़ मोहताल है) कीना तोज़, रश्क करने वाला, क़सी उलक़ल्ब, हर नेकी से दूर, हर वो शर जिससे बचना चाहिए उससे बेख़ौफ़ होकर नेकी की उम्मीद रखने वाला।

10. अली बिन सबात ने इस रिवायत को सलमान रज़ि. तक जो क़रीब ब इस्मत थे पहुँचा कर बयान किया है जब अल्लाह किसी बन्दे को हलाक करने का इरादा करता हे तो उससे हया को दूर कर देता है और हया नहीं रहती तो ख़ाएन बन जाता है और लोग उस पर भरोसा नहीं करते और जब ऐसा बन जाता है तो फिर अमीन नहीं रहता और सिफ़ते अमानत बाक़ी नहीं रहती तो वो तुर्श रौ और सख़्त दिल बन जाता है और जब ऐसा होता है तो तौक़े ईमान उसकी गर्दन से निकल जाता है और जब इस हालत को पहुँच जाता है तो वो शैताने मलऊन बन

जाता है।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया तीन बातों का ज़िक्र करने वाला मलऊन है अव्वल वो जो सायादार जगह में पैख़ाना करे जहाँ मुसाफ़िर आराम करते हैं दूसरे पानी के मुश्तरक घाट से लोगों को पानी पीने से रोके, तीसरे आम गुज़रगाहों पर लोगों को चलने से रोके।

12. यह हदीस भी वही है साबिक़ में गुज़री है।

13. जाबिर अन्सारी से मरवी है कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम्हारे मर्दो में बदतरीन कौन है? हमने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह स., फ़रमाया बदतरीन तुममें से वो है जो लोगों पर बोहतान ज़्यादा बाँधे, गुनाहों पर जरी हो, बेहया बदगो, अकेला खाने वाला हो, अपने बख़्शिश से लोगों को बाज़ रखे, अपने गुलाम को मारे और अपने अयाल का बार ग़ैर पर डाले।

14. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया पॉच शख़्सों पर मेरी भी लानत है और मुस्तजाबुद्दावात अम्बिया की भी, पहला किताबे ख़ुदा में बढ़ाने वाला, दूसरे मेरी सुन्नत तर्क करने वाला, तीसरे क़ज़ा व क़द्रे इलाही को झुठलाने वाला, चौथे मेरी इज़्ज़त के हक़ को अपने ऊपर हलाल करने वाला, पॉचवा माले ग़नीमत में बे ख़ुम्स निकाले तसर्रूफ़ करने वाला।

दो सौ चवालीस वॉ बाब

रिया

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से अबाद बिन कसीर से ऐ अबाद! वाए हो तुझपर अपने को रिया से बचा क्योंकि जो अमल अल्लाह की ख़ुशनूदी के अलावा किसी दूसरे के लिए किया जाता है उसका अज्र उसके सुपुर्द करता है जिसके लिए वो किया गया हो।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो अम्रे नेक करो वो अल्लाह के लिए करो, लोगों के ख़ुश करने या दिखाने के लिए नहीं, जो काम रज़ाए इलाही के लिए किया जाता है उसका तअल्लुक़ अल्लाह से होता है और जो बन्दों के लिए किया जाता है वो अल्लाह की तरफ़ नहीं जाता।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने हर रिया शिर्क है जो काम बन्दों के लिए किया जाता है उसका सवाब देना बन्दों से मुतअल्लिक़ होता है और जो अल्लाह के लिए किया जाता है उसका अज्र अल्लाह देता है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस क़ौले ख़ुदा के मुतअल्लिक़ जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता है उसको चाहिए कि अमले नेक करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न बनाए कि जो कोई सवाब के लिए काम करता है और तक़र्रुबे ख़ुदा को मल्हूज़ नहीं रखता। बल्कि वो लोगों की मर्ज़ी का तालिब होकर चाहता है कि लोग उसके अमल का चर्चा सुनें तो ये वो शख़्स है जो अपने रब की इबादत में दूसरे को शरीक बनाता है फिर फ़रमाया जो कोई पोशिदा नेकी करता है कुछ अरसा नहीं गुज़रेगा कि अल्लाह उस अमल का बदला देगा और जो बदी को छुपा कर करेगा कुछ अरसे बाद ख़ुदा उसके लिए बदला ज़ाहिर कर देगा।

5. हज़रत इमाम रज़ा अ. ने मोहम्मद बिन उरफ़ा से फ़रमाया जो अमल करो बे रिया व फ़रेब हो क्योंकि जो काम ग़ैरे ख़ुदा के लिए होगा अल्लाह उसको उसी के सुपुर्द कर देगा जिसके लिए वो किया गया है वाए हो तुझपर जो शख़्स कोई काम करता है अल्लाह उसका वैसा ही बदला देता है अगर अच्छा काम है तो अच्छा बदला और अगर बुरा है तो बुरा।

6. उमर बिन ज़ैद से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह के साथ खाना खाया हज़रत ने ये आयत तिलावत की, इन्सान

अपने नफ़्स से खुद वाक़िफ़ है अगरचे वो कैसे ही उज़्र करे। ऐ अबू हफ़्ज़ बखिलाफ़ उस चीज़ के जो इल्मे इलाही में है इन्सान अल्लाह का तक़र्रुब कैसे हासिल करेगा रसुलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो अपनी किसी हालत को छुपाता है अल्लाह उसे अपनी चादरे रहमत में ढॉप लेता है फिर वो लोगों पर ज़ाहिर होती है अगर अच्छी है तो अच्छी सूरत में बुरी है तो बुरी सूरत में।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब फ़रिश्ता किसी बन्दे का अमल लेकर जिससे वो खुश हो ऊपर जाता है पस जब वो उसकी नेकियां मक़ामे रद्द व क़ुबूल में जाता है तो खुदा फ़रमाता है उसे (सिज्जीन) दोज़ख़ के आख़री तबक़े में डाल दो क्योंकि इस अमल से इसने मरे गैर को खुश करने का इरादा किया था।

8. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने ख़ुदनुमाई के तीन मौक़े हैं अव्वल ये कि अपनेअमल पर ख़ुश हो जब लोग देखें और अपने अमल में सुस्त पड़ जाए जब तन्हा हो और ये कि पसन्द करे उस बात को जो तमाम उमूर में उसकी तारीफ़ हो।

9. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि अल्लाह तआला (हदीसे क़ुदसी में) फ़रमाता है इन्सान अपने अमल में मेरे सिवा जिसको शरीक करता है मैं उन तमाम शुरका से बेहतर हूँ मैं उसके अमल को क़ुबूल न करूँगा जब तक वो ख़ालिस न हो।

10. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो शख़्स लोगों पर उस अमल को ज़ाहिर करता है जिसे अल्लाह दोस्त रखता है और अल्लाह पर ख़िल्वत में ज़ाहिर करता है वो चीज़ जिसे अल्लाह दोस्त नहीं रखता तो रोज़े क़यामत वो अल्लाह के सामने इस तरह हाज़िर होगा कि अल्लाह उससे न खुश होगा।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने तुम में एक शख़्स नेकी को ज़ाहिर करता है और बदी को छुपाता है क्या वो अपने नफ़्स की तरफ़ रूजूअ करके ये पता नहीं चलाता कि ऐसा नहीं है जैसा वो समझ रहा है खुदा फ़रमाता है इन्सान अपने नफ़्स से ख़बरदार है जब नीयत सही होती है तो ज़ाहिरी हालत क़वी होती है।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. जो कोई अपने अमले क़लील से खुदा को राज़ी करना चाहता है खुदा उसको लोगों की नज़रों में ज़्यादा ज़ाहिर करता है और अपने अमल को लोगों के सामने ज़ाहिर करना चाहता है और अपने बदन की तकान और शब्बेदारी बयान करता है खुदा उसको लोगों की नज़र मे कम होने देता है।

13. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई अमले नेक करता है कुछ नहीं गुज़रते कि अल्लाह उस अमले ख़ैर को उसके लिए ज़ाहिर कर देता है और जो अमले बद करता है खुदा चन्द रोज़ बाद उसके अमले बद को ज़ाहिर कर देता है।

14. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अंक़रीब एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि लोगों की बुरी नीयतें पोशिदा होंगी और उनके ज़ाहिरी आमाल जो बतमाअ दुनिया होंगे लोगों पर ज़ाहिर होंगे जिनसे उनका मक़सद तक़र्रूबे ईज़दी न होगा बल्कि उनकी ये दीनदारी दिखावा होगी अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ उनके दिलों में न होगा उस वक़्त वो खुदा को इस तरह पुकारेंगे जैसे डूबने वाला पुकारता है लेकिन खुदा उनकी दुआ को कुबूल नहीं करेगा।

15. उमरू बिन यज़ीद ने बयान किया मैंने रात का खाना हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. के साथ खाया हज़रत ने ये आयत तिलावत की इन्सान अपने नफ़्स से ख़ूब वाक़िफ़ है चाहे कितने ही उज़्र करे फिर फ़रमाया ऐ अबू अफ़स जो कुछ उसके अमल

के मुतअल्लिक़ खुदा जानता है इन्सान उसके ख़िलाफ़ लोगों से बयान करता है रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जो अपनी नीयत को छुपाता है ख़ुदा उसपर परदा डालता है लेकिन अगर वो नेक है तो नेक ज़ाहिर होकर रहती है और अगर बद है तो बद।

16. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अमले ख़ैर पर बाक़ी रहना अमल से ज़्यादा मुश्किल है किसी ने कहा अमल पर बाक़ी रहने से क्या मुराद है फ़रमाया एक सिलए रहम करता है या राहे खुदा में सिर्फ़ खुशनूदीए ख़ुदा के लिए ख़र्च करता है उसके नाम नेकी लिखी जाती है फिर वो लोगों से इसका ज़िक्र करता हे पस दफ़्तरे इलाही से पोशिदा नेकी करने को ज़ाहिरी नेकी लिखा जाता है जब वो फिर लोगों से इसका ज़िक्र करता है तो इस ज़ाहिरी नेकी को भी महव करके रियाकारी लिख दिया जाता है।

17. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया अल्लाह से डरो बग़ैर सज़ा के ख़ौफ़ के और बेरिया और खुदनुमाई के अमल करो क्योंकि जो कोई ग़ैरे ख़ुदा के लिए अमल करता है तो ख़ुदा उसको उसके अमल के सुपुर्द कर देता है यानी उसका अमल बेजज़ा रहता है

18. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब उनसे पूछा गया उस शख़्स के बारे में जो कोई अमले ख़ैर करे और उसको कोई देखे तो ख़ुश हो, कि इसका कोई मज़ाएका नहीं कि ये इन्सान की फ़ितरत है कि जब वो नेकी करता है तो ये भी चाहता है कि लोगों पर उसका इज़हार हो लेकिन शर्त ये है कि ये ख़याल मद्दे नज़र रखकर वो नेकी न की गई हो क्योंकि इस सूरत में रिया होगी ख़ालिसन अल्लाह के लिए न रहेगी।



दो सौ पैंतालीस वॉ बाब

तलबे रियासत

1. हज़रत इमाम रज़ा अ. ने फ़रमाया मुसलमानों के दीन में हवसे रियासत इससे ज़्यादा ख़ौफ़नाक व मुज़िर है जितनी दो शिकारी भेड़ों की मौजूदगी उस बकरी के गल्ले के लिए जो अपने चरवाहे से अलग हो गया हो।

2. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया जिसने हवसे रियासतो हुकूमत की वो हलाक हो गया।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अपने आपको उन रईसों से बचाओ जो एक दूसरे पर सब्क़त ले जाना चाहते हैं वल्लाह जो उनके पीछे चला वो ख़ुद भी हलाक हुआ और दूसरों को भी उसने हलाक किया।

4. हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया मलऊन है वो जिसने हवसे रियासते बातेला की, मलऊन है वो जिसने इसका इरादा किया, मलऊन है वो जिसने अपने नफ़्स से इसकी बातचीत की।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने को रियासत से बचाओ और लोगों के पीछे चलने से बचाओ रावी कहता है मैंने कहा रियासते बातेला को तो मैंने समझ लिया लेकिन लोगों के पीछे न चलने से क्या मुराद है? क्योंकि कस्बे मआश के लिए मुलाज़मत करना ज़रूरी है फ़रमाया जो तुमने ख़याल किया है ऐसा नहीं। मतलब ये है हुज्जत के सिवा दूसरे को अपना रईस मुअय्यन न करो वरना उसकी हर बात की तस्दीक़ करना पड़ेगी इस तरह तुम्हारे लिए ख़तरों का समाना होगा और अगर नौकरी करो तो हाकिमे बातिल के क़ौल की तस्दीक़ से अपने को बचाओ।

6. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ऐ रबीअ वाए हो तुझपर रियासत को तलब न कर और ज़ालिम लोगों के पीछे

न चल और हमारे ज़रिए से लोगों का माल न खा और हमारे बारे में वो बातें बयान न कर जो हम अपने लिए खुद नहीं कहते (यानी हमारे औसाफ़ में गुलू न करो) रोज़े क़यामत तुझे ख़ुदा के सामने खड़ा होना है पस अगर तू सच्चा है तो हम तेरी तस्दीक़ करेंगे और अगर तू झूठा है तो हम तेरी तकज़ीब करेंगे।

7. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने जिसने रियासते बातिल का इरादा किया वो हलाक हुआ।

8. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने क्या तुम ये समझते हो कि मैं तुम्हारे नेको बद में तमीज़ नहीं करता ख़ुदा की क़सम में जानता हूँ तुम्हारे नेको बद वो हैं जो चाहते हैं कि लोग उनके पीछे चलें यानी ख़्वाहाने रियासत हैं ज़रूर है कि ऐसा शख़्स अपने पैरवों से झूठ बोलेगा या फिर आजिज़ुर्राए है (दूसरों के कहने पर चलेगा)

दो सौ छियालीस वॉ बाब
आमाले आख़ेरत के सहारे दुनिया की घात में रहना

1. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला ने फ़रमाया जो लोग दीन के हीले से दुनिया कमाना चाहते हैं उनके लिए हलाकत हो और उनके लिए भी जो ऐसे लोगों को क़त्ल करते हैं जो दूसरे को इन्साफ़ करने की हिदायत करते हैं और उन लोगों के लिए भी जिनमें रहकर मोमिन तक़य्या करे क्या लोग मुझे धोखा देते हैं मुझको अपनी जसारत दिखाते हैं मैंने क़सम खाई है कि उनको वो सख़्त अज़ाब दूंगा कि अहले अक़्ल हैरान हो जाएंगे।



दो सौ सैंतालीस वॉ बाब

उसके बारे में जो अदल की तारीफ़ करे और अमल ख़िलाफ़ हो

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा हसरत में वो शख़्स होगा जो इन्साफ़ की तारीफ़ करने के बावजूद उसके ख़िलाफ़ अमल करे।

2. फ़रमाया हज़रत रसूलुल्लाह स. ने रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा अज़ाब में वो होगा जो इन्साफ़ की तारीफ़ और अमल उसके ख़िलाफ़।

3. तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

4. फ़रमाया हज़रत सादिके आले मोहम्मद अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ इन बालित माबूदों और उनके पैरूओं को औंधे मुँह जहन्नम में डाल दो। फ़रमाया ऐ अबू बसीर! ये वो लोग हैं जो अदल की तारीफ़ करते हैं और जब दूसरा करता है तो उसकी मुख़ालेफ़त करते हैं।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने हमारे शियों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि कोई अल्लाह से अज्र न पाएगा बग़ैर अमल के और ये कि रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा हसरत उसे जिसने अदल की तारीफ़ की और जब दूसरे ने अमल किया तो उसकी मुख़ालेफ़त की।

दो सौ अड़तालीस वॉ बाब

लोगों से झगड़ा, ख़ूसूमत और लोगों से अदावत

1. अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया अपने को झगड़े और ख़ूसूमत से बचाओ ये दोनों भाईयों के हक़ में बीमारीए कुलूब और निफ़ाक़ पैदा करने वाले हैं।

5. हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने फ़रमाया तीन चीज़ों के साथ जो कोई अल्लाह से मिलेगा वो जन्नत के जिस दरवाज़े से

चाहेगा दाख़िल हो जाएगा अव्वल जिसका ख़ुल्क अच्छा हो, दूसरे जो लोगों की मौजूदगी और अदम मौजूदगी दोनों हालतों में ख़ुदा से डरे तीसरे अगरचे हक़ पर हो फिर भी लोगों से झगड़ा न करे।

3. ब सनदे साबिक़ रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो शख़्स झगड़ों में ख़ुदा की क़सम झूठी खाता है बहुत जल्द उसका भरम खुल जाता है और वो अपनी क़सम के ख़िलाफ़ इज़हार कर देता है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने न हलीम से झगड़ा करो न बेवक़ूफ़ से, हलीम तुमको नफ़रत की निगाह से देखेगा और अहमक़ तुमको सताने पर तैयार हो जाएगा।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब भी जिब्राईल मेरे पास आए मुझसे कहा ऐ मोहम्मद स. अपने को बचाओ लोगों के बुग्ज़ और दुश्मनी से।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. से जिब्राईल ने कहा अपने को लोगों की ख़ूसूमत से बचाओ।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने को शरअंगेज़ गुफ़्तगू से बचाओ कि वो बाएसे गुनाहगारी और पोशीदा उयूब को ज़ाहिर कराने का सबब बनता है।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अपने को ख़ूसूमत से बचाओ कि इससे क़ल्ब मुतफ़क्किर होता है निफ़ाक़ और कीना पैदा होता है।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिब्राईल जब मेरे पास आए मुझसे कहा ऐ मोहम्मद स. अपने को बचाओ लोगों की ख़ूसूमत और अदावत से।

10. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब जिब्राईल मेरे पास आए तो मुझे नसीहत की और आख़री बात ये होती थी कि अपने को लोगों की ख़ूसूमत से

बचाओ (शरअंगेज़ बात न कहिए) क्योंकि इससे पोशीदा ऐब ज़ाहिर होते हैं और इज़्ज़त जाती रहती है।

11. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिब्राईल ने सबसे बड़ा अहद मुझसे लोगों से इज़हारे अदावत के मुतअल्लिक़ लिया यानी मुनाफ़िक़ों से भी बलुत्फ़ो मुदार बर्ताव किया जाए।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने अदावत को बोया उसने अदावत को काटा।

दो सौ उन्चास वॉ बाब

ग़ज़ब

1. हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने फ़रमाया कि गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जैसे सिरका शहद को।

2. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के सामने गुस्से का ज़िक्र किया गया फ़रमाया जो शख़्स गुस्सा ज़्यादा करता है वो उसका आदी हो जाता है फिर बात बात पर गुस्सा करके वो अपने को मुस्तहक़े जहन्नम बना छोड़ता है जिस किसी को लोगों पर गुस्सा आए तो उसको चाहिए कि अगर खड़ा हो तो बैठ जाए। ऐसा करने से वसवसए शैतानी उससे दूर हो जाएगा और जिसको अपने क़राबतदार पर गुस्सा आए तो उसको चाहिए कि उससे हाथ मिलाए क्योंकि जब रिश्तेदार का जिस्म रिश्तेदार से मिलता है तो गुस्सा साकित हो जाता है।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुस्सा हर बुराई की कुंजी है।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने मैंने अपने बाप से सुना कि रसूलुल्लाह के पास एक बद्दू अरब आया और कहने लगा मैं एक मर्दे सहरानशीन हूँ मुझे ऐसी नसीहत कीजिए जो बहुत सी नसीहतों पर हावी हो, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि गुस्सा न करना। आराबी ने अपना ये सवाल तीन बार दोहराया हज़रत ने

वही जवाब दिया अब आराबी ने अपने दिल में ग़ौर किया और कहने लगा इसके बाद अब मैं रसूलुल्लाह स. से कोई सवाल न करूंगा क्योंकि हज़रत ने मुझे अम्रे नेक का हुक्म दिया है। और इमाम अ. ने फ़रमाया मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया गुस्से से ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ नहीं जो गुस्सेवर होता है वो ऐसे शख़्स को क़त्ल कर देता है जिसका क़त्ल करना हराम हो और ज़ने अफ़ीफ़ा पर तोहमत लगाता है।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईए ताकि मैं उसपर कारबन्द हूँ फ़रमाया जा और गुस्सा न कर, रावी ने फिर वही सवाल किया हज़रत ने तीन बार फिर यही जवाब फ़रमाया जा और गुस्सा न कर।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई अपने गुस्से को रोकेगा तो अल्लाह उसकी शर्मगाह की परदापोशी करेगा।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि तौरेत में है कि ख़ुदा ने वक़्ते मुनाजात मूसा से कहा एक मूसा अपने गुस्से को रोको उस शख़्स से जिसपर अल्लाह ने तुमको क़ुदरत दी है ताकि मैं तुमसे अपना गुस्सा रोकूँ।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने ख़ुदा ने किसी नबी पर वही की ऐ इब्ने आदम अपने गुस्से के वक़्त मुझे याद कर मैं अपने गुस्से के वक्त तुझे याद रखूंगा और तेरी याद महो न करूंगा और मेरे इन्तिक़ाम पर राज़ी हो क्योंकि मेरा इन्तिक़ाम तेरे इन्तिक़ाम से बेहतर होगा।

9. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने भी ऐसा ही फ़रमाया है इतना और ज़्यादा है जब तेरे ऊपर कोई ज़ुलम हो तो मेरे इन्तिक़ाम पर राज़ी हो जा क्योंकि मेरा इन्तिक़ाम तेरे इन्तिक़ाम से बेहतर होगा।

10. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना

कि तौरेत में लिखा है ऐ इब्ने आदम गुस्से के वक़्त तू मुझे याद रख मैं अपने गुस्से के वक़्त तुझे याद रखूंगा और जब गुस्से वालों को नज़र अन्दाज़ करूंगा तो तेरे साथ ऐसा न करूंगा जब तुझ पर जुल्म न किया जाए तो मेरे इन्तिक़ाम पर राज़ी हो जा क्योंकि मेरा इन्तिक़ाम बनिस्बत तेरे इन्तिक़ाम से ज़्यादा बेहतर होगा।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स रसूलुल्लाह स. से कहने लगा मुझे कुछ तालीम दीजिए फ़रमाया जाओ गुस्सा न करो उसने कहा मेरे लिए आपका हुक्म काफ़ी है उसके बाद वो अपने घर चला गया। वहाँ मालूम हुआ कि उसकी क़ौम आमादए जंग है सफ़बन्दी हो चुकी है और लोगों ने हथियार बदन पर सज लिए हैं ये हाल देखकर उसने भी अपने बदन पर हथियार सजे और उनके साथ लड़ाई पर आमादा हुआ तब उसको रसूलुल्लाह स. का क़ौल याद आया गुस्सा न करना। फ़ौरन अपने बदन के हथियार खोल डाले और उन लोगों के पास आया जिनसे दुश्मनी थी और उनसे कहा लोगों अगर तुममें से किसी को ज़ख़्म लगा है या कोई क़त्ल हुआ है या चोट खाई है जिसका अब असर न हो तो मैं अपने माल से दियत देने को तैयार हूँ मेरी क़ौम से इसका तअल्लुक़ न होगा। मैं ख़ुद ये वायदा वफ़ा करूंगा उन्होंने कहा जो तुम कह रहे हो तुम्हारे ही पास रहे हम तुमसे ज़्यादा ये जवाँमर्दी दिखाने के अहल हैं पस उसके बाद उनमें सुलह हो गई और गुस्सा दूर हो गया।

12. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि ये गुस्सा व ग़ज़ब एक शैतानी शरारा है जो आदमी के क़ल्ब में आग बढ़का देता है जब तुममें से कोई गुस्सा होता है तो उसकी आँखें सुर्ख़ हो जाती है और गर्दन की रगें फूल जाती हैं और शैतानी वसवसे इन्सान के अन्दर दाख़िल हो जाते हैं पस जो तुममें इन शैतानी वसवसों से डरता है उसको चाहिए कि ज़मीनगीर हो जाए यानी अगर खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा है तो लेट जाए इस सूरत

में वसवासे शैतानी उससे दूर हो जाएंगे।

13. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने गुस्सा एक अक़्लमन्द के क़ल्ब से बहुत सी सलाहियतों को मिटा देता है जो अपने गुस्से पर क़ाबू नहीं रखता वो अपनी अक़्ल पर क़ाबू नहीं रखता।

14. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो शख़्स लोगों के नामूस की हिफ़ाज़त न करने से अपने नफ़्स को नहीं रोकता ख़ुदा रोज़े क़यामत उसके उयूब शुमार करेगा और जो लोगों से अपने गुस्से को रोके रहता है ख़ुदा रोज़े क़यामत उसपर अज़ाब नहीं करेगा।

15. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो अपने गुस्से व गज़ब को लोगों से रोकता है रोज़े क़यामत अल्लाह तआला उसपर अज़ाब नहीं करता।

दो सौ पचास वॉं बाब

हसद

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो गुनाह की जल्दी में (बेफ़िक्राना तौर पर) हो जाता है अल्लाह उसको बख़्श देता है और हसद ईमान को इस तरह खा कर ख़ाक कर देता है जैसे आग सूखी लकड़ी को जला कर राख बना देती है।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने हसद ईमान को इस तरह खाता है जैसे आग लकड़ी को।

3. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि अल्लाह से डरो और एक दूसरे पर हसद न करो। ईसा अ. की शरीअत में शहरों की सैर करता था एक बार वो सैर के लिए चले तो उनके असहाब में से एक कोताहक़द उनके साथ चला ये अक्सर हज़रत ईसा अ. के साथ रहा करता था जब हज़रत ईसा अ. दरिया के किनारे पहुँचे तो ख़ुदा की ज़ात पर पूरा यक़ीन रखते हुए बिस्मिल्लाह पढ़ी और पानी पर चलने लगे। मर्दे कोताह क़द ने जब ये देखा तो उसने भी पूरे यक़ीन के साथ

बिस्मिल्लाह पढ़ी और पानी पर चलकर हज़रत ईसा अ. से जा मिला। अब उसके दिल में गुरूर ने जगह पाई कहने लगा जिस तरह हज़रत ईसा रूहुल्लाह पानी पर चलते हैं मैं भी चलता हूँ लेहाज़ा उनको मुझपर क्या फ़ज़ीलत, ये ख़याल आते ही वो पानी में बैठने लगा पस हज़रत रूहुल्लाह अ. ने फ़रयाद की आप अ. ने उसको पानी से निकाला और फ़रमाया तूने क्या कहा? उसने कहा मैंने दिल में कहा जिस तरह ईसा पानी पर चलते हैं मैं भी चलता हूँ इस तरह गुरूर मेरे अन्दर दाख़िल हुआ हज़रत ईसा अ. ने फ़रमाया तूने अपने दिल में वो सोचा जिसका तू अहल नहीं। इसलिए ख़ुदा तुझसे नाख़ुश हुआ अब तू अल्लाह से तौबा कर, चुनांचे उसने तौबा की ख़ुदा ने उसकी तौबा कुबूल करके फिर वही मर्तबा दे दिया। इमाम अ. ने फ़रमाया अल्लाह से डरो और एक दूसरे से हसद न करो।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया क़रीब है कि फ़कीरी कुफ्र हो जाए (जो एहतियाज ख़ुदा और बन्दों दोनों की तरफ़ हो) और क़रीब है कि हसद क़ज़ा व क़द्र को क़वी करे यानी महसूद की नेअमत ज़्यादा हो।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने दीन के लिए आफ़त हसद है गुरूर है फ़ख्र है।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने हज़रत मूसा अ. से कहा ऐ फ़रज़न्दे इमरान मैंने अपने फ़ज़ल से जो कुछ लोगों को दिया है उसपर हसद न करो उसकी तरफ़ अपनी निगाहें न उठाओ और नफ़्स को तकलीफ़ में न डालो क्योंकि हसद मेरी नेअमत पर गुस्सा करने वाला है और रोकने वाला है उसकी तक़सीम को जो मैंने अपने बन्दों में की है ऐसा शख़्स न मुझ से है न मैं उससे।

7. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मोमिन गिबता करता है हसद नही करता और मुनाफ़िक़ हसद करता है

ग़िबता नहीं करता (ग़िबता ये है कि दूसरे की नेअमत देख कर खुदा से दुआ करे कि जिस तरह इसे दी है मुझे भी दे और हसद ये है कि दूसरे की नेएमत का ज़वाल चाहे।)

दो सौ इक्कावन वॉ बाब

असबियत

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने तअस्सुब (बेजा तरफ़दारी) या इसकी वजह से तअस्सुब किया गया तो ईमान की रस्सी उसकी गर्दन से निकल गयी।

2. तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया है कि जिस शख़्स के दिल में एक राई के दाने के बराबर भी तअस्सुब होगा ख़ुदा उसे जाहिल अरबों के साथ महशूर करेगा।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो किसी की बेंजा तरफ़दारी करके उसे बढ़ाना चाहता है तो अल्लाह इस तरफ़दारी की सज़ा में जहन्नम रसीद करता है।

5. फ़रमाया अली इब्नुल हुसैन अ. ने कि तअस्सुब ने किसी को दाख़िले जन्नत नहीं किया मगर उस तरफ़दारी ने जिसका ज़हूर हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब से हिमायते नबी में हुआ जबकि हमज़ा ने इस्लाम कुबूल किया और ये तरफ़दारी उस वक़्त अमल में आई जब मस्जिदुल हराम में ऑहज़रत पर काफ़िरों ने वक़्ते नमाज़ आप पर औझड़ी फेंकी थी।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ. ने कि मलाएका गुमान करते थे कि इब्लीस उनमें से है और इल्मे इलाही में था कि उनमें से नहीं है पस जो नाफ़रमानीए रब और अपने नफ़्स की बेजा तरफ़रदारी का जज़बा उसके अन्दर था वो उसने ज़ाहिर कर दिया ये कह कर कि तूने मुझे आग से पैदा किया है और अदम को मिट्टी से।

7. ज़हरी से मरवी है कि हज़रत अली बिनिल हुसैन अ. से अस्बीयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया आपने फ़रमाया अस्बीयत ये है कि उससे साहिबे अस्बियत गुनाहगार क़रार पाए बईं तौर कि अपनी क़ौम के शरीर तरीन आदमी को दूसरी क़ौम के नेक लोगों में शुमार करे अपनी क़ौम के किसी शख़्स को दोस्त रखना अस्बियत नहीं बल्कि अज़राहे तअस्सुब अपने क़ौम के किसी ज़ालिम की मदद करना तअस्सुब है।

दो सौ बावन वॉ बाब

किब्र

1. हकीम से मरवी है कि मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा कम से कम इलहाद के मुतअल्लिक़ फ़रमाया इसका पस्त दर्जा तकब्बुर है।

2. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि तकब्बुर बद आदमियों में हर तरह का होता है और तकब्बुर रिदाए इलाही है इस बारे में जो खुदा से नेज़ाअ करेगा खुदा उसको पस्ती में डाल देगा रसूलुल्लाह स. मदीने के एक रास्ते से गुज़र रहे थे एक हब्शी औरत रास्ते में गोबर उठा रही थी उससे कहा कि रसूलुल्लाह के रास्ते से हट जा उसने कहा रास्ता कुशादा है एक शख़्स ने चाहा उसे रास्ते से हटा दे। हज़रत ने फ़रमाया इसे छोड़ दो ये किब्र पसन्द है (यानी अगर जबरन हटाओगे तो ये नासज़ा अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करेगी।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने इज़्ज़त अल्लाह की रिदा है और किब्र उसकी इज़ार पस जो कोई इसके लिए उनमें से किसी चीज़ का दावा करेगा खुदा उसको औंधे मुँह जहन्नुम में दाखिल करेगा।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने किब्र अल्लाह की रिदा है और मुत्कब्बिर और खुद आपने इस बारे में खुदा से

नेज़ाअ करता है।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने किब्र अल्लाह की रिदा है पस जिसने इसमें अल्लाह से नेज़ाअ किया खुदा उसको जहन्नम में डाल देगा।

6. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने जन्नत में नहीं दाख़िल होगा वो शख़्स जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा।

7. इमाम मोहम्मद बाक़र अ. या इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. में से किसी ने कहा जन्नत में वो शख़्स दाख़िल न होगा जिसके दिल में एक राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा रावी कहता है मैंने ये सुनकर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन कहा फ़रमाया ये क्यों कहा मैंने कहा आप से सुन कर फ़रमाया ऐसा नहीं है जैसा तेरा ख़याल है हमारी मुराद है इन्कारे इमामत से कि वो गोया इन्कारे रूबूबियत हैं।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने सबसे बदतर तकब्बुर ये है कि लोगों को हक़ीर समझे और हक़ बात को बेवकूफ़ी से निस्बत दे।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया सबसे बड़ा तकब्बुर है ग़मसुल सिकतुल और सफ़ल हक़ मैंने कहा इससे क्या मुराद है फ़रमाया हक़ बात कहे, न पहचानना, अहले हक़ पर लअन करना, जिसने ऐसा किया उसने ख़ुदा से झगड़ा किया उसकी रिदा के बारे में।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जहन्नम में एक वादी है मुतकब्बिर लोगों के लिए जिसका नाम सक़र है अल्लाह से उसने अपनी हरारत को बयान करके सॉस लेने की इजाज़त चाही, इजाज़त मिलने पर उसने सॉस ली तो जहन्नम में आग भड़क उठी।

11. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया मुत्कब्बिर लोग रोज़े क़यामत चूँटियों की सूरत बना दिए जाएंगे लोग हिसाब से

फ़ारिग़ होने तक उनको पैरों से कुचलेंगे।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि रावी ने पूछा किब्र क्या है फ़रमाया आज़मे किब्र ये है कि हक़ को सक़ाहत बताया जाए और लोगों को अहमक़ समझा जाए रावी ने पूछा सिक़ले हक़ क्या है फ़रमाया हक़ से जिहालत अख़्तियार करना और उसके अहल पर तान करना।

13. उमर बिन यज़ीद से रिवायत है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से कहा मैं अच्छा खाना खाता हूँ अच्छी ख़ुश्बू सूंघता हूँ अच्छे घोड़े पर सवार होता हूँ गुलाम मेरे पीछे चलता है क्या इसमें कोई बात तकब्बुर की है कि मैं उसे तर्क कर दूँ हज़रत ने सर झुका लिया फिर फ़रमाया जब्बार मलऊन वो है जो लागों को बेवकुफ़ समझे और हक़ से इन्कार करे। रावी ने कहा मैं हक़ से इन्कार नहीं करता लेकिन मैं नहीं जानता कि ग़मस क्या है फ़रमाया जो लोगों को हक़ीर जाने और उनके साथ तकब्बुर का बर्ताव करे ये है जब्बार।

14. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया तीन शख़्स ऐसे हैं जिनसे रोज़े क़यामत न तो अल्लाह कलाम करेगा और न उनकी तरफ़ देखेगा और न उनको सालेहीन में शुमार करेगा औंर उनके लिए सख़्त अज़ाब होगा अव्वल बूढ़ा ज़िना कार दूसरे ज़ालिम बादशाह तीसरे फ़क़ीर मुत्कब्बिर।

15. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि युसुफ़ अ. के पास जब याकूब अ. आए तो इज़्ज़ते मुलूकियत का लेहाज़ करते हुए वो तख़्त से न उतरे जिब्राईल नाज़िल हुए और कहा ऐ युसुफ़ अ. अपनी हथेली खोलो खोली तो एक नूर उससे निकला जिससे उफ़ुक़े आसमान रौशन हो गया। युसुफ़ अ. ने पूछा ऐ जिब्राईल ये नूर मेरी हथेली से कैसा ख़ारिज हुआ फ़रमाया नबूवत तुम्हारी नस्ल से निकल गयी क्योंकि तुम याकूब अ. की

ताज़ीम के लिए तख़्त से नहीं उतरे अब तुम्हारी नस्ल में कोई नबी नहीं होगा।

तौज़ीह : अल्लामा मजलिसी अ.र. मिरअतुल ऊकूल शरहे काफ़ी में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत युसुफ़ अ. का तख़्त से न उतरना अज़राहे तकब्बुर या अपने बाप को हक़ीर समझने की ग़रज़ से न था क्योंकि अम्बिया अ. की ज़वाते मुक़द्दसा ऐसी बातों से दूर हैं बल्कि मिस्र के शाहाना क़वायद की रू से चूंकि बादशाह का तख़्त से उतरना अवामुन्नास की नज़र में बाएसे ज़िल्लतो तौहीन था लेहाज़ा युसुफ़ अ. ने मुल्की क़वायद को मल्हूज़ रखते हुए ऐसा किया था जिससे मक़सूद उसूले सियासत को बरक़रार रखना था चूकि बाप की तअज़ीम एक नबी के लिए इससे ज़्यादा थी और मुल्की मसलेहत इससे कम दर्जे पर थी लेहाज़ा ये फ़ेल तर्के औला में था और चूंकि अम्बिया से तर्के औला पर भी मुवाख़ेज़ा हो जाता है लेहाज़ा कुदरत ने नबूवत का सिलसिला उनकी औलाद में ख़त्म कर दिया। लेकिन इसको तकब्बुर नहीं कहा जा सकता तकब्बुर से मुशाबे हो सकता है। अपने मसालेह को ख़ुदा ही बेहतर जानता है जिस तरह आदम अ. से तर्के औला हुआ तो उनको जन्नत से निकाल कर ज़मीन पर भेज दिया गया हालॉकि उनको पैदा ही ख़लिफ़तुल अर्ज़ होने के लिए किया गया था।

16. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया हर बन्दे के सर में एक लजाम होती है जिसको फ़रिश्ता पकड़े रहता है जब वो तकब्बुर करता है तो फ़रिश्ता कहता है क्या तूने अल्लाह की वज़अ अख़्तियार की है जो कोई अपने को बड़ा समझता है वो लोगों की नज़रों में छोटा क़रार पाता है और जो मुत्वाज़ेह होता है अल्लाह उसका मर्तबा बलन्द करता है फिर कहता है बलन्द हो अल्लाह तुझे बलन्द करे जो कोई अपने को छोटा समझता है अल्लाह लोगों की निगाहों में उसे बुलन्द करता है।

17. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने कोई आदमी तकब्बुर नहीं करता मगर उस ज़िल्लत की वजह से जिसे वो अपने नफ़्स में पाता है और एक दूसरी हदीस में है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया कोई तकब्बुर व जब्र करने वाला ऐसा करता है तो उसके लिए वो अपने नफ़्स में ज़िल्लत महसूस करता है।

दो सौ तिरपन वॉ बाब

उजुब

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अल्लाह जानता है कि मोमिन का गुनाह उसकी खुद पसन्दी से बेहतर है अगर ऐसा न हो तो मोमिन गुनाह में कभी मुब्तिला हो।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने जिसके अन्दर ख़ुद पसन्दी दाख़िल हुई वो हलाक हुआ।

3. हज़रत मूसा काज़िम अ. से रावी ने उजुब के मुतअल्लिक़ पूछा जिससे अमल फ़ासिद हो जाता है फ़रमाया उजुब के दर्जात हैं एक उनमें से ये है कि बन्दा अपने बुरे अमल को अच्छा समझे और मग़रूर हो कि ये गुमान करे कि वो अच्छा काम कर रहा है दूसरे ये कि इबादत में अपने रब पर एहसान रखे हालॉकि ख़ुदा का एहसान उसपर है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने एक शख़्स गुनाह करता है फिर उसपर नादिम होता है और अमल करता है और उसपर ख़ुश होता है और ख़ुद पसन्दी उससे ज़ाहिर होती है पस अगर वो अपने से पहले ही निदामत वाले हाल पर बाक़ी रहता तो उससे मौजूदा हाल से बेहतर होता।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि एक आलिम एक आबिद के पास आया और उससे पूछा अपकी नमाज़ का क्या हाल है उसने कहा मुझ जैसे की नमाज़ का क्या पूछना मैं अल्लाह की इबादत इस तरह करता हूँ पूछा बुका का क्या हाल

है उसने कहा कि ऑसूओं से रोता हूँ आलिम ने कहा तुम्हारा हँसना ऐसी हालत में कि तुम ख़ुदा से डरते अफ़ज़ल होता तुम्हारी बुका से दरॉहालाकि तुम मसरूर और ख़ुद पसन्द हो। ये तुम्हारी ख़ुद पसन्दी तुम्हारे किसी अमल को ऊपर न जाने देगी।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. या इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने दो मस्जिद में दाख़िल हुए एक उनमें आबिद था और दूसरा फ़ासिक़, वो इबादत करके मस्जिद से निकले फ़ासिक़ अपने ईमान में सच्चा था और आबिद फ़ासिक़ था इस तरह कि जब आबिद मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वो अपनी इबादत पर मग़रूर था और उसकी सोच विचार इस बारे में थी और फ़ासिक़ अपने फ़िस्क़ पर नादिम था और उसने अपने गुनाहों के मुतअल्लिक ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार किया।

7. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कहा एक शख़्स एक काम करता है दरॉहालाकि वो ख़ौफ़ ज़दा है फिर एक नेक काम करता है जिससे उसमें ख़ुद पसन्दी पैदा हो जाती है हज़रत ने फ़रमाया इसकी पहली ख़ौफ़ की हालत उस ख़ुद पसन्दी से बेहतर है।

8. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि मूसा अ. एक रोज़ बैठे थे कि इबलीस एक ऊँची रंग बिरंग की टोपी पहने हुए आया और जनाबे मूसा के क़रीब आकर टोपी उतार ली और उनको सलाम किया उन्होंने पूछा तू कौन है उसने कहा इबलीस फ़रमाया तू है इबलीस ख़ुदा तुझसे दूर रखे। उसने कहा मैं तो आपको सलाम करने आया था बसबब आपकी कुरबत के जो ख़ुदा से आपको हासिल है। जनाबे मूसा अ. ने कहा ये टोपी कैसी है उसने कहा मैं इससे बनी आदम के कुलूब उचक लेता हूँ। जनाबे मूसा अ. ने कहा वो गुनाह बता जिसे आदमी करता है और तू उसपर पर ग़ालिब आ जाता है उसने कहा जब उसका नफ़्स ख़ुद पसनद हो जाता

है और ज़्यादा अमल करके गुनाह को हक़ीर समझने लगता है। दाऊद अ. से ख़ुदा ने कहा ऐ दाऊद! गुनाहगारों को बशारत दे दो और सिद्दीक़ों को डराओ उन्होंने कहा ये दोनों सूरते कैसे? गुनाहगारों से कहा मैं तौबा कुबूल करने वाला हूँ और गुनाहों का बख़्शने वाला और सिद्दीक़ों को इस बात से डराओ कि वो अपने आमाल पर मग़रूर न हों क्योंकि जिसको मैं रोज़े हिसाब पकडूंगा वो हलाक हो जाएगा।

दो सौ चव्वन वॉ बाब

मोहब्बते दुनिया और उसकी हिरस

1. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अ. ने हर गुनाह की अस्ल हुब्बे दुनिया है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने दो भूखे भेड़ियों का बकरियों के एक गल्ले के आगे पीछे होना जिसका चरवाहा इस दुनिया से जुदा हो गया हो इससे ज़्यादा नुक़्सान रसॉ दुनिया की मोहब्बत और दीने इस्लाम में रियासत की ख़्वाहिश है।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि माले दुनिया की मोहब्बत और दीने इस्लाम में हुकूमत की ख़्वाहिश इससे ज़्यादा ख़तरनाक है जो इस गल्ले के लिए हो जिसका चरवाहा अपनी बकरियों से जुदा हो गया हो एक शिकारी भेड़िया उसके आगे हो और दूसरा उसके पीछे।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने शैतान औलादे आदम का रूख़ हर हराम चीज़ की तरफ़ मोड़ देता है और जब आदमी उसे दरमान्दा बना देता है तो माल के लिए उसकी कमींगाहों में बैठता है फिर जब वो मोहब्बते माल में मुब्तिला हो जाता है तो उसकी गर्दन पकड़ लेता है।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो शख़्स तक़दीरे इलाही पर सब्र नहीं करता तो

उसका नफ़्स माले दुनिया की मोहब्बत में पारा पारा हो जाता है और जो अपनी ऑख लगाए रहता है उन चीज़ों की तरफ़ जो लोगों के पास है तो उसका ग़म ज़्यादा होता है और उसका गुस्सा फ़रो नहीं होता और जो ख़ुदा की नेअमत सिर्फ़ खाने पीने और लिबास ही में जानता है तो उसका अमल कोताह हो जाता है और अज़ाब उससे क़रीब हो जाता है।

6. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि दीनारो दिरहम ने तुमसे पहलों को भी हलाक किया और वो तुम्हें भी हलाक करने वाले हैं।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने दुनिया में हिर्स की मिसाल रेशम के कीड़े की सी है कि जिस क़दर अपने ऊपर तनता जाता है उसी क़दर उससे निकलना बईद हो जाता है यहॉ तक कि वो ग़म से मर जाता है और हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया सबसे ज़्यादा ग़नी वो है जो असीरे हिर्स न हो और फ़रमाया जो चीज़ फ़ोत हो गयी यानी जाती रही उसकी तरफ़ दिल न लगाए ताकि जो चीज़ अभी नहीं आई है अपनी कुव्वते फ़िक्र उसके मुतअल्लिक़ खो बैठो यानी कारे आख़ेरत से बेख़बर हो जाओ।

8. हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. से सवाल किया कि पेशे ख़ुदा कौन सा अमल अफ़ज़ल है फ़रमाया अल्लाह और रसूल स. की मारफ़त के बाद अफ़ज़ल अमल दुनिया से बुग्ज़ रखना है क्योंकि उसकी बहुत सी शाख़ें हैं और गुनाहों की बहुत से सूरतें हैं सबसे पहले मअसीयते ख़ुदा करने वाली चीज़ तकब्बुर है जिसका इज़हार इबलीस से हुआ जबकि उसने सजदाए आदम से इन्कार किया और काफ़िरों में हो गया उसके बाद हिर्स है और वो आदम व हव्वा का तर्के औला है ख़ुदा ने उनसे कहा जो चाहो खाओ मगर उस दरख़्त के पास न जाना वरना अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वालों में से हो जाओगे पस उन्होंने उस चीज़ को

अख़्तियार किया जिसकी उनको ज़रूरत नहीं थी पस ख़ुदा ने क़यामत तक के लिए हिर्स को ज़ुर्रियते आदम में दाख़िल कर दिया उसके बाद हसद है और वो आदम के बेटे (क़ाबील) का गुनाह था जिसने अपने भाई से हसद किया और उसको क़त्ल कर दिया। इनमें शाख़ें फूटीं औरतों की मोहब्बत, रियासत की मोहब्बत, राहत की मोहब्बत, कलाम की मोहब्बत, बलन्दी और सरवत की मोहब्बत, ये सब मिलकर सात हो गयीं और ये सब जमा हो गयीं हुब्बे दुनिया में अम्बिया और ओलमा ने इन चीज़ों को जानते हुए कहा है कि मोहब्बते दुनिया तमाम ख़ताओं का घर है और दुनिया अदना और पस्त है और दुनिया मलऊना है।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जनाबे मूसा अ. से वक़्ते मुनाजात ख़ुदा ने कहा एक मूसा दुनिया अज़ाब का घर है आदम ने अपनी ख़ता का ख़मयाज़ा भुगता मैंने दुनिया को मलऊन क़रार दिया और मलऊन है हर वो चीज़ जो इसमें है सिर्फ़ वो नहीं जो मेरी ख़ुश्नूदी के लिए की जाए ऐ मूसा! मेरे नेक बन्दों ने दुनिया से बक़द्रे अपने इल्म के दुनिया को तर्क किया और आम लोगों ने बक़द्रे अपनी जिहालत के उसकी तरफ़ रग़बत की और जिसने दुनिया को हक़ीर समझा उसने फ़ायदा पाया।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि माल और इस्लाम में रियासत की मोहब्बत इससे ज़्यादा ख़तरनाक है जो बकरियों के उस गल्ले को पेश आए जिसका चरवाहा उससे जुदा हो गया हो और एक भूखा भेड़िया उसके आगे हो और दूसरा उसके पीछे।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि हज़रत ईसा इब्ने मरयम एक गॉव की तरफ़ से गुज़रे जसके बाशिन्दे, परिन्दे और चौपाए मर गये थे हज़रत ने फ़रमाया ये अज़ाबे इलाही से मरे हैं अगर जुदा जुदा मरते तो दफ़न किये जाते हवारियों ने

कहा ऐ रूहुल्लाह, ऐ कलेमतुललाह ख़ुदा से दुआ कीजिए कि ये लोग हमें जवाब दें और हम मालूम करें कि इनके क्या आमाल थे ताकि हम इनसे इज्तिनाब करें। हज़रत ईसा ने दुआ की। उफ़ुक़ से आवाज़ आई कि इनको पुकारो हज़रत ईसा अ. रात के वक़्त टीले पर गये और फ़रमाया ऐ गॉव के रहने वालो! उनमें एक ने जवाब दिया लब्बेक एक रूहुल्लाह, एक कलमतुल्लाह फ़रमाया वाए हो तुमपर तुम्हारे क्या आमाल ऐसे थे कि तुम पर अज़ाब आया उसने कहा हमने शैतान की इबादत की थी और दुनिया की मोहब्बत में ख़ौफ़े ख़ुदा बहुत कम रहा था और उम्मीदें तूलानी हो गयी थीं और लहवो लअब में दिन गुज़रते थे फ़रमाया हुब्बे दुनिया किस हद तक थी उसने कहा जैसे एक बच्चे को अपनी मॉ की होती है जब दुनिया हमारी तरफ़ मुत्वजेह होती तो हम ख़ुश होते जब रूगरदानी करती तो हम रोते और रंजीदा होते फ़रमाया तुम्हारी शैतानी इबादत का क्या हाल था उसने कहा हमने गुनाहगारों की इताअत की थी फ़रमाया फिर अंजाम क्या हुआ उसने कहा रात को हम आफ़ीयत से थे और सुब्हा जहन्नम रसीदा हुए। पूछा बादिया क्या है उसने कहा सजीन, पूछा सजीन क्या है उसने कहा वो चिंगारियों के पहाड़ हैं जो क़यामत तक हमारे ऊपर उसके शोले भड़कते रहेंगे फ़रमाया फिर तुमने ख़ुदा से क्या कहा उसने कहा मैंने कहा या अल्लाह हमें दुनिया में भेज दे ताकि हम उसे तर्क करें हमसे कहा गया तुम झूठे हो फ़रमाया वाए हो तुझपर तेरे अलावा किसी और ने कलाम क्यों न किया उसने कहा ऐ रूहुल्लाह उनके ज़हनों पर आग की लजाम चढ़ी हुई है जो सख़्तगीर मलएका के हाथों में रहती है मैं उनके दरमियान था लेकिन शैतान का पुजारी न था जब अज़ाब नाज़िल हुआ तो मैं भी इसलिए लपेट में आ गया कि उनके दरमियान से निकल क्यों न गया अब हम सर के बालों से जहन्नम के किनारे लटके हुए हैं नहीं मालूम इसमें गिरेंगे या बच जाएंगे अब हज़रत

ईसा अ. ने हवारियों से मुतवज्जेह होकर फ़रमाया ऐ औलियाए ख़ुदा सूखी रोटी बदमज़ा नमक से खाना और कूड़े के घर पर सोना बेहतर है दुनिया व आख़ेरत की आफ़ियत के लिए।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अल्लाह ने जिस अम्रे दुनिया का दरवाज़ा खोला है उसपर उसी तरह हिर्स का दरवाज़ा खोल दिया है।

13. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि ईसा अ. ने फ़रमाया दुनिया के हुसूल में सई करते हो हालाँकि उसमें रिज़्क़ बे मेहनत ख़ुदा तुम्हें देता है और आख़ेरत के लिए अमल नहीं हालाँकि वहाँ बे अमल को कोई रिज़्क़ नहीं दिया जाता वाए हो तुम पर ऐ ओलमाए सू तुम अज्र चाहते हो और इल्म को ज़ाया करते हो। क़रीब है कि साहिबे अमल का अमल कुबूल किया जाए और क़रीब है तुम दुनिया की तंगी से निकल कर क़ब्र की तारीकी में चले जाओ क्या हाल होगा उन अहले इल्म का जिन्हें आख़ेरत की तरफ़ जाना चाहिए और वो दुनिया की तरफ़ मुत्वज्जेह हैं जो चीज़ उनके लिए महबूब है वो नफ़ा वाली चीज़ में तग़य्युर पैदा करने वाली न होगी।

14. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने ख़ुदा से दूरी है उस बन्दे के लिए जो अपने शिकम और शर्मगाह के सिवा फ़िक्रे आख़ेरत करता ही नहीं।

15. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो शख़्स फ़िक्रे दुनिया में सुब्हा शाम रहता है अल्लाह फ़क्र को उसकी ऑखों के सामने कर देता है और उसके मामलात को परागन्दा कर देता है और दुनिया से इतना ही पाता है जितना उसके मुक़द्दर में है और जो कोई फ़िक्रे आख़ेरत में सुब्हा शाम गुज़ारता है ख़ुदा उसके क़ल्ब को मुत्मईन बना देता है और उसके मामलात में उसको सुकून अता करता है।

16. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसका इन्हिमाक

दुनिया की तरफ़ ज़्यादा होता है दुनिया से जाने का ग़म उतना ही ज़्यादा होता है।

17. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना जिसका दिल दुनिया की तरफ़ मुतवज्जेह होता है उसके लिए तीन बातें पैदा होती हैं ग़म उससे दूर नहीं होता अपनी आरज़ू पाता नहीं उम्मीद उसकी पूरी होती नहीं।

दो सौ पचपन वॉ बाब

तमअ

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने एक मोमिन के लिए किस क़द्र क़बीह है ये बात कि वो ऐसे अम्र की तरफ़ राग़िब हो जो उसे ज़लील करे।

2. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. ने मैंने पूरी नेकी को जमा देखा उस अम्र में कि क़तए हिर्स की जाए उस चीज़ से जो लोगों के हाथों में है।

3. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने सबसे बुरा वो बन्दा है जिसकी क़ाएद तमअ हो और बुरा है वो बन्दा जिसकी रग़बत उस चीज़ की तरफ़ हो जो उसे ज़लील करे।

4. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा बन्दे में ईमान को साबित रखने वाली क्या चीज़ है फ़रमाया गुनाहों से परहेज़, मैंने कहा और ईमान से ख़ारिज करने वाली क्या चीज़ है फ़रमाया तमअ।

दो सौ छप्पन वॉ बाब

ख़िर्क़

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जिसके आमाल में नाहमवारी है ईमान उससे पोशिदा है।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया रसूले ख़ुदा ने अगर नाहमवारीए अफ़आल आदमी की शक्ल में पैदा की जाती

तो उससे ज़्यादा बद सूरत कोई दूसरी शक्ल न होती।

दो सौ सत्तावन वॉ बाब

सूए ख़ल्क़

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया बदख़ल्क़ी अमले नेक को इस तरह ख़राब करती है जैसे सिरका शहद को।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ख़ुदा ने इन्कार किया है साहिबे सूए ख़ल्क की तौबा कुबूल करने से। किसी ने कहा या रसूलुल्लाह स. ये क्यों फ़रमाया जब वो एक गुनाह करता है तो तौबा करता है फिर उससे बड़े गुनाह में मुब्तिला हो जाता है।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि बद ख़ल्की ईमान को इस तरह ख़राब करती है जिस तरह सिरका शहद को।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसके अख़्लाक़ ख़राब हैं उसका नफ़्स अज़ाब में है।

5. रावी कहता है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया बदख़ल्क़ी अमले नेक को इस तरह बिगाड़ देती है जैसे सिरका शहद को बिगाड़ देता है।

दो सौ अट्ठावन वॉ बाब

सिफ़ा (जल्द मुश्तईल हो जाना, गालियॉ देना और तुन्द मिजाज़ी ज़ाहिर करना)

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने सफ़ा आदते बद है जिसकी वजह से इन्सान अपने से पस्त पर गुस्सा करता है और अपने मर्तबे से ज़्यादा अपने को दिखाता है और अपने से बड़े के सामने इज़हारे आजिज़ी करता है।

2. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने सुबुकी और हिमाक़त

की बातें न करो चूँकि तुम्हारे अईम्मा सुब्क सर और अहमक़ न थे और हज़रत ने ये भी फ़रमाया जो अहमक़ को हिमाक़त से बदला देगा तो वो राज़ी हो इस बात पर कि अहमक़ाना फ़ेल की पैरवी करे।

3. इमाम मूसा काज़िम अ. ने ऐसे दो शख़्सों के बारे में फ़रमाया जो एक दूसरे को गालियाँ दे रहे थे उनमें इब्तिदा करने वाला ज़्यादा ज़ुल्म करने वाला है दूसरे के गुनाहों का बार भी उसी पर होगा जब तक कि मज़लूम हद से न गुज़रे।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा दुश्मने ख़ुदा वो है जिसकी बदज़बानी से लोग डरें।

दो सौ उन्सठ वॉं बाब
बज़ाअ (ज़बान दराज़ी)

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि बेशक एक अलामत उसकी कि बेशक शैतान उस शख़्स के बाप के जिमाअ में शरीक था ये है कि वो बदगो है और गुफ़्तगू के वक़्त इसपर ग़ौर नहीं करता कि क्या कहा और किस के बारे में कहा।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब तुम किसी को देखो कि इस बात की परवाह नहीं करता उसने क्या बका और उसके लिए कहा गया समझ लो वो ज़िना ज़ादा है या वक़्ते जिमाअ शैतान उसके बाप के साथ शरीके जिमाअ था।

3. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ख़ुदा ने जन्नत को हराम किया है हर उस शख़्स पर जो बदगो, बदज़बान और कम हया वाला है इसकी परवाह नहीं करता कि उसने क्या कहा और न इसकी परवाह करता है कि उसके लिए क्या कहा गया है। पस अगर तुम उसके हालात की जुस्तजू करोगे तो मालूम होगा कि वो यो ज़िना ज़ादा है या उसके नुतफ़े में शैतान शरीक है उसने पूछा या रसूलुल्लाह स.

क्या शैतान भी शरीक हो जाता है फ़रमाया क्या तूने ख़ुदा का ये क़ौल नहीं पढ़ा (सूरः बनी इस्राईल) ख़ुदा ने शैतान से फ़रमाया तू आदमियों के माल और औलाद में उनका शरीक बन (तेरी पैरवी करने वालों की सज़ा जहन्नम है) और इमाम ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने एक फ़कीह से पूछा क्या ऐसे भी लोग हैं जो परवाह नहीं करते कि उनके लिए क्या कहा गया है फ़रमाया जो लोगों को ये जानते हुए गालियाँ देता है कि वो भी उसको गालियाँ देंगे तो यही उनका लाउबाली पन है कि अपने कहने की परवाह न दूसरों के कहने की।

4. फ़रमाया अबू जाफ़र अ. ने कि अल्लाह दुश्मन जानता है उसको जो न बुरा करने की परवाह करे और बुरा सुनने की।

5. रावी कहता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. का एक दोस्त था जहाँ आप जाते वो आपके साथ जाता था एक रोज़ हज़रत के साथ कशफ़दोज़ों की तरफ़ से गुज़रा उसका एक गुलाम सनदी पीछे आ रहा था उस शख़्स ने तीन बार मुड़ कर अपने गुलाम को देखा तो मौजूद न पाया चौथी बार देखा तो मौजूद पाया कहने लगा ओ ज़िना ज़ादे तो कहाँ था हज़रत ने ये सुन कर माथे पर हाथ मारा और फ़रमाया सुब्हानल्लाह तू इसकी माँ को ज़िना की तोहमत लगाता है मैं तुझे परहेज़गार जानता था अब पता चला कि ऐसा नहीं है उसने कहा मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों इसकी माँ सनदिया मुशरिक थी फ़रमाया तुझे क्या मालूम नहीं कि हर उम्मत का निकाह इस्लाम में जाएज़ समझा गया है मुझसे दूर हो। रावी कहता है तादमे मर्ग फिर हज़रत के साथ उसको न देखा एक रिवायत में है कि हर गिरोह का निकाह ज़िना से रोकता है।

6. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि बदगोई का अगर मुजस्मिा बनाया जाता तो वो बदतरीन सूरत का होता।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि बनी इस्राईल के एक शख़्स ने खुदा से दुआ कि कि तीन साल के अन्दर उसको एक लड़का दे जब उसने देखा कि अल्लाह उसकी दुआ कुबूल नहीं करता तो कहने लगा एक मेरे रब क्या तू मुझ से दूर है कि मेरी बात नहीं सुनता या क़रीब है और मेरी दुआ कुबूल नहीं करता। ख़्वाब में किसी कहने वाले ने उससे कहा तू तीन साल से नाशाईस्ता ज़बान में और सरकश और ना परहेज़गार दिल से झूठी नीयत से दुआ कर रहा है इन बातों को छोड़ अपने दिल को अल्लाह से डरा और अपनी नीयत को दुरूस्त कर इमाम अ. ने फ़रमाया उसने ऐसा ही किया फिर ख़ुदा से दुआ की, ख़ुदा ने उसको लड़का अता किया।

8. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने बदगोई ख़ुदा से और ईमान से दूरी है और ये दूरी जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाली है।

9. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने ख़ुदा के बन्दों में बदतरीन बन्दा वो है जिसकी बदगोई की वजह से उसकी मुजासेलत मकरूह क़रार पाती है।

10. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने हद से बढ़ना, बदगोई और ज़बान की तेज़ी निफ़ाक़ है।

11. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ख़ुदा दुश्मन रखता है हर से तजावुज़ करने वाले, बदगो और उस हट्टी साएल को जो बग़ैर लिए हुए हटे ही नहीं।

12. फ़रमाया हज़रत इमाम अबू जाफ़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जनाबे आएशा से, ऐ आएशा हज से तजावुज़ करने वाले का अगर मुजस्समा बनाया जाता तो सबसे बुरा मुजस्समा होता।

13. फ़रमाया हज़रत ने जिसने अपने मुसलमान भाई से

बदज़बानी की खुदा उससे रिज़्क़ की दौलत उठा लेता है और उसका काम उसकी के सुपुर्द कर देता है और फ़ासिद कर देता है उसपर उसकी रोज़ी।

14. रावी कहता है मैं इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हज़रत ने कलाम की इब्तिदा करके फ़रमाया ऐ समाआ तेरे और तेरे शुतरबानों के दरमियान ये मामला हुआ अपने को बदगोई, ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से बोलने और ज़्यादा तअन करने से बचा। मैंने कहा उसने मुझपर ज़ुल्म किया था फ़रमाया तेरा ज़ुल्म उससे ज़्यादा हुआ ये हमारा तरीक़ए कार नहीं और न मैं अपने शियों को इसका हुक्म देता हूँ खुदा से इस्तिग़फ़ार करो और फिर ऐसा न करना। मैंने कहा मैं तौबा करता हूँ और फिर ऐसा न करूंगा।

दो सौ साठ वॉ बाब

वो शख़्स जिसके शर से बचा जाए

1. अबू बसीर से मरवी है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया कि हज़रत रूसले खुदा एक रोज़ ख़ानए जनाबे आएशा में थे कि एक शख़्स ने इज़्न तलबी की। रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ये क़बीले का बद आदमी है जनाबे आएशा उठ कर अन्दर चली गयीं और हज़रत ने उसे बुला लिया जब वो आया तो आपने कुशादा रूई के साथ बात चीत की जब वो चला गया तो आएशा ने कहा ये रसूलुल्लाह स. अपने इस शख़्स के लिए ऐसा फ़रमाया था लेकिन जब वो आया तो आपने कुशादा रूई से बातचीत की फ़रमाया ये बद तरीन आदमी ज़बान दराज़ बदगो है और उनमें से है जिसकी बदज़बानी उसकी हमनशीं को बुरी मालूम होती है।

2. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने रोज़े क़यामत खुदा के नज़दीक बदतरीन लोग वो हैं जिनकी तअज़ीम उनके शर से बचने के लिए की जाती है।

3. रावी कहता है फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसकी बद ज़बानी से लोग डरते हों उसकी जगह जहन्नम है।

4. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने रोज़े क़यामत बदतरीन लोग वो होंगे जिनकी तअज़ीम लोग उनके शर से बचने के लिए करें।

दो सौ इक्सठ वॉ बाब

बग़ी (ज़्यादा रवी)

1. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने बग़वत का अज़ाब सबसे जल्द आने वाला है शर है।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने शैतान अपने लश्कर से कहता है बनी आदम के दरमियान हसद और बग़ावत पैदा कर दो क्योंकि अल्लाह के नज़दीक शिर्क के बराबर है।

3. रावी कहता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मुझे खत लिखा कि कभी ज़बान से सरकशी की बात न कहो अगरचे तुम्हारा नफ़्स और क़बीला तुम्हें तअज्जुब में डाले।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया ऐ लोगों बग़ावत अपने लोगों को जहन्नम खींच ले जाती है सबसे पहले जिसने ख़ुदा से बग़ावत की वो उनाक़ बिन्ते आदम थी सबसे पहले जिसको ख़ुदा ने क़त्ल किया वो उनाक़ थी वो इतनी भारी भरकम थी कि कई जरीब ज़मीन बैठने के लिए दरकार थी उसकी बीस उँगलियाँ थीं हर उँगली में दो नाख़ुन थे दराँती जैसे अल्लाह ने उस पर हाथी जैसे शेर को ऊँट जैसे भेड़िये को ख़च्चर जैसे गधे को मुसल्लत किया उन्होंने उसको क़त्ल कर दिया और अल्लाह ने क़त्ल किया जब्बारों को उनके बेहतरीन हालात और अमन की सूरत में।



दो सौ बासठ वॉ बाब

किब्र

1. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. ने तअज्जुब है उस मुत्कब्बिर और फ़ख्र करने वाले पर जो गुज़िश्ता कल एक नुत्फ़ा था और आईन्दा कल मुर्दार बन जाएगा।

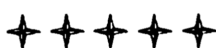
2. फ़रमाया रसूले ख़ुदा ने हसब के लिए फ़ख्र और घमन्ड आफ़त है।

3. अक़बा इब्ने बशीर असदी ने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से कहा मैं अक़बा बिन बशीर असदी हूँ मैं बलेहाज़ अपने क़बीले में साहिबे अज़मत हूँ हज़रत ने फ़रमाया उससे हमपर क्या एहसान जताता है जिस मोमिन को लोग ज़लील जानते थे अल्लाह ने उसके ईमान के सबब उसक मर्तबा बलन्द किया और वो काफ़िर जिसको लोग शरीफ़ समझते थे ख़ुदा ने उसके कुफ्र के सबब ज़लील किया सिवाए तक़्वा के किसी को किसी पर फ़ज़ीलत नहीं।

4. रावी कहता है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया घमन्डी मुतकब्बिर पर तअज्जुब है वो नुत्फ़े से पैदा क़िया गया और मरने पर मुर्दार बन जाएगा और इन दोनों हालतों के दरमियान जो इसपर गुज़रेगी उसे वो क्या जाने।

5. रावी कहता है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया एक शख़्स रसूले ख़ुदा के पास आकर कहने लगा इब्ने फ़लॉ बिन फ़लॉ हूँ यहॉ तक कि नौ पुश्तों के नाम गिनाए रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया तू उनका दसवॉ फ़ीन्नार है (वो ख़ुद भी काफ़िर और अपने काफ़िर अजदाद पर फख्र कर रहा था)

6. फ़रमाया रसूलुल्लाह स. ने हसब नसब की आफ़त फ़ख्र है।



दो सौ तिरसठ वॉ बाब

क़सावते क़ल्ब

1. इमाम अ. ने फ़रमाया ख़ुदा ने मूसा अ. से कहा ऐ मूसा दुनिया में अपनी उम्मीदों को तूलानी न बनाओ वरना तुम्हारा दिल सख़्त हो जाएगा और सख़्त दिल आदमी मुझ से दूर है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि जब ख़ुदा ने असल ख़िल्क़त में किसी को पैदा किया। पस वो नहीं मरा ताईंकि अल्लाह शर को उसके लिए महबूब बना देता है पस वो उससे क़रीब हो जाता है फिर ख़ुदा उसको मुब्तिला करता है तकब्बुर व जब्र पसन्दी में लेहाज़ा उसका दिल सख़्त हो जाता है आदत ख़राब हो जाती है तुर्शरू बन जाता है बद गोई करने लगता है उसकी हया कम हो जाती है और ख़ुदा के भेद खोल देता है वो मुहर्रेमात बजा लाता है और उनसे निकल नहीं पाता और मआसी का इर्तिकाब किये चला जाता है और अल्लाह की इताअत को दुश्मन रखता है और लोगों पर हमला करता है और झगड़ों से सेर नहीं होता। पस तुम अल्लाह से आफ़ीयत का सवाल करो और उससे आफ़ीयत की तलब न रखो।

तौज़ीह : इस हदीस के इस जुमले से "जब ख़ुदा ने अस्ल ख़िल्क़त में किसी को काफ़िर पैदा किया" ये ज़ाहिर होता है कि ख़ुदा जिसे चाहता है मोमिन पैदा करता है जिसे चाहता है काफ़िर। तो इससे जब्र लाज़िम आता है इसका जवाब ये है एक मजाज़ी सूरत है बईं तौर कि ख़ुदा ख़ल्क़ के वक़्त जानता था कि फ़लॉ शख़्स कुफ़्र अख़्तियार करेगा पस गोया उसको काफ़िर पैदा किया ये मजाज़ी निस्बत हुई या ख़ल्क़ बमानी तक़दीर (अन्दाज़ा) और बाज़ मानी में मआसी का तअल्लुक़ इसी तक़दीर से है इस तरह शर को महबूब करना भी मजाज़ी निस्बत है बईं तौरकि ख़ुदा ने बद आमाली की वजह से अपनी तौफ़ीक़ को उससे सल्ब कर लिया और उसके नफ़्स का तअल्लुक़ शैतान से हो जाने की

बिना पर उसने शर को महबूब रखा ये निस्बत ऐसी है जैसी इस आयत में ....

3. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अ. ने दरयाफ़्त करना दो तरह का है एक का तअल्लुक़ शैतान से है और दूसरे का फ़रिश्ते से, फ़रिश्ते से मालूमात रिक़्क़ते क़ल्ब और फ़हम को पैदा करता है और शैतान से लेना फ़रामोशी और क़सावत को पैदा करता है।

दो सौ चौंसठ वॉ बाब

जुल्म

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जुल्म तीन तरह का होता है एक वो जिसे अल्लाह बख़्श देगा दूसरा वो जिसे न बख़्शेगा तीसरा वो जिसे अल्लाह न छोड़ेगा जो जुल्म अल्लाह न बख़्शेगा वो शिर्क है और जो जुल्म अल्लाह बख़्शेगा वो इन्सान का जुल्म अपने नफ़्स पर इन मामलात में जो उसके और अल्लाह के दरमियान हैं और जिसको बेफ़सील किए न छोड़ेगा वो जुल्म बन्दों का बन्दों पर उसमें इन्साफ़ करेगा।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ बेशक तुम्हारा रब कमींगाह में है कि सिरात पर एक पुल होगा जिसको वो बन्दा उबूर कर सकेगा जिसपर कोई मज़लमा न हो।

3. रावी कहता है मैंने अबू जाफ़र अ. से कहा मैं हज्जाज के ज़माने से आज तक बरसरे हुकूमत हूँ पस आया मेरी तौबा कुबूल होगी यह सुनकर हज़रत ख़ामोश हो गये और फिर फ़रमाया नहीं होगी जब तक तू हर साहिबे हक़ का हक़ अदा न करदे।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि कोई मज़लमा (हक़्कुन्नास) इससे बदतर नहीं कि ऐसे शख़्स का हक़ लिया जाए जिसका कोई मद्दगार ख़ुदा के सिवा न हो।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि जब

हज़रत अली इब्नुल हुसैन अ. की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मुझे छाती से लगाया और फ़रमाया बेटा मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ जो मेरे बाप ने अपनी मौत के वक़्त मुझे की थी फ़रमाया बेटा अपने को उसपर ज़ुल्म करने से बचाओ जिसका मद्दगार अल्लाह के सिवा कोई न हो।

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया कि फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अ. ने जो क़सास से डरेगा वो लोगों पर ज़ुल्म नहीं करेगा।

7. फ़रमाया हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने जो इस तरह सुब्हा करे कि किसी पर ज़ुल्म करने की नीयत न रख़ता हो तो ख़ुदा उस दिन के कुल गुनाह बख़्श देगा बशर्ते कि किसी को क़त्ल न किया हो या किसी यतीम का माल हराम तरीक़े से न खाया हो।

8. फ़रमाया हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने जिसने इस सूरत में सुब्हा की कि किसी पर ज़ुल्म करने का इरादा न रखता हो तो अल्लाह उसके गुनाह बख़्श देगा।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो शख़्स किसी का हक़ लेगा उसका बदला लिया जाएगा उसके नफ़्स से उसके माल से या उसकी औलाद से।

10. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ज़ुल्म से बचो क्यों कि वो रोज़े क़यामत की तारीकी है

11. तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

12. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो कोई अज़राहे ज़ुल्म किसी का हक़ लेता है उसका बदला उसके नफ़्स या माल से लिया जाता है और ज़ुल्म जो उसके और अल्लाह के दरमियान है अगर तौबा करेगा तो ख़ुदा बख़्श देगा।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कलाम की इब्तिदा अपनी तरफ़ से करके जो कोई किसी पर ज़ुल्म करेगा तो ख़ुदा

उसपर या उसकी औलाद पर या औलाद की औलाद पर किसी को मुसल्लत करेगा रावी ने कहा ये कैसे ज़ुल्म कोई करे और बदला लिया जाए औलाद से। हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा फ़रमाता है (सूरः निसा) और उन लोगों को डरना और ख़याल करना चाहिए कि अगर वो लोग ख़ुद अपने बाद (नन्हे नन्हे) बच्चे छोड़ जाते तो उनपर किस क़द्र तरह आता पस उनको ग़रीब बच्चों पर सख़्ती करने में डरना चाहिए।

तौज़ीह : मिरअतुल उक़ूल में अल्लामा मजलिसी अ.र. तहरीर फ़रमाते है साएल को बईद मालूम हुआ इस सूरत का वुक़ूअ न कर मनाफ़ीए अदल जानक़र हज़रत ने उसे जवाब दिया कि इसकी सूरत वही है जो ख़ुदा ने सूरः निसा में यतीमों के बारे में बयान की है (ताकि लोग यतीमों पर ज़ुल्म करने से डरें) चूंकि साएल में लम समझने की क़ाबलियत न थी लेहाज़ा सिर्फ़ वुक़ूअ की सूरत बयान कर दी या ये कहा जाए कि हज़रत ने साएल के इस्तबदाद को बदलील ई बयान किया और दलील लिम्मी को तर्क किया और फ़रमाया अब रहा ज़ुल्म का इस बारे में तो इसका जवाब ये है कि फ़ेले इल्म बाबग़ैरे लुत्फ़े ख़ुदा हो दूसरों पर जबकि इल्म पहुँचने वाले को दो चन्द अविस उस अलम का मिले और जब वो इल्म के बदले ग़ौर करे तो इस इल्म पर राज़ी हो जाए जैसे बच्चो की बीमारी पर माँ बाप के लिए अज़दिया व अज्र का बाएस हो तो वो इस पर राज़ी हों मुमकिन है कि ये सूरत हो कि आदते इलाहिया ये हो कि जो कोई किसी पर ज़ुल्म करेगा और ज़ुल्म से माले यतीम खाएगा तो अल्लाह उसकी औलाद को इस क़िस्म के ज़ुल्म में मुब्तिला करेगा ये लुत्फ़े इलाही होगा हर उस शख़्स के लिए जो इस सूरत को मुशाहैदा करे या उसकी सदाक़त को किसी ख़बर देने वाले से सुने तो वो यतीम वग़ैरा पर ज़ुल्म करने से रूक जाए और अल्लाह तआला का औलाद से दुनिया में बदला लेना और आख़ेरत में

मुवाख़ेज़ा करना मुमकिन है ¯सका सबब हो जाए तो लोग आपस में सुलह कर लें और गुनाहों से बाज़ रहें हमें मालूम है कि ज़ालिमों की औलाद अगर अपने बाप दादा की दौलत पा लेती है तो इसी तरह के फ़ित्ना व फ़साद बरपा करती है जिस तरह उनके बाप दादा ने किया था लेहाज़ा औलाद से बदला लेने की सूरत में जो ख़ौफ़ होगा वो उनकी इस्लाह का बाएस होगा इस सूरत में किसी पर जुल्म न होगा।

अल्लामा तबातबाई मद्दाज़िल्लहुलआली ने फ़रमाया है कि रावी के लिए इश्काल पैदा हुआ है कि अल्लाह की तरफ़ से इसका वुकूअ कैसे होगा इमाम अ. ने इसका जवाब इस आयत से दिया अब रहा ये एतराज़ कि एक के फ़ेल में दूसरे को धर पकड़ना जुल्म है तो ये दूसरा इश्काल है और इसका जवाब ये है कि उमूरे तक्वीनिया मुर्तबित हैं दूसरे असबाब से जो असबाब हुस्नों क़वी अक़वाल से अलावा हैं जैसे सिफ़ाते वालिदैन और जिस्मानी और रूहानी ख़ुसूसियात का अक्सर औक़ात औलाद में बतौर विरासत पया जाना वग़ैरह। ख़ुदा ने फ़रमाया जो मुसीबत तुमपर आई है वो तुम्हारी ही पैदा की होती है और जसीमिया तअल्लुक़ जमा करेगा तमाम आबाओ अजदादुल औलाद को एक ही जिस्मीया रायत के नीचे क्योंकि आख़िर वाले इन्हीं आदात के रखने वाल थे जो अव्वल वाले थे।

औलाद से बदले का ख़ौफ़ ज़ालिम व मज़लूम दोनों के लिए लुत्फ़े इलाही से है ज़ालिम डरेगा उससे कि उसके फ़ेल से उसकी औलाद तक को सदमा पहुँचेगा और औलाद से चूँकि फ़ितरी मोहब्बत होती है लेहाज़ा वो जुल्म से रूकेगा और मज़लूम को इन्तिक़ाम के मुतअल्लिक़ तसल्ली होगी।

14. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने अल्लाह ने एक नबी से जो एक जाबिर बादशाह की हुकूमत में थे फ़रमाया तुम उस जाबिर के पास जाओ और कहा कि मैंने तुझे लोगों के ख़ून

बहाने और लोगों का माल ग़स्ब करने के लिए हुकूमत नहीं दी बल्कि इसलिए दी है कि मज़लूमों की फ़रयाद मुझ तक न पहुँचे मैं उनपर जुल्म को नज़र अन्दाज़ न करूँगा चाहे वो काफ़िर ही हों।

15. अबू बसीर से मरवी है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना जो अपने भाई का माल जुल्म से खाएगा और उसे वापस न देगा वो रोज़े क़यामत आग की चिंगारियाँ खाएगा।

16. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जुल्म करने वाला उसका मददगार और उसपर राज़ी होने वाला तीनों उस जुल्म में शरीक हैं।

17. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना कि एक बन्दा मज़लूम होकर जब ज़ालिम के लिए हमेशा बद दुआ ही करता है और इसमें हद से तजावुज़ कर जाता है तो ख़ुद ज़ालिम बन जाता है।

18. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि जो ज़ालिम को उसके जुल्म करने में मअज़ूर जानता है ख़ुदा उसपर एक ज़ालिम को मुसल्लत करता है पस अगर वो ख़ुदा से दुआ करेगा तो उसकी दुआ कुबूल न होगा और उसके मज़लमा पर कोई अज्र न मिलेगा।

19. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ख़ुदा जुल्म के एवज़ ज़ालिम को ज़ालिम से टकरा देता है जैसा कि फ़रमाता है हम एक ज़ालिम को दूसरे ज़ालिम पर क़ाबू याफ़्ता बना देते हैं।

20. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो जुल्म से किसी का माल ले और फिर रद करने के लिए उसे न पाए तो चाहिए कि उसके लिए अल्लाह से अस्तिग़फ़ार करे कि ये उसके लिए कफ़्फ़ारा होगा।

21. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया है जो सुब्हा करे ऐसे हाल में कि किसी पर जुल्म का

इरादा न रखता हो तो अल्लाह उसके गुनाह बख़्श देगा।

22. अबू बसीर से मरवी है कि दो शख़्स अपने झगड़े बयान करने के लिए हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. की ख़िदमत में आए हज़रत ने दोनों का कलाम सुन कर फ़रमाया नेकी में किसी ने इससे ज़्यादा फ़तह नहीं पायी जितनी मज़लूम ने एक ज़ालिम के मुक़ाबिल, मज़लूम ज़ालिम के दीन से उससे कहीं ज़्यादा पा लेता है जितना ज़ालिम मज़लूम के माल से पाता है फिर फ़रमाया जो दूसरों के साथ बुराई करता है अगर उसके साथ बुराई की जाए तो उसे बुना समझे बेशक आदमी जो बोता है वही काटता है कोई कड़वे बीज को बोकर मीठा फर नहीं खाएगा और न मीठा बोकर कड़वा फल. ये सुन कर उन्होंने उठने से पहले सुलह कर ली।

23. जो क़सास से डरता है उसे चाहिए कि जुल्म से रूक जाए।

दो सौ पैंसठ वॉ बाब

ख़्वाहिशों की पैरवी

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अपनी ख़्वाहिशों से इस तरह बचो जैसे अपने दुश्मनों से बचते हो कोई शै इन्सान के लिए ख़्वाहिशों की पैरवी और ज़बान का ज़ख़्म लगाने से ज़्यादा दुश्मन नहीं।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने फ़रमाया क़सम अपनी इज़्ज़तो जलाल और अपनी अज़मत और किबरियाई की और अपने नूर और बलन्द दरजे और मकानी–ए–बुलन्दी कि अगर कोई बन्दा अपनी ख़्वाहिश को मेरी ख़्वाहिश पर तरजीह देता है तो मैं इस अम्र को परागन्दा कर देता हूँ और दुनियावी मामलात में फॅसा देता हूँ और उसका दीन दुनिया की तरफ़ लगा देता हूँ और उसको नहीं देता मगर इतना ही जितना उसके लिए मुकद्दर हो

चुका है और क़सम अपनी इज़्ज़तो जलाल और अपनी अज़मत की और अपने नूर और उलूवे मरतबत की और अपनी मकानी–ए–बलन्दी की कि अगर कोई बन्दा मेरी मर्ज़ी पर अपनी ख़्वाहिश को तरजीह देता है तो मेरे मलाएकए समावात उसकी निगरानी करते हैं और आसमान व ज़मीन उसके रिज़्क़ के कफ़ील भी होते हैं मगर मेरा मामला उसके साथ ऐसा ही होता है जैसे हर ताजिर का सोदागरी में कि जितना दो उतना लो दुनिया जो ज़लील है उसके पास आती है।

3. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने मैं द्रो बातों से तुमको डराता हूॅ एक ख़्वाहिश की पैरवी दूसरे आरज़ूओं का फैलाओ, ख़्वाहिश की पैरवी इन्सान को हक़ से रोक देती है और ख़्वाहिशों का ज़्यादा होना आख़ेरत को भुला देता है।

4. नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात को दावत न दो क्योंकि ख़्वाहिशाते नफ़्स (की पैरवी) में हलाकत है और नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात तर्क करने से नफ़्स को तकलीफ़ पहॅुचती है नफ़्स की ख़्वाहिशात से रोकना उसका इलाज है।

दो सौ छयासठ वॉ बाब

मक्र व उज़्र व फ़रेब

1. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने अगर मक्रो फ़रेब की सज़ा जहन्नम न होता तो मैं सबसे ज़्यादा मक्र करने वाला होता।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि उर्ज़ करने वाला रोज़े क़यामत अपने इमाम के साथ इस तरह आएगा कि उसी बाछ कज होगी ओर इस तरह वो दाख़िले दोज़ख़ होगा और हर वो जिसने इमाम मन्सूस मिनल्लाह की बैअत तोड़ी होगी वो बसूरते मजज़ूम दाख़िले दोज़ख़ होगा।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया हममें से नहीं है वो मुसलमान जो मक्र करे।

4. फ़रमाया हज़रत सादिके आले मोहम्मद अ. ने जब उनसे सवाल किसी ने उन दो क़रियों के मुतअल्लिक़ जो काफ़िराने हरबी के तहत हकम थे उनमें से हर एक का बादशाह अलग था पहले उन दोनों जंग की फिर सुलह कर ली। फिर एक बादशाह ने दसूरे से बेवफ़ाई की और मुसमलमान के पास आया और उनसे सुलह करके कहने लगा कि वो उसके साथ होकर दूसरे बादशाह से जंग करें। हज़रत ने फ़रमाया मुसलमानों को उज़्र न करना चाहिए और न दूसरों को उज़्र का हुक्म देना चाहिए उज़्र करने वालों के साथ उनको लड़ना न चाहिए हॉ मुशरिकों को जहॉ चाहें क़त्ल करें और कुफ़्फ़ार के साथ मुसलमानों को सुलह के मुअहिदे पर रहना ज़रूरी नहीं।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया हर उज़्र करने वाला अपने इमाम के साथ रोज़े क़यामत आएगा कि उसका बाछ टेढ़ा होगा और उसी हालत में वो दाख़िते जहन्नम होगा।

6. अस्बग़ बिन नबाता से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने एक रोज़ मिम्बरे कूफ़ा पर खुत्बे में फ़रमाया लोगो! उर्ज़ करना ना पसन्दीदा न होता तो मैं सबसे ज़्यादा दुश्मनों पर बला लाने वाला होता आगाह हो कि उज़्र करने वाले के लिए मआसी में बेपरवाई है और ये बेपरवाई और ख़यानत का नतीजा जहन्नम रसीद होना है।

दो सौ सरसठ वॉ बाब

किज़्ब

1. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया अबू नोमान से हम पर कोई झूठ न बोल वरना दीन से ख़ारिज हो जाएगा और सरदारी के ख़्वास्तगार न हो वरना भेड़िया बन कर लोगों पर ज़ुल्म करोगे ओर हमारी मद्‌दाही ब गुलू करके लोगों का माल न खाओ वरना मोहताज हो जाओगा। तुम रोज़े क़यामत पेशे ख़ुदा

खड़े होगे और हमसे सवाल किया जाएगा पस अगर तुमने हमारे मुतअल्लिक़ सच कहा है तो हम तस्दीक़ करेंगे और झूठ कहा है तो तुम्हें झुटलाएंगे।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने हज़रत अली इबनुल हुसैन ने अपनी औलाद से कहा किज़्ब से बचो ख़्वाह छोटा हो या बड़ा माकूल बातचीत हो या दिल लगी क्योंकि जब आदमी छोटे झूठ का आदी हो जाता है तो बड़े बड़े झूठ बोलने लगता है क्या तुम्हें नहीं मालूम कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जब कोई हमेशा सच बोलता है तो अल्लाह उसको सिद्दीक़ लिखता है और जब हमेशा झूठ बोलता है तो कज़्ज़ाब लिखता है।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ख़ुदा ने सत्तर बातों पर ताले डाले हैं उन तालों की कुन्जियाँ शराब को क़रार दिया है और झूठ शराब से भी बदतर है।

4. हज़रत इमाम हज़रत मोहम्मद बाक़र अ. ने झूठ ईमान की ख़राबी का सबब है।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने ख़ुदा और रसूल पर झूठ बोलना गुनाहाने कबीरा से है।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मब बाक़र अ. ने काज़िब को सबसे पहला झुठ लाने वाला अल्लाह है फिर वो फ़रिश्ते जो उसके साथ रहते थे फिर वो ख़ुद जानता है कि मैं झूठा हूँ।

7. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि बहुत ज़्यादा दरोग़ गो ज़ाहिर बज़ाहिर दलाएल से हलाक होता है और उसके पैरो शुबहात में पड़कर हलाक होते हैं।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना झूठे की एक निशानी तो ये है कि वो तुझसे आसमान व ज़मीन और मशरिक़ व मग़रिब की ख़बरें बयान करेगा अगर तू हराम व हलाल के मुतअल्लिक़ पूछेगा तो उसके पास कुछ न होगा।

9. अबू बसीर से मरवी है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया झूठ बोलने से रोज़ा टूट जाता है मैंने कहा हममें कौन ऐसा है जो कभी झूठ न बोले फ़रमाया इससे मुराद ख़ुदा और रसूल स. और अइम्मा अ. पर झूठ बोलना है।

10. एक शख़्स ने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से एक जुलाहे का ज़िक्र किया कि वो मलऊन है फ़रमाया वो अल्लाह और उसके रसूल स. पर झूठ का ताना बाना बुनता है।

11. अस्बग़ बिन नबाता से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया बन्दा ईमान का मज़ा नहीं चखेगा जब तक दिल लगी हो यह हक़ीक़त, हर एक सूरत में झूठ को तर्क न करेगा।

12. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि साएल ने पूछा कि क्या हर झूठे के लिए ईमान से बेनसीबी है फ़रमाया नहीं ये उसके लिए है जिसने झूठ को पसन्दीदा ख़ातिर बना लिया है।

13. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने हज़रत ईसा अ. ने फ़रमाया जिसका झूठ ज़्यादा होगा उसकी आबरू जाती रहेगी।

14. फ़रमाया हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. ने हर मर्दे मुसलमान को चाहिए कि वो बहुत ज़्यादा झूठ बोलने वाले से बरादराना तअल्लुक़ात तर्क कर दे क्योंकि जब सच्ची बात उसके सामने आती है तो वो तस्दीक़ नहीं करता।

15. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना ज़्यादा झूठ बोलने वालों पर अल्लाह निस्यान को ग़ालिब कर देता है

16. रावी कहता है हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने फ़रमाया कि कलाम तीन हैं सच, झूठ और लोगों के दरमियान इस्लाह करना पूछा गया लोगों के दरमियान इस्लाह की क्या सूरत है फ़रमाया जब तुम किसी से ऐसी बात सुनो जिससे वो दिल गिरफ़्ता हो गया हो तो तुम उससे कहो कि मैंने तो तुम्हारे

बारे में इस तरह कलमए ख़ैर कहते सुना है जो उसके बिल्कुल ख़िलाफ़ है जो तुमने सुना।

17. फ़रमाया हज़रत अबू जाफ़र अ. ने हज़रत यूसुफ़ अ. के इस क़ौल के मुतअल्लिक़ "ऐ क़ाफ़िले वालो तुम चोर हो" कि वल्लाह न वो चोर थे और यूसुफ़ ने झूठ बोला, हज़रत इब्राहीम के इस क़ौल के मुतअल्लिक़ फ़रमाया बल्कि उनके बड़े ने ऐसा किया है अगर वो बोलें तो उनसे पूछ लो" न उन्होंने किया था न इब्राहीम ने झूठ बोला। रावी से हज़रत ने पूछा ए सक़ील! तुम्हारा क्या ख़याल है उसने कहा सिवाए मान लेने के इसमें चाराए कार क्या है फ़रमाया ख़ुदा दो बातों को दोस्त रखता है और दो को दुश्मन रखता है दो को वो मुत्कब्बिराना रफ़्तार को उस वक़्त दोस्त रखता है जबकि मैदाने जंग में दोनों तरफ़ से सफ आराई हो और दोस्त रखता है किज़्ब को इस्लाह बैनन्नास के अलावा और दुश्मन रखता है मुत्कब्बिराना रफ़्तार को शहर के गली कूचों में और दुश्मन रखता है किज़्ब को ग़ैर इस्लाही उमूर में। इब्राहीम अ. ने जो फ़रमाया कि उनके बड़े ने किया इससे मक़सूद उन काफ़िरों की इस्लाह थी ताकि वो इक़रार करें कि बुतों में ये ताक़त नहीं और हज़रत यूसुफ़ अ. ने जो फ़रमाया तो ये इस्लाहे हाल के इरादा की बिना पर था।

18. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने हर झूठ के मुतअल्लिक़ एक दिन सवाल किया जाएगा मगर तीन शख़्सों से अव्वल दुश्मन से हर्ब में अज़राहे फ़रेब झूठ बोलना। दूसरे लोगों में इस्लाह के लिए झूठ बोलना एक मिलकर कुछ कहना और दूसरे से मिलकर कुछ। ताकि उनके दरमियान मुसालेहत हो जाए और तीसरे वो जो अपने अहल से किसी चीज़ का वायदा करे और फिर उसे पूरा न कर सके तो उनको दिल शिकनी से बचाने के झूठ बोल दे।

19. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस्लाह के इरादे

से झूठ बोलने वाला झूठा नहीं होता।

20. रावी कहता है मुझसे हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कुछ बात चीत की। मैंने कहा मैं आप फ़िदा हूँ क्या आपने मेरे मुतअल्लिक़ ऐसा गुमान अभी नहीं किया फ़रमाया नहीं। मेरे ऊपर ये बात शाक़ गुज़री। मैंने कहा वल्लाह मेरा गुमान तो यही है फ़रमाया ऐसा नहीं है जैसे तूने गुमान किया है मेरे ऊपर ये फ़रमाना शाक़ हुआ। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ आपने ये फ़रमाया था फ़रमाया मैंने ज़रूर कहा था लेकिन तू ये नहीं जानता कि क़ुर्आन में गुमान दावए बातिल है (यानी मेरे क़ौल से तूने ग़लत नतीजा निकाला)

21. रावी कहता है कि हज़रत अमीरूल मोमिनीन अ. फ़रमाया करते थे कि अपने को झूठ से बचाओ क्यों कि हर उम्मीदवार सवाबे इलाही अच्छे अफ़आल का तलबगार होता है और हर वो जो अज़ाब से डरता है अफ़आले बद से भागता है।

22. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया है इस्लाह करने वाला झूठा नहीं कहा जाता फिर ये आयत पढ़ी "ऐ क़ाफ़ले वालो तुम चोर हो" फिर फ़रमरया वल्लाह न वो चोर थे न यूसुफ़ झूठ बोले। फिर फ़रमाया न बड़े बुत ने ये किया था न इब्राहीम झूठ बोले।

दो सौ अड़सठ वॉ बाब

ज़ल्लेसानैन (दो ज़बान वाला)

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो मुसलमानों से दोरूख़ और दो ज़बानों से मिलेगा रोज़े क़यामत उसकी दो ज़बानें आग की होंगी।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने सबसे बुरा वो बन्दा है जो दो रू और दो ज़बानों वाला हो। जब दोस्त के सामने आए तो उसकी तारीफ़ करे और ग़ाएब हो तो उसे खा जाए अगर उसे अता किया जाए तो हसद करे और अगर किसी

मुसीबत में मुब्तिला हो तो उसे बे मदद छोड़ दे।

3. फ़रमाया इमाम अ. ने कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ईसा अ. से ऐ ईसा ज़ाहिर व बातिन में एक ज़बान होनी चाहिए और ऐसे ही तुम्हारा दिल हो। मैं तुमको तुम्हारे नफ़्स से डराता हूँ और मैं ख़बर रखने के लिए काफ़ी हूँ एक मुँह में दो ज़बान एक नियाम में दो तलवारें और एक सीने में दो दिल नहीं हो सकते इसी तरह अज़हान में दुनिया व आख़ेरत दोनों के इरादे।

दो सौ उनहत्तर वॉ बाब

हिजरत

(किसी से गुस्से से बात करना)

1. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा कि अगर दो शख़्स आपस में दोस्ती को क़तए करते हैं तो ऐसे दो आदमी कुछ तर्के तअल्लुक़ करे गुस्से से बात करके, उनमें से जो ज़ालिम होगा ख़ुदा और रसूल उससे बरी और उनकी लानत का मुस्तहक़ होगा और बाज़ औक़ात दोनों होंगे आपके गुलाम मोअतब ने कहा इसमें गुलाम का क्या कुसूर, फ़रमाया ये है कि उसने अपने दोस्त से सिलए रहम क्या न किया और उसके कलाम से चश्म पोशी क्यों न की मैंने अपने पदरे बुज़ुर्गवार से सुना जब वो शख़्स झगड़ा करें और एक दूसरे पर ग़ल्बा हासिल करे तो मज़लूम को चाहिए कि वो अपने भाई से कुछ में ज़ालिम हों ताकि दोनों के दरमियान क़तए तअल्लुक़ हो गया है वो ख़त्म हो जाए चूँकि अल्लाह तआला हाकिम व आदिल है इसलिए वो मज़लूम का बदला ज़ालिम से लेगा।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह ने फ़रमाया गुस्सा तीन रोज़ से ज़्यादा न रहना चाहिए वरना वो अदावत बन जाता है।

3. अबू बसीर से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे

सादिक़ अ. से उस शख़्स के मुतअल्लिक़ पूछा जो अपने क़राबतदारों से इस बेना पर क़तए तअल्लुक़ करता है कि वो हक़ को (अम्रे इमामत) को नहीं पहचानते फ़रमाया उसके सज़ावार है कि तर्के तअल्लुक़ न करे।

4. मराज़म बिन हकम से मरवी है कि हमारे असहाब से एक शख़्स शलक़ान नामे था जिसका नुत्फ़ा इमाम के ज़िम्मे था और वो मर्दे बद ख़ू था मराज़म ने उससे गुस्से में तर्के तअल्लुक़ किया हज़रत ने एक दिन मुझसे फ़रमाया ऐ मराज़म ईसा से बोलो चालो मैंने कहा बेहतर है फ़रमाया तुमने ठीक किया तर्के तअल्लुक़ में बेहतरी नहीं है।

5. रावी कहता है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया कि मेरे पदरे बुजुर्गवार ने फ़रमाया हर दो मुसलमान जो गुस्से में हम कलामी के बग़ैर तीन दिन रहें और सुलहा न करें तो वो इस्लाम से ख़ारिज हो जाएंगे और उनके दरमियान दोस्ती न रहेगी जो कोई उनमें से सबसे पहले अपने भाई से कलाम करेगा वो रोज़े क़यामत पहले जन्नत में जाएगा।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने शैतान अदवत डालता है मोमिनीन के दरमियान जब तक वो अपने दीन से बरगश्ता न हों, जब वो ऐसा कर लेता है तो अपने काम से फ़ारिग़ होकर आराम से लेट जाता है फिर कहता है मैं कामयाब हो गया। अल्लाह रहम करे उसपर जो हमारे दो दोस्तों के दरमियान मोहब्बत क़ाएम कराए। ऐ मोमिनीनों! एक दूसरे से मोहब्बत करो और मेहरबानी का बर्ताव करो।

7. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जब मुसलमान आपस में बिना बर गुस्सा हम कलाम नहीं होते तो शैतान खुश होता है और जब वो मिलते हैं तो अपने घुटने पीट लेता है और उसके बदन के जोड़ जोड़ ढीले पड़ जाते हैं और चीख़ कर कहता है हाए कैसी हलाकत का सामना है।

दो सौ सत्तर वॉ बाब

क़तए रहम

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया आगाह हो कि आपस में बुग्ज रखना सरमुन्डवाना है लेकिन इससे मेरी मुराद सरमुन्डवाना नहीं बल्कि दीन का सरमून्डना है।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने हालेक़ा से बचो वो लोगों को मार डालता है लोंगों ने पूछा हालेक़ा क्या है फ़रमाया क़तए रहम।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जबकि रावी ने कहा मेरे भाई और चचाज़ाद भाई मेरे दुश्मन हो गये हैं और उन्होंने मुझे घर से निलाल दिया है और मैं दूसरे घर में चला गया हूँ अगर मुझे कुदरत होती तो जो किया उसे वापस कर लेता। हज़रत ने फ़रमाया सब्र कर अल्लाह अंक़रीब कुशादगी अता फ़रमाएगा। ये सुन कर चला आया। 131 हि. में वबा फैली वो सब मर गये बाद में हज़रत की ख़िदमत में आया हज़रत ने फ़रमाया कहो तुम्हारा क्या हाल है तुम्हारे ख़ानदान वालो का क्या हाल है मैंने कहा सब मर गये कोई बाक़ी नहीं। फ़रमाया ये उसी का नतीजा है जो उन्होंने तुम्हारे साथ किया था और क़तए रहम करके तुम पर जुल्म किया किया था क्या तुम चाहते थे कि वो ज़िन्दा रहते और तुमको तंग किए जाते मैंने कहा ख़ुदा की क़सम नहीं।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने किताबे अली अ. में है कि तीन ख़स्लतें ऐसी हैं कि उनका वहॉ देखे वग़ैर इन्सान दुनिया से उठता एक बग़ावत (अल्लाह व रसूल से) दूसरे क़तए रहम, तीसरे झूठी क़सम कि ये अल्लाह से जंग है और सबसे ज़्यादा जल्द सवाब दिलाने वाली चीज़ सिलए रहम है अगर कुछ लोग फ़ाजिर हों और सिलए रहम करें तो उनके

अमवाल में ज़्यादती होगी और वो साहिबे सरवत हो जातें है। झूठी क़सम खाना और क़तए रहम करना घरों को उसके अहले से ख़ाली कर के उजाड़ देते हैं और रिश्तेदारी का ख़ात्मा कर देते हैं नक़्ले रहम इन्क़ेताए नस्ल है।

5. रावी कहता है एक शख़्स इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. के पास आया और अपने अईज़्ज़ा की शिकायत की। फ़रमाया अपने गुस्से को पी जाओ और नेकी करो उसने कहा वो तो ऐसा ऐसा अमल करते हैं फ़रमाया क्या तुम भी उनकी मिस्ल होना चाहते हो ताकि ख़ुदा तुम्हारी तरफ़ न देखे।

6. ऑहज़रत स. ने इरशाद फ़रमाया तुम क़तए रहम न करो अगर तुम क़तए रहमी करोगे तो हमसे कोई तअल्लुक़ नहीं।

7. अबू हमज़ा समाली से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि बाज़ गुनाह, ऐसे हैं जिनसे मौत जल्द आ जाती है। अब्दुल्लाह बिन कव्वा ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन! क्या ऐसे भी गुनाह हैं जिनसे जल्द मौत आ जाए, हॉ।

और क़तए रहम है जिस ख़ानदान के लोग जमा होते हैं और और हमदर्दी का इज़हार करते हैं तो अगरचे वो बदकार हों अल्लाह उनके रिज़्क़ में बरकत देते है और जिस घर वाले मुतफ़र्रिक़ होते हैं और क़तए रहम करते हैं तो अल्लाह उनको महरूम कर देता है चाहे परहेज़गार हों।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया कि जब लोग क़तए रहम करते हैं तो उनकी दौलत अशरार के हाथों पहुँच जाती है।

दो सौ इकहत्तर वॉ बाब
उक़ूक़ (नाफ़रमानीए वालिदैन)

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि नाफ़रमानी कम से कम मॉ बाप से उफ़ कहना है अगर ख़ुदा के इल्म में कोई

और चीज़ तो उससे भी मना करता है।

2. फ़रमाया इमाम रज़ा अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया माँ बाप के साथ नेकी करने वाले बनो अगर जन्नत दरकार है और नाफ़रमान बनो अगर दोज़ख में जाना चाहते हो।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रोज़े क़यामत जन्नत के परदों में एक एक परदा हटाया जाएगा जिसकी वजह सेएक जान रखने वाला पॉच सौ बरस की राह से उसकी ख़ुश्बू सूँघेगा सिवाए एक गिरोह कि। रावी ने पूछा ये कौन लोग होंगे फ़रमाया वालिदैन के नाफ़रमाबरदार।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया हर नेकी के ऊपर एक नेकी है यहॉ तक कि क़त्ल किया जाए एक शख़्स राहे ख़ुदा में पस जब राहे ख़ुदा में क़त्ल हो तो उससे बढ़कर नेकी नहीं और हर नाफ़रमानी के ऊपर एक नाफ़रमानी है यहॉ तक कि क़त्ल करके अपने वालिदैन में एक किसी एक को ऐसा करेगा तो इससे बढ़कर कोई नाफ़रमानी नहीं।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने अपने वालिदैन पर ग़ज़ब की नज़र डाली दरॉहालाकि उन्होंने उसपर जुल्म किया हो तो भी उसकी निगाह कुबूल न होगी।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अपने कलाम के दरमियान बचाओ अपने को वालिदैन की नाफ़रमानी से, जन्नत की ख़ुश्बू जो एक हज़ार साल की मसाफ़त से सूँघी जाएगी आक़ इन्सान इसको न सूँघने पाएगा और न क़तए रहम न बूढ़ा ज़ानी और न वो जो अपने ज़ेर जामा को तकब्बुर से खींचे, बेशक किब्र ख़ुदा ही के लिए है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने अगर ख़ुदा के इल्म में उफ़ से कम कोई कलमा होता तो वो उससे भी मना करता और नाफ़रमानी में ये भी दाख़िल है कि कोई शख़्स अपने वालिदैन

को गुस्से में घूर कर देखे।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने एक शख़्स को देखा जिसके साथ उसका बेटा जा रहा था ये शख़्स इस तरह कि बेटा उसके हाथ पर तकिया किया हुए था इमाम ने फ़रमाया कि मरते दम तक मेरे वालिद ने उस बेटे से कलाम न किया।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने नाफ़रमानी की अदना सूरत ये है कि माँ बाप के लिए उफ़ कहा जाए अगर इल्मे खुदा में इससे कम कोई लफ़्ज़ होता तो वो उससे भी मना करता।

दो सौ बहत्तर वॉ बाब
अल इन्तक़ा
(दूसरों के मुक़ाबिल नस्ब पर फ़ख़)

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अल्लाह से कुफ़्र किया उस शख़्स ने जिसने किसी के नस्ब से बेज़ारी ज़ाहिर की अगरचे वो नसब ज़ईफ़ हो।

2. तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने कि अगर किसी ने बवजह नस्ब किसी से बेज़ारी का इज़हार किया तो उसने कुफ़्र बिल्लाह किया अगरचे नसब ज़ईफ़ ही क्यों न हो।

दो सौ तिहत्तर वॉ बाब
मुसलमानों को अज़ीयत और हक़ीर समझना

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि खुदा फ़रमाता है (हदीसे क़ुदसी में) मुझसे जंग के लिए आमादा हुआ वो जिसने बन्दए मोमिन को अज़ीयत दी और ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ हुआ जिसने मेरे बन्दए मोमिन की इज़्ज़त की, अगर रूए ज़मीन पर मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान मेरी कोई मख़लूक़ भी सिवाए

एक मोमिन और इमामे आदिल के न रहे तो मैं इन दोनों की इबादत के सबब तमाम मख़लूक़ाते अर्ज़ की इबादत से बेपरवाह होंगा उन दोनों की वजह से सात आसमान और ज़मीनैन क़ाएम रहेंगी उनके ईमान से उन्स रखने की वजह से वो अपने ग़ैर से उन्स के मोहताज न होंगे।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने क़यामत के दिन एक मनादी निदा करेगा कहाँ हैं रूकावट पैदा करने वाले मेरे दोस्तों के मामले में पस कुछ लोग खड़े होंगे जिनके चेहरों पर गोश्त न होगा उनके लिए कहा जाएगा ये वो लोग हैं जिन्होंने मोमिनों को सताया उनसे तअस्सुब बरता दुश्मनी की उनपर जुल्म किया हुक्म होगा इन्हें जहन्नम में डालो।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा फ़रमाता है जिसने मेरे दोस्त की तौहीन की वो मुझसे जंग पर तैयार हुआ।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने किसी मोमिन मिस्कीन या ग़ैर मिस्कीन को हक़ीर समझा ख़ुदा उसको ज़लील करेगा और उसपर ग़ज़ब नाक रहेगा जब तक वो उस मोमिन की हिक़ारत से बाज़ न आए।

5. रावी कहता है हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया कि ख़ुदा (हदीसे कुदसी में) कहा है जिसने मेरे दोस्त को ज़लील किया वो मुझसे जंग पर अमादा हुआ और हर शै से ज़्यादा अपने औलिया की नुसरत करने वाला हूँ।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने फ़रमाया है जिसने मेरे बन्दए मोमिन को ज़लील किया उसने खुल्लम खुल्ला मुझसे दुश्मनी मोल ली।

7. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ख़ुदा कहता है जिसने मेरे दोस्त की

तौहीन की वो मेरी जंग पर आमादा हुआ और मेरा तक़र्रुब बन्दे ने उस चीज़ से हासिल किया जो मुझे ज़्यादा महबूब है यानी जो मैंने उसपर वाजिब किया है उसे पूरा करके और वो उस तक़र्रुब को ज़्यादा करता है नाफ़िला अदा कर ताकि मैं उसे दोस्त रखूँ और जब मैं उसे दोस्त रखता हूँ तो मैं होता हूँ उसका हिससे सामेआ जिससे वो सुनता है और हिस्से बासरा जिससे वो देखता है और हिससे नातेक़ा जिससे वो बोलता है और उसके हाथ होता हूँ जिससे वो हमला करता है यानी ये चारों बातें मेरे हुक्म के बमूजिब सरज़द होती है पस जो दुआ वो मुझ से करता है कुबूल करता हूँ देता हूँ और मैं अपना हुक्म नहीं हटाता मगर मौते मोमिन के लिए जब बन्दा मरना चाहता है तो मैं उसको आज़ुरदा नहीं करना चाहता।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब रसूले ख़ुदा मेराज को तशरीफ़ ले गये तो अल्लाह से कहा तेरे नज़दीक मोमिन का क्या हाल है। फ़रमाया ऐ मोहम्मद! जो कोई मेरे दोस्त की एहानत करता है वो मुझसे जंग पर आमादा होता है मैंने औलिया की नुसरत के लिए हर शै से ज़्यादा जल्दी करने वाला होता हूँ मैं जिसका ज़िक्र करने वाला हूँ उससे नहीं फिरता मिस्ल उस फिरने के जो वफ़ाते मोमिन के मुतअल्लिक़ होता है जब वो मौत को पसन्द करता है तो मैं उसकी आज़ुर्दगी पसन्द करता हूँ मेरे मोमिन बन्दों में कुछ ऐसे हैं कि उनकी दुरूस्तीए हाल मालदार बनाने में होती है अगर मैं उनकी इस हालत को बदल दूँ तो वो हलाक हो जाएं और कुद मोमिन बन्दे ऐसे हैं जिनकी दुरूस्तीए हाल फ़क्र में होती है अगर इस सूरते हाल को बदल दूँ तो वो हलाक हो जाएं बन्दे की तक़रीब के लिए मेरे नज़दीक कोई चीज़ इससे ज़्यादा महबूब नहीं कि वो अदा करे अपने फ़र्ज़ को जब वो फ़र्ज़ के बाद नवाफ़िल से तक़र्रुब चाहता है तो मैं उसको दोस्त रखता हूँ जब मैं उसको दोस्त रखता हूँ

तो उसके कान जिनसे वो सुनता है मेरे कान बन जाते हैं और ऑखें जिनसे वो देखता है मेरी ऑखें और ज़बान जिससे से वो बोलता है मेरी ज़बान बन जाती है और उसके हाथ जिनसे वो हमला करता है मेरे हाथ हो जाते हैं और उसकी दुआ कुबूल करता हूॅ और जो मॉगता है उसे देता हूॅ।

तौज़ीह : आज़ाए इन्सानी का अपनी तरफ़ खुदा का मंसूब करना उसकी तौज़ीह ये है कि जब आरिफ़ अपने दिल को शहवात और इरादों से ख़ाली कर लेता है और उसकी अक़्ल व रूह और मसामअ और मशाएर पर मोहब्बते इलाही जल्वा फ़िगन हो जाती है और अपने तमाम उमूर ख़ुदा के सुपुर्द कर देता है और ख़ुदा के हर फ़ैसले पर राज़ी हो जाता है तो ख़ुदा तसर्रूफ़ करता है उसकी अक़्ल और क़ल्ब और तमाम कुव्वतों में और उन तमाम उमूर को अन्जाम देता है जिनको वो पसन्द करता है और राज़ी होता है बन्दा अपने मौला की मशियत के मुताबिक़ हर काम करता है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है (तुम वही चाहते हो जो अल्लाह चाहता है) और इस आयत की तावील में वारिद हुआ है कि वो चाहता है दाख़िला ग़वमिज़ अख़्यार में मआविल हुक्म व असरार में अईम्मए अख़यार में हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया है मोमिन का क़ल्ब ख़ुदाए रहमान की दो उॅगलियों के दरमियान है जिस तरफ़ उसे चाहता है फिरा देता है और इसी तरह ख़ुदा का तसर्रूफ़ तमाम आज़ा व जवारेह में होता है जैसा कि रसूल स. से फ़रमाता है ये ख़ाक तुमने मुशरिकीन की तरफ़ नहीं फेंकी है और फ़रमाता है (जिन लोगों ने तुमसे बैअत की बेशक उन्होंने अल्लाह से बैअत की अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर था इस बिना पर उनकी इताअत अल्लाह की इताअत है और उनकी मअसीयत अल्लाह की मअसीयत है, अब मतलब वाज़ेह हो गया हदीसे बाला में इन अल्फ़ाज़ का, मैं उसके कान, ऑख, ज़बान और हाथ बन जाता हूॅ उसी तरह तमाम आज़ा व जवारेह मर्दे

आरिफ़ के नूरबानी से ज़ियाबार हो जाते हैं और तमाम आज़ा की हरकत मौकूफ़ हो जाती है तदबीरे इलाही पर जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है फ़नुयस्सेरोह लिल्युसरा।

और मोहिक़्क़े तूसी नव्वरल्लाहो म. ने फ़रमाया है आरिफ़ जब मामलाते दुनिया से अपने नफ़्स को क़तए कर लेता है और हक़ इरतेसाल कर लेता है तो वो देखता है कि उसकी हर कुदरत उस कुदरत के बहरे मोहब्बत में डूबी हुई है जो मुतअल्लिक़ है तमाम मक़दूरातसे और हर इल्म ग़र्क़ है उस इल्म में जिससे मौजूदात की कोई शै पोशीदा नहीं और उसका हर इरादा मुतफ़र्रिक़ हो जाता है और उस इरादे में जिसकी मुम्किनात की हर शै वुजूद में आती है उस मंज़िल पर हक़ उसकी बसर बन जाता है जिससे वो देखता है और कान बन जाता है जिससे वो सुनता है और उसकी कुदरत बनता है जिससे वो काम करता है और इल्म बनता है जिससे वो जानता है पस इस हालत में आरिफ़े कामिल फ़िल हक़ीक़त अख़्लाक़े इलाहिया से आरास्ता हो जाता है।

9. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स. ने जिसने बन्दए मोमिन को ज़लील किया और उसकी उसरत व तंगी के सबब उसे ज़लील व हक़ीर जाना अल्लाह तआला रोज़े क़यामत तमाम मख़लूक़ के सामने उसे मुश्तहिर करेगा यानी बदी की अलामत उसके चेहरे पर नुमाया करके लोगों पर ज़ाहिर कर देता है।

10. फ़रमाया हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया शबे मेराज पसे परदा ख़ुदा ने मुझपर वही की जो चाहा और मुझसे बेवास्ता कलाम किया। ऐ मोहम्मद! जिसने मेरे दोस्त को ज़लील किया उसने मुझसे जंग की और जिसने मुझसे जंग की मैं भी उससे जंग करूँगा ऐ मेरे रब ये तेरा कौन दोस्त है ये मैंने जान लिया जो तुझसे जंग करेगा तू भी उससे जंग करेगा लेकिन वो दोस्त कौन है ये नहीं जाना। फ़रमाया मैंने

रोज़े अलस तुम्हारी और तुम्हारे वसी और तुम्हारी औलाद की विलायत का अहद लिया है (जो इसके ख़िलाफ़ करेगा वही दुश्मन है)

11. फ़रमाया हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जिसने मेरे बन्दए मोमिन को ज़लील किया वो मेरी जंग पर आमादा हुआ। मेरा तरद्दुद किसी शै जिसका मैं फ़ाएल हूँ ऐसा नहीं जैसा उस बन्दए मोमिन के मुतअल्लिक़ जिसकी लेक़ा को मैं दोस्त रखता हूँ और वो मौत से कराहियत करता है मैं उसको इससे हटा देता हूँ जब वो मुझ से दुआ करता हे-तो मैं जो अम्र उसके लिए बेहतर होता है उसे कुबूल कर लेता हूँ।

दो सौ चौहत्तर वॉ बाब
उन लोगों के बारे में जो दूसरे के एब ढूँडते हैं

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कुफ़्र से ज़्यादा ये क़रीब है कि कोई किसी को दीनी भाई बनाए फिर उसकी ग़लतियाँ और लग़ज़िशें शुमार करे ताकि किसी रोज़ उनकी वजह से उनपर ज़ुल्म करे।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ऐ वो लोगो जो सिर्फ़ ज़बान से इस्लाम लाए हो और ईमान ख़ुलूस के साथ उनके दिल में नहीं उतरा। मुसलमानों की मज़म्मत न करो वरना ख़ुदा तुम्हारे पोशीदा ऐब निकाल खड़ा करेगा और तुम ज़लील हो जाओगे चाहे अपने घर ही में क्यों न हो।

3. इसका तर्जुमा हदीसे अव्वल में गुज़रा है।

4. रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया एक वो लोगो जो ज़बान से इस्लाम लाए दिल से कुबूल न किया मुसलमानों की लग़ज़िशें तलाश न करो जो ऐसा करेगा अल्लाह उसके ऐब ज़ाहिर कर देगा और वो रूस्वा होकर रहेगा।

5. रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया मोमिनीन की ख़ताओं को तलाश न करो जो अपने भाई की ग़लतियाँ तलाश करेगा अल्लाह उसकी ग़लतियाँ उजागर कर देगा और ख़ुदा ने जिसकी ग़लतियाँ उजागर कीं तो चाहे अपने घर ही में क्यों न हो वो रूस्वा होकर रहेगा।

6. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया किस क़द्र क़रीब है ये कि एक शख़्स किसी को अपना दीन भाई बनाए और फिर उसकी ख़ताओं को जमा करे ताकि उसको ऐब रगाए और सरज़निश करे।

7. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने सबसे ज़्यादा ख़ुदा से दूर रहने वाली बात ये है कि एक शख़्स किसी को अपना दीनी भाई बनाए और फिर उसकी ग़लतियाँ याद करे इसके लिए एक दिन उसे ऐब लगाए और सरज़निश करे।

दो सौ पचहत्तर वॉ बाब

मज़म्मत सरज़निशे मोमिन

1. फ़रमाया इमाम इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो कोई बन्दए मोमिन की सरज़निश करेगा ख़ुदा उसको दुनिया और आख़ेरत में सरज़निश करेगा।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने बद काम को शोहरत दी वो उसकी मानिन्द हे जिसने उसकी इब्तिदा की और जिसने किसी काम पर मोमिन की सरज़निश की। मरने से पहले वो उसका मुतर्किब होगा।

3. जिसने मोमिन को किसी फ़ेल पर सरज़निश की वो मरने से पहले इसका मुतर्किब होगा।

4. फ़रमाया इमाम इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो बन्दए मोमिन को सरज़निश करने आएगा अल्लाह दुनिया व आख़ेरत में उसे सरज़निश करेगा

दो सौ छियत्तर वॉ बाब

ग़ीबत व बोहतान

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया ग़ीबत मर्दे मुसलमान के दीन को इस तरह हलाक करती है जिस तरह सरतान (केंसर) किसी के पेट में हो और उसे हलाक कर दे और ये भी फ़रमाया कि मस्जिद के अन्दर इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठना इबादत है जब तक नया अम्र वाक़ेअ न हो लोगों ने पूछा वो क्या फ़रमाया ग़ीबत गोई न हो।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने किसी मोमिन के बारे में हर वो बात कह दी जो ऑख से देखी या कान से सुनी हो तो वो उन लोगों में से है जिनके बारे में ख़ुदा फ़रमाता है वो उस बात को दोस्त रखते हैं कि मोमिनो के मुतअल्लिक़ बुरी बातें मशहूर करें ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

3. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से ग़ीबत के मुतअल्लिक़ पूछा फ़रमाया वो ये है कि तुम अपने दीनी भाई के मुतअल्लिक़ वो बात बयान करो जो उसने न की हो और ऐसा अम्र इसके लिए साबित करो जिसको अल्लाह ने छुपाया हो और उसपर हदे शरई न लगाई गयी हो।

4. हज़रत रसूले ख़ुदा स. से किसी ने पूछा ग़ीबत का कफ़्फ़ारा क्या है फ़रमाया जिसकी ग़ीबत की जब भी उसकी याद आए उसके लिए ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करो।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने किसी मोमिन या मोमिना पर तोहमत रखी ख़ुदा उसे रोज़े क़यामत तीनते ख़बाल से उठाएगा पूछा तीनते ख़बान क्या है फ़रमाया वो पीप है जो ज़िनाकार औरतों की शर्मगाहों से निकलेगी।

6. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने जो किसी की पसे पुश्त ऐसी बुराई बयान करे जो लोगों में मशहूर हो गयी हो और

उसने की भी हो तो उसने ग़ीबत न की और ऐसी बुराई बयान करे जो उसने की हो मगर मशहूर न हुई हो तो ये ग़ीबत होगी और जिसने ऐसी बात बयान की जो उसने की न हो तो ये बोहतान है।

7. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने ग़ीबत ये है कि तुम अपने भाई के बारे में बुरी बात कहो जिसको अल्लाह ने छुपाया हो लेकिन जो ग़ीबत खुल्लम खुल्ला हो तुन्द मिजाज़ी या जल्द बाज़ी तो वो ग़ीबत नहीं।

दो सौ सतहत्तर वॉ बाब

नक़्ले सुख़न हर मोमिन

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो कोई बन्दए मोमिन के मुतअल्लिक़ ऐसी रिवायत बयान करता है जिससे उसके ऐब ज़ाहिर हों उसकी मुरव्वत ख़त्म हो जाए और लोगों की निगाहों में उसका वक़ार ख़त्म हो जाए तो अल्लाह उसको अपनी विलायत से निकाल कर विलायते शैतान में दाख़िल करता है और शैतान भी उसको कुबूल नहीं करता।

2. अब्दुल्लाह बिन सनान से मरवी है कि मैंने हज़रत से कहा क्या औरत मोमिन, मोमिन पर हराम है फ़रमाया हॉ मैंने कहा क्या इससे मुराद आपकी। दोनों शर्मगाहें हैं। फ़रमाया ऐसा नहीं है बल्कि इससे मुराद है किसी मोमिन का राज़ खोलना।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने औरत मोमिन, मोमिन पर हराम है लेकिन उससे मुराद ये नहीं कि शर्मगाह खोलकर उसका कोई हिस्सा देखे बल्कि इससे मुराद ये है कि उसके मुतअल्लिक़ कोई ऐसी बात बयान करे जिससे उसका ऐब ज़ाहिर हो।



दो सौ अठहत्तर वॉं बाब

शमातत

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अपने भाई की मुसीबत पर इज़हारे ख़ुशी न करो वरना अल्लाह उसपर रहम करेगा और वो मुसीबत तुमपर नाज़िल हो जाएगी और येभी फ़रमाया जो अपने भाई की मुसीबत पर शमातत करेगा वो दुनिया से न जाएगा जब तक किसी आज़माईश में न पड़ जाए।

दो सौ उन्नासी वॉं बाब

सब्बाब (गल्यारा)

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया मोमिन को गाली देने वाला अपने को जहन्नुम के किनारे पहुँचाने वाला है।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया मोमिन को गाली देने वाला सबसे बड़ा फ़ासिक़ है उससे लड़ना कुफ़्र है और उसकी ग़ीबत करना मअसीयत है और उसके माल का एहतराम इस तरह लाज़िम है जैसे उसके ख़ून का एहतराम लाज़िम है।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि बनी तमीम का एक शख़्स रसूलुल्लाह स. के पास आयाऔर कहा कि मुझे कुछ हिदायत फ़रमाईए पस मिन जुम्ला बातों के हज़रत ने ये भी फ़रमाया कि लोगों को गाली न दो क्यों कि उससे आपस में अदावत पैदा होती है।

4. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने जब दो आदमी आपस में एक दूसरे को गाली दे रहे हों तो इब्तिदा करने वाला ज़्यादा ज़ालिम होगा उसका और दसके दूसरे का गुनाह उसपर होगा जब तक वो मज़लूम से माफ़ी न मॉंगे।

5. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने अगर एक आदमी

दूसरे के कुफ़्र की गवाही दे तो उसमें से एक काफ़िर होगा अगर जिसके मुतअल्लिक़ कुफ़्र की गवाही दी है वो काफ़िर है तब तो ये सच्चा है अगर वो मोमिन है तो कुफ़्र उसकी तरफ़ रूजूअ करेगा पस अपने को मोमिनपर तअन करने से बचाओ।

6. रावी कहता है कि मैंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से और इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना कि जब कोई किसी पर लअन करता है तो अगर वो मुस्तहिक़े लअन है तो उसकी तरफ़ लौटती है और अगर नहीं तो लअन करने वाले की तरफ़ जाती है।

7. अबू हमज़ा समाली से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना कि लानत जब किसी के मुँह से निकलती है तो घूमती है दोनों के दरमियान अगर वो सहीह है तो ख़ैर वरना करने वाले की तरफ़ ऊद करती है।

8. फ़रमाया हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद स. ने जब कोई किसी मोमिन भाई के मुतअल्लिक़ कोई बुरी बात कहता है तो उसकी विलायत से ख़ारिज हो जाता है और जब कहता है तो मेरा दुश्मन है तो उनमें से एक काफ़िर होगा और अल्लाह किसी ऐसे मोमिन के अमल को कुबूल न करेगा जिसके दिल में अपने मोमिन भाई की तरफ़ से बदी छुपी हो।

8. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जिसने किसी मोमिन को उसके सामने तअना दिया वो बदतरीन मौत मरेगा और उसका सज़ावार होगा कि अम्रे नेक की तरफ़ रूजूअ न करे।



दो सौ अस्सी वॉ बाब

तोहमत व बदगुमानी

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो मोमिन अपने मोमिन भाई पर तोहमत लगाता है तो ईमान उसके दिल में इस तरह पिघल जाता है जैसे नमक पानी में।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने अपने दीनी भाई पर तोहमत लगाई तो उन दोनों के दरमियान हुर्मत बाक़ी न रहेगी जिसने अपने मोमिन भाई से वो बर्ताव किया जो मुख़ालिफ़ लोग करते हैं तो वो अपने दावए ईमानी से अलग हो जाएगा।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया अपने बरादरे मोमिन से बेहतरीन सुलूक करो जब तक इससे ऐसा अम्र सरज़द न हो जो तुम्हें आजिज़ बना दे और अपने भाई से बदगुमान न हो जब तक तुम उसे अमले ख़ैर करते पाओ।

दो सौ इक्यासी वॉ बाब

उसके बारे में जो अपने भाई को नसीहत न करे

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो कोई किसी मोमिन भाई की हाजत बरारी में सई करे लेकिन उसे नसीहत न करे तो उसने ख़ुदा और रसूल स. से ख़यानत की।

2. तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

3. अबू बसीर से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना कि हमारे असहाब में से अगर किसी से कोई तालिबे इम्दाद हो और वो उसकी पूरी तरह इम्दाद न करे तो उसने ख़ुदा और रसूल स. और मोमिनीन से ख़यानत की। अबू

बसीर ने कहा आपकी मोमिननीन से क्या मुराद है फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन से इमामे आख़िर तक।

4. रावी ने कहा मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना जिसने बरादरे मोमिन की हाजत बरारी में सई की और उसको नसीहत न की वो उसकी मिस्ल है जिसने अल्लाह व रसूल स. से ख़यानत की। अल्लाह उसका दुश्मन है।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो कोई अपने बरादरे मामिन से मशवरा करे और वो सच्ची राए उसे न दे तो अल्लाह तआला उसकी अक़्ल को सल्ब कर लेता है।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो बन्दए मोमिन की हाजत बरारी के लिए चले और उसको नसीहत न करे तो उसने खुदा और रसूल स. से ख़यानत की।

दो सौ बयासी वॉ बाब

ख़ुल्फ़ वअद

1. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना कि मोमिन से मोमिन का वादा करना एक क़िस्म की नज़र है जिसका कफ़्फ़ारा नहीं। जिसने वादा के ख़िलाफ़ किया उसने अल्लाह से ख़ुल्फ़े वअद किया उसने अल्लाह से ख़ल्फ़े वअद की इब्तिदा की और ख़ुदा से दुश्मनी पर आमादा हुआ ख़ुदा सूरः वस्साफ़ह में फ़रमाता है ऐ ईमान लाने वालों! वो बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, ख़ुदा के नज़दीक सबसे बड़ी दुश्मनी की बात ये है कि कहो उसे पूरा न करो।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि जब वादा करे उसे पूरा को।



दो सौ तेरासी वॉ बाब

उसके बारे में जिससे बरादरे मोमिन मिलने आए और न मिले

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो मोमिन बरादरे मोमिन के इज़ने दख़ूल से मानअ हो अल्लाह उसके और जन्नत के दरमियान सत्तर हज़ार दीवारें खड़ी कर देगा एक दीवार का फ़ासला दूसरी दीवार से एक हज़ार बरस की राह का होगा।

2. रावी कहता है मैं हज़रत इमाम रज़ा अ. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फ़रमाया ऐ मोहम्मद बिन सिनान ज़मानए बनी इस्राईल में चार शख़्स मोमिन थे उनमें से एक तीन से मिलने आया। वो एक घर में बातें कर रहे थे उस शख़्स ने दक़्कुल बाब किया एक गुलाम निकला उसने कहा तेरा आक़ा कहॉ है उसने कहा वो घर पर नहीं है वो शख़्स लौट आया। गुलाम जब आक़ा के पास आया तो उसने पूछा दक़्कुल बाब किसने किया था उसने कहा फ़लॉ ने, मैंने कह दिया आप घर पर नहीं हैं ये सुनकर वो चुप रहा और न परवाह की और न गुलाम को सरज़निश की और न उनमें से किसी को इस बात का रंज हुआ दूसरे दिन अलस्सुब्हा वो शख़्स फिर आया और उनसे मिला वो किसी के खेत पर जाने का इरादा कर रहे थे उसने सलाम किया और कहा कि मैं भी आप लोगों के साथ चलता हूॅ उन्हों कहा अच्छा। उससे माफ़ी न मॉगी ये शख़्स मर्दे मोहताज था राह में जा रहे थे कि बादल सर पर छाया वो समझे बारिश आ रही है चाल तेज की जब बादल उनके सरो पर छा गया तो उसके अन्दर से एक मुनादी ने निदा की कि ऐ आग इन को पकड़ ले मैं जिब्राईल अल्लाह का रसूल हूॅ नागहॉ आग बादल से निकली और उन तीनों को जला दिया। वो शख़्स इस हादसे से ख़ौफ़ज़दा और मुतअज्जिब बाक़ी रहा उसे पता न

चला कि इसका सबब क्या है शहर के अन्दर आया तो यूशाअ बिन नून से मुलाक़ात हुई। उसने जो कुछ देखा और सुना था उसने से बयान किया। उन्होंने फ़रमाया तुझे मालूम नहीं ये उनपर ख़ुदा का गुस्सा था उस अमल पर जो उन्होंने तेरे साथ किया था उसने कहा वो क्या अमल था हज़रत यूशा ने बयान किया। उसने कहा मैंने ख़ुदा के लिए उनको माफ़ कर दिया फ़रमाया ये माफ़ी पहले होती तो उनके लिए फ़ायदा बख़्श होती अब तो आख़ेरत ही में काम आएगी।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अगर एक मोमिन दूसरे मोमिन से मिलना पसन्द न करे तो उसके और जन्नत के दरमियान सत्तर दीवारें हाएल होंगी और हर दीवार एक हज़ार साल की मसाफ़त के बराबर मोटी होगी और एक फ़ासला दूसरी से हज़ार साला राह की मसाफ़त पर होगा।

4. अबू हमज़ा से मरवी है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से मैंने कहा अगर एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के पास आता है उससे मुलाक़ात करके कोई ज़रूरत पूरी करने के लिए और वो अपने घर पर मौजूद होता है और अन्दर आने की इजाज़त चाहता है और वो इजाज़त नहीं देता और घर में से नहीं निकलता तो आप उसके मुतअल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं फ़रमाया ऐ अबू हमज़ा जो ऐसा करेगा उसपर अल्लाह की लअनत होती रहेगी जब तक वो मिलें नहीं मैंने कहा अल्लाह की लअनत होगी फ़रमाया ऐ अबू हमज़ा।



दो सौ चौरासी वॉ बाब

उसके बारे में जिससे उसका भाई मदद चाहे और न करे

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो अपने मोमिन भाई की एआनत या उसकी हाजत बर लाने में बुख़्ल करेगा तो वो मुब्तिला होगा ऐसे शख़्स की मदद पर जिसकी मदद से वो गुनाहगार होगा और उस नेकी का कोई अज्र न पाएगा।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने हमारे शियों में अगर किसी के पास कोई बरादरे मोमिन आए और अपनी किसी ज़रूरत में मदद चाहे और वो बावजूद करने के क़ाबिल होने के मदद न करे तो ख़ुदा उससे सल्बे तौफ़ीक़ करके हमारे दुश्मनों में से किसी की मदद कराता है ताकि उसे रोज़े क़यामत तक अज़ाब में मुब्तिला रखे।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो कोई बरादरे मोमिन की एआनत और उसके बारे में सई व हमदर्दी छोड़ देता है ख़ुदा उसको ऐसे शख़्स की एआनत में मुब्तिला करता है जिसकी एआनत गुनाह हो और कोई अज्र न रखे।

4. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ. ने जिसके पास उसका मोमिन भाई बाज़ हालात में तालिबे पनाह हो और वो बावजूद क़ुदरत उसे पनाह न दे तो वो विलायते ख़ुदा से ख़ारिज हो जाता है।

दो सौ पच्चासी वॉ बाब

जो कोई बरादरे मोमिन न ख़ुद कोई चीज़ दे न दूसरों को देने दे

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो कोई बन्दए मोमिन को बावजूद क़ुदरत रखने के न ख़ुद कोई शै दे न दूसरों से दिलाए तो वो रोज़ क़यामत इस तरह महशूर होगा काला मुँह नीली ऑखें दोनों हाथ गर्दन से बंधे हुए लोग पूछेंगे

ये कौन है कहा जाएगा ये वो ख़ाएन है जिसने ख़ुदा और रसूल स. से ख़यानत की फिर उसे जहन्नुम में डालने का हुक्म दिया जाएगा।

2. रावी कहता है हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया ऐ यूनुस जिसने हक़े मोमिन को रोका अल्लाह तआला उसको रोज़े क़यामत पाँच सौ साल तक खड़ा रखेगा यहाँ तक कि पसीना या ख़ून (बलेहाज़े गुनाह) उसके पैरो से बहेगा और एक मुनादी निदा करेगा ये वो है जिसने अल्लाह का हक़ रोका फिर वो चालीस रोज़ सरज़निश करने के बाद दोज़ख़ में डाल

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसके पास घर था और बरादरे मोमिन उस घर का मोहताज हो और वो उसको रिहाईश के लिए न दे तो ख़ुदा फ़रमाता है ऐ मेरे मलाएका! इस बन्दे ने मेरे बन्दे को दुनिया में घर न दिया मुझे इज़्ज़तो जलाल की क़सम है कि मैं इसको अपनी जन्नत में हरगिज़ जगह न दूंगा।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. ने जिसके पास कोई बरादरे मोमिन अपनी हाजत लेकर आए तो ये अल्लाह की रहमत है उसने उस मोहताज को उसके पास भेजा उसने उसकी ज़रूरत पूरी कर दी तो उसको हमारी और अल्लाह की मदद हासिल हुई और अगर उसको रद कर दिया दराँहालाकि उसको बजा लाने की कुदरत थी तो ख़ुदा उस पर एक अज़दहा मुसल्लत करेगा अगा का बना हुआ जो रोज़े क़यामत तक उसको नोचता रहेगा मग़फूर हो या मअज़ूब और अगर तालिबे उज्रख़्वाह तो और बुरा हाल होगा और ये भी फ़रमाया जो किसी के पास किसी ख़ास मुसीबत में तालिबे पनाह होकर आए तो बावजूद कुदरत मदद न करे तो अल्लाह की मदद उससे मुन्क़ता हो जाएगी।



दो सौ छयासी वॉ बाब

जो मोमिन को डराए

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया जो किसी मोमिन को ख़ौफ़ज़दा करने की नीयत से देखे तो उसको अल्लाह उस ख़ौफ़ज़दह बनाएगा जिस रोज़ सिवाए उसकी पनाह के कोई पनाह न होगी।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो किसी मोमिन को बादशाह से डराए ताकि उसपर कोई मुसीबत आ जाए पस अगर वो महफ़ूज़ रहे तब तो डराने वाला जहन्नुम में जाएगा और अगर उसे कोई मुसीबत पहुँच गयी वो वो फ़िर्औन और आले फ़िर्औन के हमराह जहन्नम में जाएगा।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जो मोमिन के ख़िलाफ़ ज़रा सी भी कोशिश करेगा रोज़े क़यामत उसकी पेशानी पर लिखा होगा मेरी रहमत से मायूस।

दो सौ सतासी वॉ बाब

चुग़लख़ोरी

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें बताऊँ तुममें बदतरीन इन्सान कौन है लोगों ने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह स. फ़रमाया चुग़लख़ोर, लोगों में जुदाई डालने वाला, मआएब से बरी होने से बग़ावत करने वाला।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने हराम है जन्नत बातों पर कान लगाने वाले चुग़लख़ोरों पर।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया बदतरीन इन्सान चुग़लख़ोर, अहिब्बा में तफ़र्क़ा डालने वाले और गुनाहों की बराअत से बग़ावत करने वाले।

दो सौ अट्ठासी वॉ बाब

इफ़शए राज़

1. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना खुदा ने सरज़निश की है मुनाफ़िक़ों को इफ़शए राज़ के मुतअल्लिक़ अपने इस क़ौल में "जब उनके लिए कोई मामला अमन या ख़ौफ़ का होता है तो वो उसको इफ़शा कर देते हैं" पस अपने को इफ़शए राज़ से बचाओ।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने हमारा इफ़शए राज़ किया ऐसा है गोया हमारे हक़ से इन्कार किया और मोअल्ला बिन ख़ूनैस से फ़रमाया हमारी बात को दूसरों (मुख़ालिफ़ो) से बयान करने वाला उससे इन्कार करने वाले की मानिन्द है।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया बदतरीन इन्सान चुग़लख़ोर, अहिब्बा में तफ़र्क़ा डालने वाले और गुनाहों की बराअत से बग़ावत करने वाले।

4. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने जिसने हमारी हदीस का अफ़शा किया अल्लाह ने उसके ईमान को सल्ब कर लिया।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रोज़ क़यामत एक ऐसा शख़्स लाया जाएगा जिसने किसी का ख़ून न बहाया होगा उसकी तरफ़ एक हजामत बनाने का आला या उससे बड़ी चीज़ बढ़ाकर कहा जाएगा ले ये है ये हिस्सा फ़लॉ का ख़ून बहाने के सिलसिले में वो कहेगा परवरदिगार तू जानता है कि मरते दम तक मैंने किसी का ख़ून न बहाया था खुदा फ़रमाएगा हॉ लेकिन तूने फ़लॉ से बात सुनी थी तूने उसको नुक़सान पहुँचाने के लिए दूसरों से बयान किया वो नक़्ल होते होते फ़लॉ ज़ालिम तक पहुँची जिसने उसको क़त्ल कर दिया लेहाज़ा ये तेरा हिस्सा है उसके ख़ून से।

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने इस आयत की तिलावत की "ये सज़ा उनको इसलिए दी गयी है कि वो आयाते इलाही से इन्कार करते थे और नबियों के बेगुनाह क़त्ल करते थे इसलिए कि वो नाफ़रमान थे हद से तजावुज़ करने वाले फिर फ़रमाया वल्लाह उन्होंने अपने हाथों से क़त्ल किया था न तलवारों से मारा था बल्कि उन्होंने अम्बिया से अहादीस सुनकर इफ़शाए राज़ किया था जिसपर वो पकड़े गये और क़त्ल किये गये ये भी क़त्ल ही था और तजावुज़ करना और मअसीयत में मुब्तिला होना।

7. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ "वो अम्बिया को बेगुनाह क़त्ल करते थे" वल्लाह उन्होंने तलवारों से क़त्ल नहीं किया अपने अम्बिया के भेद लोगों पर ज़ाहिर किये और इफ़शाए राज़ किये जिसकी बिना पर वो क़त्ल किये गये।

8. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने अल्लाह तआला ने सरज़निश की है लोगों को इफ़शाए राज़ पर जैसा कि फ़रमाता है "जब उनके सामने कोई मामला अमन या ख़ौफ़ का आया तो उन्होंने इफ़शा कर दिया" अपने को इफ़शाए राज़ से बचाओ।

9. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने हमें ज़रर पहुँचाने के लिए हमारे मामलात का कोई जुज़ भी इफ़शा किया तो गोया अमदन उसने हमको क़त्ल किया न कि ख़ताअन।

10. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना हमारे राज़ों को इफ़शा करने वाला हमारी इमामत में शक करने वाला है और नाअहलों से उसका बयान करने वाला काफ़िर है और ने जिसने ख़ुदा की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लिया वो निजात पाने वाला है मैंने पूछा उर्वतुल वुस्क़ा क्या है फ़रमाया हमारे अम्रे इमामत को तस्लीम करना।

11. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अल्लाह

तआला ने दीन में दो हुकूमतें करार दी हैं हुकूमते आदम अ. हुकूमते इब्लीस। जब ख़ुदा चाहता है कि उसकी इबादत ऐलानिया हो (हाकिमे अदल की हुकूमत में) तो ये हुकूमते आदम है और जब चाहता है कि लोग छुपकर इबादत करें (ज़ालिम हुक्मरानों के ख़ौफ़से) तो ये इब्लीसी हुकूमत है ऐसी बात का ज़ाहिर करने वाला जिसे ख़ुदा छुपाना चाहे अपने दीन का बरबाद करने वाला है।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने जिसने इस हाल में सुब्हा की कि वो हमारे भेद का ज़ाहिर करने वाला है तो ख़ुदा उसपर मुसल्लत करता है गर्म लोहे को और तंग क़ैद ख़ानों को।

दो सौ नवासी वॉ बाब

मअसीयते ख़ुदा के साथ इताअते मख़लूक़ करना

1. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसने ख़ुदा को नाराज़ करके मख़लूक़ की रज़ा चाही ख़ुदा उसकी तारीफ़ करने वाले को उसकी बुराई करने वाला बना देता है।

2. जाबिर ने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से रिवायत की है कि फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने जिसने ख़ुदा को नाराज़ करके मख़लूक़ को राज़ी किया अल्लाह उसके मद्दाह को उसका मज़म्मत करने वाला बना देगा जिसने अल्लाह की इताअत में मख़लूक़ को नाराज़ किया अल्लाह हर दुश्मन की अदावत से हर हासिद के हसद से और हर बाग़ी की बग़ावत से उसे बचाएगा और उसका ज़रूर मद्दगार होगा।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने एक शख़्स ने इमाम हुसैन अ. को लिखा कि मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईए हज़रत ने तहरीर फ़रमाया जो मअसीयते ख़ुदा का क़स्द करेगा वो सबसे ज़्यादा खोने वाला होगा अपनी उम्मीद का और जिस चीज़ से डरता है बहुत जल्द उसके सामने आएगी।

4. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो ख़ुदा के

नाफ़रमान बन्दे की इताअत से क़रीब हुआ उसका दीन गया जो बातिल से जा मिला उसका दीन भी गया और जिसने किसी आयत का भी आयाते इलाही से इन्कार किया उसका दीन भी रूख़सत हुआ।

5. हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया जिसने मर्ज़ीए सुल्तान हासिल करने के लिए ख़ुदा का ग़ज़ब मोल लिया वो दीन से ख़ारिज हुआ।

दो सौ नव्वे वॉ बाब

दुनिया में गुनाहों की सज़ा

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया पॉच बातें ऐसी हैं कि अगर वो तुममें पैदा हो जाएं तो अल्लाह से पनाह मॉगो (1) जब किसी क़ौम में बिल ऐलान ज़िना होने लगे तो ताऊन और ऐसी बीमारियॉ फ़ैलेंगी जो उनके असलाफ़ के लिए न थीं (2) कम न तौला जाए वरना क़हत साली नमूदार होगी और ख़र्च में सख़्ती होगी बादशाह ज़ुल्म करेगा (3) ज़कात न रोकी जाए वरना बारिश रूक जाएगी चौपाए न होंगे तो एक क़तरा न बरसेगा और अहदे ख़ुदा को और अहदे रसूल स. को न तोड़ें वरना ख़ुदा उनके दुश्मन को उनपर मुसल्लत कर देगा और उनका कुछ माल लूट लेगा (5) जो अहकाम अल्लाह ने नाज़िल किए हैं उनके ख़िलाफ़ फ़ैसला न करो वरना अल्लाह उनके ख़ौफ़ व हिरास पैदा कर देगा।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि रसूलुल्लाह स. की किताब में मैंने देखा जब मेरे बाद ज़िना का ज़ोर होगा तो मर्गे मफ़ाजात ज़्यादा होगी और जब लोग कम तौलें और नापेंगे तो क़हत साली होगी और जब ज़कात न देंगे तो खेती और फलों की बरकत उठ जाएगी और जब अहकाम में जोर करेंगे तो ज़ुल्म व बग़ावत में मद्‌दगार हों जब नक़्स अहद करेंगे तो

अल्लाह उनका दुश्मन उनपर मुसल्लत करेगा ओर जब क़तए रहम करेंगे तो उनके अमवाल शरीरों के क़ब्ज़े में आ जाएंगे और जब अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर न करेंगे और मेरे अहले बैत की पैरवी न करेंगे तो ख़ुदा उन पर शरीरों को मुसल्लत करेगा वो नेकों को पुकारेंगे मगर वो जवाब न देंगे।

दो सौ इक्यानवे वॉ बाब

गुनाहगारों से हमनशीनी

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मोमिन को नहीं चाहिए कि वो ऐसे जल्से में बैठे जिसमें लोग अल्लाह की नाफ़रमानी करते हों और उनके बाज़ रखने पर क़ादिर न हो।

2. जाफ़री रावी कहता है कि मैंने हज़रत इमाम अली नक़ी अ. से सुना उन्होंने मुझसे फ़रमाया क्या बात है कि मैं तुम को अब्दुर्रहमान बिन याक़ूब के साथ देखता हूँ मैंने कहा वो मेरा दोस्त है फ़रमाया वो ख़ुदा की तारीफ़ उसके गैर वस्फ़ के साथ करता है पस या तो तुम उसके साथ रहो या हमें छोड़ दो या हमारे साथ रहो उसको छोड़ दो मैंने कहा वो जो चाहे कहे मुझसे क्या तअल्लुक़ जो वो कहता है मैं नहीं कहता। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम इससे से नहीं डरते कि अगर कोई अज़ाब उसपर नाज़िल हो तो तुम भी उसकी लपेट में आ जाओ क्या तुम्हें इल्म नहीं कि एक शख़्स असहाबे मूसा में ऐसा था जिसका बाप फ़िर्औन के साथ था जब लश्करे फ़िर्औन मूसा से जा मिला तो लश्करे मूसा से निकला ताकि अपने बाप को नसीहत करे और फ़िर्औन को छोड़कर मूसा से जा मिले। वो अपने बाप के पास आया और मज़हबे बातिला में मुबालेग़ा किया यहाँ तक कि वो दोनों बातें करते दरबार के किनारे तक पहुँचे और दोनों डूब गये। जब जनाबे मूसा को मालूम हुआ तो फ़रमाया उसपर रहमते ख़ुदा होगी; लेकिन अज़ाब जब नाज़िल होता है तो गुनाहगार के जो क़रीब होता है वो भी लपेट में आ जाता है।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने बिदअत पसन्दों के मुसाहिब न बनो और उनके पास न बैठो वरना लोग तुमको भी उन्हीं में से जानेंगे रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है और अपने हमनशीन के।

4. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद स. ने जब तुम अहकामे शरई में शक करने वालों और बिदअत पसन्दों को मेरे बाद देखो तो उनसे अपनी बराअत ज़ाहिर करो और अपने दिल में अक्सर उनको बुरा कहो और उनके मज़हब के इबताल में गुफ़्तगू करो ताकि वो इस्लाम में फ़िसाद बरपा करने की तमअ न करें और लोगों को उनसे डराओ और उनसे बिदअत को न सीखो ऐसा अमल करने पर अल्लाह तुम्हारे लिए हस्नात लिखेगा और आख़ेरत में तुम्हारे दरजात बुलन्द करेगा।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मुसलमानों को नहीं चाहिए कि वो बदकार आदमी से भाईचारा करें और न अहमक़ और बहुत ज़्यादा झूठ बोलने वाले से।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया मुसलमान के लिए सज़ावार है कि परहेज़ करे दोस्ती से तीन शख़्सों की अव्वल वो जिसे क़ौल व फ़ेल की परवाह न हो। दूसरे अहमक़, तीसरे बहुत ज़्यादा झूठा। पहला अपने फ़ेल को तुम्हारी नज़र में ज़ीनत देगा और तुमको अपने जैसा बनाना पसन्द करेगा और तुम्हारे अम्रे दीन और अम्रे क़यामत तुम्हारी मदद न करेगा और उसकी हमनशीनी ज़ुल्म और संगदिली है और उसका तुम्हारे पास आना जाना बाएसे शर्म है दूसरे अहमक़ ये तुम्हें कोई अच्छा मशवरा न देगा और तुमसे किसी बदी का दफ़ा न करेगा अगरचे कितनी ही कोशिश करे बसा औक़ात तुमको फ़ायदा पहुँचाना चाहेगा। लेकिन पहुँचा देगा नुक़्सान उसका मरना ज़िन्दगी से बेहतर है उसकी ख़ामोशी नुत्क़ से बेहतर है उसकी

दूसरी नज़दीकी से बेहतर है तीसरे ज़्यादा झूठा उसका तुम्हारे साथ रहना दुरूस्त नहीं, वो तुम्हारी बात दूसरों से बयान करता है और दूसरों की तुमसे जब कोई अजीब बात ख़त्म करता है अगर सच भी बोलता है तो उसमें भी झूठ मिला देता है और लोगों के दरमियान अदावत पैदा कर देता है और उनके सीनों में हसद और कीना का बीज बोता है पस अल्लाह से डरो और अपने नफ़्सों पर नज़र कर लो ताकि तुम में हसद और कीना न पैदा हो जाए।

7. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अपने पदरे बुज़ुर्गवार से रिवायत की है कि मुझसे अली बिनिल हुसैन अ. ने फ़रमाया पॉच क़िस्म के लोगों पर नज़र रखो न तो उनके पास बैठो और न उनसे बातचीत करो और न राह में उनके साथ चलो मैंने पूछा वो कौन हैं फ़रमाया झूठे की मुसाबेहत से बचो कि वो मिस्ल सराब के है वो बईद को तुम्हें क़रीब बताएगा क़रीब को दूर। अपने को फ़ासिक़ से बचाओ कि वो माले दुनिया या उससे भी कम क़ीमत चीज़ पर तुम्हारे दीन को बेच डालेगा और अपने को बख़ील की सोहबत से बचाओ कि वो अपने माल से तुम्हें महरूम रखेगा जबकि तुमको उसकी शदीद एहतियाज होगी और अहमक़ की सोहबत से बचो वो तुम्हें नफ़ा पहुँचाना चाहे और अमदन पहुँचा देगा नुक़सान, और अपने को क़ातेए रहम से बचाओ मैंने किताबे ख़ुदा में उसको तीन जगह मलऊन पाया है अव्वल अन्क़रीब जब तुमको हुकूमत मिल जाए तो वो रूए ज़मीन पर फ़साद बरपा करोगे और क़ातेए रहम करोगे ऐसे लोगों पर ख़ुदा की लानत है ख़ुदा ने उनको अन्धा और बहरा बना दिया है और दूसरी जगह फ़रमाया है वो ख़ुदा से किए हुए अहद को तोड़ देते हैं और जिनसे मिलने का हुक्म दिया है उनसे क़तेए रहम करते हैं और रूए ज़मीन पर फ़साद बरपा करते हैं और उनपर ख़ुदा की लानत है और उनके लिए बुरा घर है और सुरः बक़र

में फ़रमाया है वो अहदे इलाही को पुख़्ता करने के बाद तोड़ देते हैं और वस्ल की जगह क़तेए रहम करते हैं और रूए ज़मीन पर फ़साद करते हैं यही ख़िसारा पाने वाले हैं।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा तुमपर किताब में ये नाज़िल किया गया है जब तुम किताबे ख़ुदा को सुनो तो उसका इन्कार करोगे और उसका मज़ाक़ उड़ाओगे। फ़रमाया इससे मुराद ये है कि जब तुम किसी के मुतअल्लिक़ ये सुनो कि उसने हक़ बात से इन्कार कर दिया है और झूठ बोलता है और अइम्मा अ. के मुतअल्लिक़ बुरी बातें कहता है तो तुम उसके पास से उठ खड़े हो और नतीजा जो कुछ हो उसके पास न बैठो।

9. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान लाने वाला ऐसे जल्से में नहीं बैठता जहाँ इमाम के नक़ाएस बयान हों या मोमिन के ऐब।

10. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान लाने वाला है वो तोहमत और शक की जगह कभी खड़ा न होगा।

11. तर्जुमा 9 में देखीए।

12. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स. ने तीन जल्से हैं जिनको अल्लाह दुश्मन रखता है और उसमें शिरकत करने वालों पर अज़ाब नाज़िल करता है लेहाज़ा तुम ऐसे लोगों के पास न बैठो और उनसे मजालेसत न करो अव्वल वो मजलिस जिसमें कोई अपने झूठे फ़त्वे और सूए ज़न व क़यास बयान करता है और वो मजलिस जिसमें दुश्मनों का ज़िक्र ताज़ा समझा जाता हो और उनकी मदह हो रही हो और हमारा ज़िक्र पुराना समझा जाता हो और हमारी मज़म्मत की जाती हो, तीसरे वो मजलिस जिसमें हमारे ज़िक्र से लोगों को रोका जाता हो दरॉहालाकि

तुम्हारे इल्म में ये बात हो। फिर हज़रत ने फ़िल फ़ौर तीन आयतें पढ़ीं गोया आपकी ज़बान या हाथ ही में थीं "तुम लोगों के बातिल मअबूदों को गालियॉ न दो वरना वो तुम्हारे ख़ुदा को अज़रूए जिहालत गालियॉ देंगे जब तुम देखोगे कि लोग हमारी आयात में क़यास व ज़न से काम लेकर इफ़्तिरा परदाज़ी कर रहे हैं तो वहॉ से हट जाओ ताकि उस मोज़ू को छोड़ कर किसी और गुफ़्तगू करने लगें और ऐसी बात न कहो जिससे तुम्हारी ज़बानें झूठ से मोसूफ़ हों और अपनी राए से न कहो कि ये हलाल है और ये हराम। वरना तुम अल्लाह पर इफ़्तेरा परदाज़ी करोगे।

13. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स. ने जब तुम नासिबियों में फॅस जाओ और मजबूरन उनके पास बैठना हो तो इस तरह अपने वहॉ से उठने तक बेचैन रहो गोया तुम जलते पत्थरों पर बैठे हो क्योंकि ख़ुदा ऐसे लोगों का दुश्मन है और उनपर लानत करता और जब देखो कि वो तुम्हारे इमाम की मज़म्मत कर रहे हैं तो वहॉ से खड़े हो जाओ क्योंकि अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होगा।

14. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो कोई ऐसे शख़्स के पास बैठे जो औलियाए ख़ुदा को गालियॉ दे रहा हो उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की।

15. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जो कोई ऐसी मजलिस में बैठेगा जहॉ इमाम को गालियॉ दी जाती हों और वो इन्तिक़ाम की क़ुदरत रखते हुए इन्तिक़ाम न ले तो दुनिया व आख़ेरत में ख़ुदा उसे ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा और अपनी बेहतरीन नेअमत जो हमारी मारफ़त है उसे सल्ब कर लेगा।

16. रावी कहता है मैंने यहया इब्ने उम्मुत्तवील को कनासा (महल्लए कूफ़ा) में खड़े देखा जो बआवाज़े बुलन्द कह रहा थाऐ दोस्ताने ख़ुदा जो तुम सुनते हो मैं उससे बरी हूँ जिसने अली अ.

को गाली दी उसपर ख़ुदा की लानत और हम बेज़ार हैं औलादे मरवान से .... वो ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हैं फिर उसने आवाज़ को धीमा करके कहा जो अली करे गालियॉ दे उसके पास मत बैठो और जो हमारे मज़हबे इमामिया में शक करे उससे बात न करो और जो मोमिन भाई तुमसे सवाल करे और तुमने क़ब्ले सवाल उसे न दिया तो तुमने ख़यानत की फिर ये आयत पढ़ी "हमने ज़ालिमों के लिए आग मुहय्या की है .... घेरे होगी और जब प्यासे होकर फ़रयाद करेंगे तो उनको पिघला हुआ तॉबा जैसा पानी दिया जाएगा जो उनके चेहरे भून देगा कैसा बुरा पीना है और कैसी बुरी.......... जगह है।

दो सौ बानवे वॉ बाब

असनाफ़े मर्दुम

1. रावी कहता है मुझसे हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने फ़रमाया कि लोग छः क़िस्म के हैं मैंने कहा इजाज़त हो तो मैं लिख लूँ फ़रमाया ज़रूर मैंने कहा लिखूँ फ़रमाया लिखो अहले वायदा व वईद जो जन्नत वाले हैं और दोज़ख़ वाले और लिखो एक गिरोह वो है जिसने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया और नेको बद आमाल को मिला दिया मैंने पूछा वो कौन हैं फ़रमाया वो हैं जो गुनाहों से वहशत करते हैं और गुनाहों से उनकी नेकियॉ ज़्यादा हैं फ़रमाया लिखो एक गिरोह बख़्शिशे इलाही के उम्मीदवारों का है ख़ुदा चाहे गा तो उनपर अज़ाब करेगा और चाहेगा तो उनकी तौबा क़ुबूल करेगा और फ़रमाया लिखो एक गिरोह ज़ईफ़ुल एतक़ात मर्दो, औरतों और बच्चों का है जो अपनी अक़्ल की कमज़ोरी से न गुनाह से बचने की तदबीर करते हैं और न सही रास्ते की तरफ़ हिदायत पाते हैं (यानी न तो वो कुफ़्र से बचने के अहलियत रखते हैं न राहे रास्त पर आने की) मुमकिन है ख़ुदा उनके गुनाह माफ़ कर दे और लिखो एक गिरोह असहाबे आराफ़ का है मैंने पूछा ये कौन लोग हैं

फ़रमाया जिनके हस्नात व सईयात बराबर हैं अगर वो दोज़ख़ में जाएंगे तो अपने गुनाहों की बदोलत और अगर जन्नत में जाएंगे तो अल्लाह की रहमत से।

2. फ़रमाया इमाम जाफरे सादिक़ अ. ने लोगों के छः गिरोह हैं जिनके तीन फ़िरक़े बनते है ईमान वाले, कुफ़्र वाले, ज़लालत वाले, वादा व वईद वाले यही लोग हैं जिनसे अल्लाह ने जन्नत व दोज़ख़ का वादा किया है मोमिन हैं, काफ़िर हैं, ज़ईफुल ईमान हैं और अम्रे ख़ुदा के उम्मीदवार हैं चाहे उनको अज़ाब दे या तौबा कुबूल करे और एक गिरोह अपने गुनाहों का एतराफ़ करने वाला है जिन्होंने अच्छे और बुरे आमाल को मिला रखा है और एक गिरोह अहले आराफ़ का है।

तौज़ीह : मज़कूरा बाला हदीस मे लोगों को अव्वलन तीन फ़िरक़ों में तक़्सीम किया गया है।

अव्वल : जिनसे जन्नत का वादा है वो मोमिनीन हैं जो अल्लाह व रसूल स. और तमाम माजए ब रसूल स. पर ज़बान व क़ल्ब से ईमान लाए और अपने आज़ाए व जवारेह से अल्लाह की इताअत की।

दोम : अहले वईद बिन्नार और वो काफ़िर हैं जिन्होंने अल्लाह व रसूल स. और तमाम माजाअ बिहिन्नबी स. से किसी चीज़ का भी ज़बान और क़ल्ब से इन्कार किया और हक़ीर समझकर फ़राएज़ को तर्क किया।

सोम : मुस्तज़अफ़ वो हैं जिन्होंने अदमे क़ाबिलियत की वजह से ईमान की तरफ़ हिदायत न पाई जैसे लड़के दिवाने या अहमक़ और वो जिस तक दावते इस्लाम न पहुँची।

चहारुम : अम्रे इलाही के उम्मीदवार ये वो हैं जिनके लिए हुक्म क़यामत पर मोकूफ़ है चाहे उनको अज़ाब दे या उनकी तौबा कुबूल करे। ये वो लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र से तौबा की। और इस्लाम में दाख़िल हुए इस्लाम ने इनके कुलूब में जड़ नहीं

पकड़ी और अल्लाह की कुछ इबादत न कर पाए और मर गये न ईमान ही मुस्तहकम हुआ न कुफ़्र ही छूटा। अहले ज़िलाल सब मरहून लेअमरिल्लाह में हैं।

पंजुम : फ़िसाकुल मोमिनीन जिन्होंने नेक व बद आमाल को ख़ल्त मल्त कर दिया फिर अपने गुनाहों का एतराफ़ किया मुमकिन है ख़ुदा उनकी तौबा कुबूल कर ले।

शशुम : असहाबे अराफ़ ये वो लोग हैं जिनके हस्नात व सईयात बराबर हैं एक को दूसरे पर तरजीह नहीं इसलिए उनके न सिर्फ़ जन्नत है न दोज़ख़, वो आराफ़ में रहेंगे जब तक अल्लाह दो अम्रों में एक को तरजीह न दे ये उसकी हैसियत पर मोकूफ़ है।

3. ज़ोरारह ने कहा मैं और हमरान या मैं और बुकैर इमाम मोहम्मद बाक़र अ. की ख़िदमत में आए मैंने कहा हम मदद लेते हैं मुत्मार से (वो डोरी जिसको लगाकर मेअमार ये देखता है कि कौन ईंट आगे है कौन पीछे) हज़रत ने पूछा कि मुत्मार क्या है कहा तरपस जो हमसे मुवाफ़िक़ होता है अलवी हो या ग़ैर अलवी हम उससे मोहब्बत करते हैं और हमारे ख़िलाफ़ हो अलवी हम उसपर तबर्रा करते हैं हज़रत ने फ़रमाया ऐ ज़ोरारह अल्लाह के क़ौल से ज़्यादा सच्चा है कहाँ जाएंगे वो लोग जिन के लिए ख़ुदा फ़रमाता है और ज़ईफ़ुल एतक़ाद मर्द औरतें और लड़के कि जो न गुमराही से बचने की ताक़त रखते हैं न सही रास्ते की तरफ़ हिदायत पाते हैं और कहाँ जाएंगे वो लोग जो अम्रे ख़ुदा के उम्मीदवार हैं और वो लोग जिन्होंने नेक व बद को मिला दिया है और असहाबे आराफ़ और मोअल्लिफ़ा बिल्कुलूब (मतलब ये है कि ज़ोरारह ने अक़्सामे नास को दो क़िस्मों में महदूद कर दिया था) हज़रत ने फ़रमाया ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा ने दो और क़िस्में भी बयान की हैं।

हमाद ने इस हदीस में इतना इज़ाफ़ा भी किया है कि इमाम मोहम्मद बाक़र अ. की आवाज़ बलन्द हुई और मेरी भी

यहाँ तक कि जो दरवाज़े पर थे उन्होंने सुन ली और जमील ने ज़ोरारह से नक़्ल किया है कि जब मेरे और हज़रत के दरमियान बात बढ़ी तो हज़रत ने फ़रमाया ऐ ज़ोरारह अल्लाह को ये हक़ है कि वो अहले ज़िलाल को दाख़िले जन्नत कर दे (तौबा के बाद)

तौज़ीह : इस हदीस से ज़ोरारह की क़दह साबित होती है और सूए अदब की दलील है लेकिन चूँकि वो साहिबे अज़मतो रिफ़अत थे और उनकी फ़ज़ीलत पर लोगों का इजमाअ और अहादीसे अईम्मा भी इसपर दाल हैं लेहाज़ा हदीस के आख़री टुकड़े की तरफ़ तवज्जोह न की जाएगी मुमकिन है इस क़िस्म की बातें कमाले मारफ़त हासिल होने से पहले हुई हों या उनकी आदत ज़ोर से बोलने और बहस करने की हो और अपने नफ़्स पर क़ाबू न रखते हों और ये गुफ़्तगू बर बिनाए शक न हो बल्कि उनका क़सद इस मसले में मुख़ालेफ़ीन से मुनाज़ेरह करने के लिए सुबूत हासिल करना और मुनाज़ेरह की कैफ़ियत से आगाह होना या अम्रे दीन में वो हद दरजा हों और हज़राते अईम्मा से शदीद मोहब्बत रखते हों और किसी मुख़ालिफ़े इमाम का जन्नत में दाख़िल होना जाएज़ न जानते हों।

दो सौ तिरान्वे वॉ बाब

कुफ़्र

1. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा क्या सुन्नते रसूल स. और फ़राएज़े ख़ुदा बराबर हैं फ़रमाया ख़ुदा ने जो फ़राएज़ रखे हैं वो बन्दों पर लाज़िम हैं जो कोई उनमें से एक फ़रीज़ा भी तर्क करेगा और अमल न करेगा और उसका इन्कार करेगा वो काफ़िर है और जिन उमूर का रसूल ने हुक्म दिया है वो हस्नात हैं पस जो कोई बाज़ इस चीज़ का जिसमें इताअत का हुक्म अल्लाह ने दिया है तारिक हो जाए तो वो कुफ़्र नहीं बल्कि फ़ज़ीलत का तारिक और नेकी में कमी करने वाला

होगा।

2. ज़रारह ने रिवायत की है कि फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कुफ़्र शिर्क से आगे है और उससे ज़्यादा बुरा फिर हज़रत ने कुफ़्रे इब्लीस का ज़िक्र किया कि जब ख़ुदा ने सजदए आदम के लिए उससे कहा तो उसने इन्कार किया। पस कुफ़्र शिर्क से बड़ा हुआ या नहीं जिसने नाफ़रमानीए इलाही की जुर्अत की और उसकी इताअंत से इन्कार किया और गुनाहाने कबीरा पर आमादा हुआ वो काफ़िर है और जिसने मोमिनीन के दीन के ख़िलाफ़ कोई दीन निकाल खड़ा किया वो मुशरिक है।

3. ज़ोरारह ने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से रिवायत की है कि इमाम मोहम्मद बाक़र अ. के सामने सालिम बिन अबिहफ़ज़ा और उसके असहाब का ज़िक्र आया कि वो उसके मुन्किर हैं कि जिन्होंने अमीरूल मोमिनीन अ. से जंग की वो मुशरिक थे। हज़रत ने फ़रमाय तो ये गुमान करते हैं कि वो काफ़िर थे फ़रमाया कुफ़्र तो शिर्क से भी बदतर है फिर कुफ़्रे इब्लीस का भी ज़िक्र किया जब उसने कहा सजदा कर तो उसने इन्कार किया। हज़रत ने फ़रमाया कुफ़्र शिर्क से आगे है जिसने नाफ़रमानीए ख़ुदा की जुर्अत की और इताअत से इन्कारकिया और गुनाहाने कबीरा पर इसरार किया वो काफ़िर है यानी अहकामे इलाही को हक़ीर समझने वाला काफ़िर है।

4. हमरान बिन ऐन से मरवी है कि मुझसे इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया हमने उसको सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत की अब वो चाहे शुक्रगुज़ार हो चाहे काफ़िर हो। फ़रमाया अगर उसने राहे ख़ुदा को अख़्तियार किया तो शाकिर है और तर्क किया तो कफ़िर है।

5. इब्ने ज़ोरारह से मरवी है कि मैंने हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया जिसने ईमान से इन्कार किया उसका अमल ज़ाया हुआ। फ़रमाया जिसने ऐसा

अमल तर्क किया जिसका इक़रार कर चुका है उसमें से एक ये है कि नमाज़ को बग़ैर बीमारी या ख़ास मशग़ूलियत के तर्क किया।

6. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. से पूछा कि कुफ़्र व शिर्क में कौन मुकद्दम है। हज़रत ने मुझसे फ़रमाया मैंने तो तुम्हें लोगों से मुबाहेसा करते नहीं देखा। मतलब ये है इस मसले का तअल्लुक़ तो मनाज़रे से है और तुम मुनाज़रा नहीं करते। मैंने कहा हश्शाम बिन सालिम ने यही सवाल करने को मुझसे कहा। फ़रमाया कुफ़्र शिर्क से आगे है क्योंकि वो इन्कार है आयते इलाही से ख़ुदा फ़रमाता है शैतान ने सजदे से इन्कार किया तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया।

7. ज़ोरारह से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से पूछा क्या मोमिन जहन्नम में जाएगा फ़रमाया ख़ुदा की क़सम नहीं पूछा क्या सिर्फ़ क़ाफ़िर ही जाएगा। फ़रमाया नहीं मगर जिसको अल्लाह चाहे जब मैंने बार बार हज़रत से यही सवाल किया तो फ़रमाया ऐ ज़ोरारह मैं कहता हूँ नहीं और जिसको अल्लाह चाहे तुम कहते हो नहीं मगर ये नहीं कहते जिसको अल्लाह चाहे रावीए अव्वल कहता है ज़ोरारह ने मुझसे बयान किया कि मैंने अपने दिल में कहा कि इमाम अ. बूढ़े हो गये हैं उनको फ़रीक़े मुख़ालिफ़ से मुनाज़रे का इल्म नहीं, न अक़्ली दलील बयान की न नक़्ली। हज़रत ने फिर मुझ से कहा तुम क्या कहते हो इस बारे में जिसने तुमको आक़ा मान लिया हो क्या तुम उसको क़त्ल कर दोगे और क्या कहते हो अपने नौकरों और ख़ानदान वालों के मुतअल्लिक़ क्या तुम उन्हें क़त्ल कर दोगे तब मैंने कहा मुनाज़रे का इल्म मुझ ही को न था।

तौज़ीह : अल्लामा ने मिरअतुल उक़ूल में तहरीर फ़रमाया है कि यहाँ मोमिन से मुराद वो शिया है जो गुनाहे कबीरा से इजतिनाब

करता हे और सग़ीरा पर इसरार न हो और काफ़िर से मुराद है कि जिसके अक़ाएद में ख़लल हो मगर तौहीद व नबूवत व इमामत व क़यामत के बारे में पुख़्ता अक़ीदा रखता हो और इतमामे हुज्जत उसपर हो सके उसकी अक़्ल के कामिल होने की वजह से। इन दोनों के दरमियान और लोग भी हैं वो इमामिया लोग जो गुनाहाने कबीरा के मुतर्किब होते हैं और आम लोगों में मुस्तज़अफ़ीन और वो लोग भी हैं जिनपर हुज्जत तमाम नहीं हुई उन लोगों के जहन्नुम में दाख़िल होने का ऐहतमाल है और न होने का भी। ये गिराह मोमिन व काफ़िर के दरमियान वास्ता हैं ज़ोरारह वास्तों का मुन्किर था वो ये नहीं मानता था कि काफ़िर व मोमिन के वसाएत में दाख़िल करे और बाज़ को मोमिनीन और बाज़ को काफ़िरीन में शामिल करे। इसके नज़दीक जाएज़ न था मोमिनका दोज़ख़ में जाना और और ग़ैर मोमिन का जन्नत में जाना। इसीलिए उसने शिया होने के बाद शादी न की क्यों कि वो अपने मुख़ालिफ़ों को काफ़िर जानता था। और उसका तमस्सुक लेकिन आयत से, इन आयतों से था होवल्लज़ी.......... और उसका ये कहना कि इमाम बूढ़े हैं और इल्म नहीं रखते चूँकि ज़बान से न था बल्कि सिर्फ़ दिल से आया था लेहाज़ा क़ाबिले मुवाख़ेज़ा नहीं ख़ुलासा ये है कि इमाम ने मोमिन व काफ़िर के दरमियन कुछ और लोगों को बतौर वसाएत के बताया क्योंकि मुख़ालेफ़ीन में बाज़ अहकाम में हुक्म मुस्लेमीन में होते हैं और अगर जिन वसाएत का ज़िक्र किया गया और उनके ग़ैर हों तो मुख़्लिद फ़िन्नार होंगे पस अगर इस सूरत में उनका आक़ा होना क़ुबूल न करेगा तो ख़िलाफ़े इजमाए इस्लाम और अमले रसूल होगा और अगर उनका आक़ा होना क़ुबूल करेगा और क़त्ल न करेगा तो ये हुक्मे इलाही के ख़िलाफ़ होगा। इन्नल काफ़िरीना .... रेकाब, मक़सद ये है कि जब ज़ोरारह की नज़र में सिर्फ़ दो ही सूरतें हैं मोमिन व काफ़िर तो इस सूरत

में क्या होगा।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से सुना जब उनसे सवाल किया गया। कुफ्र व शिर्क मे कौन मुक़द्दम है फ़रमाया कुफ्र और ये इसलिए कि इब्लीस ने सबसे पहले कुफ्र किया और उसका ये कुफ्र बग़ैर शिर्क के बिल्लाह था उसने इससे पहले दावते शिर्क नहीं दी थी ऐसा बाद में किया जिससे वो मुशरिक क़रार पाया।

9. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से किसी ने सवाल किया, क्या वजह है कि आप ज़ानी को काफ़िर नहीं कहते और तारिकुस्सलात को काफ़िर कहते हैं। फ़रमाया ज़ानी वग़ैरह ग़ल्बए शहवत से ऐसा करते हैं और तारिकुस्सलात नमाज़ को तर्क नहीं करता बल्कि वो इस्तिख़्फ़ाक़न ऐसा करता है क्योंकि जब लज़्ज़त की नफ़ी हुई तो इस्तिख़्फ़ाक़ वाक़ेअ हुआ और इस्तिख़्फ़ाक़ हुआ तो कुफ्र हुआ और हज़रत से ये भी सवाल किया गया कि एक शख़्स ने एक औरत को देखा और उसने ज़िना किया शराब पी। क्या फ़र्क़ है उसके और तारिकुस्सलात के दरमियान और क्या दलील है कि उनका हुक्म जुदा जुदा है फ़रमाया जब तूने नमाज़ को तर्क किया तो शहवत का ग़ल्बा न था मिस्ल ज़िना और शराब के और तूने तर्के सलात में अपने नफ़्स को खुद आमादा किया कोई शहवत न थी और ये इस्तिख़्फ़ाक़ है यही फ़र्क़ है दोनों के दरमियान।

10. फ़रमाया हज़रत जाफ़रे सादिक़ अ. ने जिसको अल्लाह और उसके रसूल स. में शक हुआ वो काफ़िर है।

11. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा जो शख़्स शक करे रिसालते रसूल में उसके लिए क्या हुक्म है फ़रमाया वो काफ़िर है। मैंने कहा जो इस के काफ़िर होने में शक करे उसके लिए क्या हुक्म है ये सुनकर हज़रत ख़ामोश हो गये मैंने तीन बार ये सवाल दोहराया तोहज़रत के चेहरे पर आसारे ग़ज़ब

नमूदार हुए ग़ालिबन तर्के जवाब इसलिए हुआ कि ये तफ़सीलवार नहीं और क़ाएदाए कुल्लिया नहीं है कुफ़्र में न अदमे कुफ़्र में।

12. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा जिसने ईमान का इन्कार किया उसका अमल ज़ाया हुआ। फ़रमाया जिसने इस अमल को तर्क किया जिसका वो इक़रार कर चुका है मैंने पूछा कि तर्के अमल की क्या सूरत है जिसे हम छोड़ दें। फ़रमाया इन तारिकों में एक वो है जो क़सदन तारिके नमाज़ है न नशे की वजह से न किसी बीमारी की वजह से।

13. अबू मसरूक़ से मरवी है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने मुझसे अहले बसरा के मुतअल्लिक़ पूछा। ये किस अक़ीदे मुतअल्लिक़ पूछा ये किस अक़ीदे के लोग हैं मैंने कहा मरजिया व क़दरिया व हरूमिया हैं फ़रमाया ख़ुदा लानत करे उन काफ़िर व मुशरिक इल्लतों पर जो किसी तरह अल्लाह की इबादत नहीं करते।

तौज़ीह : मरजिया, ये वो लोग हैं जो अमीरूल मोमिनीन अ. को ख़िलाफ़त में आख़री दर्जा देते हैं और अक़ीदह रखते है कि ईमान के होते हुए मअसीयत नुक़्सान नहीं पहुँचाती, क़दरिया, वो है जो तफ़वीज़ के क़ाएल हैं और ये कि हमारे अफ़ल हमारी मख़लूक़ हैं ख़ुदा की सनअत व मशीयत व इरादे को इसमें दख़ल नहीं। हरूरिया ख़वारिज जो क़रियाए हरूरिया की तरफ़ मन्सूब है और कूफ़े के क़रीब है।

14. फ़ुज़ैल रावी हैं कि मैं अबू जाफ़र अ. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आपके पास एक आदमी मौजूद था जब मैं आया तो वो आदमी उठ कर चला गया इमाम अ. ने फ़रमाया ऐ फ़ुज़ैल! तुम्हारे पास क्या है मैं कहा, वो क्या है इरशाद फ़रमाया वो हरूवरी अक़ीदे का आदमी था मैंने अर्ज़ किया वो काफ़िर है इरशाद फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वो मुशरिक है।

15. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से सुना कि हर वो शै जो इक़रार व तस्लीम को खींचे ईमान है और हर वो शै जिसे इन्कार और जहूद खींच कर लाए वो कुफ़्र है।

16. अबू हमज़ा ने कहा मैंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से सुना कि अली अ. वो दरवाज़ा हैं जिसे अल्लाह ने खोला है जो इसमें दाख़िल हुआ वो मोमिन है और जो उससे ख़ारिज हुआ वो काफ़िर है।

17. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया अली की इताअत फ़रोतनी है ख़ुदा के नज़दीक और उनकी मअसीयत कुफ़्र बिल्लाह है किसने पूछा ये कैसे फ़रमाया अली तुमको हक़ की तरफ़ जाएंगे अगर तुमने उनकी इताअत की तो इन्दल्लाह तुम मुन्किर व फ़रोतनी क़रार पाओगे और अगर नाफ़रमानी की तो अल्लाह से कुफ़्र करोगे।

18. हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया कि अली हिदायत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा हैं इसमें दाख़िल होने वाला मोमिन है और उससे ख़ारिज होने होना काफ़िर और न दाख़िल हुआ न ख़ारिज हुआ तो वो उन लोगों के गिरोह में है जिनका मामला मशीयते ईज़दी से मुतअल्लिक़ है।

19. हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ. ने फ़रमाया बन्दे अगर न जानते हों तो अपनी राए ज़नी में तवक्कुफ़ करें और इन्कारे रूबूबियत न करें और काफ़िर न हों।

20. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने ख़ुदा ने अली अ. को अपने और अपनी मख़लूक़ के दरमियान अलामत बनाया है पस जिसने उनकी मारफ़त हासिल की वो मोमिन है और जिसने इन्कार किया वो काफ़िर है और जो उनसे जाहिल रहा वो गुमराह है और जिसने उनके साथ किसी शै को क़ाएम किया वो मुशरिक है जिसने उनकी विलायत का इक़रार किया वो दाख़िले जन्नत हुआ और जिसने उनसे अदावत की वो वासिले

जहन्नम हुआ।

21. अबू इब्राहीम अ. ने फ़रमाया अली अ. जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा हैं जो इसमें दाख़िल हुआ वो मामिन है जो ख़ारिज हुआ वो काफ़िर है जो दाख़िल हुआ न ख़ारिज उसकी निजात का मामला मशीयते इलाही पर मौकूफ़ है।

दो सौ चौरान्वे वॉ बाब

वजूहे कुफ़्र

1. रावी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा किताबे ख़ुदा में वजूहे कुफ़्र क्या क्या हैं फ़रमाया कुर्आन में पॉच सूरतें ज़िक्र की गयी हैं लेकिन इनमें कुफ़्र हुजूद है और सकी दो सूरतें हैं और तीसरे कुफ़्र बिल्लाह है कि अल्लाह ने जो हुक्म दिया है उससे इन्कार करे और और कुफ़्रे बराअत और कुफ़्रे नेअम कुफ़्रे जुहूद से मुराद है इन्कारे रबूबियते बारी तआला और वो ये कहना है कि न रब है न जन्नत व दोज़ख़ है और ये क़ौल उन ज़िन्दीक़ों का है जिनको दहरिया कहा जाता है ये वो लोग हैं जो कहते हैं हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना ये दीन उन्होंने ख़ुद अपने लिए बनाकर खड़ा किया है जिसका कोई सुबूत है न तहक़ीकी बात, इन्हीं लोगों के लिए ख़ुदा ने फ़रमाया है जो लोग कुफ़्र कर चुके ऐ रसूल स. तुम उनको डराओ या न डराओ वो ईमान लाने वाले नहीं यानी तौहीदे इलाही पर एक वजह कुफ़्र की तो ये हुई दूसरी वजह इन्कारे मारफ़त है और वो ये है कि इन्कार करने वाला इन्कार करे किसी ऐसे अम्र का जिसको वो हक़ जानता है और उसके नज़दीक साबित है। ख़ुदा उनके मुतअल्लिक़ फ़रमाता है उन्होंने उससे इन्कार किया हालॉकि उनके नफ़्सों को यक़ीन था ज़ुल्म और अपने तकब्बुर का, और अल्लाह फ़रमाता है जो रसूल के आने से फ़तह के तालिब थे उन लोगों पर जो दीने मूसा में काफ़िर हो गये थे लेकिन वो रसूल आया जिसे तौरेत के ज़रिए पहचान चुके थे तो इन्कार

कर दिया। काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत, ये तफ़सीर है जुहूद की दो सूरतों की तीसरी वजह कुफ़्रे नेअम है ख़ुदा का क़ौल सुलेमान अ. की हिकायत यूँ की है ये मेरे रब का फ़ज़ल है ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्र अदा करता हूँ या कुफ़्र, जो शुक्र करता है वो अपने नफ़्स के लिए और जो कुफ़्र करता है तो मेरा ख़ुदा ग़नी ओ करीम है और ख़ुदा ने ये भी फ़रमाया है अगर शुक्र अदा करोगे तो तुम्हारी नेअमतों को ज़्यादा कर दूंगा। और अगर तुमने कुफ़्र किया तो मेरा अज़ाब सख़्त है और ये भी फ़रमाया तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा मेरा शुक्र अदा करो और काफ़िर न बनो। चौथी वजह तर्क करना है अहकामे ख़ुदा का वो फ़रमाता है और जब हमने तुमसे अहद लिया कि तुम अपने ख़ून न बहाओ और अपने लोगों को अपने शहरों से न निकालो तो तुमने इक़रार कर लिया और उसपर तुम ख़ुद गवाह हो। फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल करते हो और अपने शहरों से एक गिरोह को जिला वतन कर देते हो और गुनाह और ज़ुल्म पर एक दूसरे की पुश्त पनाही करते हो और जब तुम्हारे पास क़ैदी आते हैं तो उनका फ़िदया दे कर रिहा कराते हो हालॉकि उनका जिला वतन करना ही तुम पर हराम था पस तुम किताब के बाज़ अहकाम पर अमल करते हो और बाज़ से इन्कार करते हो पस ये है अम्रे ख़ुदा से इन्कार की सूरत उसने ऐसे लोगों को ईमान से निस्बत दी है और उसको क़ुबूल नहीं किया और ना ऐसा ईमानपेश किया ख़ुदा उनको फ़ायदा देने वाला है जैसा कि फ़रमाता है "जो तुममें ऐसा करने वाले हैं उनकी सज़ा दुनिया में रूस्वाई और रोज़े क़यामत अज़ाब में मुब्तिला होंगे और जो तुम करते हो अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं, कुफ़्र की पाचॅवी सूरत कुफ़्रे बराअत है जैसा कि क़ुर्आन में हज़रत इब्राहीम के क़ौल की हिकायत की गयी है हमने तुमसे इन्कार किया और तुम्हारे दरमियान अदावत ज़ाहिर हुई हमेशा के लिए जब तुम ख़ुदाए

वाहिद पर ईमान न लाओ यानी हमने तुमसे बराअत ज़ाहिर की और शैतान के ज़िक्र और रोज़े क़यामत उसका अपने दोस्तों से तबर्रा करने के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है इन्सान से, तुमने जो दुनिया में मुझे ख़ुदा का शरीक बनाया मैं उससे बेज़ार हूँ और दूसरी जगह फ़रमाता है तुमने अल्लाह को छोड़कर बुतों को मअबूद बनाया, दुनिया में तुम्हारी दोस्ती इनसे रही, अब क़यामत में तुम एक दूसरे से बराअत ज़ाहिर करते हो और एक दूसरे पर लअन करते हो यानी एक दूसरे से बेज़ारी का इज़हार करते हो।

दो सौ पच्चानवे वॉ बाब

कुफ़्रे सुतून और उसकी शाख़ें

1. रावी कहता है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने फ़रमाया कुफ़्र की बुनियाद चार अरकान पर है फ़िस्क़, गुलू, शक व शुब्हा, फ़िस्क़ की चार शाख़ें हैं जफ़ा, अमी, गफ़लत और अतू जफ़ा के ये मानी हैं कि जफ़ा करने वाला अम्रे हक़ को हक़ीर समझता है और आलिमाने दीन का दुश्मन होता है और गुनाहे अज़ीम पर इसरार करता है अमी से मुराद ये है कि ज़िक्रे ख़ुदा को भूल जाता है और ज़न की पैरवी करता है और अपने ख़ालिक़ का मुक़ाबला करता है और उसपर शैतान का ग़ल्बा होता है और तलबे मग़फ़िरत करता है बग़ैर तौबा के और बग़ैर इक़रार के अपनी सुस्ती और ग़फ़लत से मुराद ये है कि अपने नफ़्स को नुक़सान पहुँचाता है और राहे हक़ में बजाए चलने के चित लेट जाता है और अपनी गुमराही को नेकी जानता है उम्मीदें उसे धोखा देती हैं और हसरत व निदामत के नतीजे में हासिल होती है और जब मामला हो चुकता है तो ऑखों से परदा हटता है तो उस पर वो ज़ाहिर होता है जिसका उसे गुमान न हो। अतू से मुराद ये है कि वो अम्रे ख़ुदा के मुक़ाबिल सरकशी दिखाता है शक करने में और जिसने शक किया तो ख़ुदा उसे ज़लील करता है अपनी कुव्वत से और हक़ीर बनाता है अपने इज़्ज़तो

जलाल से क्योंकि उसने अपने रब्बे करीम को धोका दिया और उसके मामले में तफ़रीत से काम लिया। गुलू की चार सूरतें तअमुक़ बिर्राए यानी अपनी राए से मसाएले दीन में दख़ल देना और लोगों से अपनी ग़लत राए की बिना पर झगड़ा करना और कज राई और आईमा से मुख़लेफ़त का इज़हार पस जिसने ऐसा किया वो हक़ की तरफ़ रूजूअ नहीं कर सकता और वो तारीकियों में डूबता ही चला जाएगा और एक फ़ित्ने के बाद दूसरा उसे घेर लेगा और दीन उसका तबाह हो जाएगा और एक परेशान कुन मामले में पड़ जाएगा और जिसने मसाएले दीन में खुद राई से निज़ाअ किया और ख़ूसूमत का इज़हार किया और मुख़ासेमत की तो वो जमाअत मशहूर हो अपने तूलानी झगड़े की वजह से और जिसने राहे हक़ से कजी की उसकी नज़र में नेकी बदी बन गयी और बदी नेकी और जिसने रसूल और अईमा की मुखालेफ़त की तो ग़ैर मुक़य्यद हुए उसके लिए वो रास्ते जो उसने अख़्तियार किए और दुश्वार हो गया उसका मामला, उसपर और चूँकि उसने राहे मोमिनीन का इत्तेबा न किया लेहाज़ा उसको वहाँ से निकलना दुश्वार हो गया।

और शक की चार सूरतें हैं मिरया, हौल, तरद्दुद और इस्तिस्लाम, मिरया के बारे में खुदा फ़रमाता है तुम खुदा की कौन सी नेअमत के बारे में शक और झगड़ा करोगे दूसरी रिवायत में है और हक़ बात से ख़ौफ़ और हक़ से वहशत और जिहालत और उसके अहल से तअल्लुक़ हो जाता है पस जो वहशत में मुब्तिला हो उन बातों से जो उसके सामने हैं तो वो अपने पिछले पॉव पलट गया और जिसने अपनी राए से दीनी उमूर में झगड़ा किया वो शक में जा पड़ा। मोमिनीने अव्वलीन ने चूँकि शक व मुख़ासेमत से तअल्लुक़ न रखा लेहाज़ा उन्होंने इल्म में तरक़्क़ी और आख़िर वाले लकदकूब में आ गये और जिसने उसकी बात मान ली उसकी दुनिया व आख़ेरत तबाह और हलाक हुई और

वो चीज जो उनके दरमियान है जिसने उससे निजात पाई वो यक़ीन की फ़ज़ीलत से बहरावर हुआ और ख़ुदा ने यक़ीन से कम कोई चीज़ पैदा नहीं की अहले यक़ीन बहुत कम हैं।

और शुब्हे की चार सूरतें हैं आजाब बिज़्ज़ीना, तस्वीले नफ़्स, नाविले औज और लबसुल हक़ बिल बातिल, शुब्हा यानी हक़ को बातिल की मिस्ल बनाना और उनमें पहली चीज़ अम्रे बातिल को क़यासात शेरिया पर आरास्ता करना जो पलट देती है खुली दलील से दूसरे फ़रेबे नफ़्स जो आदमी को शहवत से मग़लूब करता है और कजफ़हमी आदमी को बूरी तरह माएल करती है और लबस से मुराद तारीकियों पर तारीकी है ये है कुफ़्र और इसके सुतून और इसकी शाख़ें।

दो सौ छियान्नवे वॉ बाब

सिफ़ते निफ़ाक़ व मुनाफ़िक़

1. (ये ततिमा है हदीसे साबिक़ का) निफ़ाक़ के चार सुतून हैं, पैरवीए ख़्वाहिशे नफ़्स, सहल अनका, दूसरों के सामने अपनी फ़रोतनी के इज़हार से बचना और तमअ, पैरवीए ख़्वाहिशे नफ़्स की चार सूरतें हैं बग़ावत, ज़ुल्म, शहवत और सरकशी, जिसने ख़ुदा और रसूल स. से बग़ावत की तो शैतान की तरफ़ से हलाक करने वाले बहुत से हो गये और तौफ़ीक़े इलाही उससे मुन्क़तअ हुई और शैतान से उसकी यारी हुई और जिसने हद से तजावुज़ किया तो लोग उसकी बलाओं से महफ़ूज़ न रहे और उसका दिल मुसलमान न हुआ और उसने ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से अपने नफ़्स को न बचाया और बद किरदारियों में जा फॅसा और जिसने मअसीयत पर इसरार किया वो दानिस्ता बिला किसी हुज्जत के गुमराह हुआ और होनया की चार सूरतें हैं ग़फ़लत, आरज़ू, काहिली और टाल मटोल, ये इसलिए है कि काहिली हक़ से हटाती है और टाल मटोल अमल को दूर रखती है यहाँ तक कि मौत आ जाती है अगर आरज़ूए ज़िन्दगानी नहोती तो आदमी

अपना फ़र्ज़ जानता और बेख़ौफ़ मरता और और गुर्रा कोताहीए अमल है।

और अपने को फ़रोतनी से बचाना इसकी चार सूरतें हैं अपनी बुज़ुर्गी की अदिआ और शेख़ी के साथ अपनी तारीफ़ और और अपनी तरफ़दारी अपने निस्बत रखने वालों की तरफ़दारी, पस जिसने तकब्बुर किया वो हक़ से फिर गया और जिसने घमन्ड किया वो फाजिर हुआ जिसने अपनी बात की सच की उसने गुनाहों पर इसरार किया और जिसने दूसरी की तफ़रदारी की वो राहे हक़ से हट गया पस बुरी है वो बात जो अदबार व फुजूर और जोर के दरमियान हो।

और तमअ की चार सूरतें हैं ख़ुश होना नाजाएज़ उमूर पर तकब्बुर की चाल, मुज़तर होना तलबे माल में, माले दुनिया की ज़्यादती चाहना हराम माल या उमूरे मुहेर्रमा पर ख़ुश होना इन्दल्लाह ना पसन्दीदा है और अकड़ कर चलना बेकूफ़ी है और तलबे माल में इज़तेराबे बला है जो बे क़ाबू बनाती हे गुनाह करने पर और तकासुर लहव लअब और ऐसा काम है जो नेकी का बदल अदना चीज़ के साथ हो।

ये है निफ़ाक़ और उसके अरकान और शाख़ें और ख़ुदा ग़ालिब है अपने बन्दों पर उसका ज़िक्र बुलन्द है उसकी ज़ात अजल और अरफ़ा है और उसने हर शै को बेहतरीन सूरत में पैदा किया है और दस्त कुशादा (करीम) है उसकी रहमत हर शै को घेरे हुए है और उसका हुक्म ज़ाहिर है उसकी अज़मत का नूर हर जगह चमकता है और उसकी बरकत हर तरफ़ फैली हुई है और उसकी हिकमत क दलाएल रौशन हैं और उसकी किताब में हर शै का बयान है और उसकी हुज्जत ज़ाहिर व बाहिर है उसका दीने इस्लाम ख़ालिस दीन है और कुव्वत सब पर ग़ालिब है और उसका कलमा सच्चा है और जॉच पड़ताल मबनी बर अदल है उसके रसूल हिदायत के लिए आए और उन्होंने

तबलीगे अहकामे इलाही की। पस ख़ुदा ने बदी को गुनाह क़रार दिया और गुनाह को फ़ित्ना और फ़ित्ने को नापाकी और नेकी अपनी रज़ामन्दी का फ़ेल क़रार दिया और तौबा को रज़ा का ज़रिया बनाया और तौबा से मआसी से बचना ज़ाहिर हुआ। पस जिसने तौबा की हिदायत पाई और जिसने फ़ित्ना परदाज़ी की गुमराह हुआ जब तक ख़ुद तौबा न करे और अपने गुनाहों का मुंकिर न हो और अल्लाह के मुक़ाबले की जुर्अत नहीं मगर जो कि जहन्नमी हो।

2. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अ. से एक मसले का जवाब पूछा हज़रत ने तहरीर फ़रमाया मुनाफ़िक़ अल्लाह को धोका देते हैं और उनके फ़रेब का रद करता है जब नमाज़ पढ़ते हैं अलकसा कि वो लोगों को दिखावे के लिए करते हैं रियाकार हैं और अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं मुज़बज़ब लोग हैं न इधर के न उधर के जिसको अल्लाह गुमराही में छोड़ दे फिर उसे सही रास्ता नहीं मिलता ये मुनाफ़िक़ न तो काफ़िर हैं न मोमिन और न मुसलमान ईमान को ज़ाहिर करते हैं और अमल काफ़िरों का सा है और अम्रे हक़ को झुटलाते हैं ख़ुदा की उनपर लानत हो।

3. फ़रमाया हज़रत अली इबनुल हुसैन अ. ने मुनाफ़िक़ दूसरों को मना करता है और ख़ुद बाज़ नहीं आता जिसका हुक्म दूसरों को देता है और ख़ुद बजा नहीं लाता। जब नमाज़ पढ़ता है तो एतराज़ करता है रावी ने पूछा यबना रसूलिल्लाह एतराज़ क्या फ़रमाया इधर उधर देखता है और जब रूकूअ करता है तो बग़ैर सर उठाए बैठ जाता है शाम करता है तो रात के खाने की धुन होती है हालाँकि वो रोज़े से नहीं होता और सुब्हा इस तरह करता है कि उसका इरादा सोने का होता है हालाँकि रात को जागा नहीं, जब तुम से बात करेगा तो तुम्हें झुटलाएगा तुम उसे अमीन बनाओगे ख़यानत करेगा अगर उससे अलग हो गये तो

गीबत करेगा अगर तुमसे वायदा करेगा तो वादा ख़िलाफ़ी करेगा।

4. इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ. ही की सनदसे अब्दुल मलिक ने हदीसे साबिक़ में इतना इज़ाफ़ा और किया है कि जब रूकूअ करता है तो सोया हुआ मालूम होता है और सजदा इस तरह करता है जैसे परिन्दा ढोंग मारे और जब दो सजदों के दरमियान बैठे तो नाक़िस नशिस्त यानी फ़ील फ़ूर दूसरे सजदे में चला जाए।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने रसूलुल्लाह ने मुनाफ़िक़ की मिसाल दरख़्ते ख़जूर के उस तने की है जिसका मालिक अपने ज़ेरे तामीर मकान में एक जगह फ़िट करना चाहे मगर वो वहाँ फ़िट न हो फिर दूसरी जगह नस्ब करना चाहे वो वहाँ भी फिट न हो आख़िर मजबूर होकर जला दे।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि जब किसी की रियाज़ते बदन सफ़ाईए क़ल्ब से ज़्यादा हो (जैसा कि मक्कार सूफ़ी करते हैं) तो ये हमारे नज़दीक मुनाफ़िक़ है।

दो सौ सतान्नवे वॉ बाब

शिर्क

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने जब उनसे किसी ने पूछा कम से कम किस बात से आदमी मुशरिक हो जाता है जो शख़्स ख़ुर्मे की गुठली को संगरेज़ा कह दे और संगरेज़े को गुठली और अपने ज़न पर अपने दीन की बुनिया रखे।

2. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ से पूछा कम से कम वो कौन सी बात है जिससे इन्सान मुशरिक बन जाता है फ़रमाया जिसने कोई नयी राए बतौर ज़न व क़यास क़ाएम करके किसी से मोहब्बत या बुग़ज़ किया।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ उनमें बहुत से ईमान नहीं लाए और वो मुशरिक ही

रहे कि उन्होंने शैतान की इताअत इस तरह लाइल्मी में की उन्हें पता ही न चला पस इससे शिर्क उनमें आ गया।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस आयत के मुतअल्लिक़ "नहीं ईमान लाए अल्लाह पर उनमें से अक्सर मगर ये कि वो मुशरिक बने रहे कि इससे मुराद शिर्के ताअत है न कि शिर्के इबादत और आयत के मुतअल्लिक़ कुछ लोग ऐसे हैं कि अल्लाह की इबादत एक किनारे खड़े होकर करते हैं" फ़रमाया ये आयत नाज़िल तो हुई थी एक शख़्स के बारे में लेकिन इसका मिस्दाक़ वो सब बने जिन्होंने इस शख़्स की पैरवी की। मैंने पूछा जो आप की जगह दूसरे को इमाम माने वो भी इस आयत का मिस्दाक़ है। फ़रमाया हॉ कभी जुज़ई सूरत भी होती है यानी एक शख़्स ख़ुद ही ऐसा करता है बग़ैर ताबईन।

5. रावी कहता है कि अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया लोगों हमारी मारफ़त का हुक्म दिया गया है और हमारी तरफ़ रूजूअ करने, हमारी बात को मानने का भी वो लोग रोज़ा रखें, नमाज़ पढ़ें और ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही दें और अपने दिलों में ये इरादा रखें कि हम रूजूअ न करेंगे तो इससे मुशरिक बन जाएंगे।

तौज़ीह : ये शिर्क के मानी से होगा कि अईम्मए मासूमीन अ. को ख़ुदा ने इमाम बनाया है लेहाज़ा उनकी इताअत फ़र्ज़ हुई पस उनके बजाए दूसरे के बनाए हुए को इमाम तस्लीम कियातो गोया उस दूसरे को ख़ुदा का शरीक बनाया।

6. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने अगर कोई क़ौम ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की इबादत करे नमाज़ पढ़े ज़कात दे हजे बैतुल्लाह करे और माहे रमज़ान के रोज़े रखे फिर किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ जिसको अल्लाह या रसूल स. ने बनाया हो ये कह दे कि उसके ख़िलाफ़ बनाया जाता तो अच्छा था या ऐसा ख़याल भी उनके दिल में गुज़रे तो वो मुशरिक हो जाएंगे फिर ये

आयत तिलावत फ़रमाई "क़सम है तेरे रब की वो ईमान वाले नहीं होंगे जब तक अपने नेज़ाआत में तुझको ऐ रसूल! हकम न बनाएं और फिर जो फ़ैसला तू कर दे उससे अपने नफ़्सों में तंगी न पाएंगे और तेरे फ़ैसले को कुबूल भी कर लें" हज़रत ने फ़रमाया और तुम्हारे लिए बात का कुबूल करना लाज़िम है।

7. अबू बसीर से मरवी है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से इस आयत के बारे में पूछा उन्होंने अपने आलिमों और दुर्वेशों को ख़ुदा के बजाए अपना रब बना लिया था आप ने फ़रमाया वल्लाह उन्होंने अपने नफ़्सों की इबादत की तरफ़ उनको नहीं बुलाया था और अगर करते तो वो लोग उनकी बात न मानते बल्कि उन्होंने उनके लिए हराम को हलाल कर दिया था और हलाल को हराम और उनको इसकी ख़बर न हुई।

8. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ. ने जिसने मअसीयते ख़ुदा में किसी की इताअत की उसने उसकी इबादत की।

दो सौ अठान्नवे वॉ बाब

शक

1. रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काज़िम अ. को लिखा कि मैं आपकी इमामत के बारे में शक करने वाला हूँ इब्राहीम अ. ने कहा था परवरदीगारा मुझे दिखला दे तू मुर्दो को किस तरह ज़िन्दा करता है पस मैं भी ये चाहता हूँ कि आप तस्दीक़े इमामत के लिए कोई ऐसी चीज़ दिखाएं जिससे मेरा शक दूर हो जाए हज़रत ने जवाब लिखा कि इब्राहीम अ. मोमिन थे उन्होंने चाहा कि ईमान ज़्यादा हो और तुम शक करने वाले हो और शक में बेहतरी नहीं और ये भी लिखा शक उसी वक़्त तक रहता है जब तक यक़ीन नहो और यक़ीन आ जाता है तो फिर शक बाक़ी नहीं रहता और ये भी लिखा है कि ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल फ़रमाता है हमने उनमें एक अक्सर को अहद पर क़ाएम न पाया और हमने उनमें से अक्सर को फ़ासिक़ पाया और फ़रमाया ये

आयत शक करने वालों के बारे में है।

2. मोहम्मद बिन मुस्लिम ने बयान कि इमाम जाफ़रे सादिक की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैं बायीं तरफ़ था ज़ोरारह दाहिनी तरफ़ कि अबू बसीर भी आगये, कहने लगे ऐ अबू अब्दुल्लाह आप क्या फ़रमाते हैं उस शख़्स के बारे में जो अल्लाह के मुतअल्लिक़ शक करता हो। फ़रमाया वो काफ़िर है उन्होंने कहा जो रसूल स. के बारे में शक करे उसके लिए। फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नियत अबू बसीर) वो भी काफ़िर है फिर ज़रारह की तरफ़ रूख़ करके फ़रमाया, रूबूबियते बारी तआला और रिसालते मोहम्मदे मुस्तुफ़ा स. को समझते हो जो इन्कार करे वो काफ़िर है।

3. अबू इस्हाक़ ख़ुरासानी से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अ. ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया शुब्हा को उमूरे दीन में दख़ल न दो वरना शक में पड़ जाओगे और शक में न पड़ो वरना काफ़िर हो जाओगे।

4. अबू बसीर से मरवी है कि कि मैंने अबू अब्दिल्लाह अ. से पूछा इस आयत के मुतअल्लिक़ जो लोग ईमानलाए और उन्होंने ज़ुल्म से अपने ईमान को नहीं ढॉपा फ़रमाया ज़ुल्म से मुराद यहॉं शक है।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने शक व मअसीयत का नतीजा दोज़ख़, ऐसा शख़्स जो कहता है न वो हमारी बात है और न उसकी, रूजूअ हमारी तरफ़ है।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने जो अल्लाह की रूबूबियत में शक करे उसके बाद भी कि उसकी विलायत फ़ितरते इस्लाम पर हुई तो नेकी को कभी न पाएगा।

7. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने कि शक और इन्कार के होते अमल बेकार है।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. से सुना जिसने शक या गुमान किया और उनमें किसी एक पर क़ाएम

रहा तो अल्लाह उसके इल्म को ज़ब्त कर लेता है अल्लाह की हुज्जत, हुज्जते वाज़ेहा है यानी जब अक्ली या नक्ली दलाएल रूबूबियते बारी तआला पर मौजूद हैं तो फिर शक या गुमान कैसा।

9. मोहम्मद बिन मुस्लिम से रिवायत है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक अ. या इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से कहा एक शख़्स ऐसा हो जो इबादत गुज़ार हो, रियाज़त करता हो, फ़रोतन हो लेकिन आपकी इमामत काक़ाएल न हो तो उसके मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है फ़रमाया एक मोहम्मद! इस ज़माने के ख़ानदान भी वैसे ही हैं जैसे बनी इस्राईल के ज़माने में थे उनमें से एक ने चालीस दिन का चिल्ला करके दुआ मॉगी जो कुबूल हुई दूसरे ने भी वैसा ही किया दुआ कुबूल न हुई उसने हज़रत से शिकायत की और दुआ की दरख़्वास्त की आप अ. ने वज़ू करके नमाजा पढ़ी और ख़ुदा से दुआ की अल्लाह ने वही की ए ईसा ये मेरा बन्दा उस दरवाज़े से जिससे उसे दिया जाता उसने मुझसे दुआ की लेकिन उसके दिल में तुम्हारी रिसालत के मुतअल्लिक़ शक था अगर इस हालत में वो दुआ करता रहता यहॉ तक कि उसकी गर्दन क़तअ हो जाती और उँगली के पोर पोर जुदा हो जाती तब भी उसकी दुआ कुबूल न होती। हज़रत ईसा ने उससे कहा तूने रब से दुआ ऐसी हालत में की जब कि उसके नबी की नबूवत में तुझे शक था उसने कहा ऐ रूहुल्लाह ऐसा ही था जैसे आपने कहा। अब आप ख़ुदा से दुआ करें कि इस शक को मेरे दिल से दूर करे हज़रत ने दुआ की उसने ख़ुदा से दुआ की कुबूल हुई और वो अपने अहले ख़ानदान के मर्तबे में दाख़िल हुआ।



दो सौ निन्नान्वे वॉ बाब

ज़ेलाल

1. रावी कहता है मैं और मोहम्मद बिन मुस्लिम और अबू ख़त्ताब एक जगह जमा हुए। हमसे अबू ख़त्ताब ने कहा क्या कहते हो इस शख़्स के बारे में जो अम्रे इमामत की मारफ़त नहीं रखता मैंने कहा जो इमामत की मारफ़त नहीं रखता वो काफ़िर है। अबू ख़त्ताब ने कहा वो काफ़िर नहीं जब तक कि अक़्ली व नक़्ली दलाएल से उसपर हुज्जत क़ाएम न हो। हॉ जब हुज्जत क़ाएम हो जाए फिर भी इमाम को न पहचाने तब काफ़िर होगा। मोहम्मद बिन मुस्लिम ने कहा अगर न पहचाने और इन्कार भी न करे तो किफ़िर हो जाएगा काफ़िर नहीं होगा जब तक इन्कार न करे जब मैं हज से फ़ारिग़ हुआ तो इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. की ख़िदमत में आया और इस गुफ्तगू से आगाह किया फ़रमाया तुम अकेले आए हो वो दोनों तो ग़ाएब हैं अच्छा बीच के जमरा वाली रात को मिना में मिलना। जब वो रात आई तो हम सब जमा हुए हज़रत ने अपना तकिया सीने से लगाकर फ़रमाया तुम क्या कहते हो अपने नौकरो, औरतों, और घर वालों के मुतअल्लिक़ वो ला इलाहा इलल्ल्लाह नहीं कहते कहा ज़रूर कहते हैं फ़रमाया क्या वो मोहम्मद रसूलुल्लाह स. नहीं कहते, मैंने कहा ज़रूर कहते हैं, फ़रमाया क्या वो नमाज़ नहीं पढ़ते, रोज़ा नहीं रखते, हज नहीं करते मैंने कहा करते हैं, क्या वो इस अक़ीदे पर भी हैं जिसपर तुम हो, मैंने कहा नहीं फ़रमाया फिर वो तुम्हारे नज़दीक कैसे हैं मैंने कहा जो इमामत की मारफ़त नहीं रखता वो काफ़िर है। फ़रमाया सुब्हानल्लाह क्या तुमने राहगीरों और उन लोगों को रास्तों में कुवों के मालिक हैं नहीं देखा, मैंने कहा देखा है फ़रमाया क्या वो नमाज़ नहीं पढ़ते, रोज़ा नहीं रखते, हज नहीं करते वो लाइलाहा इलल्ल्लाह नहीं कहते मैंने कहा कहते हैं और करते हैं फ़रमाया फिर वो तुम्हारे नज़दीक कैसे हैं

मैंने कहा जो मारफ़ते इमाम नहीं रखता वो काफ़िर है फ़रमाया सुब्हानल्लाह क्या तुमने काबे में तवाफ़ करने वालों अहल यमन को उसके परदों से लिपटा नहीं देखा। मैंने कहा देख है फ़रमाया वो ला इलाहा इलल्ल्लाह नहीं करते क्या वो नमाज़ रोज़ा और हज बजा नहीं लाते, मैंने कहा बजा लाते हैं फ़रमाया क्या उम्मत के मुतअल्लिक़ तुम्हारा अक़ीदा है वही उनका है मैंने कहा नहीं। फ़रमाया फिर तुम उन्हें क्या समझते हो मैंने कहा जो मारफ़ते इमाम नहीं रखता वो काफ़िर है। फ़रमाया सुब्हानल्लाह ये अक़ीदए ख़्वारिज है कि वो अपने सिवा किसी को मुसलमान नहीं समझते क्या मैं तुम्हें कुछ और बताऊँ मैंने कहा अब ज़रूरत नहीं फ़रमाया तुम्हारे लिए बुरी बात है कि जो तुम ने हमसे नहीं सुना वो बयान करो। रावी कहता है मैंने गुमान किया कि हज़रत क़ौले मोहम्मद बिन मुस्लिम की तरफ़ मुझे फेरना चाहते हैं।

तौज़ीह : अल्लामा मजलीसी अ.र. मिरअतुल उक़ूल में तहरीर फ़रमाते हैं कि साएल साहिबे बरीद का अक़ीदा ये था कि इमामत की मारफ़त न रखने वाला काफ़िर है ख़्वाह उसपर हुज्जत क़ाएम हो यानी उसने रूबूबियत को दलाएल अक़्ली व नक़्ली से जान लिया हो ख़्वाह इन्कार करे या न करे यानी उसके नज़दीक मोमिन व काफ़िर के दरमियान कोई दरजा नहीं और अबुल ख़त्ताब का अक़ीदा ये था कि काफ़िर इस सूरत में होगा कि हुज्जत उसपर क़ाएम हो जाए इन्कार करे या न करे इन दोनों के दरमियान वास्ता है और ग़ैर आरिफ़ क़ब्ल क़यामे हुज्जत है और मोहम्मद बिन मुस्लिम का अक़ीदा ये था कि जब इन्कार करे तो काफ़िर है इन्कार न करे तो काफ़िर नहीं, पस इस सूरत में भी मोमिन और काफ़िर के दरमियान एक गिरोह होगा जो न मारफ़त रखने वाला हो और न इन्कार करने वाला ये लोग मुस्तज़अफ़ और ज़लाल कहलाते हैं और कहा गया है कि इस

बाब में ज़लाल से मुराद यही है अगरचे इत्लाक़ ज़ाल का लफ़्ज़ आम मानी में इस्तेमाल होता है यानी जो मुसलमान मुत्मस्सिक बिलहक़ न हो और काफ़िर से मुराद यहाँ वो शख़्स है जिस पर दुनिया अहकामे कुफ़्र जारी हों मसलन निजासत और अदमे जवाज़ मुबाशेरत व मुनाकेहत वग़ैरह, जैसा कि हमारे बाज़ असहाब का हुक्म है वरना बाज़ कुफ़्फ़ार के मुस्तहिक़े उक़ूबत होने और दाख़िले जहन्नम होने में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं। ख़्वारिज का अक़ीदा ये था कोई गुनाह सग़ीरा हो या सग़ीरा पर इसरार करने वाला तो काफ़िर है और इस्लाम से ख़ारिज और मुस्तहिक़े क़त्ल, इसीलिए उन्होंने अमीरूल मोमिनीन के क़त्ल का हुक्म दिया क्योंकि आप तहकीम पर राज़ी हो गये थे हालॉकि हज़रत राज़ी न थे आपको इस पर मजबूर किया गया था। हासिले हदीस ये है कि लफ़्ज़े कुफ़्र मुख़्तलिफ़ मानी में बोला जाता है और हर एक के लिए जुदागाना अहकाम हैं ईमान की मुख़्तलिफ़ सूरतों की तरह, कुफ़्र बाज़ सूरतों में इस्लाम के साथ जमा हो जाता है ऐसा नहीं है कि अहादीस में जहॉ कहीं लफ़्ज़े कुफ़्र का इत्लाक़ किया गया हो और वो क़त्ल का मुस्तहिक़ हो या उससे मुनाकेहत व मुबाशेरत हराम हो और न ऐसा हे कि आयत व अदीस में सल्बे ईमान जिसका ज़िक्र हो उसका जहन्नम में हमेशा रहना ज़रूरी हो कुफ़्र का इत्लाक़ होता है उस शख़्स पर जो दीने इस्लाम की ज़रूरत से इन्कार करे ज़ाहिरन व बातिनन जैसे शहादतैन और क़यामत ऐसा पर अहकामे कुफ़्फ़ार जारी होंगे। दुनिया व आख़ेरत में उसके लिए अज़ाबे जहन्नम होगा अहले किताब ने उनकी नजासत और अदमे जवाज़े मुनाकेहत में इख़्तेलाफ़ किया है और लफ़्ज़ का इत्लाक़ इस पर भी होता है जिसके अक़ाएदे ईमानिया में ख़लल हो लेकिन इस्लाम के लिए वो ज़रूरी न हो जैसे इमामत और मशहूर शिया ओलमा में ये है कि रोज़े आख़ेरत वो हुक्मे कुफ़्फ़ार में होंगे और मुख़ल्लिद

फ़िन्नार होंगे जैसे मुख़ालेफ़ीन और तमाम फ़िरक़ए शिया सिवाए इमामिया के अक्सर अहादीस से ज़ाहिर होता है कि बाज़ मुख़ालेफ़ीन की नजात जहन्नु से मुमकिन होगी जैसे मुस्तज़अफ़ीन और अल मरजून अम्रिल्लाह और अलामा वग़ैरह ने एक क़ौल ज़िक्र किया है जिससे साबित होता है कि मुख़ालिफ़ीन के लिए ख़ुलूद फ़िन्नार न होगा लेकिन ये क़ौल हद दरजा ज़ईफ़ है क्योंकि शियों के नज़दीक उसूले दीन है रसूल स. की ये हदीस मुतवातिर है मन माता .... जाहिलिया (जो इस हाल में मरा कि उसने अपने ज़माने के इमाम को न पहचाना तो वो कुफ़्र की मौत मरा) इसकी ताईद में बकसरत अहादीस हैं अब रहे दीनवी अहकाम जैसे तहारत व तनाकेह व तवारूस तो मशहूर ये है कि इसमें मुसलमानों का सा हुक्म उनपर होगा और जनाब सैय्यद मुर्तज़ा और एक गिराहे ओलमाए शिया का ख़याल है कि दीनवी मुआमलात में भी उनसे काफ़िरों का सा बर्ताव किया जाएगा और अख़बार व अहादीस से भी ऐसा ही ज़ाहिर होता है लेकिन चूँकि इल्मे इलाही में ये बात थी कि मुख़ालेफ़ीन साहिबाने हुकूमत होंगे और शियों पर उनको ग़ल्बा हासिल होगा लेहाज़ा उनके लिए दुश्मनों से मिल जुल कर चलना लाज़िम होगा लेहाज़ा उनको इजाज़त दी गयी तमाम दीनवी उमूर में शिरकत की और मुख़ालेफ़ीन पर तई के ज़माने में दीनवी अहकाम जारी रहे अलबत्ता क़ाएमे आले मोहम्मद अ. के ज़हूर के बाद उनके कुफ़्फ़ार के दरमियान कोई फ़र्क़ न होगा और इन मुख़्तलिफ़ अहादीस का जमा करना इस तरह मुमकिन होगा कि कभी इत्लाक़े कुफ़्र होता है इन गुनाहाने कबीरा के इर्तिकाब करने वालों पर जो तौबा नहीं करते और गुनाह का दिल पर असर नहीं लेते एहतमाल है कि उनपर तूलानी मुद्दत तक अज़ाब रहे लेकिन जहन्नम में हमेशा न रहें और दुनिया में बजाए कुफ़्फ़ार का हुक्म जारी होने के बाज़ ऐसे हुकूक़ से उन्हें महरूम कर दिया जाए जो मोमिनीन से मख़्सूस

हैं और कभी काफ़िर का लफ़्ज़ इत्लाक़ होता है मआसी के मुर्तकिब पर। मुख़्तसर यह कि ये लफ़्ज़ कसीर मआनी में बोला जाता है और इसके अहकाम जुदा जुदा हैं शहीदे सानी ने रिसालए हक़ाएक़ उल ईमान में तहरीर फ़रमाया है कि तमाम ओलमाए इमामिया ने अहले ख़िलाफ़ के कुफ़्र पर इत्तिफ़ाक़ फ़रमाया है और अक्सर हुक्मे इस्लाम का मस्लक अख़्तियार किया है और इससे मुराद उनकी ये है कि काफ़िर हैं नफ़्से अम्र में और ज़ाहिर में ये निज़ाअ लफ़्ज़ी है क्योंकि जो इस्लाम के क़ाएल हैं उन्होंने अक्सर अहकामे मुस्लिमीन को ज़ाहिर में जाएज़ रखा है न कि नफ़्सुल अम्र में इसलिए उनका दख़ूल फ़िन्नार बयान किया है और जो बातिनन या ज़ाहिरन काफ़िर होना बयान करते हैं तो उनके पास दलील नहीं क्योंकि ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से उनका इस्लाम ज़ाहिर होता है।



तीन सौ वॉ बाब

मुस्तज़अफ़

1. ज़ोरारह ने कहा मुसतज़अफ़ कौन है फ़रमाया वो लोग हैं जो न तो इतनी कुव्वते इस्तेताअत रखते हैं कि कुफ़्र की तरफ़ माएल होकर काफ़िरीन बन जाएं और न इस क़ाबिल हैं कि मुहकमाते कुर्आन से हिदायत हासिल करें न उनमें ईमान शामिल होने की कुव्वत और कुफ़्र की तरफ़ लौट जाने की ताक़त, ये गिरोह अतफ़ाल का है उन मर्दों और औरतों का है जिनकी अक़्ल बच्चों की सी है ये लोग मरफ़ूउल क़लम हैं।

2. ज़ोरारह ने इमाम मोहम्मद बाक़र से पूछा मुसतज़अफ़ कौन है फ़रमाया जिनकी मालूमात इतनी कम और अक़्ल इतनी कोताह है कि न वो अपने से कुफ़्र को दफ़ा कर सकते हैं और न राहे हिदायत पा सकते हैं न ईमान वालों में ही हैं न काफ़िरों में। वो अतफ़ाल हैं और वो मर्द और औरतें जो कोताह अक़्ली में लड़कों की मानिन्द हैं।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अ. ने मुस्तज़अफ़ीन वो हैं जो न कोई हीलाए कुव्वत रखते हैं न राहे हिदायत पाने की यानी न वो ईमान के लिए कुछ करते हैं न कुफ़्र के लिए वो अतफ़ाल हैं और अतफ़ाल जैसी अक़्ल रखने वाले मर्द और औरत।

4. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से पूछा मुस्तज़अफ़ीन के बारे में क्या फ़रमाते हैं वो ख़ौफ़ व इज़्तेराब की सूरत से मुशाबेह है क्या मुस्तज़अफ़ीन को छोड़ दोगे और मुस्तज़अफ़ीन हैं कहॉ वल्लाह तुम्हारा अम्रे इमामत आयाते मोहकमात से हर एक को पहुँच चुका है यहॉ तक कि नौजवान लड़कियॉ घरों के अन्दर और पानी भरने वाली औरतें मदीने की गली कूचों में इसका तज़किरा करती हैं (पस जब हुज्जत उनपर तमाम हो गयी तो वो मुस्तज़अफ़ कहॉ रहे)

5. रावी कहता है मुस्तज़अफ़ के मुतअल्लिक़ इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. ने फ़रमाया वो अहले दोस्ती हैं मैंने कहा कैसी दोस्ती फ़रमाया इससे मुराद दीनी दोस्ती नहीं बल्कि ये सिर्फ़ मुनाकेहते मीरास और हमनशीनीं का जवाज़ है वो न मोमिन हैं न काफ़िर, उनसे कुछ मरजूनुल अम्रिल्लाह यानी उनके मुतअल्लिक़ ताख़ीर की गयी है क़यामत तक फिर वो चाहे बख़्शे या न बख़्शे।

6. रावी ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अ. से दीन के उन मसाएल के मुतअल्लिक़ पूछा जिनसे लोगों को जाहिल रहना चाहिए फ़रमाया दीन के मसाएल में आसानी रखी गयी है लेकिन ख़ारजियों ने मसाएल मुश्किला वज़अ करके दीन को अपने ऊपर तंग बना लिया है अपनी जाहिलियत से मैंने कहा आपको अपने दीनी अक़ाएद सुनाऊँ फ़रमाया ज़रूर, मैंने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद स. उसके अब्द व रसूल स. हैं और जो कुछ हज़रत ख़ुदा की तरफ़ से लाए है उसका इक़रार और आप से तवल्ला और बेज़ारी आपके दुश्मनों से और आपकी गर्दनों पर सवार होने वालों, आपपर हुकूमत करने वालों और आपका हक़ ग़स्ब करने वालो से, फ़रमाया तुम किसी चीज़ से जाहिल न रहे वल्लाह यही हमारा दीन है मैंने कहा जिसको अम्रे इमामत का इरफ़ान हो गया वो जहन्नमी है फ़रमाया नहीं बजुज़ मुस्तज़अफ़, मैंने पूछा वो कौन हैं फ़रमाया तुम्हारी औरतें और औलाद, क्या तुमने उम्मे ऐमन पर ग़ौर नहीं किया। मैं गवाही देता हूँ वो अहले जन्नत से है हालॉकि उसकी तुम्हारी सी मारफ़त न थी।

7. अबू बसीर से मरवी है कि अबू अब्दिल्लाह अ. ने फ़रमाया जो शख़्स लोगों के मज़हबी ख़यालात को जानता है वो मुस्तज़अफ़ नहीं।

8. रावी कहता है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से कहा बसा औक़ात मैं इन मुस्तज़अफ़ों का ज़िक्र करता हूँ और

कहता हूँ हम और वो जन्नत में यकसाँ दरजात में होंगे फ़रमाया अल्लाह तुम्हारे साथ ऐसा कभी न करेगा (यानी दरजात मुख़्तलिफ़ होंगे)

9. रावी कहता है एक शख़्स ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अ. से हमारी मौजूदगी में कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ हम इससे डरते हैं कि हमारे गुनाहों के बाएस हमें मुस्तज़अफ़ों का दरजा जन्नत में मिले फ़रमाया ख़ुदा तुम्हारे साथ कभी ऐसा नहीं करेगा।

10. सादिके आले मोहम्मद स. ने फ़रमाया जिसने लोगों के मज़हबी इख़्तेलाफ़ात को जान लिया वो मुस्तज़अफ़ नहीं।

11. रावी कहता है कि मैंने इमाम मूसा काज़िम अ. से पूछा ज़ोअफ़ा कौन हैं हज़रत ने मुझे लिखा जिस पर हुज्जत क़ाएम हो और वो मज़हबी इख़्तेलाफ़ात को न जानता हो अगर इख़्तेलाफ़ात को जान ले तो ज़ईफ़ नहीं।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ. ने इस ज़माने में कोई मुस्तज़अफ़ नहीं, मर्द औरतें सब हालात से बाख़बर हैं।

ख़त्म शुद